# GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Rai.)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE
		}
1		
į		<b>\</b>
}		1
		1
		}

# प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

भाग**२** (उपभाग१व२)

### हीरावाव शास्त्री

तथा

# श्रपनी कहानी, श्रपनी जबानी

सौ० रतन शास्त्री

3 3 68

प्रकाशक प्राप्तिक शास्त्री, प्रमुक्त प्रकाशन मन्दिर प्रा० निमिटेड, शास्त्री मन्द कार्य स्टारता, वादपोस बाजार, अयपुर-३०२००२

> प्रथम सस्करण ग्रक्टूबर, १६७४ मूल्य चालीम रुपये

> > जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३

मुद्रक दैशाली प्रिटिंग प्रेम की असों का रास्ता.

(गहने बाठ पृष्ठ और पृष्ठ सस्या ३६१-३८८ तक खबसेरा प्रिटिंग प्रेस, घी वालो का रास्ता, बग्गुर-३ वे खपे)



कई एक उतार चढाव आने के बाद प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भागः) के उपभाग १ व २ तथा सौ० रतन शास्त्री की "अपनी कहानी, ग्रपनी जवानी" प्रकाशित होने के लिए आज प्रस्तुत है।

जीवनकुटीर, वनस्थली, प्रक्र भाइपद गुक्त, १४, स २०३१ वि १ सितवर, १९७४

—होराताल गास्त्री

## प्रकाशक की श्रोर से

चार वर्ष ने कुछ अधिक ममय पूर्व अगस्त, १९७० में हमने पण्डित हीरानाल जारनी की झारमक्या 'अत्यक्षजीवनजास्त्र' (उद्धे अब प्रयम भाग कहेंगे) का प्रकाशन किया या। अनुभव की कमी के कारण उसका विज्ञापन नाम मात्र को भी नहीं हुआ फिर भी उसका चनुमुंब स्वापत हुआ और माय बनी रही।

उमके बाद की चार मान की बस्प सर्वाध में बादनीजी के पास बहुत कुछ नवीन नच्य करवा हो गया। प्रवम नाग में छूट गयी कुछ वाते तथा सामधी मीर नवीन सामधी मिलाकर पाठकों को नेवा में पैस करने योग्य काफी सामधी हो गयी। यह सामधी भाग २ के रूप में प्रस्तुत हैं। इममें ३१ धगरत, १६७४ के बाद के दो माम का टिप्पा मीन कुछ नया है। इन प्रकार 'प्रवश्वजीवनचारव' के इन वी भागों में बारभीजी के प्राय ७५ वर्षों वा प्रामाधिक लेखा जीखा प्रस्तुत हो गया है जो कि राजस्थान और देन के प्रवर्षीन इतिहान की एक महस्वपूर्ण और धनिवार्ष कड़ी भी है।

'प्रत्यक्षजीवनशास्त्र' के इन भाग २ का महत्व और भी बढ गया है। श्रीभनी रनन शास्त्री ने सक्षेप में 'धपनी कहानी, धपनी जवानी' विवत्ते का भाषह स्वीकार किया है। इन 'कहांनी' को भी उनकी इच्छानुसार इनी के मान्य प्रकाशित किया जा रहा है। विना इन 'कहानी' के शास्त्री जी का 'प्रत्यक्षणीवनशास्त्र' अपूरा रह जाता। राजस्थान के महिला यों के राज्य के मार्वजनिक जीवन में योगदान की कुछ अन्यक इसमें मिलती है। परस्तु आस्त्रीजी के विशाल यौर बहुमुक्ती व्यक्तित्व के निवार के लिए बहुत हद तक उत्तर-दायों और मकस्पित व नंत्र्य पर्म परावस्त्र क्षांवस्त्र के निवार के लिए बहुत हुद तक उत्तर-दायों और मकस्पित व नंत्र्य पर्म परावस्त्र क्षांवस्त्र लागिय

घात की बहित परिस्थितियों में बैजाती फ़िल्मिश से से के थी ती. पी. सिन्हा भीर व्यवस्थापक थी देवराज गुप्ता ने तथा अनुभेरा ज़िटिंग दवमें के थी रमेशचन्द्र अन्नेमेरा ने इसका मुदल सम्बद्ध करवा दिया जिसके लिए उन्हें माधुवाद है।

आधा है 'प्रत्यक्षत्रीवनशास्त्र' के भाग २ तथा श्रीसती रतन शास्त्री की ''झपनी कहानी, अपनी खबानी' का सभी धोर स्वागत होगा।

# समर्परा

हमारी वास्त्रत्यमयो माता

वाई

(रतनजी की मां भीर मेरी मां की स्थानापन्न श्रीमती लक्ष्मी रघुनाच व्यास)

की

सेवा में

—हीरालास शास्त्री

### सम्मतियां

प्रत्यक्षजोतनताल्य (भाग १) मे एक तपड़ा, दबंग ग्रीर झात्मप्रत्यवसम्बन्न व्यक्तित्व निव्यत्ता सौर विजता हुया दिखायी देता हूँ। वोच बीच मे झात्मदोविव्यकरण भी है। पर उससे सौरचारिक विनवशीलता का दर्ष नहीं है। दान्य के लेखक झाल्प्रीजी की भाषा भी स्रपनी है, सहज मुख्य। कहते हैं न—Style is the Man

--दादा धर्माधिकारी

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग १) एक सच्ची बात्मरुषा है—एक ऐसे व्यक्ति की भारमक्या जिसके प्रपने विचारो पर इसरो की छाप बहुत कम पढ़ी है, जो हमेशा कुछ कर गुजरने को तैयार है, जो स्वभाव से निर्भोक और करकड़ तबियत का है और जिसने राजनीति को ब्रपनो जीवन साथमा मे वाथफ नहीं होने दिया।

राजनीति के क्षेत्र में शास्त्रीजी लम्बे ध्रसें तक रहे, पर वहां भी वे प्रपत्ते जीवन सक्ष्य भी क्षोर सजग रहे। देश की विविध समस्याधों के प्रति वे खाज भी सजग हैं भीर उनके दिल में उनका पूरा विश्वास हैं। वे मानते हैं कि भारत में उधार सी हुई राजनीति हमारे देश को वास्तविक प्रापं में समुद्ध और उज्जवल नहीं बना सकती।

—वियोगी हरि

भारतीय सस्कृति से हमें बया बया मिलता है इतका मार देकर शास्त्रीजी भविष्य के लिए जो प्रेरणो देते हैं उससे बनजी स्वतन दृष्टि स्वष्ट विखानी देती हैं। इत जीवन बुत्तान से पाठक महत्व की प्रेरणा या सकेंगे। आरत के लिए नवशिक्षा की मीजना बनाने बातें और संस्था क्साने बाले तोगों नो यह धास्यकथा अवस्थ यदनी टाहिए। शास्त्रीओं ने अपना जीवन मन्य बनाम है।

समस्त जीवन की विन्तनाहमक दौड लवाने वाता चीवा खट्याय खत्यात रोचक मानूम हुद्या। घोषे और पाचवें खप्पायो को साल्तीजी ही लिख सक्ते थे। उनमे ख्रनिष्त-भाव से चिन्तन की स्वतंत्रता व्यक्त करने मे साल्तीजी ने हिम्मत से काम लिया है।

हिन्दी की ग्रीर सस्ट्रत को कविता को कुछ पत्तियां कष्ठ करने लायक हैं। कितता में से चुना हुग्रा भाग विद्यारियों और साहित्य-मेबियों को स्वतंत्र रूप में उपलब्ध होना चाहिए।

—काका कालेलकर

# **ग्रनुकमरिंगका**

₹.	पूर्वकथन					<b>?-</b>
₹.	उप	उपमाग १				
	₹.	जी	दनवृत		५-५२	
			तावना	· ·		
		2.	सत्य की स्रोज	3		
		3	मेरा दूसरा जन्म	8.8		
		3	धगोकुत काम	31		
		٧.	धनगीकृत काम	₹₹		
			नया कार्यकम	88		
	۹.	ਰਿ	दार सार		५३-६४	
			तावना	44	41.41	
			बार सार	20		
	4		तरिक मामग्री		£4-51£	
	4			٤.,	42-442	
			तावना	Ę o		
		-	मेरी डायरियो से	3.7		
		٦.	नयी पृहानी रचनाए	£ \$		
		ą	बातांनाप विवरग			
			महात्मा गांधी	200		
			विनोत्राजी	110		
	٧,	42	स्यवहार			
		8	महारमागाबी	121		
			थी सीताराम संकत्तरिया	१२३		
			श्री भागीरथ कानोडिया	138		
		8	श्री हरिभाऊ उपाध्याव	₹३३		
		×	थी सिद्धगज हद्दा	₹₹७		
			श्री विग्धीचन्द्र चौवरी	84=		
		13,	धी गोकुनभाई भट्ट	888		
		=	थीम नी रतन गास्त्री	683		
			शान्ताबाई	१६३		
		20.	मुधाकर वनस्थलो को बच्चिया	\$ £ 8		
		11	यनस्यला का वा <u>च्</u> यया ग <b>ए, तेस ग्रांति</b>	१६८ १६८		

परि	शिष्ट		२१७–२६२			
	प्रस्तावना					
8	प्रस्तावना २१६ प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग १) की समीक्षाएं					
	१ श्री सीताराम सेकसरिया	777				
	२ थी मुझन हमन	२२५				
	३ श्री वियोगी हरि	23=				
	४ डॉ॰ मदनगोपाल धर्मा	558				
	(थी चन्द्रकिशोर गौम्वामी सकलित	1)				
	५ डां० कुमारी पन्ना दिवेदी	558				
2	छन्द जो पहले भी छा चुके हैं	585				
5	प्रपना मूल्याकन प्रपनी कलम से	388				
ই, বং	पभाग २			263-555		
8	जीवनवृक्त		२६५-२७५			
7	परिशिष्ट		२७६-३३२			
	(क) पत्र-व्यवहार					
	(ग्र) श्रीमनी इन्दिरा गांधी	२७६				
	(भ्रा) श्री मीताराम नेकमरिया	₹=X				
	(इ) कुछ भ्रन्य पत्र	767				
	(ल) पद्यरचना	335				
	(ग) लेख	308				
	(घ) मेरी डायरियों से	₹१७				
	(च) दिशेष परिशिष्ट	3 2 5				
	श्री गोकुलभाई भट्ट का पत्र श्री शकरसहाय सक्सेना के नाम					
٧. ټ	पनी कहानी, ग्रवनी जबानी			333-355		
8	चपनी कहानी, घपनी जवानी	553				
	—मौ० रतन शास्त्री					
7	'सा' की नजर में 'सा' —हीरालाल जास्त्री	935				
ź	रतनती और शास्त्रीओ की एकरूपता —काका कालेलकर	3 € €				
8	रतन-हीरा का अनुठा ग्रद्धैन —दादा धर्मीधिकारी	335				
¥. 5	ालय प्रतीक्षा नमो नमो			805-80X		
€. 5	रत्मक्षजीवनशास्त्र (भाग २)			,		
	तथा ग्रपनी कहानी, ग्रपनी जबानी					
	के विषय मे			¥0€-80₽		
	—डाक्टर कुमारी पन्न	ग टिबेटी		204-cor		
ს. :	उत्तर कथन	10 7 41		80E-865		
				206-016		

# प्रत्यत्तजीवनशास्त्र

भाग २

(उपभागशव२)

तथा

श्रीमती रतन शास्त्री

की

"अपनी कहानी, अपनी जवानी"

# पूर्वकथन

ग्रस्य नृतीया बं० २०२७ वि० ( द मई, १६७० ) को मैंने ग्रपना "प्रत्यस्वीवन-ग्रास्त्र" छपने के लिए प्रस्तुत किया था। १ धगस्त, १६७० को पुस्तक छपकर मेरे हाय में ग्रा गयी। उमी दिन जोवनेर आकर मैंने पुस्तक की एक प्रति को प्रयंत्र करम के स्थान पर अपनी मौं की याद में बने हुए मातृमस्तिर में मां को ग्रपंत्र करके परमसुख का मनुमन कर किया। ग्रस्तय नृतीया ( स० १६०६ वि० ) को मैंने "बग्यसी" गाँव में प्रयना चिमदा गांडा था। इसनिए अक्षय नृतीया को मैं धपना दूसरा जन्मदिन मानता हूँ।

मेरे पास बहुत भी अन्य सामग्री भी रखी हुई थी। जिसके आधार पर मैंने एक दूसरे अंब की रचना करने की करुपना कर रखी थी। पर भेरी वह करुपना मुक्को पार पडती हुई नहीं दिखायो दो। मेरे एक कुगुन बहु भी रहु रही थी कि "अरवस्त जीवनशास्त्र" मे मैं अपने जीवन के एकाथ प्रकरण को स्थान नहीं दे पाया हूँ। मेरी गत वर्ष की क्षीमारी के दिलों में वि० बदन (डॉ० अदनगोपाल कार्या) ने मुक्को ग्रामिनस्त्र प्रत्य मेंट करने की अपनी इच्छा प्रकट की। तब चू कि मुक्ते अधिनत्दन प्रथ मेंट करने की प्रणालो से एक प्रकार की विड है, मैंने बदन की टका सा जवाब दे दिया। फिर उसने कहा कि "प्रश्वकारिक" के आधार पर मैं आपकी सक्षिप्त समीक्षात्मक जीवनो लिखकर आपकी देगा। मैंने कह दिया-नेरी मर्ची।

हुनाचे मदन ने एक पुस्तिका की पादुलिपि मेरे पिछले अन्मिरन (मार्गभीपं कृदणा ६ म० २०२६) के अवभर पर मुन्ने पकड़ा दी। प्रायः उसी समय मेरा मन हीने लगा कि प्रत्यक्ष नैवनकास्त्र की रचना के समय के बाद के साढ़े दीन सामों का ब्रह्माल भी मैं नेत्रों ने ज़िल हूँ है ऐसे गोचते सोचने आधित मैंने अत्यक्ष नोवनकास्त्र के भाग २ को तथ्यार कर दिया। दूगरी और मदन की पुस्तिका ने भी भावत्यक संवोधन परिवर्तन के बाद अपना पूर्ण रूप से निवा। कई एक किलाईयों के कारण दोनो पुस्तक एक असे तक प्रम

में बिना छरी पढ़ी रही। ऐसी हालत में प्रन्य को बषटूडेट करने की इंटिट से मुक्किने प्रत्यक्षत्रीवनशास्त्र भाग २ का उपभाग २ तब्यार करना पड़ा। साथ ही मदन ने भी परि-शिष्ट भाग को बढ़ाकर बपनी पुस्तक को अषटुडेट कर दिया।

मैंने प्रत्यक्षांत्रीवनवाहन (भाग १) में अपने पुराहा पारीक पुरोहित वंग के सकराण्या जोिंगयों का विक किया है। मेरा मन हुया कि मैं सपनी वजावनी का घोड़ा सा विवरस्य भी क्यों न छरवा हूं। रावों को घोषियों से मैंने भाई गगाराम के द्वारा सपने वंग का कुर्मीनामा उतरवाकर मणवा रखा था। उसके अनुमार जोवनेर के सकराण्या जोगों कोट हिसार नरवरण्यह में प्राये थे। कुर्सीनामें में पहला नाम चन्दांत्री का ब्राता है। बीच में हुछ नाम छूट गये मालूम होने है। वहरहाल चन्दांत्री के बाद कमण २ वालात्री, ३ वहरदास्त्री, ४ वीजाजी, १ रेवाजी, ६ खांत्राओं, ७. टीलाजी, त. हरदासनी, १ सागाजी, १० गूजरमलजी, ११ अरजनजी, १२ विकनजी १२ पनजी, १४ मणलबी, १४ श्रीनास्त्र स्थावी (तेरे विजाजी) १६ होरासालजी, १७ सुधाकरजी १व सिद्धार्थंजी के नाम हैं। ये १ पित्रवर्त हुछ ज्यादा) पीछिया हुई। जिनका हुल समय ६०० साली का तो मानना ही माहिए। मैंने प्रपोन पद्धाराजी, विजाजी के नानरों थीर सालरों का राता भी लगाया एक मेरी वादीजी और मां के नानरें। और पीहरों की भी। मैंने यथा सखरों का राता भी लगाया एक मेरी वादीजी और मां के नानरें। और सालरों का नानरों और सालरों का नानरों और सालरों का कि नानरें। की भी। मैंने यथा सखर खों जे भी करायी कि हमारे वेश को कुएक होन कीन से जो में हम सम्बन्ध हुई होन के नानरें। की भी। मैंने यथा सखर खों जे भी करायी कि हमारें वेश सालरों का नानरों का नानरों का स्वार्य कहा है।

प्रत्यसतीवनणास्त्र (भाग १) का उद्देश्य 'शत्यक्ष सत्य' का विवेचन, मेरी ग्रयमी
प्रमुप्ति का परिवर्जन और अपने चारित्य के निरुष्ण के प्रतास प्रियनों का रुजन
वताया गया था। प्रियनों के रुजन में "स्वान सुक्ष" भी अन्तर्वाहित है। भीर प्रत्यक्ष विषयम में दताते हुए उन हुमरे सोगों के बारे से भी कुछ न कुछ बताने में भ्रा ही जाता है जिनसे मेरा अपने जीवन में विशेष कांत्र पड़ा। जो उद्देश्य 'शत्यक्षजीवनज्ञाहक, भाग १ का चा सो ही इस नाग २ (उपभाग १ व २) का मानना चाहिए। यन्त्र के भाग २ के साथ उर-भाग १ के उपमाग २ जोड़ देने से ग्रव प्रत्यक्षजीवनज्ञाहक के दोनों भागों में मेरे जम्म (नववर, १८६६) से लेकर जुलाई, १९७४ तक के ७४॥। सालों के इतिवृत्त का समाविश हो गया है।

थी काका साहेब कालेलकर की प्रेरसा से शी॰ रतनबी ने भी "यपनी कहानी, प्रवनी जवानी", कुछ स्थय निस्कर, कुछ दूसरों को बोलकर बताकर उनमें लिसाकर तस्पार करवी। वृक्ति रतनबी का भीर मेरा जीवन एक ही हैं उनकी कहानी को भी प्रत्यक्षत्रीयनशास्त्र के भाग र (उपभाग १ व २) के साथ नत्यों कर देना ठीक समभ्य गया है।

प्रेमीननी का कुछ भी मनोरजन इस तमाम सामग्री को देख बाने से हो जाएगा तो हम दोनो कृतार्व हो जाएगे। इतिक्रमम्।

उपभाग १

# जीवनवृत्त

# जीवनवृत्त

#### प्रस्तावना

प्रत्यक्षवीवनवान्न (भाग १) में क्रम १८६६ से लेकर १६७० के प्राप मध्य तक का मेरा जीवनवृत प्रकाशित हो चुका है। बाद के साई तीन साखों (अक्षय तृतीया म २०२७ वि. से मार्गगीर्थ कृष्णा है स २०३० वि तक) का वीवनवृत प्रत्यक्षवीननवाग्य के इस भाग २ (उपभाग २) में प्रकाशित होने जा रहा है। १ खासकर पिछले साउँ तीन सालों में को गंधी मेरी "सत्य की खोज" का परिलाम दिया गया है, २ "मेरा दूसरा जम्म" नाम में मेंने दिल के सक्त होने का विवरण दिया गया है, ३ "मंगा दूसरा जम्म" नाम में मेंने दिल के सक्त होने का विवरण दिया गया है, ३ "मंगाकृत काम" सीर्यक क्ष्मपंप में (य) वनस्ती विद्यापित, (व) मातृत्रदिर विद्याप्य को वोवनेर चौर (म) लोकवाणी की वात है, ४. "प्रवाद्यक्ष काम" भीर्यक क्षम्याय में (य) ववपुर में हाईकोट वेच, (व) राजन्यान में सराववन्त्री, और (म) खांचिक भारतीय सहसति मच के वार में लिखा गया है, और ५. "म्या वार्यक्रम" मोर्थक क्षम्याय में मुख्यत्या स्वाधीन ग्राम नगर - संगठन के धीर के प्रतावा चुनाव प्रकरण का उल्लेख भी है। सवस्त्व पूछा जाए तो सम्बन्धित साई तीन सालों के विवरण के तीर पर लिखने के लिए मेरे पाम कुछ विशेष नहीं या। कुछ विशेष पर हो सां होता भी तो वह मेरी "हार्ट ब्रेटक, हार्ट केट्योर" की अवकर वीमारी में लुप्त हो गया। वहरहाल जो कुछ मेरे पाम निकता उसे में भटका को भेट करता है।

होरालाल शास्त्रो

# जीवनवृत्त

## सत्य की खोज

गाहिर हो चुका है कि मैं "प्रत्यक्षवादी" हूँ। वो प्रत्यक्ष है सो प्रत्यक्ष है। उस प्रत्यक्ष को कोर्ट अम बताए तो बताने वाला जाने। वो मुक्ते निरंग दिखायी देता है उने कोर्द प्रतित्य कहे तो बहू। वो गोस है, वो दिखायी ही नहीं देश है उसे निज की अनुभूति के बिना नित्य कैसे मान निवा जाए ? मैं एक जगह पूछ दुका हूँ—

> अनित्य हो जीवन जो हभाग तो नित्य क्या हे यह तो बताओ ? प्रत्यक्ष को नक्बर क्यों बताते पर्गेक्ष क्यों नित्य हमे बताओ ??

प्रदेने वेदादिमारको में प्रजान का, दहां का बहुत अधिक विदेषन किया गया है। प्रपुक्त गरदों का थोड़ा बहुत अर्थ मुक्त जैसे अपिटत की समक्त में भी मा जाता है। पर बास्तव में तारपर्यार्थ बचा है सो जिनकी मनक में आया होगा आ गया होगा। गीता यह कह कर दूर ही जाती है:—

> इन्द्रियाणि पराण्याहु-रिन्द्रियेभ्यः परं मनः । मनसम्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तुसः ॥

"भो बुढ़े. परतस्तु स" कहा कि बात खत्म हुई। श्री अरविनर ने भी जितना सा मैं जानता हूँ मक्ति पर ही जोर दिवा है। मिकि छे, श्रद्धा से दो कुछ भी माना-जाना जा सकता है, रवत न्यूर्ति से किसी को आरस्य सांस्मात्कार हो आवा होचा हो वह भी अनग बात है पर ग्राजकल मेरा प्यान जहनतम विषयों को चुद्धि से समझने का यल करने की श्रीर है। विस्का एलाइक जैंगा होगा सांगते आ जाएगा।

मैं स्वय तो पूछता ही रह जाता हूँ :---

न आदि है तो नींह अन्त भी कही, न कल्पना की कुछ वात है कही ? विचार भेरा चलता नही कही, मुझे बसाओ यदि पता हो कही, ??

और

अजान में हैं मुझको पता नही, सुजान जो हो उनको पता नहीं। अनादि वोलें विन अन्त वोले, रहस्य क्या है कुछ भी पता नहीं।।

भनुंहिर ने कहा है 🖚

दिक्कालादयनविच्छन्ना-नन्त चिन्मात मूर्तेदे। स्वानुभूत्येकमानाय नम शान्ताय तेजसे।।

स्वानुमूर्ति ही जिसका एकमात्र प्रमाए है— कहने ही वो "वार्ता ही स्थात हुँए से रिर जाते है।" मैं तो यह कहता ही रहता हुँ कि पता नहीं कौन किनना चानना है, पर जिनने जान निया है वह यदि मेरे सामने या जाए तो भी मुक्तकी बता देना, सनभा देना उनके वस की बात नहीं हो सकती। भीठे-सद्दे का स्वास श्रुद कार्ने से खुद के प्रनुभव में या जाएगा, पर एक के द्वारा कोई सा भी स्वाद दूगरे की बताया नहीं वा सकता।

जो कूछ भी मेरे मूनने, पढ़ने, दैसने मे ग्राया है उस पर मे में तो लाक भी नही

प्रोर गीता को पोड़ा बहुत देखा है। भविष्य में विशेष श्रव्ययन करके दर्गन के तत्व को प्रात्मसात् करते का भरा विचार है। पर मुक्को विशेष आजा नहीं कि बुद्धि के द्वारा मुक्को परमतत्व का ज्ञान हो बाएगा। इसलिए मैंने एक बार तो ह्वार कर यह भी कह दिया—

> क्या खोजने को हम दूर जातें, पड़ोस में भीतर क्या न पाने । अनन्त में जान किताक पाने, क्यों जान के भार क्या चढाने।।

यों तो सामतौर से सभी लोग राम का, अगवान का नाम तेते ही हैं, देवी का— भगवती का स्मरण भी करते ही हैं, पर कीनसा भगवान ?कीनसी भगवती ?कहां भगवान ? कहा भगवती ?यह पता जिस किसी को होगा उसी को होगा । याथीजी ने एक बार कहा— भगवान "सत्य" है, फिर कहा—"सत्य" हो भगवान है । पर जैसे भगवान का पता नहीं, मैसे हो सत्य का कहा पता है ? हम जिसे मान तें यहां हमारे लिए भगवान, वहीं हमारे लिए भगवान हैं ।

यह मब कुछ होने हुए भी सत्य की—परमतत्व की—कोब को मुक्ते यथायांकि जारी राजना ही चाहिए। अंभव है जिसी बिन कुछ समक्त ये बा जाए। कीन जाने "राई के स्रोले ही पर्वेत हो तो ?" चसते चलते किसी दिन हो मिलत पर वहुँच ही सकते हैं। मुताते चुनाते जिसी दिन तो सुनाने वाले की मुनने थाला सुन ही लेया, यदि कही वह शिंसा बैठा होगा तो "क्यों तो बीनदयाल के मनक परेगी कान।"

महारमाणों की बात बहुत मुनने में आती है, कुछ "महारमा" मेरे देखने में भी आपे हैं। पहुँचवाद महारमा अर्थात एरआना को प्राप्त किये हुए महारमा भी होते बताये-पर के सामद धरमें जान का प्रचार करते नहीं फिर सकते। दुसरे, सिद्धि प्राप्त भोगों की बात भी सुनी है। हूर पष्टी हुई बरनु को मणवा मेता। एक बरतु को स्वयं मान से हतरों मरतु का कर दे देना!' रोगी की छोर देवकर, उबको छुकर निरोप कर देवा'' इत्यादि। और जाद्दारों की बात भी बहुत मुनी है—कभी थोडा बहुत बाद तैयने में भी भागा है। पर कैसे बाद की वहत मुनी है—कभी थोडा बहुत वाद तैयने में भी भागा है। पर किस बाद की बीत ही "सिद्धि" की बात भी मेरी उमक्ष में तो आपीं नहीं है। हम जिस विषय को जानते नहीं, उसकी काट नहीं कर सकते मी उमें सान भी कैसे कें ?

इम सारे कम्बट की कल्पना में मुक्की किसी प्रकार की तकलीफ या परेशानी महसूम होती हो सो यात नहीं है। येनि तो इतना तो समग्र ही रखा है, मान ही रखा है कि जैसा समग्र में आदा हो बेसा अच्छा करना, फलाफल की पिन्ता नहीं करना, भीतर आपित राजा में मुख का अनुमब करना। आपनी जाने युत्त सोचना नहीं, दुरा करना मही। इसने पहले बन्म हुआ था कि नहीं, इसके बाद पुनंजन्म होगा कि नहीं, सुपके बाद पुनंजन्म होगा कि नहीं, सुपके सोची सोची है कि नहीं, इस कमें जो पड़ना है ?

यह जो कुछ दिखायी देता है हो कैसे बन गया, यह अपने आप बन गया या हिसी ने जनके है । पर एक वडे में बडे पैजानिक लोग बड़ी खोज में लगे हुए हूँ—वे विश्व नमी खोज कर डानते हैं । पर एक वडे में बडे पैजानिक ने यह कह दिया कि हम सोग-कैसे में से बहुत बहुत थोडा अनते है, पर 'क्यों' सो बिल्कुल जरा साभी नही जानते तो विज्ञान का किस्सा एक तरह से तो खरम सा हो हो जाता है ।

ऐसी हालत में हर एक के पाम अपना अपना महात्मापन है, अपनी-प्रपत्नी मिदि है, प्रपना-अपना जादू है और है अपना-अपना विज्ञान भी अर्थांद् जिसकी पौती जिनना जो कुछ ग्रा गया होगा ?

मैंने तो अपने घरपतान घथवा प्रज्ञान को (घपनी सस्य की खोज के परिगामो को) पिछले दिनो इस प्रकार कह डाला है —

#### (१)

कितना लमु वीज विज्ञाल वना, व वटवृक्ष कहाँ से हमें न पता। किस चीज ने रंग विरंग वना, यह मोर विचित्र व्हरा न पता। प्रकृती न पता निह प्राप्य पता, नीह जीव पता निह प्रृंश पता। हमको कुठ भी न उहस्य पता, हमको कुठ भी न उहस्य पता।

(२)

नहि जानत त्याग-विनास कथा, नहि जानत है सुख-दु ख नथा। नहिं जानत जीवन-मूख कथा, नहिं जानत जच्यन-भोक्ष कथा।। नहिं जानत च्यान-भोक्ष कथा।। नहिं जानत पुरव-जन्म कथा। नहिं जानत पुरव-चन्म कथा, नहिं जानत ज्यानिकथ्य कथा, (3)

बहु शास्त्र लिखा बहु तंत्र लिखा, स्मृति-वेद-भुराण जनन्त लिखा । बहु मूत्र लिखा वहु गीत निखा, उपनिपद् माहि बहुत लिखा । कुछ बाँच लिया कहते मुनते, कुछ भाँप लिया कुछ भान हुआ । अनुभृति नहीं नहिं भक्ति हुई, नहिं कमें हुआ नहिं ज्ञान हुआ ।

### (x)

चनकारी सारी बहुत हम बाते सुन रहे, अनेको ही मिद्धी-विषयक कथाएँ सुन रहे। कई जादू टोणे सुन सुन यके से रह वये, सभी ऐसी वाते विन समझे-बुझे रह गये।

#### (١)

समता-शान्ति-प्रसाद मे निहित ब्रह्म का ज्ञान । आत्म-एकता-मोक्ष का उनमे होता भान ।।

#### : ?:

# मेरा दूसरा जन्म ?

पूरा ठीक मे पता नही कि क्या क्या कारण हए होगे २४-२५ मार्च, १६७२ की ग्रघंरात्रि मे मुफ्ते दिल का बेहद सब्ल दौरा पड गया। मुक्तको अपने शरीर के बारे में फौलाद का होने का विश्वाम, श्रामिमान था। ऐसे शरीर में ग्रवस्थित मेरे हार्ट को भी म्बभावत बहुत मजबुत माना जाता था । व मेरे, व मफ्ते जावने वाले इसरे लोगो की समफ में भाषा कि मै और दिल का दौरा इन दोनों का कैमें सम्बन्ध हो गया होगा ? जैसे चमत्कारी इस से मुक्ते दौरा पड़ा वैसे ही चमत्कारी इस से मेरा इलाज भी एकदम निविधन हुन्ना । डॉक्टरो ने मुभे ब्रादर्श पेशेण्ट करार दिया, क्योंकि मैंने उनके कहने के विपरीत निम, राई े भी इधर-उचर नहीं किया । जैसे हॉस्पिटन से रहा, वैसे ही जयपुर से घर पर रहा, वैसे ही किर बनस्यली आकर रहा । डॉक्टरों में इज्ञाजन लेकर में अहमदाबाद, बम्बई, वैगलोर, मद्रास तक लम्बा दौरा भी कुणलक्षेम से कर धाया । ११ महिनो ये १३ बार कार्डियोग्राम निया गया । हर कार्डियोग्राम विद्युने से अञ्द्या स्नाता गया । आसिर मे मार्च, १९७३ के पहले हुपते में जो कार्डियोग्राम लिया गया वह जायद इतना बदिया था कि उसे देखकर डॉक्टर सधवी ने कहा कि ग्रब ग्रापको कार्डियोग्राम लिवाने की अरूरत नहीं है, चाहे तो ६ महिमें बाद लिया लेना। धीरे-धीरे करके प्रतिदित १, २, ३, ४ मील तक घूनता हो गया। भोजनादि में जो बन्दिकों लगायी गयी भैने अपने आपको उनमें पूरे तौर पर वधा हुआ रखा। मैंने प्रपते काम-काज को भी सीमित रखा और अनि परिश्रम से भी ग्रपने बापको बचाये रखा । मुम्मको बड़ा सनोप हो गया था और डॉक्टर सघवी भी बहत खश्च थे ।

पर १२ मार्च को जाम के समय मुक्को स्वानक लगा कि मेरे सांस का मन्द मन्द सा उठाव होने लगा है और खाती जुरू हो गयी है। यह वही दिन वा जब मैं साल भर पहुने वाराएगों में जबदेख दरत और दुखार से पीडिज हुमा था। वहुत बोधी देर में सब फूछ ठोक हो गया और मुक्को सोनने वीमा, करने जैसा कुछ तवा हो नहीं। होश धादि न रतनमें को मुक्को बान बताने ही जवपुर खबर कर वी थी गो वे रातों रात जनकर वनम्यती प्रा गयी। वे सबेरे चवानक दिखायी वी तो मैं बहुत चकराया। रतननी के प्राप्त में मुक्को १३ मार्च को जवपुर जाना पड़ा, पर डॉक्टर को दिखाने की मुक्को जरूर नहीं महमून हुई। दूसरे दिन १४ मार्च को रतनवी की समय मुक्को चुनवा भेजा। देखकर उन्होंने हुक्म सुनाया न प्राराम करो, पूजन वन्द करो, मार्चिक वन्द करो, समुक देवा भीर ले ली। उत्तरे वाद मैं महम्म बाराम करो, पूजन वन्द करो, मार्चिक वन्द करो, समुक दवा भीर ले ली। उत्तरे वाद मैं मन्द वाद डॉक्टर सपदी के पास वा चुका हूँ, पर बच्चल लगायी हुई वित्यों सभी तक वर्गों की त्यो कायम हैं। पता नहीं कद के ये एक हवार वित्यों लागू रहेगी? भीर कब तक के र सारी हमारी जाएं पहीं। देवी

मेरा वर्ष गल चुका था। पर मैंने यह मान सिवा था कि कैसे ही मैं वन गया हूँ भीर पेरा दूसरा जम्म हो गया है। किसी अनुभवी पित्र ने कहा कि धाएकी उन्न कम से कम रे०-१२ साल वह गयी है। मैंने समफ लिया था कि मुफ्को जिन्हगी भर सावधानी राशी, लाने-नीने की बाजादी नहीं रहेगी। धसीमित परिश्वम नहीं करना होगा, स्थादि। पर दुबारा हुन भी गड़बड हो सकती है और किर से बन्दिन से मनती है यह करणता मैंने कभी नहीं की थी। पिछनी बार ठीक हो जाने पर मेरी जवान से एक दिन निकल गया-वह तो मैं ठीक हो गया, कच गया-व नवता तो क्या गवन हो लाता? रतनवीं को यह यात बहुत नुगे सभी थी। वे पहले ही बहुत करी हुई थी, बाद में भीर भी ज्याबा वर गया। युक्त है एक कि का छा जर के तिए भी वर विभा कुछ नहीं तता था। यर मैं श्रव रिक्त से लाह के हिस्स हो हैं। किसी को पता नहीं कि स्वस्थ ने स्वस्थ हार्ट में भी कब वाद हो लाए? जिसे एक बार जोर का गहीं कर स्था हार में भी कब वाद हो लाए? जिसे एक बार जोर का गहीं का सहा लाए? जो हो, तिस्वत नहीं हुए भी मैं प्राव्यक्त हुँ कि मैं पत्र बाई कामों में से कुछ प्रतिवाद मानो की से पत्र में सुव रहत हो हुए भी में प्राव्यक्त हुँ कि मैं पत्र बाई कामों में से कुछ प्रतिवाद मानो की से कुछ प्रतिवाद मानो की से कुछ प्रतिवाद मानो की सो जकर इस जीवन में पुरा कर पाऊ मी तो जकर इस जीवन में पुरा कर पाऊ की भी से से कुछ प्रतिवाद मानो की सो जकर इस जीवन में पुरा कर पाऊ की

हॉस्पिटल से घर पहुँचने पर मैंने अपनी बीमारी म्रादि के बारे में एक लेख जैसा लिखा था उसे में प्रेमी पाठकीं के लिए ज्यो का त्यो नीचे उद्ध त कर देता हूँ।

#### "वनस्थली से हॉस्पिटल - हॉस्पिटल से नवजीवनकुटीर" (जब भेरा इसरा जन्म हथा माना जा मकना है)

"मात्र मुकको हॉस्पिटन से घर माने की छुट्टी निल गयो, इस मार्त के साथ कि मैं तिस तरह से हॉस्पिटन में रहना या, एक महीने नक उसी तरह मुम्हे घर पर रहना होगा और किसी भी हालत में मैं जयपुर कहर के बाहर नहीं आऊँगा ! इसका मतलब पर में नजरवन्दी '' पैरोलपर यदा कदा जाँच के लिए हॉस्पिटल जाना होगा !

प्रनुपातत. १-६ महीने हुए होये बब मैंने अपने आरीर को ठीक करने के लिए एक नम साफ्त अपनाया था। उनका नदीजा यह हुआ कि मेरा बजन १८० पीण्ड से पट कर १६४ पील्ड हो गया। वजन को ठीक करने की नुख कोशिया की गयी तो वह बडकर १७० पीण्ड तक पहुँचा। हॉस्पिटल में बाखिल होने के दो हफ्ते बाद मेरा बडन घटकर १४४ पीण्ड हो गया।

प्रश्वाजन जनवरी में मेरी कक्षर के वीवीं भोर देरें होने सागा था प्रीर कीचें काचे में मन-जन भी होने सागे थी। देर जनवरी हे देन मार्च मक ध्रव्यस्थता और निर्वतता प्रमुक्त मनते रहने के वाबद्व में बेहद बीड-चूच करता रहा। १२-१३ मार्च की मध्यराधि को बनारम में मुमको बडे जोर के इस्स साथ और तेज बुखार हो गया।

बनारस से लखनक, दिन्दी, जयपुर होता हुमा मैं २० मार्च को बनस्यली गहुँथा। वहाँ पर मैं बारेक दिन ठीक-ठाक निम नया। रतनजी मादि का मध्यन्त भागह था कि मैं प्रयान मिकिन के कम्म करवा मूँ। पर मैं यहाँ सोचता रहा कि मार्च समाध्य के बाद पीरत में पेकअप करवाकर बाद में झावस्यकतानुसार कार्य के साय-साथ विश्वाम कर लुगा।

पर मेरा मोचा हुआ कुछ होने बाता नहीं था। २४ मार्च को रात में मैं देर ने भीतन करके लेटा। सदा की भांति मुन्को तुरस्त नीद नहीं आधी और माम का हेता बढ़ते नन्ता। मैंने स्वर्णकत एकाच पर्य गुननुनाना चाहा, पर पाबाज नहीं निकनी। सास का बेग कड़ना ही गया। मैं फर्ज़ पर साकर पूर्व के तीचे बैठ गया।

दिर मार्च पण्डे वक सबर्च करने के बाद में उठा ही सका और मरकता हुआ हेती छोन के पान पूर्वमा। ठीक से बायन ती ही एया, पर बवान बन्द हुई मातून पड़ी। मैं न तो "गहु" मार्च ही बोद सका धीर न यही कह सका कि "इयर साता"। की सी "मार्ड" ममक तथी कि फोन मेरा है शीर हरीज को नाथ शेकर वह मेरे पान सा गयी।

पपने बनम्बनी के शंबटर साहब १०--११ मिनिट से सा पहुँचे। जनके उपचार ने पर साम का बेग यम यथा। नव नोगों को सेजकर में मो यबा और मुफ्को दो बाई यम्टे प्रच्छी नीद सा सथी। मेरी सांग्व सुनी तो मुम्को नामने सम्बन दिखायी दिया। मैने उनने कहा- त्रसपुर के निष् मोटर सम्बा।"

थोंगी ही देर में डॉस्टर राज हुवारा था गये और उसी सथय भीने प्रोफेसर साहब, रामेशबर, सन्वतन, धकु, हरीज को बुनवा लिया। बटी हुई हुवामन बनाने में मुक्ते शायट घटा भर तब यया होगा। प्रोफेसर साहब थादि से बात करके हाम-पीत्र बोकर, कपड़े बदल कर में उपपुर के लिए रवाना हो गया। मैने खासतीर से डॉ॰ रान, रामेखर धौर हरीय को साथ में लिया। मैं एकरम प्रसावत्त डॉ॰ एम॰ एम॰ सबसे के यहाँ वहुँचा। डॉ॰ सबसी ने देखा तो मेरा ब्लड-प्रेशर बहुत ठीक निकला। पर काडियोधाम देखकर डॉक्टर साहब बोले "हार्ट प्रटेक है, तुरन्त हॉस्पिटल पहुँचिए मैं भी कपड़े पहिन कर था रहा हूँ।" "हार्ट प्रटेक" सुनकर मुके हेती सी था गयी।

हॉस्टिटल पहुँच तो मेरे लिए पहिचेदार कुर्सी तैयार मिली। मैंने कुर्सी पर बैठने से इनकार किया। पर मैं डॉक्टरों के बस में हो चुका था। मुक्को डॉ॰ मण्डारी के वार्ड में लगे हुए चरा के कमरे में लिटा दिया गया और हुक्स मुना दिया गया। "हिली-हुनो मही, बोलो नहीं।" मैं यह सब कुछ समभा हो नहीं, पर मुके तामीस करनी पड़ी।

मैं बनस्थलों से पेशाल करके रवाना हुया था। बाद से कई बच्टो तक मैंने पेशाल को रोके राजा जिससे मेरा पेशाल बन्द हो गया। कॉटेज नं = मैं मेरा केरा लगा। रामेश्वर, हरीश, डॉक्टर राब, भूषाकर, सोहन बादि सभी मेरे पास थे। दिल्ली फीन से खबर मिलने पर रतनजी, मोहन और श्याम भी श्रा पहुँचे और कॉटेज में घर बस बया।

पेणाव रुकने से मुभको बेहद तकलीफ हुई । बॉक्टरों ने हारकर कैयेटर सगाकर पेणाव कराया। उस समय मैंने देखा कि भेरे कमरे में बॉक्टरों की फौज खडी है। बॉक मचबी मादि के चेद्दरें उदास दिसलायी दे रहें थे। ऐसी कमजीरी आ गयी कि मैंने दूसरों के सहारे के बिना पराग पर उठकर बैठने में अपने आपको ममनर्ष पांधा।

ऐसी हालत में भी भी यही सोचता समस्तता रहा कि मेरा बरीर वया का है, मेरे 'हार्ट बर्टक' हो नही सकता। पर मेरे सोचने समस्त्रेन की नया कीमन हो सकती थी? पत्तम पर लेटे-लेट ही मलमूल स्थापना पडा, पानी तक से खर्दाच हो गयी। इम, खाझ, फल के रस तक से नफरत हो गयी। 'चनडमूगर' बढ़ने के साथ-माथ यूरीनस ट्रेनट में इनफेनवान ही गया था।

ग्रीर फ़िसी तरह का कम्प्यीकेनन नहीं हुआ। तीन-चार दिन निकल गये तब डॉनडर संघवी आदि के चेहरी पर रीनक दिखायी देने लगी। पूरा एक महीना निकल गया, मै कुछ लाने-पीने, थोड़ा धूमने लगा। काडियोग्राम उत्तरीत्तर अच्छे आते गये। चेहर के ऐनसरे नी प्रच्छे आये। प्रॉस्टेट भी ठीक ठाक पायी गयी। व्वडगुगर कन्ट्रोल में ग्रागयी।

६ मई को चौथा कार्डियोग्राम चाहिए जैसा था गया जिसे देखते ही डॉ॰ सथवी ने बहुत चुन होकर कह दिया कि अब आस्त्रीजी को कल पर जाने की छुद्टी है। सैने ७ मई को सबेरे ७-५५ पर कॉटेंब के कमरे से निकसकर ५-६ बीमारों को देखा। फिर गुरू बाले छोटे कमरे से विदा खेकर वापिस साया। आखिर ८-२५ पर कॉटेंड से विदा हो गया। १८ ] प्रत्यक्षजीयनज्ञास्त्र

िर देव दर्गन करना हुआ और डॉक्टर सम्बी के घर की कार्डियोग्राम मशीन से विदा लेता हुमा में १०-२५ पर नवजीवनकुटीर ग्रा गया। मुखे वही देर से मानून पड़ा कि दिन ना दौरा वजे जोर का था। सक्त दौरे के वायबुद में सही सलामत हॉस्प्टिय पूर्टेंग गया और वहाँ कोई खान विच्न नहीं ग्राया, यह सब बुख चमत्कार जैसा हुया है, ऐमा डॉक्टरों का कहना है।

> बायी ठिकानं अब अक्ल मेरी, बो गर्व मेरा गल ही गया है। आगे रखूंगा सब सावधानी, बो भी भया सो गुभ ही भया है।

होस्पिटन में पड़े रहने के दिनों में गुनमुनाते-मुनसुनाते सेरे द्वारा मीचे तिसी काहय-प्यना ही गयी, जो उदयदाम होने हुए भी सर्वशैन नहीं कही वा मकती। संदोजी में बायद ऐसी कविता को ही पोड़ी कहने हैं। इस कविता से बेरा, टोक्टरों का तथा भीर भी कई लोगों का बहुन मनोरदन हो चुका है। साथे भी मुत्दाों का मनोरदन होता रहे इस कवाल में में समनी वन कविता को नीचे वे रहा हैं.—

#### दिल का दौरा ? दिल के लहरें ?

(१)

बनस्थनी में रात को, लेटा खाना खाय। सास अचानक वढ बया, नीर अवाज न आय ॥१॥ तुरंत इंग्डर आ गये, तुरंत किया उपचार। साम अचानक वढ बया, नीर अवाज न आय ॥१॥ तुरंत इंग्डर आ गये, तुरंत किया उपचार। साम वेज गायव हुआ, सीया विना विकार।।२॥ उठा निपट कर लेव कर, जयपुर पहुँचा आय। दिल का दौरा वां मुझे, सटपट दिया बताय ॥३॥ हॉस्गिटल में जा गया, "कमरी" दिया लिटाय। "उक्कड़ी" माँही डाल कर, कॉटिज पटका लाय ॥४॥ मैं तो आया स्वस्थ था, रखं आन्त विचार। डॉक्टरों की फीज ने, किया मुझे वीमार।॥४॥

हिलो मत इलो मत, पड़े ही रहो। मिलो मत हुँसो मत, अडे ही रहो।।६॥ पदो मत लिखो मत. न सोचो न ध्याओ । समाधिस्थ की सी. समाधी लगाओ।।७॥ वोलो न चालो, न मूनो सुनाओ। इगारों मे यभी वात. जानी जनाओ ।। हा। चिकना मीठा छोड दो. अरु छोडो नमकीन । वाकी सारी छट है, मत छओ ये तीन ।।६।। वाहर भीतर 'संतरी', वैठे खडे अनेक। मौमंबी दाडिम मिली, मिली "संतरी" एक 11१०11 पड़े -- पड़े ही मल -- मूच त्यागी। स्नानादि का व्यर्थ विचार त्यागो । ११।। ऑक्सीजन लेते न्हो, नाथ नाक में डाल। कैथेटर करता रहे, बार-बार बेहाल ॥१२॥ दवा पर दवा, तुम लिये ही चली। मुई लगे तब न हरगिज टलो।।१३॥

(3)

नाटी देखो लंग अरु, ब्लड प्रेगर की चाल । ई० सी० जी० से फरिक्षते, जाने दिल का हाल ।।१४॥ खून और पेशाव का, होय टेस्ट पर टेस्ट । यर्मामीटर 'मृंह लगा,' लगता मृझको वेस्ट ।।१४॥ आज गुना होगा जमी, ई०एस०आर० कमाल । 'मृढों का मृढा' मृजो, नही बैठना ढाल ।।१६॥ देवदूत आते रहे, प्रात: सायंकान । मैं उनसे पूँछू नही, क्या है मेरा हाल ।।१७॥ (8)

वात करें वे एक सी, जान मुझे अनजान । हां हूँ मैं करता रहूँ, इसमें क्या नुकसान ।।१८।। 'जिकित्सक नमस्तुम्यं, क्षिपताश्चेपमानव । त्विय वित्यस्तमारोध्यं, कृतान्तः सुखमेषते' ।।१६।। असी हुँसी झूठों करी, म्हारी राखी सार । पिकित्सको याँको घणो, मानू मैं आभार ।।२०।। पण अव थे वेगा करो, दर्शण देणा वन्द । धाका दर्शण बन्द हो, तो बीमारी वन्द ।।२१।।

(٤)

दिल को दोरो सकत छो, खिलवो हुयो कमाल । वैपर पूंच्यो कुसल सूँ, सो भी हुयो कमाल ॥२२॥ विना विकन विद्या चत्यो, छह हफ्ता उपचार । साता पूछण आ गया, प्रेमी एक हजार ॥२३॥ अस्पताल छुट्टी करी, घर में पूर्यो आय । नजर कैद पण हो गयो, यर का पहरा माय ॥२४॥ अक्कत ठिकाणे आ गयी, निकल गयी गुँच्याम । रखणो पडसी जापतो, अर आतम विस्वास ॥२१॥

शीट. — इस ऊटपटाग कविता की रचना १४—४-७२ से ४—४-७२ तक के समय में शुॉस्पिटल में मिस्तर पर पड़े-पड़े हो गयी। 'क्यरी' का बर्प छोटा कमरा। एक 'संचरी' का बर्प छोटा कमरा। एक 'संचरी' का बर्प पहरेदार, दूसरी का बर्प छोटा सन्टरा। यमोनीटर मुँह में लगाने में जोर नही छाता है छोर '"हुँह लगे" जोग बच्छे लगते ही हैं। हैं • एस • धार • का अच्छा परिएगम बाने पर मुकको मूटे पर बैठने की इजाजत मिलने वाली थी, पर इवावत उम दिन नही मिली तो मैंने खंगुर सर्टे वता दिये। संस्कृत का क्लोक (ख॰ १९) वाहर में जिया हुया है जिसका तात्पर्य यह है कि चिकित्सक पर अपना भार डालकर बमराज मीज में एहता है।

यह सब कुछ होना था सो हो गया। पर भुके सगता है कि इस दरावने विष्म के बाद मेरी हुटी हुई उम्र की रेखा जुड़ गयी है श्रीर मेरी उम्र बढ़ गयी है। पूरी सावधानी के धाव निमते रहना, जोसिम उटाये किना जितना बने उतना काम करते रहना-चम्र यही करने का है, क्योंकि यही डॉक्टरों की राय है श्रीर यही रतनवी धार्य का हुयम है। : ३ :

## अंगीकृत काम

मेरे धङ्गीकृत कामो स वनस्थानी विद्यापीठ का प्रमुख स्थान है तो ही पिछले साढे तीन सालों में रहा । विद्यापीठ के १६७०-७१ के कार्य विवरख में मैंने निम्न टिप्पणी लिखी थी '---

गहरे विचार के बाद में इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वर्तमान शिक्षा प्रशानी की नकारास्त्रक इस से प्रातीचना करने से कोई लाभ नहीं है। वर्तमान स्थित में इस राष्ट्र-निर्माण-कारी सिक्षण-कार्म में विस्तर्भनी रखने वालं हर व्यक्ति की प्रवती शिक्षण-कुछ, न कुछ ठीस साम करना चाहिए। मेरे विचार में बादने शिक्षण्यवस्था वह होगी जिसमें प्रविकाश साम सराम चाहिए। मेरे विचार में बादने विस्तर्भया वह होगी जिसमें प्रविकाश साम स्थित को माध्यविक या उच्च माध्यिक दस के बाद किसी न किसी उत्पादक कार्य का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए ताकि कड़के और लडकिया राष्ट्र की सम्पदा बढ़ाने वाले कार्मों में नग सर्के। यह उभी संभव होगा जब कि देश की विद्या और प्रविध्यवस्था में सामजन्य हो। तथाकीण्या उच्चित्रकार प्रवत्त कार्यों विद्यविद्यालय में प्रवेश की अनुपति मिननी चाहिए जो व्यावहारिक और उत्पादक कार्य के लिए निर्मारित कठिन परीक्षा को उत्तिर्ण करने के प्रच्यान उसके निए यस समके जाएं। इस सबके लिए शिक्षा के दूर वाचे में कान्तिकारी वरिष्यंन करना होगा, लेकिन ऐसा रोस् वर्तन शिक्षा को विष्य महस्त कार्य वर्तन शिक्षा को विषय महस्त का विषय म समभने वाले स्वावारी वायद ही कर सके।

इस हिंद से यह बावश्यक है कि हडनिश्चयी और श्रम्रगामी व्यक्ति गैक्षाणिक पुन-निर्माण के कार्य में ग्रपने खुद के बलबूने के अनुसार कम ज्यादा जैसा भी हो सके हिस्सा बटाए। जहां तक बनस्थली की बात है, यहां पर छोटे रूप में ही सही जो बुद्ध मभव और व्यावहारिक या उसे करने का प्रयत्न किया गया है। विद्यापीठ की योजना है कि निकट भविष्य में ही कुछ ऐसे उद्योगों का विकास किया जाए जो कुशलतापूर्वक सीख लेने पर लडिकयों के लिए घर पर रहने हुए भी पूरे समय का बा ग्राशिक रोजगार दे सकें। तब मबधिन लडकियों को विज्वविद्यालयों में जाने की जरूरत मालम नहीं होगी। वनस्थली में शीध हो एक गृहविज्ञान महाविद्यालय भी स्थापित किया जाएगा जिसका भी एक लक्ष्य लडकियो को जल्पादक प्रधा में जिल्ला प्रदान करना भी होगा। साथ ही शारीरिकशिक्षा के डिप्लोमा व डिग्रिया देने की व्यवस्था भी की जाएगी, जिससे ऐसी शिक्षिकाए तैयार हो सकें जो भारतीय महिला-समाज की शारीरिक क्षमता और स्वास्थ्य की सुधारने के लिए लगन से वार्यंकर सकें। उपरोक्त तीनो प्रयोजनाए विद्यापीठ में शिक्षरण व प्रशिक्षरण के बर्समान व्यवस्था के माथ मिलकर वनस्थली की मेरी कल्पना को पूर्ण कर देती है। इसके ग्रलाबा मैं चाहंगा कि विद्यापीठ में जीवनेर स्थित मानुमन्दिर जैसा प्रौड-शिक्षा का केन्द्र भी हो गौर मेरी कल्पना के अनुसार नमय आने पर जीवनेर मानुमन्दिर सभवत वनस्यली के निए फीडर सस्या का काम भी दे सकता है।

हस समय बनस्थमी वित्तीय सकट का सामना कर रही है जिस पर हमेवा की तरह विजय प्राप्त कर की जाएगी और जिसके किए किये गये प्रयप्तों के कलस्वरूप विद्यातीठ के कार्यकर्ताओं को धीर नया बल, नयी सहनविक्त सिक्स सकेगी। मैंवे यह बात वार-वार कही है कि वनस्थनी के साथ राज्यनान सरकार का बेसा महामुख्रीकूएंगे विशेष व्यवहार नहीं रहा है जिसके निए बनस्थनी मईब पूर्णतया योग्य रही है। पर मुके लगता है कि प्रव न्थित मे कुछ परिवर्तन हुआ है धीर नवस्वर के मध्य में राजस्थान के वित्तनती प्रीर रिक्सामणी के प्राप्तम के विशेष कार्यक्रम का सस्या को पूरा-पूरा लाम मिलेगा। इसके कुछ समय बाद ही राज्य सरकार की सहस्थित में भारत नरकार द्वारा नियुक्त समिति विवापीठ की वित्तीय रिवर्शत परिवार करने के निए वनस्थनी की वित्तीय स्थिति में ठोम कुछ समय बाद ही राज्य सरकार की सहस्थित में बनस्थनी की वित्तीय स्थिति में ठोम कुछ समिति है क यह ममिति ऐमी प्रच्छी रिपोर्ट देगी जियमें वनस्थनी की वित्तीय स्थिति में ठोम कुषार के निए व्यावहारिक सुकाल होते। मुके प्राचा है कि केन्द्र एव राज्य सरकार में प्रपंत्रत अनुरानों में और स्थानी खुद की सामरती भीर चन्त्र से विद्यापीठ न केवल प्रप्ते स्थापक वर्तमान स्थानामात्र को दूर कर सकेगा बहिक स्थानी विकास परियोजनायों के लिए में में प्रकार करा मकेगा।

वनस्यनी की छानासस्या में धंपेशित से घविक शीव गित से मृद्धि हुई है। मेरा स्थान या कि कुल छानामस्या १६०० हो नाते के बाद इस पर कुछ रोक स्थानी होगी, तेकिन इसी समय छानासस्या १६४० हो हो ही कुकी है। इस स्थान में ने ३४६ बियानी मेरा सिम्मित हैं विनमें में कुछ घोडे से शो ननस्यनी ग्राम के हैं और नाकी यहां पर काम करते बाले घपने संस्कानों के साथ विद्यापीठ केम्यन में पहते हैं। मुक्ते नगता है कि विद्यापीठ प्रगीकृत काम [ २३

को प्रस्ततोगन्या खात्रावासों ये १६०० तक खात्रायों का प्रवेष मान तेना होगा धौर तब कुल संस्या २००० तक जा सनती है जिसके प्राये जाना बहुत जोखिस भरा हो सकता है। याजकल भी भिन्न-भिन्न आयु को और मिन्न-भिन्न थारिजारिक परिस्थितिया प्रयांत भिन्न-भिन्न विताय स्थान साम्कृतिक सालद वाली खात्रायों के लिए जो प्रकार-प्रसार भाषा निपने विताय सथान साम्कृतिक सालद वाली खात्रायों के लिए जो प्रकार-प्रसार भाषा निपने विताय सथान प्रविच्च से प्राती है। वालने करना एक बता भारी काम है। सीर प्रतार-प्रमार प्रदेशों से प्रति है। वालने हैं कार करना एक बता भारी काम है। सामानिक स्थान पर स्थान स्

बनस्थली विद्यापीठ शहर के घ्यान बंटाने वाले शोरमूल श्रीर ग्रन्य बूराइयों से दूर प्रामीए। क्षेत्र में स्थित है। फिर भी विद्यापीठ देश के रहन-सहन के बदलने हुए तरीको की तरफ से भ्राल नहीं मुद सकता। जो हो विद्यापीठ का भारतीय शील व मर्यादा के नियमो का सल्ती ने पालन करने का बायह बना हुआ है एवं बना रहेगा और अपनी ग्रन्य लाम बातों में से सिर्फ दो ही बातों को शिनाबा जाए तो विद्यापीठ का खादी और शाकाहार पर कायम रहने का प्रयस्त भी बना रहेगा। व्यक्तिक मैं ज्यादा दुट्टी ग्रौर ज्यादा लम्बे प्रवकाण के पक्ष में नहीं हैं। मुक्ते लगता है कि शिक्ष एकार्य में लगे हुए बहुत से लोगों के लिए यह थुट्टियो का मामला निहित स्वार्थ जैया बन यया है। विद्यापीठ यह भी कोशिश कर रहा है कि देश में प्रचलित सभी सजहती के बारे में सस्था की बढती हुई जनसङ्गा को ग्रावश्यक जानकारी प्राप्त हो ग्रीर सभी यह समक्ष सकें कि हर युग ग्रीर हर देश मे ग्राधारभूत जीवन-मृत्य भौर माचरण के समान नियम प्रचितत रहे हैं। कुछ लोगों के लिए किसी भी सिद्धानन को न मानना भने ही सबसे बडा सिद्धान्त हो सकता है, लेकिन बनस्थनी मे तो कुछ मृतमृत मिद्धान्तों की हमेशा की तरह मानने और उनका पालन करने का आयह चना ही रहेगा। सभवन' इघर-उघर थोडा बहत परिवर्तन-संशोधन तो हो सनता है, पर बनस्थली अपनी किमी मुलगुत बात को कभी नहीं छोड सकती। ऐसा कोई कानून नहीं हो सकता जिसमें संसार में से बुराई का लोग ही कर देने की क्षमता हो। कानून बरकत्तर है, पर इसके बावजूद ग्रपराथ होते रहते हैं। परन्तु इस कारण से कामून को समाप्त नहीं किया जा सकता। उपसहार के तौर पर मुखे यह कहते बहुत खुक्ती है कि देश से चारो धोर ग्रस्वस्थ वातावरण के बीच बनस्थली बर्तमान सकमणुकान मे यथाश्वरप श्रच्छी तरह मे निम रही है।

बाद में १९७१-७२ के कार्य-विवरए। में मेरे द्वारा निम्न टिप्पणी निस्ती गयी :— जैसा कि ३६ वे वार्षिक कार्य-विवरए। में प्रज्यक्षीय टिप्पणी में इंगित किया गया या। गत वर्ष के प्रारम्भ में विद्यापीठ विनीय सकट का सामना कर रहा या। यह सकट तब से निरन्तर गहरा होता चा रहा है।

१४ नवस्वर, १६७१ को राजस्थान के नित्त एव जिल्ला मित्रयों के धानमन के फर्न-स्वकर ३ ताब एवं अ४ हवार के धनुदान स्वीकृत हो सके जिससे इस सकट में कुछ राहत मिली।

उपगेक्त प्रनुधानों में २ लाख १० हजार रुपये मार्च, ७२ की समाप्ति तक प्राप्त हो गये थे, लेकिन क्षेप १ लाख २४ हजार रुपये सरकार द्वारा दिये जाने वाको हैं।

भारत सरकार द्वारा नियुक्त समिति १ व २ जनवरी, १६७२ को वनस्वली प्रामी मी फ्रीर फ्रांसा है कि समिति का प्रतिवेदन बीझ ही सरकार को प्रस्तुत कर दिया जाएगा ।

विद्यापीठ के ६ लास रुपये के पिछले थाटे के मुकाबले भारत सरकार ने ३ लास रुपये व राजस्थान सरकार ने १ लाख रुपये के घनुदान दिये थे, शेप २ लाख रुपया भारत सरकार से प्राप्त होना वाकी है।

प्राचा है कि राजस्थान सरकार कुछ और विषयों को धनुवान के लिए गीध ही अनु-मीदित कर देगी। ऐसा होने पर वार्षिक ग्रावर्शक अनुवान में काफी वृद्धि हो सकेगी।

२०० लक्ष्मियों के निवास के खिए एक उपयुक्त छात्रावास के निर्माण हेतु ७ लाख रचये के मनुदान के खिए झावेदन पर शीघ्र ही शास्त सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है !

इम नव के बीच विद्याभीठ अपने आपको वित्तीय विपत्ति के कपार पर पा रहा है। अरक्त दुःव की बात है कि अन्य कठिनाईयों के अलावा कई भवनों का निर्माणकार्य बीच मे ही रक गमा है।

६ नका परिल्याम यह हुया कि विचापीठ अपने कई कार्यकर्ताघों के घीर छात्राघी के लिए रहने के स्थान की व्यवस्था नहीं कर तका है और छात्राघों की सख्या भी १६४१ में बढ़ कर केवल १६७५ ही की जा सकी है।

साय ही सोने हुए नये कामो को यया-शिक्त्यान्दिर, ब्यायामधन्दिर, यनस्पति विज्ञान व द्वीव विज्ञान में एम० एससी०, होम सावन्स में बी० एससी०, एम० एससी० धीरे-धीर ही हाम में लिए जा मर्केनें 1 श्रेगीकृत काम [ २४

इसमें मे हर एक काम परिस्थित अनुकूल होने पर हाथ मे लेना ही है क्योंकि ये काम वनस्थती की सोची हुई तस्वीर की पूरा करने के लिए जरूरी हैं।

लेकिन वनस्थती के सामने तास्कालिक कार्य विद्यापीठ की विन व्यवस्था की सुट्ट प्राथार प्रदान करना है। विसके लिए नीचे वॉस्तुत तगन पूर्वक किये गये प्रयत्नो की प्राथ-प्रयक्ता है।

जिन कुछ राज्यों से सभी तक कुछ विकास सनुदान नहीं मिले हैं उनसे इसके लिए सनुदोध किया जा रहा है। कुछ राज्यों को वार्षिक सनुदान बढाने के लिए कहा जा रहा है।

विद्यापीठ ने सपने खेती के काम को बड़े पैमाने पर बढ़ाने की योजना बनायी है जिसके लिए भी अर्जुन अववामा से प्राप्त स्वैच्छिक एवं उदार सहायता उल्लेखनीय है।

जपपुर स्थित बनस्थक्षों की जमीन पर किराये की सामदनी देने वाला मदान बनाने के सम्बन्ध में कार्यवाही जारी है। ब्राय बढाने की सन्य योजनाएँ भी ऋगश हाथ में ली खाएगों।

उदाहरण के तौर पर उनी लादों का काम राजस्थान लादी ओड य उदाेग विभाग के सह्योग में हाथ में लिया गया है और झाशा है कि यह काथ समय पाकर झामदनी का प्रकार जरिया बन जाएगा।

विद्यापीठ द्वारा अवधुर में उद्योग व कला की एक चलिल भारतीय प्रदर्शनी का प्रायो-जित करने का प्रस्ताय है और अनस्वनी में बढ़े पैमाने पर आयुर्वेदिक रसायनशासा गुक्त करने का भी विचार है।

मीर धालरी उपाय जो कि उपरोक्त से कम नहीं है विद्यापीठ के कार्यकर्तामी द्वारा जनता में बड़ा चल्दा प्राप्त करने के लिए पूरी लगन के साथ प्रयत्न का प्रारम्भ है।

सप्तपि विद्यापीठ, इस सांग, कठिन वित्तीय स्थिति से से गुजर रहा है लेकिन सभी कठिनाईवां कार्यकर्ताको की सदस्य निष्ठा से हल हो जाएगी, यह विश्वास है।

इम टिप्पर्शी के अन्त में एक और विषय की और, जो कि राष्ट्रीय महत्व का है, संकेत करना उपप्रक्त होगा । यह विषय है, देशव्यापी एव अमीम विद्यार्थी ससलोप ।

इम भमस्या का एक मध्भव उपाय यह हो मकता है कि व्यावहारिक णिक्षा के साव-साय देन के युवकवर्ग के लिए राष्ट्रीय-स्तर पर उत्तादक कार्यों की मध्यावनाएँ प्रस्तुत भी जाए !

#### फिर १६७२-७३ के वार्य-निवरण मे मेरी निम्न टिप्पणी प्रकाशित हुई .—

मुनिर्वितिटी ब्राट्स कमीजन की ब्रोर से उठायी हुई महाविद्यालयों को 'स्वायत-महाविद्यालय" बनाने को चर्चा राजस्यान विकाविद्यालय में भी चली है, पर पता नहीं उजव विचार में कितनी प्राणि हुई है और वह कहा तक पहुँचेया । इचर, राजस्थान माध्यमिक शिक्षामडन भी जुछ विद्यालयों को "स्वप्यत्ता" देने पर गम्भीरता से विचार कर रहा सराता है। मने की बात यह है कि जहां इम्म प्रकार की झालाए लगायी जा रही हैं वहीं माध्यमिक शिक्षामड़न व विश्वविद्यालय की खुद की स्वायत्ता पर सरकार की घोर से म्राच म्राने का लतरा भी दिख रहा है। वनस्वती विद्यापीठ के लिए किसी न किसी प्रकार की स्वायत्तान के लिए हम खोज करते रहे हैं, यद्याप व्यक्तियत रूप से मेरा लयाल है कि देश में शिक्षा की प्रकर रूप में विश्वशी हुई स्थिति में किसी भी खिकाए सर्था के लिए वास्तिक या उपयोगी क्वायत्तत का उपयोग मसम्बव जुँसा है। वास्तव में देशा जाए तो देश की विकाप्रशाली में शामुल्यून कान्ति होने की आवश्यकता है।

देश की कई एक गैर सरकारी शिखलुसस्याओं में ब्याप्त जिन प्रस्वस्थ स्थितियों की वर्षों मुगी आती है उनके बारे से मुन्से कोई प्रत्यक्ष आनकारी करते का प्रवस्त नहीं मिला है। नेकिन मुन्से मान्म हुमा है कि राजस्थान सरकार में कुछ लोग गैरवरकारी मिला है। नेकिन मुन्से मान्म हुमा है कि राजस्थान सरकार में कुछ लोग गैरवरकारी स्थामी "गडवड" को ठीक करने कि फिल में वर्षे है। इस बात में प्रत्यक्षा है कि कही यह "गडवडी हूर करने की प्रक्रिया" मस्याओं पर नीकरवाही के विकर्ष को भीर कवा न कत्वे। मान सरकार गैरनरकारी खिललुम्ब्याओं के लिए प्रावस्थक धन का कुछ भाग देती है तो उने यह देवने का प्रधिकार होना चाहिए कि सार्ववनिक धन प्राप्त करने वाले लोग उस धन का ठीक उपयोध करते हैं या नहीं। साथ ही विश्वविद्यालय में सिक्षान्य का प्रदेश के मा प्रधिकार होना चाहिए कि निर्धारित खेशिएक मानदण्डी का निर्वाह होना है मा नहीं। बाकी इसके प्रवादा विश्वलुमस्थाओं को प्रयोध व सुवार के लिए प्रसत्त करने की हरू के लीर पर, पूरी स्वतव्यता होनी चाहिए।

जहा तक वनस्थली विद्यापीठ का मवाल है विद्यापीठ एक राष्ट्रीय सस्या है जिसका पोपएए इसके खुद के लगनकीस कार्यकत्तांग्री हारा हो रहा है। ऐसी स्थिति में विद्यापीठ कभी भी जरूरत से ज्यादा बोला दिलाले वाली किसी भी बातर की एवेसी को एक सीमा के वाहर नहीं जाने दे सकनी। विद्यापीठ का हिमाद किसी भी बाता हारा हो नहीं बर्किक पिनक के किमी भी व्यक्ति हारा बच चाहे तब देखा जा सकता है। इसी प्रकार सरकार तो प्रवश्य ही जैमे चाहे बैसे हो सस्या के हिमाद की बाव करवा सकती है। लेकिन वनस्थनी मरकार के प्रतिनिधि वने होटे दिन वाचे कर्मचारियों के हारा उपस्थित की जाने वालों प्रपृत्विधाओं से तम होती जा रही है। विद्यापीठ ने सवसुष्ट में, कभी भी सरकारी प्रमृत्यान की विदेश पर्वाह नहीं की है। और समय घनुदान के साथ बेहरा व प्रस्थीकार्य कर्त सनते करों तो विद्यापिठ काए मर में ऐसे प्रमुद्धन का परित्याम कर सकता है। प्रमुद्धन मिले या न मिले, वनस्थली सर्वेव स्वान्त व व्यवस्था कर व्यक्ता है। प्रमुद्धन

ग्रंगीकृत काम [ २७

खुशी की बात है कि भारत सरकार वनस्थती को हर सभव प्रकार से मदद करती रही है। केन्द्र द्वारा नियुक्त जबरामन समिति (बिसमे राजस्थान के शिक्षाम्रायुक्त भी सदस्व थे) ने मुकाब दिया था कि वनस्थती विवाधीठ और उसके परिसर के विकास के निए मास्टर प्लान तैयार करने के लिए एक दूसरी समिति नियुक्त की जाए। विद्याधीठ इंग्र दूसरी समिति की नियुक्त की प्राप्त में काहिर है। उसकी नियुक्ति के प्राप्त में आहिर है कि राजस्थान सरकार को पहल करनी होगी। मास्टर प्लान के वनाने में विद्याधीठ समिति की पूरी मदद करेगा और योजना के दोनो मुख्त सामीदारी-भारत सरकार व राजस्थान सरकार को योज में विद्याधीठ का कर्तव्य होगा। निश्चित्त है कि मास्टर प्लान के बारना में विद्याधीठ की कर्तव्य होगा। निश्चित्त है कि मास्टर प्लान में विद्याधीठ की कर्तव्य होगा। निश्चित्त है कि

स्राज देग जिन कठिन परिस्थितियां में से गुजर रहा है उनके परिएगमश्वरण प्रस्तुत कि किंदारियों का विद्यापीठ प्रणेन तरीके में यथाश्वर मुकाबला कर रहा है। हर साल यहा हतनी ग्रीविक द्यालाए सा जातों हैं कि उनके लिए स्थान धादि की ध्यवस्था करना प्रसम्ब हो जाता है। देश में उपनव्य योध्य व्यक्तियों में ने सावस्थक स्वया विद्यापीठ के हिस्से में भी मा ही जाती है। विद्यापीठ के कार्यकर्षों हस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि नीची में नीची तेवर ऊपी से ऊपी कक्षा कार्यकर्षों का पायत्न कर रहे हैं कि नीची में नीची तेवर ऊपी से अभी कक्षा जम्म कर के प्रवक्त गर्मा कर प्रसार का प्रयादमम्ब सभी उपास करके प्रपत्न वित्तीय मामलों में अनुकूतता मिल जाने की प्राचा है। विद्यापीठ मरकार का, जनता का और साथ ही ह्यालाओं के सरक्षकों का भी अपने इस विश्वाय राष्ट्रीय प्राथोंजन में सहसोग प्रामतिव करता है।

उक्त सीनो डिप्दिश्चिया ग्रपनी कथा स्वयं कह देनी है। जहां तक भौतिक विकास का सम्बन्ध है बनस्थली ने सदा की भाति विद्धले तीन सालों में सन्तोषजनक प्रगति की है। बिना किसी विशेष प्रयत्न के छात्राम्नो की भीर कार्यकर्तामो की सख्या बढनी रही है। मकान भी थोडे बहुत बड़े हैं, पर पैसे ग्रादि की कमी में जितने मकानी की जिम समय ग्रावश्यकता रही उतने मकान उम समय नहीं वन पाये । देखने में विद्यापीठ केम्पन वहुत वडा लग सकता है, पर कार्यकर्तामी के और छात्रामों के निवासों के मलावा दूसरे कामों के मकानों की कमी की बजह से सभी सम्बन्धित नोगों को बेहद तकसीफ रही है। पिछने साम में कई एक ऐसे कारण उपस्थित हो गये कि रुपये पैसे की आगद कम हुई और उसकी चाल धीमी भी रही। राजस्यान सरकार में इके हुए कुछ अनुदान मिल चुके है, कुछ और मिलने की आशा है। भारत सरकार द्वारा नियक्त कमेटी ने बच्छी रिपोर्ट पेश की थी. पर उसके स्वीकृत होने में वहीं देर लगी और जो अनुदान मजूर हुए उनका रूपमा बहुत देर से हाथ में भाषा ! सम्भव है विद्यापीठ के विज्ञाम के लिए मास्टर प्लान बनाने के उद्देश्य ने भारत सरकार की कमेटी े के मुभाव के अनुसार राजस्थान सरकार के द्वारा एक दूसरी कमेटी बनाने की शुरूग्रात की आए। श्राजकल निर्माण का काम कुछ तेजी से चल बहा है, पर वह पैसे की कमी मे व लेवर की कटिनाई से किसी भी समय बीमा पड़ सकता है और एकदम ठहर भी सकता है। जो निर्माण कार्य हाथ में लिया हुआ है उसके अनावा बृहविज्ञान मन्दिर (होम सायन्म-

प्रत्यक्षजीवन शास्त्र

कांलेज), गिरुपमन्दिर (पोलीटेकनिक), कारीरिकिश्वला महाविद्यालय, ग्रन्था हॉस्पिटत, वैक भवन, डाक-सास्टेलिकोन भवन, स्टाफ नवार्टर खादिन्यादि के निर्माण की निर्मित्र ग्रादमकता है। उद्शेषन मन्दिर का काम पहले से बने हुए मकान में शुरू कर दिया गया है मौर ऐसा ही निश्चय सबह मन्दिर (म्यूनियम के लिए) के विषय में भी कर तिया गया है। बाकी उक्त कारामें के लिए नालो स्पत्ना पाहिए विसे जुटाने की कोशिया पल रही है।

सानदनी के जरियों में एक तो चन्दे के काम को तो सीमित कर देने का विचार है। उसके मुकायले में विद्यापीठ ने प्रथमी स्वतन्त्र धामदनी को बटाने की योजनाए बनायी है। भारत सरकार, राजस्थान सरकार, वित्तविद्यालय धनुदान आयोग के प्रताबा देश की सभी रोज्य तरकारों से मिनने बाले प्रनुदानों में समयोचित वृद्धि कराने के प्रयस्त चल रहे है। प्रीर प्राजिर से छात्राओं के सरकाकों का सी नैनिक कर्नव्य है कि वे विद्यापीठ की ज्यारतापूर्वर सहायता करें।

वनस्थानी में किसी प्रकार का विश्वान्तुरक नहीं निया जाना धौर जो पैसा छात्रावास
पुरुक के रूप में छात्राधों ने मिलता है वह उन्हों के धौजनारि से तर्ज हो जाता है। ऐसी

हालत में छात्राधों के घरों ने किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ पैसा धौर प्रमान चाहिए

हालत में छात्राधों के घरों ने किसी न किसी रूप में कुछ न कुछ पैसा धौर प्रमान चाहिए

होने के रूपस का उत्तरोत्तर विकास करने में मदद मिल सके। वनस्थती विधापीठ के

प्रारम्भ में बहुत योद्या छुंत्रावास-शुक्क छात्राधों से निया जाता था। उन दिनों में सव

चीजें बहुत सस्ती मित्री धौ धौर रहन-महुत का स्टेडड मी मासूची था। बाद में धौर-भीर

एक धौर स्टेडड भी बढा धौर दूनरी धौर महुगाई बहुत ज्यादा वढ गयी। ऐसी हालन में

छात्रावास-पुक्क को बढाने के सिकाय कोई चारा नहीं था। फिर मी छात्रावास बडट में

मी धाटा रहने लगा है जिसकी धूर्ति शुक्क बढाकर के ही करनी होगी। कम सामन बाल

परी से माने बासी योध्य छात्राधों की यचाविक छात्रवृत्तिया देकर वनस्थनी की मावना

से रहा करनी जाती रही है। परन्तु पविन्त चन्दा कम साधा वा सके, विद्याधिक क्षायाधिक विभागों से पर्यान्त झामदनी न हो सके, चरकारों से भी विज्ञा चाहिए उनना

पैमा सही मोने नो धम्य ने बाकर उन नोपो पर ही भार डानना होया जिनको सबिन्या

समाधित अस्त स्थाना?

शिक्षा को देश की धर्यरचना के साथ जोडना पढेगा। यह काम उन मलाधारियों में तो शायद ही हो सकेगा जो विद्याधियों का, अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति की खातिर घोषण् करने में समे हुए हैं। मत्ताघारी कुछ नही करेंगे तो उन असत्ताधारियों मे भी क्या होंने वाता है जो विद्याधियों का जोपस करने में मत्ताधारी से पीछे नहीं है। बाकी वचते हैं, वे भने ब्रादमी जिनके सामने बीर कोई हिस्ट व हेतु नहीं है बीर जो सच्चे दिल से, अपनी मुभवुभ के अनुसार शिक्षा क्षेत्र में कान्ति कराना चाहते हैं। पर उन लोगों के पास में सैन्जन क्या है ? जो लोग अच्छी-प्रच्छी वाने बता सकते हैं, सुभाव दे मकते है ग्रीर जनमें जितना सा बने जनना या कर सकते हैं। वनस्थली विद्यापीठ के सामने यही परेगानी है और मुक्ते लुद को सबसे बड़ी यही तक्लीफ है। जब शुरू किया था तो सोचाया कि वर्तमान सिस्टम से दूर रहेगे । यर दूर कैंमे रहते ! चालु परीक्षाओं की न अपनाया जाता तो वनस्थली में शिक्षा पाने के लिए कीन सी लड़किया पहुँचती ? चालू परीक्षामी की प्रपताने के बाद यही बचा कि जो काम उन परीकाओं के शिक्षाक्रम से मही है, पर जो शिक्षा की दृष्टि से अनिवार्यतया आवश्यक है, उनकी बनस्यती मिस्टम मे अतम से जोडा जाए। दनस्यली की यही कोशिश रही है। भाजकल बात चल रही है आँटोनामम स्कूलो की धीर बांटीनामन कॉलेजो की। वनस्थली ने एक बार सोचा था कि डीस्ड यूनिवर्सिटी का स्टेट्न प्राप्त करके स्वतंत्र हो जाया बाए । पर बाद में समक्ष में बाया कि डीम्ड या मोई भी युनिवर्मिटी बन जाने से कुछ बनने वाला नहीं है। युनिवर्सिटी युनकर वनस्थली अपना शिक्षाक्रम और उन पर बाधारिन अपनी परीक्षाए जारी करने की कीशिश करती भीर उसमें सफल भी हो जानी तो उन परीक्षणों को सान्य कीन सी युनिवर्सिटीया कर देती, भीर मं न्यता जिना परीक्षाए पास करने का उत्माह किस लडकी को होता ? लगभग यही बात ग्रॉटोनामस व्हलों और कॉलिनो की योजना पर लागू होगी। देश में जो दर्श पड़ा हमा है जससे बाहर कोई भी कैमे चला जाएगा ? किमी भी युनिवर्सिटी या बोर्ड किमी कॉनेज या स्कून की खॉटोनामी मिनगी तो ग्राधिर उम यूनिवर्सिटी या बोई की मर्गादा क धन्तर्गत ही तो होगी ? वह तो घाणी के वैन की तरह चनकर काटने जैसा ही होगा, इससे ज्यादा शायद ही कुछ हो सके। बनस्थली में पंचमुखी शिक्षा का कार्यक्रम चला रख है-किताबी पढाई तो युनिवर्सिटी या बोर्ड के शिक्षाकम के अनुमार या थोडे बहुत नये स्वतन्त्र शिक्षाक्रम के भ्रमुमार हो जाएगी पर बाकी चारो नैतिक, झारीरिक, ब्यायहारिक भीर कलात्मक धर्यों की प्रतिष्ठित स्थान मिलना बहुत मुक्किल होगा। दूसरी बात है लडके-लडकियों की भीड़ को विश्वविद्यालकों में घुमने में रोकने का। वह काम कैसे होगा, जब तक युवक-युवतियों के मामने कोई दूसरे द्वार खुते हुए नहीं होये ? इसका मनलब है शिक्षा क्षेत्र ग्रीर ग्राधिक क्षेत्र दोनों में मिली हुई कान्ति हो। और वह न हो नो जितना जो कुछ ग्रपने स्वतंत्र प्रयत्नों से हो सक सो वनस्थनी भी करती रहे और उसी में सन्तोप मानती रहे । उत्पादक ग्रीर कमाई के दोएक कामो के व्यावहारिक शिक्षण की दृष्टि से क्छ फैक्टरियो जैसे काम बनस्थली में चताने की मेरी कल्पना भी चल रही है।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

जैसा मैंने कहा बनस्थली विद्यापीठ किसी सयोग से मेरे बीवन का मुख्य काम वन गया है मी धारे भी बना करेगा। मेरा सब कुछ बनस्थली को अर्पण है। दूसरे कामो का विचार भी में बहुत करता रहा। पर पिछले साल को धातक सिद्ध हो सकने वाली बोमारी ने मुक्तको एक प्रकार ने प्रपत्र बना दिया है। दो फिर ऐसी हालत में मैं कितने भी जोर-मोर में विचार कर-खालिर कर कितना सकुषा?

#### मातृमन्दिर विद्यालय

मेरा दूमरा झ गोक्त काम है जोवनेर का मातृमन्दिर विद्यालय । मातृमन्दिर में प्रौंड महिलाओ घोर छोटे बच्चो का सिक्षण हो रहा है घोर वह सब काम प्रच्छा चित्र रहा है। उसे पिछने माल मे थोडा बहुन बढ़ाया है। सम्भव है उसका कुछ घोर विस्तार भी हो जाए। मातृमन्दिर के १९७०-७१ के कार्यविवरण में इस प्रकार निखा गया था:—

"मान में कहना न होगा कि नवस्वर, १६४६ से गुरु होकर यह स्वरूप प्रयास धाज तक टोक-टाक निम्म गया है जिसका यहिकचित साम जीवनेर नयर को मिला है। पडित हीरालात ग्राह्मी की पूज्य माताजी उन्हें १५-१६ महीने का छोड़ गयी थी। स्वर्गीय रावन रोर्ट्रामिहनी ने ज्ञास्त्रीजों वो बाजिब कीमत पर एक मकान दे दिया था। शास्त्रीजों ने यमंत्र काम के स्वान को उक्त मकान में बामिस करके उसका परिवर्जन कर दिया धीर फिर उन्होंने प्रयानी पूज्य माताजों के प्रति सुन्त मावना को इस मानुमन्दिर के रूप में प्रकट कर दिया। इस प्रकार इम प्रमास के प्रूम से मानुमन्दिर की प्रवत गनिन है, तभी दो गान्त्री परिवार समने पाम विशेष साधन न होते हुए भी इस शिक्षान्यत में माहृति दिये या रहा है। इस पुनीत कार्य में ममन्द बोबनेर का सहयोग मिन्न यही हमारी कामना है, यही हमारी प्रार्थना है।"

उक्त रिपोर्ट के बाद मानुमन्दिर का काम मुस्पतवा बनस्पनी विद्यापीठ के सहयोग में चनना रहा है। जीवनेर में न कोई सहयोग मिना है, न उसके मिनने की प्राशा है। प्रमन्

मानृप्तिरिंदर नो भीरे भीरे बनस्थनी विद्याचीठ से बाहायदा ओह रेने हा दिखार है। यह हानन में कफ्ती मुविया ही आएगी। बाही समाज करवाएं। महत्त ने जो नहायदा मित्ती है वह नगध्य सी है जिनकी बहुत प्रयत्न करने पर भी बहुत बढ़ने की सभावना मुक्ते नहीं तपाती है।

#### लोकवागा

मेरा एक अभीकृत काम लोकवासी दैनिक था । पिछने सालो मे लोकवासी को बेहद तकनीफों का भामना करना पड़ा और धव बाकर उन तकनीफों का अन्न होना कुछ कुछ दिलायी देने लगा है । वीच थीच में 'बीवन सन्देश' जैसे माप्ताहिक निकास कर सतीप मान तेना चाहा । पर वह काम भी प्रेम के सभाव मे चल नहीं सका। हर महीने घाटा मरने की पैसा चाहिए था सो नहीं जुटाया वा सकता था। यव मुचाकर का विचार है कि एक टीक ठाक सा मेरा नयाया वाए । प्रेम के वाम जाने से बीमे थीमे धम्यवार का नाम हाम में निया जाए और उसे पिछले अनुमयो से लाग उटाते हुए आगे बढाया बार ने साथ नये में निया जाए और उसे पिछले अनुमयो से लाग उटाते हुए आगे बढाया बार ने साथ नये मीर विवस्तित हम से प्रकट हो। पर देवा जाए कर तक नया होता है थीर कुछ होता भी है या नहीं। देव भर में स्वतंत्र असवारों के लिए कुछ उत्पादन भविष्य इस समय तो दिलामी दे रहा है। प्रेस में जो बाया दिखायों देती है वह नेवर नी और धलबार में दिवक्त आयारी कि उसे सिद्धालों के प्रमुक्तार चलाना धसभय नहीं तो बहुत मुक्तिल वो होगा ही सही। को कारणाती का प्रकारन वस करने का कम कम एक कारण वो यही हुआ कि उसे मिणन के शीर पर, प्रमुक सिद्धाल के साधार पर चलाने नी की शिय दो येशे । गहिर है ऐसी वार्तों का प्रकृत्मान नहीं है।

### : 8:

# श्रनंगीकृत काम

### हाइकोर्ट बैच का प्रश्न

मेरा नरीका जुरू ने लेकर आज तक यह रहा है कि मैं अपनी शक्ति के अनुसार लिली एक या दो कामो को ही अपनाता है और अपने अगीकृत कार्यों मे नुकसान करके किसी भी दूसरे काम में हाथ नहीं डालता है। यहां तक कि जब मैं जीवनक्टीर (बनस्यली) के काम में रम गया तथ उस समय के ब्रिटिश भारत में चलने वाली किसी हलचल में जा कृदने के लिए मैंने अपने मन को चचल नहीं होने दिया । दूसरे, मैं केवन दिखाबे के लिए ग्रीर नाम कमाने के लिए किमी काम से नहीं पढ़ा करता। तीमरे, सब कामों को सर्वोपरि नैतिक तराज पर नीलने की मेरी बादन रही है । अब १९४२ में जयपुर प्रजामण्डल ने एक बार महाराजा ने समभौता कर लिया तो मैंने उसे आगे होकर किसी भी कीमत पर तोडना मही चाहा । जब कुछ उताबले साथियों में तग ब्राकर मैं सर मिर्जा इस्माइल को यह लिखने को मजदर हो गया कि महाराजा और प्रजामण्डल के बीच हुए समभौते की निभागा मेरे वम की बात नहीं है तो मुक्तको बेहद दूख हुआ था। पर उन्ही उताबले साधियों ने ग्रीर भी ज्यादा उतावल करके मुक्ते उस कठिन स्थिति में से विकाल लिया । जय भेरे तीनो वडे सावियों के बनरोध पर सरदार पटेल ने मुक्त पर राजस्थान के एकीकरण का भार डाल दिया तो में उसी काम में तल्लीन हो गया और प्रातीय कांग्रेस कमेटी के छपने भित्रों को लाड लड़ाकर खुश करते रहने के लिए मेरे पास फुसँत नहीं रही। मैं यदि ग्रपनी "रक्षा" के लिए काग्रेम के साथियों को खुश करने में लग जाता तो राजस्थान के एकीकरण का काम टप्प ही जाना ।

धनेगीकृत काम [३३

इस हिसाब से जब कभी भूमने विसी संस्था या संगठन में शामिल होने को कहा जाता है तो मैं तुरन्त इनकार कर देता हैं। मेरे जीवन में कभी एकाम बार ऐसे मौके जरूर मा गये जब मैं ग्रामे होकर ग्रमक काम में हिस्सा बटाने को तैयार हो गया । ऐसा ही एक काम जयपुर में हाईकोर्ट की बैच की स्थापना का था। वैसे मेरे विचार कोर्ट मान के खिलाफ हैं। मैं करपना करता रहता है कि जैसे कोर्ट बाजकल हैं जिनमें कभी कभी न्याय चाहने बाले के भर जाने के बाद फैसले होते हैं वैसा कोई एक भी कोर्टन हो तो किसका क्या विगड़ जाग् ? इस विचार के अनुसार में सोचता हैं कि अमुक जनता से ग्रमुक कोर्ट जितनों दूर हो उतना ही अपद्या और कोर्ट छाती पर ही आ बँठे तो जनता को चाहिए कि वह उसे दूर ढकेन कर राद भी मौके पर से दर हो जाए । पर मैं जानता है कि दनिया मेरे था मुभ जैसे किसी के विचारों से तो चल नहीं सहती। इसलिए मुभ्द जैसी की भी व्यावक्षारिक . इंटिट से, जनता की खद की मानी हुई मुविधा-ग्रमुविधा की हुटिट से. जनता की इच्छा की रिंद में ही सोचना पहला है। इस निगाह से राजस्यान की राजधानी अवपूर में हो एयी तो जोधपुर में हाईकोर्ट का हैड बसार्टर कायम करने में और जयपर ये हाईकोर्ट की बेच रखने में कोई सनीचित्य नहीं था। जयपर में हाईकोंट की बेंचन होने से राजस्थान के प्रथिक भावादी बाले पूर्वी जिला की जनता की बड़ी असुविधा हो जाती । हाईकोर्ड येच को जयपुर से हटाना किसी भी हालत से न्याप सगन नहीं था, जब कि हाईकोर्ट के लिए जयपर में नया भवन तक वन चुका था । इसलिए जब १६५६ में हाईकोर्ट वेंच की पून. स्थापना के लिए ग्रान्दोलन उठा तो मै स्वत. उसका मदद करने को तैयार हो गया। प्रधानमंत्री पश्चित नेहरु में मेरा लंदा चौड़ा पत्र व्यवहार हथा जिसकी बाखिरी मजिल पर पहितती ने मुसको एक प्रकार की काश्तिक ग्रममर्थता प्रकट करता हमा पत्र लिया। 1958 का मान्दोलन सफल नहीं हो मका, केवल उन्हीं राजनीतिक कारणों से जिनसे बेंच जयपुर ये हटायी गयी थी। १६७० में दुवारा आन्दोलन उठा तब मैंने नीचे लिखे अनुमार नीट तैयार करके राष्ट्रपति गिरि, प्रधानमधी इन्दिरा गाधी, केन्द्रीय बृहमधी चन्हासा, राजस्थान के मुख्यमंत्री सुखाडिया के पास ग्रपने पत्रों के साथ भेजा। राष्ट्रपति ने मेरे पत्र का टीकठाक सा जाविले का उत्तर भेजा। प्रधानमत्री ग्रीर गृहमत्री ने मेरे पत्रों की मिर्फ पहुँच लिखवाने की ही कृपा की। थीर राजस्थान के मरुपमत्री ने तो पत्र की पहेंच तिखना भी जरूरी नहीं समभा ।

### मेरा नोट

The day before yesterday there was a big rally from the rural areas of eastern Rajastians and a memorandum of the needs and demands of the people of that region was presented, in the absence of the Rajastian Chief Minister, to the President of the Rajastian Pradesh Congress Committee at a mass meeting in Jaipur. One of the demands included in the memorandum was about the restoration of the Jaipur bench of the Rajastian High Court which was abolished several years ago Regarding the restoration of the Bench the Jaipur lawvers submitted a memorandum

३४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

to the President of India during his recent visit to Jaipur. I understand the President gave the lawyers a very sympathetic hearing. A deputation of the people of eastern Rajasthan including the lawyers, I hear, will now aproach the Chief Minister of Rajasthan, the Prime Minister of India and the Union Home Minister.

It may be recalled that there was in 1958 a people's agitation for the storation of the Bench. The idea was to get back the facility which was rightly given to the most populous parts of Rajasihan by keeping a Bench of the Rajasihan High Court at Jaipur, the main Court having been shifted to Jodhpur. On the other side it was argued that in pursuance of the Law Commission's recommendation there should be one unafied High Court in the whole State of Rajasihan. In no other state however, the Law Commission's recommendation appears to have been acted upon. By singling out Rajasihan for this special treatment the people of the State's eastern districts were put to great unnece-ssary inconvenience, without any additional advantage having been offered to the people of Jodhpur and the western districts.

In regard to the Jaipur agitation of 1958 it was wrongly represented to the central authorities including the Prime Miaister Pandit Jawaharlal Nehru that it was only a local lawyers' affair who were putting up a show of agitation for the sake of their own benefit. The truth was that it was a people's agitation from all points of view and it was a peaceful agitation throughout except a few stray untoward incidents which should be regarded excusable in any movement involving thousands of people In this connection I had a prolonged correspondance with Pandit Nehru who, though apparently not satisfied about the movement being peaceful and legitimate, had come round to the view that the people's feeling was there, that is, it was not only a lawyers' affair.

I take the liberty of reproducing below, in full, Pandit Nehru's last letter (of August 16, 1958) to me on the subject .—

"I have your letter of the 16th August about the Jaipur agitation. I need not tell you that I am greatly distressed at it. But I can not understand what I can do in the matter. I think it is a bad and m mad agitation and wholly unjustified. Even so, because people feel about it, I would like to help where I could, but I just do not know how I can help. I would, of course, see you if you so wish, but that too will not be helpful."

"In any event, this matter is both constitutionally and otherwise in the charge of the Home Minister, Pantji. I cannot bypass him."

Later, I pleaded with Panditji that it was not at all intended that Pantji should be bypassed. Panditji on his part, must have had a word with Pantji who, it appears, could not be pursuaded to change his stand. Surely, there was something in the internal situation of Rajasthan owing to which Pantji perhaps thought that it was risky to restore the High Court Bench to Jaipur.

Now, after twelve years, the issue has again been raised by the Jainur District Rural Congress Committee, the Jainur City Congress Committee and the Jainur Bar Association. It is significant that quite a large number of M.L.A 's and several M.P 's and even some Ministers and the President. Rajasthan Pradesh Congress Committee are associated. this time, with the demand for the restoration of the Bench. The whole situation seems to be full of potentialities. For one thing, continued frustration of the people may lead to the strengthening of divisive forces in Raissthan, too. For another, the State's stability might be disturbed Any way, butterness will surely follow in the wake of unsatisfied desires and aspirations of the people who regard their demand just and fair. All this should not be allowed to happen. The authorities (both State and Central), should, in my opinion, deal with the question in a sympathetic and liberal manner. What is most important is that there should be no political considerations in the present case which is only one of the convenience of a very large section without causing the least inconvenience to any other section of the people. I trust public representatives of the western region will, in the interest of Rajasthan as a whole, not make it an issue of prestige and they will not stand in the way of their brethren of the eastern region getting their due. With good will on all sides the government and the people should and, I trust, will be able to find a just solution of the problem.

### राप्ट्रपति का उत्तर

(5 5.00)

I thank you for your letter of the 6th of June together with its enclosure. I have no doubt that the Government will give due consideration to this matter.

With kind regards,

जैसा कि मैने धपने नोट में प्रतिपादिन किया है। वयपुर में हाईकोर्ट बेच की पुन. स्थापना एकदम दानित की। मैंने इसी कारण से धपने धापको तैयार किया था कि जरूरत परेशी तो में वेच धाररोलन में अपनी पूरी अस्ति के साम कूट पहुँगा। पर न जाने क्यों धारदोलन करने वाले दीले हो यथे। सम्बन्धित लोगों के दीले हो जाने के बाद में प्रका कोई धायह रखता तो 'सहई सुस्त, भवाह पुरता' वाला सामला हो जाता।

प्रव फिर हाईकोट बेंच का मामना उठाया गया है, जो किसी न किसी रूप में चल ही रहा है। पता नहीं दन मव कोशियों का गन क्या गतीजा आएगा वसीकि एक मीर तो केश्रीय सरकार का कल नाम नहीं है और दूसरी भीर राज्य सरकार में और विधायकों में आपनी लीशियान चल रही है। वेंच का विरोध करने वानों के पास कोई शिद्धान्त नहीं है, मुफको तो हूर से "हम वहें" को बात दिखायों देती है। जो हो, घाषकल मेरा स्वास्थ्य ऐता नहीं है कि किसी भी बाहर के काम में सिक्य हिस्सा ते सहुँ। मेरा न्वास्थ्य ठीक होना तो भै धवकी बार भी मदद करने को तैयार हो जाता। क्योंकि जमपुर हाई-कोर्ट वेच की स्वापना से मेरा खुद का सवस या और वैच का हटाया जाना धौर तब तरह से केश हीने के साथ साथ मुफ पर धलन से व्यक्तियन धमर बालने वाली बात भी थीं। मैं चाहता हूं कि जयपुर में हाईकोर्ट बेंच को युन स्थापना की जाए। इसमें राज्य की जनता के बहुनत का धादर होगा और सवधित जनता को बुनिया मिलेसी धौर किसी का कोई मुकसान नहीं होगा।

### राजस्थान में शराब बन्दी

भाई गोफुलभाई भट्ट के नेतृत्व मे राजस्थान मे शराबबदी करवाने के लिए एक घर पहुले प्रमत्त हुए थे जिनके फलस्वरूप राजस्थान सरकार ने कुछ जिलों में ग्रायवं बंदी लागू करते हुए वचन दिया था कि ध्युक तारीख से पूरे राजस्थान में शराबददी कर वो जाएगी। उस वचन का मम हुआ धीर बोकुलभाई कि निविचतकात के लिए उपवाम पर वैठ गये। उपवास पर वैठ गोकुलभाई की गिर्पतार करने का नाटक करके राजस्थान सरकार ने उनके साथ मूलतापूर्ण अमद्र ध्यवहार किया। उन दिनों पहुले तो में हॉस्टीटल में या, किर घर पर बना गया तो बहा भी हॉस्टीटल की सी केंद्र में ही मुक्तो रक्षा गया था। उस हानत में भी मैंन १६ मई, १६७२ को नीचे सिखे प्रमुक्तार बवतव्य प्रमारित किया -

"राजस्थान में राज्य सरकार द्वारा घराववन्दी के पूर्व धोषित निर्हम् को बदलने के कारए। जनता के निराजावा और नि स्वार्य नेवक श्री गोंडुलमाई भट्ट ने धात्र भामरण, सनवान प्रारम्भ कर दिवा है। त्यांगी और तथोनिष्ठ राष्ट्रवेवक गोंडुलमाई का भामरण, भनमान करना साभारण, यात नहीं है।

"नवादन्दी मारतीय सविचान सम्भत वात है। कावेस को सदस्यता के लिए यह एक बात गर्त रही है। गोंधीओं के रचनात्मक कार्यक्रम में इसका खास स्थान था। गांधीजी को राष्ट्रीवता मानने वाले और पन-तप र जनकी दुहाई देने वालों के लिए मवादम्यी कार्यक्रम की छोड़ना प्रत्यन्त वरों बात है। यनंगीकृत काम [ ३७

"राजस्थान मित्रमण्डल नजावन्दी के पक्ष में तो है, लेकिन प्रावकारी की ग्राय बन्द होने से होने बाली हालि बरदास्त करने की ताकत अपने आप में नहीं पाता । राजस्थान के प्रत्यों के वजट में दम पांच करोड रूपनों की क्या पिनती है ? चालू साल का २० करोड़ का घाटा प्रत्य करोड का हो गया बताया । ओवर—पुंपट एक अरत तक पटुंच गया बनाया । राज्य पर अरती क्यों का कर्ज है । यह इतना वडा खड्डा कैमें भरा जाऐगा ? विन उपायों में यह खड्डा मरने बाला हो जहीं में आवकारी की बाय का जरा सा पाटा भी बयो नहीं पूरा किया जा मकता ?

"माना कि केवल कानून में बराववन्त्री नहीं हो सकती। इसिन्ए विधायको य ग्रंग्य समाजनेवियों को सिकंद होना चाहिए। पर केवल समाजनेवियों कानून की मदद के विना कुछ विभेष नहीं कर मकते। जिस प्रकार चोगी धादि जुर्मी की रीकतान के लिए कानून जरूरी है उसी प्रकार नवावन्त्री के लिए भी कानून की ग्राववश्कता है। समाज-सिंदियों को जनता के प्रति धानने कर्जन्य का पालन करना चाहिए। पर वन सरकार मग-वानी और जुलाखोरी धादि के साध्यम से पतन के द्वार खील रही हो तो केवल लोक-सेवको से क्या हो जाएगा?"

### मुख्यमंत्री को तार

साथ ही मैंने भीचे लिखे अनुमार दो तार राजम्यान के मध्यपन्त्रों की भेजे :--

### ( I )

Let us recognise Gokulbhai is country's most selfless devoted worker of highest integrity and cause of prohibition was dearest to Gandhyi's heart. Gokulbhai's life is infinitely more precious than few cores supposed loss of which Rajasthan can bear much more easily. If given chance I can show how to adjust this said loss. As against any other crime law is necessary against evil of drinking, also. Pursuading people against drinking is duty of all public servants not excluding ministers and legislators. If God forbid Gokulbhai goes down many like me will have no interest in life. For my-self I must have immediately joined Gokulbhai but for after-effects of my dangerous heart attack I implore you and through you Prime Minister to regard this matter as most serious and do needful before it is too late. No Government worthy of name dare break promise solemily made

### ( II )

Continuation my sesterday's telegram nothing could be more graceless and childrsh than arrest of Gokulbhat at mid night on charge of attempting succide Government spokesman's comparison between Centre's changing its mind about prince's purses and State Government's break of promise about prohibition is most absurd. Government's arguement is instituted to bear financial loss. Oppestion arguement is Government can easily make up few crores loss. Removal to hospital can not save Gokulbhai. Government must therefore annouace total prohibition immediately I do not know how otherwise Government can show its face to people

इसके ग्रलाया मैंने प्रधानमन्त्री को नीचे लिखे ग्रनुसार पत्र दिया :--

'यह पत्र गोडूलभाई के अनवार के सिल्यसिले में है। दिल का सस्त दौरा पड़ने पर डेड महीना हॉस्पिटल में रहने के बाद नजरबन्द जैसा न होता तो मैं खुद प्रापके पास दौडा भारता।'

"मराववन्दी सविधान सम्प्रत है। अपनी सवकी भावना वशावन्दी के पक्ष मे है और राजस्थान सरकार ने १ अप्रेल, ७२ से पूरी नशावन्दी साजू कर देने के सिएवधन दे दिया था।"

"राजस्थान के घरवों के वजट में पांच यस करोट की क्या पानती हो मकती है ? राज्य की खराव विस्तीय स्थिति शराब की पापमधी आमदनी को बनी रखने से किउनी सी मुचर जाएंगी।"

"शराव की मामदनी से भरो काम करने की अपेक्षा भक्षे कामो की न किया जाएगा तो उसमें गरीव जनता का जरूर ही ज्यादा असा होगा। शराव तो गरीव के लिए मीत से बदकर है न?"

"गोकुलभाई जैसा बकादार काग्रे सबन न सिक्तं बाद नही है. बल्कि पिछनी कई दसा-दिसों में राजस्थान में नहीं हुया। इतना सच्चा, इतना त्यापी सेवक भेरी चानकारी में दूसरा कोई नहीं है।'

"गोकुलमाई का जीवन धमूल्य है, बहरहाल कुछ करोड़ से बहुत ज्यादा कीमती। गोकुलमाई ने प्रपत्ने मित्रों के बचनभंग का प्राथम्बित करने के लिए अपनी जान की बाजी लगायी है।"

"क्या माप बोकुलमाई की प्राएरखा और राजस्थान सरकार की बचनरखा के लिए पोड़ा समय नहीं निकाल सकती ? धापका भरोसा सम्बन्धित सभी लोगो नो है मौर सभी को (मय-गोकुलमाई के) घापका फैसला मान्य हो सकता है।" पर भेरा मन नहीं हुया इन्दौर जाने का। श्री कै० जी० संश्वदेन का पत्र मेरे पास प्रामा उनका नोचे तिले क्षत्रुक्तान उत्तर मैंने भेज दिया और। जैसा कि मैंने पत्र में लिखा या उसके सनुभार एक नेगर विस्त कर नम्मेनन के सोविनित में श्वप्ते के लिए भेज दिया था। सम्मवतः प्राप्तकल भी सहमति मण्य कुछ हुनयन तो कर रहा है।

### श्री के जी संखेदन को लिखा गया मेरा १६. ६ ७१ का पत्र-

Thanks for your letter of June 10 regarding the Convention of National Consensus, India proposed to be held at Indore from August 8 to 11, 1971.

Shri Rameshwar Totla has been good enough to send me all the material about the Convention. But, for my part, I am sorry I am not yet been able to persuade myself to think that I could make any useful contribution to the deliberations of the Convention.

My own thinking is that the party in power is primarily responsble for all the ills prevailing in our country. Corruption at the top flows down to the bottom and if those in authority have no qualms about right or wrong, if they adopt all possible unfair means to serve their purpose, if there is the widest gap between what they say and what they actually do, then for whom it will be possible to save the nation? As said in the Gita, what a high up does is copied by the common man.

I have agreed to write an article for the Convention Souveur in which I will deal with the subject in some detail, What, however, is the use of my or anybody's writing an atticle or some good people arriving at a consensus, unless we have the sanction to get our views accepted by people who wield power to which they are determined to cling as long as they can and by any means what soever. All the same, it may all be for the good, if fairminded people express their considered views: the common man will be enlightened to some extent. But ultimately, the common man shall have to me in rebellion against the evil forces ruling and there by running the morals of the nation.

To this end, I have resolved to devote the rest of my life with all the energy and strength at my command.

### : ሂ :

## नया कार्यक्रम

मेरी यह रुख्जा तो १८१७-१० से हो गयी थी कि में किवी अप में घरना आवध नताक या और प्रामकाशियों को तेवा करता हुआ उनकी जायुंवि की अनक जताकता। आकिर १८२६ के पुनर्दाई में में बचने जन नहीं को मानवर करने के सिए नरम्दर्स नेमा में नाकर वन गया। बीवनकुटीर नाम की मस्या की स्थापना हो। वधी। बीवनकुटीर का भीवन कठिन कठीर था धीर जीवनकुटीर के साधियों ने ७॥ बाल वरू अस्यन्त प्रामिक कट्ट भीर कटोर परिस्म कर गीवन विवास। उन्हीं रिशो बिक्स पर परोशाया सी "सानन्द मठ" नाम की पुल्तिका कट्टी ने ते हाथ वन गयी। मैंने उनको एक बार, घनेक बार पड़ा भीर तथा में उद्दे घरने साधियों को मवनन् कथा के वीर पर बुनाने। बानस्र मठ में माल की सेंबर में साई पुर सम्बात सम्प्रदाय के श्रीवन ने नुस्म नोभी सी बेहर अस्परिक्त किया। और इन्हम में ने कई एक "बन्दी मात्रस्य" का मुंबार करने तथे। मैं बाम तीर वे "गोपास गोविद मुकुन्द धीरे, हुदे मुत्रदे मुद्धस्योर", को भन ही मन पुनयुन्तावा दुने तथा।

सस्तान सम्प्रदाय की शूटमार करने की धौर मुक्तमानी का खण्डन धौर प्रधेशो का पक्ष जैसा करने की बातों को मैं पत्रमन नहीं कर सकता था। पर पर बार छोड़ने वाने उन सम्यास्त्रियों के त्याम, साहम धौर मां की नेवा में व्यविदान होने की आपना ने मुक्ते पापन जैसा बना दिया। बामे चनकर दशी नीज में वोजनकुटीर-करमश्ली का पक्कड़ नम्प्रदाय प्रकट हो गया। पक्कड़ की कल्पना तो जोरदार थी, पर हम जीवनकुटीर के साथियों में एक

प्रत्यक्षजीवनगास्त्र

को छोड़कर सब या तो पहुंत से परवारी थे या बाद में बन जाने वाले थे। इसिलए फहुड़ सम्प्रदाय का नारा हमारे उत्पाह को बढ़ाने वाला क्ले ही था, पर हम उसे प्रको जीवन में पूरे तोर पर विरासिक नहीं के रही जो कुछ मित्र जाए उसी से धरण जीवन निवाह कर लेना और कन्द्री से ही जो कुछ मित्र जाए उसी से धरण जीवन निवाह कर लेना और कन्द्रमय जीवन में सुख का प्रमुग्य करना इस्पादि बानें तो हम लोगों में थी। उस समय के हम सोगों में से कुछ ने प्रामे तक उन वालो को काफी नियात।

बीच में १२-१३ मालो वक मुफ्ते बस्तुत एक्तारमक राजनीति की घुन लगी रही । मेरी राजनीति जनता के लिए कुछ कर बुजरने की साध तक ही भीमित थी ।

घटना चक्र घूमता गया और १६४८ में मैं जबपुर राज्य का मुक्यमन्त्री बन गया। फिर राजस्थान के एकीकरहा का काम मेरे सिर पर धा गया। धपने मुक्यमन्त्री बनने का प्रकाशन मुन्ते पाज तक है। मैं उन दिनो जब खुद 'राज' वन गया था। तब भी मैं "'राज'' का सच्छन ही किया करता था, न केबर खानगी बातचीत में बहिक बदा गया माम सभामों में पुर्यमन्त्री बने रहने के "लखरा" मुक्त में नही पाये गये और १८११ से शुरू होते ही उस जवाल से मेरी मुख्य होता हो नही पाल के मेरे मुक्यमन्त्री स्वकाल में बिगई। हुई बनस्पत्ती विद्यापित की हालत को किर मेरे मुक्यमन्त्री स्वकाल में बिगई। हुई बनस्पत्ती विद्यापित की हालत को ठीक-ठाक करने थे मुक्ते नग गये।

१६५४ में मेरे वैयं का बाब हुट क्या और धीवनकुटीर को रवतजयन्ती के साल में मैंने नवजीव कुटीर कावम करने की ठान ली। नवधीवनकुटीर का कार्यक्रम भी जनता की जगाने का था-अवारासक, शिक्षणास्त्रक, रचनास्त्रक, सेवास्त्रक, धान्दोतनास्त्रक भीर संपर्धास्त्रक। मुख्नुक से वह विविध कार्यक्रम सब्ब्ह्य चलने लगा और मेरे रवीस में कुछ साथी फिर से इक्ट्रेट ही गये। औवनकुटीर के ज्यादातर साथी इंधर तथर ही चुके ये और कुछ तो मुक्को नाथवन्द कर चुके थे, क्योंकि मुक्त वैसे साथी के पास-पड़ीय में उनका जुछ काम बनने वाला नहीं था।

१६५४ में मैं १४-१५ दिन तक विनोबाबी के साथ पद यात्रा में भी रहा भीर सूरान कर्मिकम के तत्व को मैंने समफ लिया पर विनोबाबी से मैं धपने खुन के लिए पहा ध्यावहारिक कार्यक्रम नहीं निकत्वा पाया। दुनरी तरफ वनस्वती विद्यानीठ का काम मी ऐता सार्यित हो रहा था कि उत्वम से मैं धपने खाएको निकाल नहीं पा रहा था। १६९७ से १६६५ तक मैं लोकसभा में बाकर फिर एक बार आहिए तौर पर राजनीति में फसने को हो गया था, पर मैं उसमें में भी वच निकता। ब्लीक न तो मेरा मन लोकसमा के काम में भा, मौर न में अपने खाएको उस समय और एकड रही यन्दी राजनीति में पड़ने के लायक सपने अगको समक पा रहा था।

इस तमाम लम्बे झर्से में वनस्थती तो मेरे दिल में वसी हुई ही रही थौर वनस्थली विद्यापीठ का विकास कुछ ऐसी तेजों से होने लगा कि मैं उस काम से प्रटकारा पाने के बदले उनमें ज्यादा से ज्यादा फीसता नहां। ऐसे कन्ते कराते १९७० का समय सा गया। सास के सुरू में ही मैंने समता 'प्रत्यक्षत्रीवनकास्त्र' निस्त ज्ञासा। जिससे मैंने अपनी उन पुरानी तरनों को, प्रमने उस पामतपन को कई प्रकार से उडेल करके रख दिया। धौर मुक्तको ऐसा समने समा कि सब तो में पूरे तौर पर सपनी कत्यना के कान्तिकारी कार्यक्रम को मज-सूती से पकड मूनरा।

देण को तराव स्थिति का नक्या मेरे विमाग में खिच रहा था जिते मैंने प्रपने
"किं कर्तव्यम्" नाम की जरासी पुस्तिका में येण कर दिया। उक्त पुस्तिका में भेरी तहण का नक्शा भी पेश हो गया। इस उपेड बुन में से स्थापीन ग्राम-नयर-सगठन की योजना प्रस्कुदित हो गयी। देश की स्थिति के विषय में लिखने लियते मैंने ग्रामे जिला:—-

'पवायत राज का जहुन हल्जा-पुल्ला हुमा, पर उनसे फायदे के बदले नुकतान ज्यादा हुमा मालूम होता है। विकास योजनाको का काम भी सकारपद है। पचायतें राज की खोटी मोटी कचहरिया जैती मुक्ते लगती हैं। सामुदायिक विकास से गोजनाको ने बोरी करते वानों को नये नये मौके दे दियो। वनता स्वावनस्थी होने के बजाए परमुतायेत बन गयी है। ऐसी हालत में स्वराज शब्द सर्वनाभारण के लिए बेबानी हो गया है।

"तत्र फिर कि कर्तव्यम् ? सर्वेसाधारशः जनता को राजतन्त्र की जिरुद्धवनी घीर राजनीतिक दुष्टयरीग से मुक्ति केंगे दिलायी जाए ? जो सोग जिन राज जनाने वालो की घोर निन्दा करते हैं उनकी उन्हों के पीछे दोडना पढना है, मामूली बोलचार मे उन्हों की चिसम उनको अरुगी पढती है। इस बेदब स्थिति से रास्ता केंगे निकले ? एक घीर योधे मारों का साराजाल, हुसरी घोर नाना प्रकार के स्थायेसाधन का चक्रवृद्ध ।

"मैंने जितना सोचा है, उसके अनुसार हमें जड़ को पकड़नी होगी, तब कुछ सीधे प्राम में भीर नगर में गुरू करना होगा और सबंग मले, ईमानदार और नि.गुरूक देवा करना चाहने वाले व्यक्तियों की ओज करनी होगी। स्थानीय कार्यकर्ताओं के दिना ठोस काम मही हो सकता, साहर के भीन की मदर से कुछ किया जाएगा तो उससे जन-ममुदाय का फायदा न होकर नुकसान ही मकता है।

"अरवेक पचायत क्षेत्र में तथा अरवेक नगरपासिका क्षेत्र में धपनी स्वाधीन सभा होनी चाहिए। फिर प्रत्येक विभागत सभाई क्षेत्र में, अरवेक ससदीन क्षेत्र में, अरवेक राज्य होत्र में भागती अपनी सभा होनी चाहिए, धाखिर में आरवीय होत्र की एक सभा ही सकती है। गर भगने को जह से शुरू करना है। फिर वहां तक पहुंच सकेंगे पहुंच आएगे। काम वही हो पाएया वहाँ स्वानीय महिक का बदस होगा।

"उक्त समायों का गठन स्वाधीन होना । बर्मात् राज्य के किसी कानून के तहत मे नहीं होना । सभाधों का कार्य सचासन संगठन के ब्रयने खुद के सविधान बीर नियमोपनियमों ४४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

के अनुवार होना ! इस सगठन को रात्र के पान भिक्षा का पात्र चेकर नहीं जाना होना । हमे उत-समुदाय को उसके हक का अहमान कराना होना और अपने हक के लिए जरुरत पडने पर मुकाबला करना सिखाना होगा ।

"इस ग्राम-नगर-स्वाठन के अगो में ने लोकमिशारा को सबसे पहले अपने हाथ में लेना होगा। शिक्षित हुए बिना जनता जानुत नहीं हो सकती। जानुन हुए बिना वह सम्बिठ नहीं हो सकती। सगठन के बिना जरूरत पड़ने पर समर्थ को स्थिति नहीं बन सकती। और तयप के बिना सभ्यो लोकस्ता जनता के हाय में नहीं आ सकती। सम्बी सोकसत्ता के बिना स्वाज का कोई सर्थ नहीं हो नकता।

"लोक शिक्षण के झलावा दूसरा काम होगा सभी केन्द्री में सुरक्षा दल का संगठन करना । हर जगह प्रतिक्षित युक्को को टुकडियां होनी चाहिए को ग्राम की, नगर की सुरक्षा के काम में पूरा योगदान दे सके बीर कभी गीका झा जाए तो इसमें भी बढ़कर काम कर मके । सुरक्षा दलों का गठन हो जाए तो जनता में स्वरमुख जान झा सकती हैं। स्वराज स्रामें के बाद में जनता पहले से अवादा निजींब हो गयी हैं।

"धावकल याव-गाव से, घर-घर में झापस के भवने बहुत बढ गये हैं। भगने कराने बानों की कहीं भी कमी नहीं हैं। बोजों को नमस्त्राना होगा कि वे घपने विवादों व भगने वा निवदार प्रपनी धपनी समाधां से ही कराने धीर नरकार के द्वारा सगठिन पुलित, कोर्ट-करवरी, प्रामपचायत, न्यावपचायत से पुकारने की न बाए। ऐसा हो आए दो किसी को रियन देने लेने की जरूरत ही क्यों पढ़े ?

"जनता की मिक्षा, चिकिरसा, वाली, विज्ञली, सडक, रोटी-करडा, मकान व भूनि ग्रादि को प्रावस्थकताथों की घोर स्वाधीन समठन को दूरा व्यान देना होता । सत्तायार्टी इन कार्नी हो बोट के बदने में दिखत के तौर पर करती देखी गयी है। इससे सर्वेश भराजाबार का बोसबाना हो गया है। जनता को धपनी ग्रावस्थकरायों धौर मायो की पूर्ति करानी होंगी हो उसे पन्तरीक्षता मध्ये का सम्या ग्रायनाज होगा।

स्वाभीन ग्राम-भवर-सुमठन पहातीत होगा। उसका किसी पार्टी विशेष में या म्यांक विवोष से न राम होगान होय। पर सहठन जुनावी से प्रपन्न पापको असम नहीं रखेगा। उसे जनता हारा सर्वावत भने और गोम्य समीदवारो की मटर करनी पेट्रेगी। और जब किसी एक की मदर को जाएँ। हो सामन वोत दूसरे को काट करने से बचा नहीं जा सकेगा। बहुरहाल जुनावों में अनता का गार्यरहोन करना होगा।

'ग्रामसभा में वो सेवक चुने वाएं उनका चारित्र्य शुद्ध हो शीर उनकी ईनानदारी ग्रहरियफ हो। वे कुमरो की तरह अफनी रोजी खुने तरीके से कमाकर खाने वाले हो। उनमें लीडरी की बून हो श्रीर वे किसी की गुलांनी दलाती करने वाले न हों। ऐसे सेवकों नयाकार्यकम (४४

का ही प्राप्त चुन'वों में समर्थन किया जाना चाहिए जो देश व राज्य के हिती को ध्यान में रखते हुए प्रपने क्षेत्र की नेवा ईमानदारी से करें।

"मिद्धान्त यह है कि शक्ति भीठर से पैदा होनी चाहिए। शक्ति उत्पर से धारोपित नहीं को जा मकती। जिसका मत्ता से कुछ भी जपान होगा, जिनका कुछ भी काम सत्ता से होगा उसे इर लगेगा कि कही सत्ताधारी नाराज हो जाएं और उनके काम को विगाब दे। स्वार्यमुद्धि बाता सोचेगा कि कही उनकी स्वार्यमधना में विष्ण न धाजाए। इस काम के निय काहिए जोखिस उठाने याने निकर और बहादर लोग।

"मैं मानता हूँ कि देण में असे आदिमियों की कमी नहीं है। पर ज्यादातर असे आदमी यहुत कुछ साधनहोंन या चुपचाप रहने वाल है। जो सनूने वाले हे धौर जो किसी परागे वस से कुछ बोन सकते हैं वे हमी बन के बनीभून है, वे किसी न किसी 'सिद्ध के साधक" के वे हुए है। उनका ध्यान होता है सपना काम बनाने व ह्यपनो तरफ़्की कर लेने की सरफ़, समें ही वह तरफ़्की ध्यान कोवों पर पूरी चलाने से हो।

"मुतीबत यह है कि प्रयने देश में देशमित की कभी है। किसी बड़े संकट के समय
में तो हम लोग जोश में प्रांसकते हैं, पर बाद में यह जोश ठड़ा हो जाता है। व्यक्ति सबसे
पद्देलं प्रयनी मोचता है फिर प्रपंत्र जून की, फिर अपनी पार्टी की और देश का तम्बर यदि
प्रांता है शो सबसे प्रांसित में। होना चाहिए यह कि कत हिंद सर्वोप्ति माना गाए।
पर कह लोगों के प्रांसने शो देश का या समाज का अस्तिब हो तही है।

"ऐसी हालत में भारत की प्रथम धावश्यकता है कहा धनुशासन और मजबूत हु हुमम । विचारधारा ठीक, माजादी ठीक, धाविकार ठीक । परन्तु सबसे पहले प्रत्येक की देश में सम्मत्ति का उत्पादन बढ़ाने में सहयोग देने का जो मूल कर्तव्य है उसका पासन करना पंडेगा। दूमरे देशों की मदक की हुसरे नम्बर एकते हुए समृचे राष्ट्र को धनती श्रीक पाल की पैदाबार बढ़ाकर सम्मत्र करा लगा होगा।

"अपने जीवनभर के अनुभव के बाधार पर मैं जानता हूँ कि उपर्युक्त करवना को समल में लाना किनना मुक्तिल है, एक बार तो नामुबक्ति जैशा यह काम मुक्ते लगना है। फस्सों भीर बहुरों में यह काम ज्यादा मुक्तिल होगा और बहुरों पर कार्यक्रम को वहीं की परिस्थित के जनुमार नेलाना होगा। और खबक्य ही धाम भीर नगर रोनो की होटि में ही वर्तमान जयनमा के बदलने की योजना वनकर समल में साजी होगी।

्षवनुतः ॥ह वर्तमान सत्तातन्त्र को उत्तरने की धीर सच्चे स्वराज की वीज योजना है। मेरी कल्लन का स्वराज व्यक्ति की स्वनन्त्रता पर धाधारित होगा। एक व्यक्ति की स्वतन्त्रता दूंगरे व्यक्ति की स्वतन्त्रता मे वायक नहीं होगी, किमी की मी स्वतन्त्रता देपाहित के विपरीत नहीं आएमी। देशहित को होनि पहुंचाने वाले को दिख्त होना प्रेगा। दड के विना प्रमुखारत की मर्यादा वने रहुना धायद समय न हो।" ४६ ] प्रत्यक्षजीवनग्रास्त्र

स्वाधीन ग्रास-नगर-सगठन का सविधान वन गया विश्वमे याव से लेकर राष्ट्र तक की सघटना तक की कल्पना करली गयी। संगठन के कार्यकम की रूपरेखा नीचे लिखे प्रनुसार बनी .---

- १ याचनालयो भौर प्रौढ कक्षायो के द्वारा लोकशिक्षस की व्यवस्था करना।
- २ पुलिस पर निर्भर रह विना स्थानीय मुख्या की एवं सरकारी वोर्ट-कचहरी प्रार्थि के प्राचार के बिना जनता के भेगडो व बिवादों को आपसी समस्त्रीत से निपटाने का प्रयत्न करना।
- ३ जनशक्ति के प्राधार पर सरकारी लगान बाकर में से जनता के कामी के लिए उचित हिस्मा प्राप्त करने का प्रयत्न करना।
- ४ जनता की शिक्षा, विकित्सा, पानी, विज्ञनी, संस्क, रोटी-कपश-मकान व भूमि सादि की स्वावस्थकतायों और समस्त्राक्षों की जानकारी सरकार को कराकर उससे जनहीं पूर्ति और हल कराने का यहा आवश्यकता पृकृते पर संपर्य का मार्ग प्रपत्ता करके भी, करना।
- ५. रलवन्दी व दमात राजनीति से दूर रहते हुए ग्रामप्यायत, नगरगासिका प्रादि के चुनाबो को निविरोध कराने वा प्रयत्न करना, पर बहा (खास कर बड़े चुनाबो मे) यह समय न हो वहा जनता हारा सम्बन्ध प्रस्तु व योख्य उम्मीदवारी का समर्थन करना।

उपर्युक्त कार्यक्रम को ग्रमत में ताने के बारे में मैंने नीचे निखे प्रनुतार योजना प्रस्तुत की थी:—

- १ गाव नाव में पीर मीहस्ते मोहस्ते में लोकमिशाय केन्द्र स्वापित किये आएगे, ऐने केन्द्र यो स्वानीय जनता में से माने वर्व हुए उत्साही कार्यकर्तायों की विन्दादितों से क्योंने । स्वान्त मन्द्रियत कार्यकर्तायों के तृत्व के प्राम्वश्चाय की व्यवस्था करेगा और लोकि मिशाय की सामग्री जुतने ने उनका मार्यवर्तन करेगा । कोकशिक्षय केन्द्रों के हाता विग्राय वावनावयो-मुस्तकालयों के ब्रावाया शावस्थवस्थानुद्वार प्रीड्र कस्ताएं भी जलायों वाएगी । जोकशिक्षय केन्द्रों के ब्रावाय शावस्थवस्थानुद्वार प्रीड्र कस्ताएं भी जलायों वाएगी । जोकशिक्षय केन्द्रों को ब्रावंदी किन्द्र नेवा स्थाप क्यां के क्रीतंत्र भी की जाएगी । जोकशिक्षय किन्द्रां का स्थाप क्यां, कम हो या व्यवस्थ तमाय खर्चा, कम हो या व्यवस्थ क्यां व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्थ व्यवस्थ ।
- २. (प्र) स्थानीय सुरक्षा के लिए गाँव गाँव में धौर जहाँ तक हो सकेगा नगरों में "स्थापीन मुख्यास्ता" का कपाठन किया जाएया जिनमें साधारसान्तवा १८ साल में ३० लात तक के दुवक ति. मुक्क देवा के लिए दाखिल किये जाएँमें। मुस्सा दस के दरस्यों के प्रतिमासस की व्यवस्था करती होंगी। प्रशिवस्था मादि का तमाम खर्मी सम्बन्धित.

ি ४৩

जनता करेगी। जैसी कि बाजा है सुरक्षा दलो का काम जब धच्छा चल निकर्तिगा तब स्थानीय सुरक्षा के लिए पुलिस की मदद चाहने की खास जरूरत ही नहीं रहेगी। बल्कि मीका खाने पर सुरक्षा दल पुलिस के काम से बढ़कर भी काम कर सकता है।

- (मा) जनता के म्रापक्षी भग्नडों व विवादों को निपटाने के लिए सम्याभित नार्यसमिति एक उपसमिति बना देगी बो फरीको को सम्माभे बुभाने को दूरी कोशिय करेगी। यह काम भ्रासाम नहीं होगा, क्योंकि क्याज के बाद म्रापक्षी भग्नडे टटे बहुत बढ़ गये हैं चौर भोले बगुम्रों के प्रापम में लड़ाने वाले भ्रीर प्रापम की सबाई में से कमाखाने वाले दलाल होग हुए जनह पेवा हो गये है जिनका पालन-पीपएस सलायक के उन "नेताओ" के हारा होता है जिन्हें खुद को दलावों के हारा बहुत कुख मिनता दिखायी देता है।
- ३. समय धाने पर जनता के द्वारा सरकारों कर या सगान में से प्रपने हिस्से कि मांग सरकार से की जाएगी । यह काम पुक्कित होया । और रहें सफल बनाने के मांग में मनक कानूनी घोर व्यावहारिक कठिनाइया धाएंगी । उन सब कठिनाइयों का कमगः सामाना करना होगा और व्यन्तकोमस्वा उन्हें पीठवा होगा । सच्चे स्वराज की कई पाविया हैं जिनमें से सबसे ज्यादा महस्य की पावी यह है ।
- ४ शिक्षा, चिकित्सा, पानी, विजली, मक्क जैसे काम उतने मुश्किल नहीं लगते हैं। परातु सापाव्य इन काबों को बोट की एवज मं जलता को पिश्वत देने के रूप में करते वा गया है। इस प्रकार जनता को विगावन का सबसे बड़ा जिम्मा सत्तापक्ष का प्राता है। सत्ता प्रकार जनता को विगावन का सबसे बड़ा जिम्मा सत्तापक्ष का प्राता है। सत्ता में पह पार्टी इसके कोई मतलब नहीं है। को सत्ता में होगा वही ऐसा कर सकता है। इसिए जनता को प्रपत्ती वास्तिक सित्त का मोर प्रपत्ते प्रपिकार का मान होगा जकरों है। सत्ता जनता को मानव मान की प्रति ठीक है न करे तो जनता को तत्ताराना परेगा। भूमि की समस्या का हल ग्रायदान के कार्यक्रम के इवारा करने को कोतिया हो है जितसे स्वाधीन सगठन को चोर के यामवाबय बहुयोग दिया जाएगा। पेटी-कपडा-मकान के तवाल बड़े है चौर उनको हल कराने में समस्य स्वया। बेकारी भीर प्रविकारी मिटानी होगी। घर घर में छोटे छोटे उखीर चानू करने पड़ें में मौर जनता की जरूरत के मानव का उत्पादन बढ़ाना होगा। देश की शिक्षा प्रएगली प्रीर प्रमें प्रमान को जलरत के जलरत के मान का उत्पादन बढ़ाना होगा। देश की शिक्षा प्रएगली प्रीर प्रमें प्रमान का समय होगा।
- ५. इस सगठन के कार्यंक्य मे चुनावों को ऊँचा स्थान नहीं रखा गया है। किसी खोटें से चुनाव का भी इस जयाने में निविधेय होना बहुत मुक्कित ही नहीं बित्क नामुमकिन जेता है। फिर भी जितनी हो सके चतनों केशिया निविधेय चुनाव कराने की की जाएगी। बाकी सास वात गतदाता को समभने और किसित करन को होगी कि वह लोभ-नावन के सास वात गतदाता को समभने और किसित करन को होगी कि वह लोभ-नावन के नामित होकर, स्थानीत होकर, नाति व मजहन के निहान में साफर दलानों के समान केशिया होकर हो पिता के साम के स्थान के प्रतिक के साम के स्थान के प्रतिक को साम के स्थान के प्रतिक को समझे बिना सपना मत किसी को भी न दे। लेकिन जाहिर है कि

धरमध्ये जीवन गास्त्र

केवल खयाली वार्ते समभाने से काम नहीं चलेगा । इसलिए इच्छा से या ग्रानिच्छा से कहना ही पडेगा कि स्थानीय जनता द्वारा समर्थित ग्रमुक उम्मीदवार दूसरो के मुकाबले में अच्छा है और उसे वोट देना चाहिए। परन्तु जब एक उम्मीदवार को ग्रच्छा बताने गये कि दसरे को बरा बताने की भौवत हा जाएगी। और पार्टियों के घोषित ग्रीर दिखायी देने वाले सिद्धान्तों की ग्रालोचनात्मक चर्चा भी करनी पडेगी । स्वाधीन संगठन का मृख्य उद्देश्य लोकशक्ति को जागृत और सगठित करने का है। पर प्रत्यक्ष अनुभव की बात यह है कि चुनाव ग्रीर बोट के मामने में उदासीन रहने से लोक शक्ति सही रास्ते की छोडकर इधर उधर जा मकनी है। इस खतरे को देखते देखते पार्टियों के खासकर, सत्तापार्टी के माया-जाल का चित्र सामने उभर ग्राएगा । ऐसी हालत में सत्ताधारी की श्रवीति व भ्रष्टाचार की एव उसके द्वारा किये जाने वाले सरकारी कर्मचारियो और साधनो के दक्ष्योग की वर्ची करनी पड जाएगी । सत्तापक्ष के जो उम्मीदवार साधनहीन दताये जाएंगे उनके जुनावों मे लाखो रुपये खर्च होने को टीका भी करनो पहेंगी । देखा गया है कि सत्तापार्टी उन्ही लोगो से करोड़ों हत्या से लेती है जिनकी निन्दा करने से वह कभी वकती नहीं और मसापार्टी की भाया देन वाले लोग दिये हुए मारे रुपयो को अपने अपने माल की कीमत बढ़ाकर, उपभी-क्ताम्रो पर बरमा देते हैं। भीर भी कई वार्त होगी जिनका खडन करना जरूरी होगा। स्वाधीन सगठन का किसी पार्टी से खास मेल या खास विरोध नहीं होगा, वह तो वर्तमान पार्टीमिस्टम और चाल चुनाव पद्धति के ही रक्ष में नहीं हैं। फिर भी जब किसी एक उम्मी-दवार का नमर्थन और दूमरे की काट की आएगी तो उसमें शलतफहमी हो जाने का प्रादेशा जरूर हो सकता है। इस कठिन स्थिति में खींचत निर्णय करने के लिए बडी हिम्मत की जरूरत होगी।

 नया कार्यक्रम [ ४६

पी कि वयपुर के महाराजा मानसिह नी से में सपना प्यार का सवध मानता था। उनका विदेश में स्वानक देहान्त हो गया था। मुक्ते सपने तौर पर महसून हथा कि महाराजा की विषय पत्ती राज्याता मायती देती चुनाव में कही हार न जप्एं। दूसरा उम्मीदवार या एक बंदा माने जिसके निष् मेंने सोचा कि एक ऐसे साधनहींन व्यक्ति को भी सहारा मनाना नाहिए। मैंने दोनो उम्मीदवारों में साधिन तुष्कानो दोरे किये प्रोर सहक्रम भाष्य दिया है मुक्ति वर्ष स्वान के मुक्ति वर्ष हो जीत को उस हवा के मुक्ति पर सोत पर सो नोवेश पर सो जीत को उस हवा के मुक्ति में भी जीत गये। जिसमें मुक्ति वहां मनानो हुया।

पर मैं सोचने समा कि इस प्रकार विना-मतसब के धौर किसी उम्मीदबार के बिना कहे मुने ही ऐसे चुनान सबर्प में मुक्ते अपने प्रस्के क्यों के सकता था। परिश्रम हुमा, गठ का तब समा, धौर भेरे नये नार्यकम में वाया पहुंची। साथ ही हुछ तीमां को मेरे वार्र में आपका प्रचार करने का प्रकार मिन गया। निक्त वो भी हो, मैंने किसी ऐसे बैंद प्रचार को कभी परवाह नहीं की बो बात मुक्ते खही लगी उसे मैंने दवा ही निर्णंग होकर प्रवनाया। बीर उसे धन्त वक पार भी पटका। परम्बु धन्ततंग्रस्था मुक्तको मध्ये हा स्वतं में मेरे कार्यकम भपनी यह नवती जैसी नवी। खातकर इस कारण है कि दुनाव के दिनों में मेरे कार्यकम भपनी यह नवती जैसी नवी। खातकर इस कारण है हिन दुनाव के दिनों में मेरे कार्यकम भपनी यह नवती जैसी नवी। खातकर इस कारण है कि देवने में हुपरे दुनाव खायथे। मन तक भी मांचे हुप विचार को मैं देर तक नही समात करा। इसने में हुपरे दुनाव खायथे। मन तक भी मांचे तक पह चुका था कि प्रमाने ने जितना ही सक्त वना दिना। साथ ही मत्ता के मुख्य करना था कर निया। यह दूसरी बार ऐसे भ्रमेते में न पडना ही प्रपत्न तिए प्रवस्तार है। धौर सक्ती वात यह भी घौ कि जिल वन्नीकवारी का है सहित का मांचे कर महस्त की कम्मीदबार पी कहा थे? किसी का विरोध की रातिर विरोध करना तो मेरा का सक्ती या नहीं।

प्रत्यक्षणीवनवास्त्य तैयार हो रहा था उन्हों दिनों में बोबनेर के छूचि छनिज की कमार्थ हुएकर कार्य हुएकर कार्य हुएकर वर्षाय में सामने सामी गयी। बीवनेर सामें से एमन एमलीन की कार्य हुएकर उर्द्यपुर में नार्यों वा रही थी। बोबनेर बारी में रीम झांये हो मैंने क्षिज में कार्य के समस के समस सिया। नतीजा यह हुआ कि एमन एमलीन के विषयों का उरदपुर और बोबनेर के बीव बटवारा करने का सम्बीठा हो गया। कितन के विमानित से बोबनेर साथी मेरे विरोध मान्यक में प्रार्थ । धीर में सोबने स्वाम कियों में बाम सपटन करता रहा हू की विराध मान्यक में प्रार्थ । धीर में सोबने में निर्मा वाए ! ऐहा करने करते नार्यन जोवनेर में नगरपालिका के चुनाव था पर्ध विमान विकासपों केन के लिए पूर्ण कहा गया। पुमको मेह हो गया कि विदेश चुनाव करा हो हैं। धार सोबनेर अपने विकास के सिया पूर्ण के निर्मा के सीवनेर मान्यक के सिया पुमको निर्मा के सीवनेर मान्यक में कि सामें का सीवनेर सामें सीवनेर के सिया पुमको निर्मा के सीवनेर सामें सीवनेर सीवनेर सामें सीवनेर सीवनेर के सिया पुमको निर्मा के सीवनेर सामें सीवनेर सीवनेर सीवनेर सामें सीवनेर सीव

इतने धर्म तक बनस्थली के काम को बीला छोड़ने के बाद मुफ्ते उसको समामने के लिए भी धपनी ज्यादा बाँबत लगानी पटी। किन बाँबो में प्रावसमाएं बनी भी बहा के लोग भी, मुम्ते लगा कि ठढे पड रहे हैं। असल में जीला चाहिए बंसा प्राय स्वराज के बाद प्रदेन देग में कही दिखायी ही बही देता। वस लोग धपने-प्रपंत मत्तव को देतते हैं, बिना किमी नततब के कोई भी बायमी हुछ भी तकलीफ बयो करें। इस प्रकार करीब सालभर का सम्ब मिकल पद्मा और नेया ज्या कर्मफेड़ पिछड़ गया।

जभवरी, फरवरी, सार्च, १६७२ के तीन महीनों में मुक्की वनस्यती के काम के लिए बेहद दौडपूप करनी पत्ती । सपीर को ठीक ठाक करने की हाटि से एक प्रयोग करने के सिलिसिंग में मेरे उपाया थी खाने में आ गया । बीद सी खाने का सम्यास थी मुक्ते वचन से ही बहुत था। काण में मधुमें ह ने बोर पकड़ किया। धत्म से १४-२४ सार्च, १६७२ की स्थार्गित में मुक्ते दिल का अवकर दौरा पठा। वित्रका हाल इस मुस्तक के "मेंग दूतरा जन्म" नाम के सम्यास में वताया गया है। उम दौरे को करीब सालगर हो बुका या मीर में एक्टम ठीक हुया लगने लग गया था। पर न जाने कित कारण से १२ मार्च, १६७३ को एक बार फिर जरा मा बेट-बैक हो गया जिक्की वजह से में दुवारा कैद कर दिया गया हू। यह स्थिति मुक्तको बहुत अवरती है, पर इसका उपाय फिलहाल तो कोई नड़ी विद्यानी देवा।

भुकती बनस्यती विद्यापीठ के काम की देखनाल तो धावयणकतानुसार करनी ही सोमी। प्रेस और खलबाट के काम का लाम भी सुधावर के मुद्ध में में ही किया था, हमतिए उस काम में भुधावर को घोड़ी बहुन सदद भी मुश्की करनी पढ़ेशी। बदन मंगीवत कामों के खलाबा कियी काम का निम्मा तेने की मेरी आदत नहीं है। पर मैंने जिल नये कार्यक्रम को संपीकार कर निमा चा धौर निमक्त किए मैंने वडी-वडी वार्ष घरनी कराम ये तिव्ही भी, प्रथमी कवान से निकाली थी, उसका बचा हो? इस विचार से में कई बार व्याकुल मीर विश्वत हो बाता हूं। मेरी केमी भी हातत हो स्वास्थ्य की निमाह है, पर में कार्यक्रम को संबंध छंद देता तो मुश्की मुद्द होना मुक्कित है। इस काम की मेरी यहाँ कती है। योडे बहुत सक्ट वर्ष के घतावा किमी आईकती के बेतनारि का खर्ची बाहर के हंगी से कमी नहीं करना विशेष हो के सम्भानेय की समानेय की संवार का खर्ची बाहर में हम काम की मेरी वहाँ किसी है। योडे बहुत सक्ट वर्ष के घतावा किमी कार्यकर्ती के बेतनारि का खर्ची बाहर से समानेय मेरी कमी नहीं करना। तो फिट नाये कार्यकर्ता के सम्भानेय की स्थान मेरी मेरी करना पर स्थान से समानेय की स्थान से सान से स्थान से हम स्थान से स्थान से से स्थान से स्थान से हम से हम साम से स्थान से सान से हम से हम स्थान से हम स्थान से स्थान से स्थान से सान से हम हम स्थान के स्थान से सान से हम से हम स्थान से हम स्थान से स्थान से से हम स्थान से हम से हम साम स्थान हो हो हो से हम से हम सम्बंध के स्थान से से सम से हम हम से हम स्थान से हम हम स्थान से हम हम स्थान से हम हम स्थान हम स्थान से हम हम स्थान से हम हम स्थान से हम हम स्थान से स्थान हम स्थान से हम स्थान से स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम से स्थान स्थान स्थान स्थान हम स्थान हम स्थान से हम स्थान से स्थान हम स्थान हम स्थान से स्थान से स्थान हम स्थान से स्थान स्थान से स्थान से स्थान से स्थान स

क्सर वो कुछ विसा वा चुका वा उसके बाद श्री घोतालाल गुन्त धौर श्री वन्त्रभाग शर्मा ने मेरे कार्यक्रम से मिनता जुनता कार्यक्रम चलाने का इरादा आहिर किया था। उस सितसिस में इकट्टे हुए पुराने-गये साधियों के निए मैंगे निगन सेच निख दिया या:—

### लेख

कई सालों से मेरा विचार हो रहा था कि मैं वनस्वली विद्यापीठ सारि के कामों के ग्रलावा नवे-पूराने साथियों की मदद से बाम बनता को बावत-विदासाली मीर सगठित नया कार्यक्रम [ ५१

करने के लिए कुछ न कुछ विशेष करू । श्राधिर मई, १६७० में मैंने अपनी श्रात्मकथा-"प्रत्यक्ष-जीवनशास्त्र" में लिखा था :—

"मै प्रपने वाकी समय को त्याना चाहुंया, मुख्यतया सर्वोदय की ताइन पर लोक-विक्षास्य करने, लोक को जागृत धीर सर्वाठव करने, निर्वेश की बतखान बनाने, नामर्द की मर्द बनाने, ग्राम जनवा की छोटो मोटी हुए एक बात के लिए "नेवाधी" के न चिपकने की विद्या विद्यान में घोर घालिर जनवा में बुराई का डटकर मुकाबसा करने की प्रक्ति पंदा करने में ।"

फिर मई, १६७१ में मैंने ग्रपने लेख "कि कर्राव्यम्" में लिखा था .--

"जो हो, यह है वह रिवित जिसमें मुफ जैंगे अस्पप्राएग का हुछ कर गुजरने का विचार है। मेरा इरादा सीचे पहाड पर विचा रास्ते चढ़ने का है, चने बीहड़ अंगल में विचार का है, नदी के प्रवाह के मुकावक में चकने का है, उनुमें कूद पड़ने का है, जलनी हुई धान में प्रयोग प्राप्त को भीक देने का है। """ में बनने को नवॉदय विचारधार के कनावीक राता हूं। पर में किसी 'बाद' से बचा हुमा नहीं हूं। मुफे किसी पार्टी का सदस्य नहीं रहना है। मुफे किसी भी हासता में किसी चुनाव में खड़ा नहीं होना है। मुफे पार्टी, पद, पादर, पैसा, प्रसिद्ध कुछ नहीं चाहिए।"

"ऐसी भावनाओं और तरगों को लेकर "स्वाधीन वाय-नगर-संगठन" की मेरी कल्पना हुई धीर हम, ब॰ ना॰ कीराकी ग्रांवि सारियों ने जीर-जीर से काय शुरू कर दिया। निवाई धीर फुलेरा तहसीलों के तुकानी दौरे किये ये वे । कई एक प्वाधत क्षेत्रों में स्वाधीन मामसमाधी का सगठन हो गया। बीच में ही एक बार वरस्ता के भीसम का धीर दूनरी बार प्राम्त प्राम्तों का सगठन हो गया। बीच में ही एक बार वरस्ता के भीसम का धीर दूनरी बार प्राम्त पुनावों का किया गया। विच में ही एक बार वरस्ता के मीसम का धीर दूनरी बार प्राम्त पुनावों का किया गया। विच में ही सांकि बार छः महीवें सगाकर वनस्पती विचापीट की विचीच स्विति को ठीक करके में निष्यत्व हो बार्क। उसी सिसिवित में बाई भारी दौर पूर करते करते मार्च, १९७२ में मुफलो प्रवासक "हार्ट-पर्टक, हार्ट केस्वीर" मां शांवक जैसा दौरा पढ़ गया। वतको प्राप्त केस विच केस निष्य की विच कर दौरा पढ़ने पर भी में बच की गया।

"या बरूल मुफकी घर के भीतर कैंदी की तरह रहना पड़ रहा है। मेरे मिसने-जुलने, क्षेत्रने-जावने, अलने-फिरने, लाने-पीन बीर काम-धाम कब पर एक हवार धरिको समी हुई हैं। यदा कदा मिर्फ "पैरोल" पर ही मेरा वाहर निकलमा होना है। कुछ समय पहले माई श्रीभालातची गुरत और चन्द्रमानुची कर्मा का मुक्को बनायों। ये उहुए ही रहा या कि समीनगो-सीनकों के समठन की अपनी करनना मुक्को बनायों। ये उहुए ही रहा या कि स्या मेने सोचा या बीर क्या यह मेरे अपीर का हो गया है। दोनो साधियों को प्रपने सुफांब देते हुए मेने बता दिवा कि में सब्धिय होकर दोड़-पूप जैला कोई काम सो कर नहीं सक्या, वाकी में पड़ा-पड़ा घपना सहयोग खाप सब साथियों को देने की कोगिश रूक या। ४२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

"धाव १ धगस्त, ११७३ को साथियों की इस मंत्रा में एक नये संगठन की योजना प्रस्तु है। जाहिर है कि उसन संगठन का सदस्य वनकर कुछ विषोध करने की मेरे घाउँर की स्पिति नहीं है। यर मेरा धावन दिन ताथियों के साथ होया धीर मुक्ते जो नुख भोड़ा बहुत वनेगा की में इक्ट करता रहु गा। इस सुध अवसर पर में प्रपत्ती दोटी-छोटी छ पुस्तिकाएं भेंट करता हू, इस प्राचा से कि इनमें प्रकट किये यये विचारों में से नुख प्रहुण करने योग्य पाया आए तो उसे धपनाया जाएगा एवं इह सिद्धान्त भीर कठीर प्रमु-पासन के साथ जन-शनिन को विश्वित-बायुत-समिटिंड करने का ठीस प्रभावकारी काम करने का यथा शनित सरल किया जाएगा। जब जन-जनाईन !"

बहरहाल मुक्को बाजा नहीं है कि जैने कार्यकर्ता मेरी करना मे हैं दीने दो चार कार्यकर्ता भी मिल जाए ने धोर कोई कात्तिकारी काम बाते कर सकेंगे। कान्तिकारी काम के लिए तो किसी घरतार को हो प्रतीक्षा करनी पहेंगी!

उपभाग १

•

विचार-सार

# विचार-सार

### प्रस्तावना

विवार-नार में योण्डीवन् ग्राध्यातम्, घन्नरांट्रोय स्थिति एवं मामाविक गैसीएार विषयों के घलावा अपने देव की पांच नीतियाँ (१ धर्षनीति, २ वर्षनीति, १ गट्नीति, १ राष्ट्रीति घीर १ प्रधानन नीति) के बारे में बेरे वी विचार ह उनका बहुत मीक्षल मार्चिया वदा है। इस मार में पाठहों को मेरे मन की व्यक्ष व्यक्षनीर से देवने को निक्ता।

होरालाल शास्त्री

# विचार-सार

जब से मेने मूरत सम्भानी तभी से विनिध विषयो पर मेरे विचार चलते रहे हैं। पढ लिय जाने के बाद में भ्रपने विचारो को गढ़ में अथवा पढ़ में लेखबढ़ भी करता रहा हू ।

(१) पहले साढे तीन मालों में मेरा ज्यादा विचार घात्मवरन के बारे में घला है। यों तो सहकार बलाजू और महत्र भाग से भगवान् का, भगवती का नाम मेरी जवान पर मता ही रहता है यहा तक कि भगवती की मूर्ति से तो मैं कभी कभी वार्ते भी करते का जाता ह। कभी कभी खहत्य भगवान को वैं परीक्ष स्टक्कार सुनाने सपता ह। यसा .....

किमु आम करें इससे उमने हम आस करे न विसंभर से

भीर कभी मैं कहता हूं यह काम है सो मेरा नहीं भगवान का ही है। यथा —

न काम भेरा भगवान का है, चिन्ता मुझे क्यो भगवान को हो। संकोच क्यो हो मुझको ज्रा भी, संकोच हो सो भगवान को हो।

कभी मैं भगवती की जय बोलने लगता हूँ यथा .—

अयि जगज्जननी जनरन्जनी,
भगवती भवती भयभन्जनी।
सुरमुघा सकलामुरमदिनी,
जयतु देवि ! सदाशिवसंगिनी।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

सह सभी कुछ होता रहा है, बर मेरी समक्त में यह माब तक नहीं बाया है कि जिम भगवान् या भगवमी की बात में करता हूं वह है कहा और उनका स्वरूपक्या है? उसे प्रतादि बता दिया, धनन्त बता दिया, निराकार बना दिया, निरिकार वना प्राप्त होता है। प्राप्तित बता दिया, धीर न जाने आन्या बता दिया। बर सकत बात दो पह है कि यह सब कुछ दुदि वे मेरी ममफ मं नहीं झाया है। अद्धा ते कुछ भी माना जा सकता है, मीक हो तो किर कुछ करने घरने को बचना ही नहीं है, बरामी मूर्ति को वाखात् भगवान् माना जाता है, उसे स्नान कराया जाग है, उसे खिनावा पिताया बाता है, उसे मुनाया जाता है, उसे क्यां कहा है। पर बुद्धि को काम में तेना गुरू किया कि यह कुछ प्रनिश्चित वा हो जाता है। बारद इसीनिए कहा नया कि "सी बुद्ध" परतस्त स."।

हमी प्रकार सृष्टि की उत्पनि, उसकी स्थिति और उसका नय भी मेरी समर्फ में नहीं प्राया है। न जम्म मेरी समर्फ में बाया, मृष्टु। मुफ्छों ग्रह मीचने सं मजा प्राया रहा है कि वहीं ने बड़ी हस्ती के भी प्राया निकत जाने के बाद उसकी कुछ भी गति दुर्गित हो मक्दी है या किसी के मर जाने के बाद उसका जुएगान किया जा सकता है, उसे निर पर विठाया जा मकता है। मुतको का आउ भी किया जाता है, पर जो मर यथा उसे क्या मतसब ऐसी किसी भी बात ते, कोई कुछ भी करे उसके जाम से, उसकी बना से ? इसनिए मेरे जमी हुई है कि

(२) धन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की मुक्की विशेष बावशारी नहीं है, पर जितना सा मुक्ते जानने को मिनता रहता है उनके धाषार पर मेरे विवार तो चनते ही रहते हैं। पांकरतान बना तो मुक्ते बहुन दुरा नना, इतना ज्यादा कि मैंने कई मात्री वक पांकरतान का नाम नहीं स्थाप पाकित्यानी पनाय बालों ने पूर्वी बयान का शोधस्य किया तो उन्होंने बयान्तर का स्थश खड़ा कर दिया। और प्रपंत को खत्म कर लिया। तब मैंने सोचा पाकिस्तान के साथ यही होना था। मैं सामे सोचना हू –हुधा क्या है, होगा तो घव? यानी भरिष्य मे पाकिस्तान के और भी टुक्टे होंग। इससे धर्मने को कुछ मिन या न मिने, पर धनना होने बानों की उत्तरोत्तर और भी धनत होते रहने की प्रक्रिया ज्यारे रहे तो यह टीक ही है। बगता देश भारते को कब कितना निहाल करता है भी प्रभूते देखने की बात होगी।

प्रावकन खासहर धमेरिका, रिगम और नीन की भी नीति धपने धपने प्रमाद क्षेत्र बहाने की है। कोई भी देव दिना में हुवर देव पर उपनर नहीं कर सकता। नजरी है सो उच्छे के बोर की नजनी है, जो शानित की बात करते हैं वे मुक्की मुठे तगते हैं। तब्राई न करते में किमी को घरना कायदा तनता होंगा तो वह लढाई नहीं करेगा, या किन्हीं को भी लडा निजन के पान कायदा तनता होंगा तो तमने देव यह के सबे ते देव तगा। विवतनाम में इना हटाकाड हो बचा तो प्रमोरिक को बच्चे प्रसाद के प्रमोरिक को मार्ग तो तनका फिक उने हुवा। सारे दिखायुँ देवा में महैनाटक देवा साता होंगा तो अमेरी मी आपर धमेरिका पादि नी कुछ न कुछ स्वाविद्य हो हो बाएगी? यही बात परिचम एपिया पर तागू होती है। और धमेरिका दंशन और इत्यावन का इतना पक्ष

विचार-सार [ ४६

क्यों करता है ? पाकिस्तान को मजबूत बनाने की फिक समेरिका क्यो करता है ? रिप्रिया भारत से दोस्ती क्यो रसना चाहता है ? समल में यह एक दूसरे का मुकावता करने का सेल है । भारत समेरिका के सागे हाथ भी पनारे, और उसे युरा भी कहना रहे ? नेपान भारत में मदद लेता गहे श्रीर समय समय पर सकड़ता भी रहे। जराने इजरायन को ताकत और हिम्मत को टेस्कर पाक्चये होना है, उसे समेरिका का महारा तो है ही। महायुद्ध में हुई नयकर वर्वाधी के बाद अर्मनी और जापन की तरककी दाद देने लायक मैं। श्रिटेन धीर फाम्स ने महायुद्ध के बाद समये को ठीक ठाक कायम रख लिया हो भी छोड़ी यात नहीं है। दिश्वाय स्वयंदिका की, सफोका की, दिश्यल-पूर्व एशिया की, पिक्षम एशिया की स्थित बहुत उनभी हुई मुक्ते नमती है। इस नक्ये में भारत की स्थित क्या है? याजादी के छड़बीस सालों में भारत सन्दर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बया कर पाया मी गहराई से सोचने की बात है।

- (३) सामाजिक-णैशिशिक मामलो पे भी मेरा बहुत मीच विचार चता रहा है। भारत में शिक्षा मुफ्को 'हुइपिन' की बेटी जैसी सगती है। विद्यापियों का राजनैतिक दुहद- मीग तो सत्ताघरी नया, अमताघारी क्या-संभी पार्टियों करती हैं। बाकी विद्यापियों को, युवकों को दिना तताने का, उन्हें रोजगार लगाने को कोर पक्का काम नहीं हुआ है। प्रसद्द कंमिटयों-कमीशत वने, उन्होंने तिरकी पाती पैजन तमाने की सिकारियों की सी भी मानी कार प्रस्त में मही लागी गयी। विद्यापियों में क्यारिय्यं और अनुस्तसन का हास कहाँ से प्राया ' यह नव विद्या राजनीति के कर्णधारी से विद्यापियों ने सीखी है।
- (४) मैं यह मानने बाला हूं कि रखी धीर पुरुष के बराबर घषिकार हो, सो धपने देन में है भी। पर स्त्री को पुरुष वनने को बेच्टा नहीं करना बाहिए। माता होने के कारण रुत्री की ग्रमनी खास मर्यादा है, मानुष्व स्त्री का गौरव भी है। सातृत्व की मर्यादा की रखा करते हुए को कीई सा भी काम कर वकती है, मंत्रे ही वह कीच में भी बाए!!
- (५) मुसलमानो के साथ पक्षवातरिहन व न्यायमुक्त ब्यवहार होना चाहिए, पर उनकी मिर पर चक्राया जाना न उनके हित मे है, न राष्ट्र के हिन में । प्रतवसार हिनी पार्टी को बोट मिल सकते हैं, मुस्तमानी को लुकाश्वर करने से, यह सोगय कांचे ते क्रिमुलिस कांच्रन मे दक्षत नही दिया जाएमा धीर उर्दू की तन्कती के लिए तब हुक्क क्लिए जाएमा। हिन्दी धीर उर्दू वास्तव मे एक ही है, उनकी धीर भी मिला देना प्रच्छा है, न कि उनकी पृश्रीक की तैयारी करवाना। जैमे मुनवमानो का घर्मशास्त्र है वेते ही हिन्दुयों का पर्मशास्त्र भी तो है। एक को चाहे जिनना दंडा जाता रहा धीर दूमरे को छुम्रा तक मही गग्र, हो कहा का न्याय है।
- (६) मैं मानता हूँ कि हरिजनों को लगातार दिया जाने वाला सरक्षण उनको पगु बनामे रखने का सबसे अच्छा उगम है, पर जिनको पोट चाहिए उनको हरिजनो के वास्तिकक हिनाहित से क्या मठलब है ?

६० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

(७) किसानी-मंबदूरों का दर्बा झाज के जमाने में सबसे ऊंचा है, पर उन दोनों को चाहिए कि वे राष्ट्र के हित का भी घ्यान रखें। पहले से ही कम होने वाले उत्पादन की धौर भी कम कर देना मजदूरों का धर्म नहीं हो सकता।

- (s) पूजीपति से एक ओर काला रुपया वमूल करके उसका एवजाना देना और दूमरी घोर उमें निरम उठकर गालियाँ देना—यह तमाजा भी देखने सायक है।
- (१) मुन्ने लगना है कि सबसे ज्यादा मुझोबत झाज के अमाने में मध्यम वर्ग की गौर उनके साथ ही बुद्धिबीची ममाज की है। भारतीय (या कहिए किसी भी) समाज में इन दोनों का प्रच्छा स्वाचन रहा है सो बना रहना चाहिए। पर समाजवाद के नसे में नध्यम वर्ग की काम रोजिंग जा रही है मो बहन बरा सकता है।
- (१०)-(११) नोकरसाही का नाम देकर राज कर्मेवारियों को दुरा दताने की प्रवृत्ति को मैं बहुत बुरी मानता हूँ । कहते हैं सिवन स्तिवक को फामिटेड होना चाहिए, पर नो सिविन को कि मीटेड नाना चाहिए, पर नो सिविन को कि सीवेड होना चाहिए, पर नो सिविन को करते के किन के सिटेड हैं। और क्षियेटड कित बात से ? किसी महत्वाकाशी का सनक से ? सिवित स्वित्त को क्या चलातों, पुरिविचरों राक को कमिटेड देखना चाहने बाते खोच भी एम देश में है। इस "क्षियेटड" प्रकरण का खास मज़ब्द देख हो चुरके-पुरके कम्मूनियम की तरफ प्रकीटने का साहुम पड़ना है। सम्प्रा एमा मिना प्रवृत्ति के स्वत्ता प्रवृत्ति स्वयों प्रवृत्ति महत्वा हो प्रवृत्ति स्वयों प्रवृत्ति स्वयों में मत्ता साहित के स्वत्ता है। स्वयों में प्रवृत्ति स्वयों मत्ता साहित स्वयों स्वयों में मत्ता साहित के स्वयों साहित स्वयों साहित साह
- (१२) और पत्रकारों को तो कमिटेड होना ही चाहिए! यह हवा इस देश को कहाँ ने जाकर छोडेगी ? ऐसी हवा से हमारे जबतन्त्र का क्या होने वाला है ? और इसने किस प्रकार का समाजवाद आएगा ?

अपने देस की पांच नीनियों का चित्र मेरे तात्रने हैं। (१) घर्षनीति, (२) धर्पनीति, (३) राष्ट्रनीति, (४) राजनीति और (१) प्रशासन नीति।

(१) जाविने के घमं का लोच वेक्यूनर स्टेट ने कर दिया धौर तालिक धमं का नीच स्वय नेता सोम तेती से कर नहें हैं। प्रामनीर से नेताओं की नीति यह है कि उचित्र प्रमुचित किसी नो जगाय से उनका खुद का काम बनना चाहिए। प्राप्त को दुनिया में निवस्ता नेती पामनापन की बातों के तिए कोई स्थान नहीं है। कहने हैं सदाबार महिता बननी चाहिए। अब विना बनाने ही दुराबार खहिता चल रही है तो सदाबार महिता का बचा काम है? सबसे ज्यादा भवकर वात यह है कि हम लोग धपने धापको भूल गंगे हैं। हम विरंतों के नक्शन बन गंगे हैं। हम विरंतों के नक्शन बन गंगे हैं। इसकी उन जीया दिखना चाहिए, चाहे के में पंता हो या न हो भीर बाहे विरंतियों का बर्तन-व्यवहार एकदम खोटा हो। इस बाइरियं के निरंप प्रमन यह "के बिक्ती" में सच्या पीना एक फैनत हो गया है। हम मार्जनक के नाम

विवार-सार [ ६१

पर प्रभी तथाप सस्कृति को भून गर्च है, उसे हम आने प्रनायने में नप्ट रियं जा रहे है। हमने पत्रता सामधान धोड़ा, तेषानूषा धोड़ी, धगरो भाषा छोडी, धपने नारे रहन सहन का तरीश छोड़ा, हमने प्रथने चारिक्द को भुनिका छोड़ी ! चौर हमने धपनाया स्था—पह चौची सान, राष्ट्रहित्वित्रोधी स्वायंपरता, रेसनकिहीन परिक्या, एक हमरे हो जिराने की प्रशुक्ति चौर हर तरह का विष्याचार !

- (२) हमने सही सबंबीति भी नहीं अपनाबी । गांधीजी का विवार तो हमने कभी की दोड़ दिया था। हमने ग्रयने देश की, ग्रयनी जनना की प्रतिभा की भी भूना दिया। जी पचवर्षीय योजनाए हमने बनायी उनका हुछ, लाम बिला होगा नो वह ऊ वे सब के के लोगी को मिला होगा । बाखिर में हमने "गरीवी इटाओ" का नारा लगाया । क्या गरीवी को एक जगह से हटाकर दूसरो जगह ले जाना है ? किसी एक की गरीवी हटाकर किसी दूसरे के सिर पर योपना चाहते हैं हम ? नरीबी का हटाने के बजाय मिटाने की बान करनी चाहिए थी। जो लोग गरीवी हटाने की बाद कर रहे हैं, उनकी खद की गरीबी तो हट ही गयों है। वाकी जिनके पास उन्होंने गरीची पहुँचा दी उनका भगवान मासिक है। राजा-रईसों की एक नयी विरादगी वन गयी है। ये चौत ध्यने ठाट-बाट के पहन-महन के द्वारा प्रिक्तिए। गरीब की गरीबी हटाने की फिक में दूदसे होते जा रहे हैं। क्या प्रदने साधनहीन देश की भूठी मान दिखाने के चक्कर में भाकर संपनी सादगी की तिमाजीन दे देनी चाहिए थी ? राष्ट्रीयकरण के नाम पर सरकारीक्टण के मोराबार्व में बचनी जन्ति नगा रह है। सत्र हुछ मरकार को करना चाहिए? जिन बडे-वडे उद्योगों का राष्ट्रीयक रहा किया गया है उपमें करोड़ों का घाटा हर साल होने की घिकायत है। नोट छापकर ग्रीर उधार का रूपया लाकर हम कीमतें पटाने जा रहे हैं ! कुछ लोगो को नौकरिया देने की योजना सलाकर हम बरोबगारी मिटाने जा रहे हैं। चोर वाजाने करने बातो का रुपण लेकर, प्रपता राजनीति को काम बनाकर हम चौरबाजारी बद करने जा रहेहुं प्रथमी ग्रसफलनामी राजिस्मा दूसरी पर डालकर हम प्रयनी रक्षा कर लेना चाहते हैं। घपनी पार्टी ये बडे-बडे भूम्बामियी की इकट्टा रखकर हम भूमि सुवार करना चाहते हैं। हम भूमिटीनो को जमीन देना पाहते है। राजाओं की प्रीवीयमें के मुक्कित से दो-चार करोड़ दवाकर हम यदे भागे क.न्तिकार्र दिलामी देना चाहते है !

६२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

प्रतम दो राज्य बाहते हैं। पर धरन उनको हहला रहे हैं। क्या बरूरत पड़ी है जो साव नहीं रहता बाहते हैं उनको सान रहने के लिए रवाने की ? यही प्रावान दूसरों अरह मी उदेशों तो उठ आएनो। तब क्या गनव हो बाएशा ? बहुत बड़े-बड़े राज्य किसी स्थोग से सा भूत में बन से पे मो उनके छोटे-टोटे यो या रो से स्थिक हिस्से कर देने में सामिर क्या नुक्तान है ? राज्यों को कड़े सिकने ये फने हुए रखने की सबनी नीडि भी लामदायक खिंद गढ़ी होंने मानी है। मुक्ते मों कई सार क्याच राज्य-सगरपालिका जैसे दिलायों देने लग आते है। बेचपरों को हर पर्या दिल्ली की बीड से स्था रहना पड़ता है सो परने राजकात की समामते की कुर्मन हो उनको नहीं पिससी ।

- (४) प्रपत्ने यहा की राजनीति तो नफरत करने लायक यूगनी हो गयी है। चुनाबी में हम लोग किसी प्रकार के शौचित्य की मर्यादा का पायन करने की जरूरत नहीं समस्ते। राजनीय माधनी का ट्रूपयोग बाजादी के साथ किया जाता है। जाति की काट करते करते हम लीन जाति के ब्राधार पर टिकट बाट देने हैं। पू जीवाद का सहन करने वाल हम चीर वाजारी करने वालों को टिकट दे देते हैं। चुनाबों के लिए करोड़ो रुपया इकट्रा किया गया सी कहान, किन से मिला? उस रुपये का हिसाव कहा है आ स्वरूप वालों के पूछने पर हम कुछ लाख का हिमाब बनाकर वरी हो गये । कातून कहता है कि एक उम्मीदवार प्रपति चुनाय में इससे ज्यादा अर्थ न करें, पर उस सर्योदा में रखने बाल उम्मीदवार कई हीने ती -निनने होमें ? जब जरूरत पड़ी नो हमने दल बदल के जवन्य कृत्य की युद बढ़ावा दिया। जब गपना काम निकन गया नो दत बदल के विरुद्ध बात करने लग गयं। हमने दूसरी पार्टियों के मास कर बार न्यायोजिन व्यवहार नहीं किया। पार्टी के भीतर भी हमने जहां जिसको चाहा बीप दिया। इसमे भी अपना कोई प्रबोजन तो रहा होगा? बड़ी दड़ी प्रौर जगदातर कुटी वार्ते बनाकर हमने अपने पुराने साथियों को निकास फेका और उनकी एवज में प्राप्ते कीन ? व हो जो पार्टी के सिद्धान्तों के हिमाब से किसी समरफ के नहीं हो सकते। पार्टी में भू ठे सदस्य बना लेना तो अपने यहा बहुत मामूनी बात रही है। हमने ऐनान किया कि पचामती के चुनाव पार्टी के धाधार पर नहीं होये, पर हमने इस ऐसान का पालन इसका पूरा उलवन करके ही किया और इस प्रकार हमने प्रवायनराज को नव्द होने की नाफ दनेल दिया। और यह तो हमारा तरीका ही है कि कहना कुछ और करना कुछ ! हमारा विश्वाम नारेबाजी में ज्यादा है। बोट नेन की सातिर चाहे जो सक्वा-भूठा नारा . लगा देना, धौर हर किसी ने चाहे जो कुछ बादा कर लेना यही हमारा सरीका बोट बटोरने का रहा है।
  - (१) यक्नी प्रशासनमीति की मान बात यह है कि पार्टी के लोग प्रधानीक मामने न का बंजा दसल देते ही रहते हैं। शबक्रमंत्रारी तम मा जाते हैं। विन लोगों को दूत भरना मानते हैं, से सरकारी स्थायां केल को कुकाने का नाम तक म तें तो उत्तर हम कुछ नहीं विचान देते। इसीलए कर्जवारियों के सामने हमारी प्रतिकार बहुत गिर गयी है। जो कर्नवारी नुद्र बानाक है वें हमको उत्त्व बनाकर सम्मा उन्त्यू सीवा कर तेने हैं, पर वी

भने भीर निष्यक्ष कर्मचारी है उनको अपनी भन्तमधी और निष्यक्षता का दह भीगना पहता है। हम राजकर्मचारियों के भ्रष्टाचार की विकायत करते हैं, पर हम यह नही होचने कि भ्रष्टाचार के मदमे बड़े पुरस्कर्ता हम खुद हैं। ऐसी हालत में अपने यहा प्रशासन नाम की चीज बाकी नहीं रहने वाली है।

दम प्रकार मैने अपने कुछ विचारों का सार पेश कर दिया है। अपने यहां की मीनियों के बारे में मैंने जो कुछ कहा है उससे मेरे दिल के दर्द को पहिचानना चाहिए। किसी की काट करने के सिए मैंने कुछ नहीं कहा है। मेरी जैसी-जैसी प्रतिक्रियाए होती रहीं उनका हिए मान को किए मैंने कराया है। जो स्थिति है उसका हमाज तो कोई कातिकारी प्रवतार होगा तब जाकर होगा। जो अधिकार विचे बैठे हैं उनके कुछ भी बनने की प्राचा मुक्तों नहीं है। में जो कुछ भी करें उससे देश ही हालत हॉम्य मुखरने वाली नहीं है। मैं जुई अपने प्राचा के किसी हो। मेरे प्रविच्च किसी हो। मेरे प्रविच्च किसी हो। मेरे प्रविच्च किसी हो। मेरे प्रविच्च के स्थिति में नहीं पाना हूं। जो हो, मुक्तों यह विच्चात तकर है कि यह स्थिति विचक्त की स्थित में नहीं पता अधिकार मिलन पर पहुँच जाएगी तब उसका प्रसन्धा मुक्त होगा। भीर भागित किसी किसी विचेत तो प्रयन चाहते हैं वैसी स्थिति प्रयने को देखने की सिल जाएगी।

# उपभाग १

श्रतिरिक्त सामग्री

: ३ :

# ग्रतिरिक्त सामग्री

### प्रस्तावना

"धार्तिन्ति तामग्री" में १. पिछले साढे तीन सानों की डायरियों के कुछ प्र ग दिये गये हैं, १ कुछ चुनी हुई नयी-पुरानी रचनाए प्रस्तुत की तयी हैं, ३ महारमा गांधी थोर बिनोबाजी है दूए मेरे बानांनाप का बिबरस कार उपस्थित किया क्या है, ४ मेरे नियं हुए ब मेरे पान साथे हुए थोडे पन दिये गये हैं, और १ कुछ नारस्से का मार व कुछ लेख दिये गये हैं, १३म प्रनिरिक्त मामग्रीय से ठकों को कुछ ऐसी बाते माल्य हो बाएसी जिनका समायेश "बीवनचुल" में नहीं किया जा सकता था।

हीरालाल शास्त्री

# ग्रतिरिक्त सामग्री

: १ :

### मेरी डायरियों से

जयपुर, २२-७-७०

जोवनेर कॉलंज के काम के लिए बहुत टैलीफीन हुए। पहले वो जोवनेर ने देवीलाल नाग का फीन प्राया, फिर जयकुमार जैन धीर हनुमान तैनी आर्थ। मैंने बोभारामजी को फीन किया। फिर सत्यप्रसक्त मण्डारी को किया। सार यह है कि एय॰ एस॰ सी के विषयों के बटने की बात हो गयी। बटनारा ३१ जुलाई तक या उससे पहले हो हो जाए। वें अहा-जमी। उसार भीर मिंह के सतावा अध्वारी देठे थे। महाजनी बाहर के विशेषज्ञ की चाहते हैं, किसी पटेल का नाम सामने हैं। सण्डारी ने मुक्ते बताया कि पटेल झावे या न फाने, विषयों का बंटबारा ३१ तक या उससे सहले जरूर हो जाएगा। यही हाल मैंने नयकुमार भीर हनुमान को बता दिया धीर बही बात देवीलान नाया को व कवोड़ीनाल कामहार की कहरी।

### जयपुर से बनस्थली, २७-७-७०

मवर्नर से जीवनेर कांतेज की बात पूरे क्लियार से की वे महाजनी से बहुत नाराज है। मुख्यमन्त्री के बारे मे क्लियायत है कि वे सब कामो को उदयपुर में ही करना चाहते है। जोधकेर में एमक एसतीक कोलने की खुद डॉक महाजनी ने इचानत पे दी और जुन ही एडवड़ करता है। मैंने कह दिया कि खाग डॉक महाजनी से कहदें कि विषयों को बदेवारा न्यायुग्त कराहें। मुक्क हो गयी तो आपके हार पर सान्त्रोलन होगा जिसमें मुक्क भी धार्मिन होना पटेगा मों मैं कभी नहीं वाह सकता। उन्होंने खपने सहायक से कह दिया कि डॉक महाजनी ७० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

को फोन कर दो कि ३०-७ को प्लेन से उतरते ही बीचे मेरे पास आवे। मुक्ते इस बात से सन्तोप हमा।

### हट्टण्डी से प्रजमेर-जयपुर, ६-१०-७०

हरिप्राक्तवी मे बहुत सी बाते । मैंने कहा कि मैं विनोवाजी से मिल झाऊँगा, सिद्ध-राज सादि से भी बात कर लूँना । मैं कामस्वाको से राजकीय सबुदान या अगून विश्वक नहीं बाहता । कामें स बातों से पुक्ते सब्दोग नहीं मिलेया, वे केरा विरोध करेंगे । मैं किसी पार्टी में नहीं जाऊँगा । मेरे पाम जिनको साना होगा सपने साथ आरागे । जिल्हा मुक्ते सह-योग देना बाहिए मैं चुक्ती में हूँगा, यर मुक्ते जो कुछ करना है मो पपने बतसूने पर करना है, भगवान भरेसे करना है। स्थ्ये पैसे की तभी मुस्तवें का मेरा एकका विचार है।

### बीकानेर पहुँचा, १७-१०-२७

रपूनरप्यास्त्रणों के साथ पूमना हुआ। उन्होंने बताबा कि साथी मिन्दर प्रोर एक दूसरों सम्या से खाल सवा साख क्यमा आमदान के लाम के निए मिल गये हैं उनसे लग्नें का काम ठीक चलता है। ठाठ से सर्वा होता आनुम होता है। २०-२२ कार्यकर्ता खादी के हैं, ३४-४० दूसरे नमें हुए हैं, बेतन पर। जून जीमें बीडती है। यह स्थिति हर कट्टी नहीं हो सकनी तो मेरी जैसी स्थिति भी हर जगह नहीं हो बकती। रखुबरदयासजी ने सुकत्रा कि र साज प्रपन लगादें तो २० साझ साबी क्रमीजन समादे। उससे बनस्पत्री के निए जन का लाम इस केंत्र में हो सकता है। मुक्ते बहु मुक्तिय समत्रा है।

### बीकानेर से गांवी में व वादिस, १८-१०-७०

सबेरे १ बने गांवो के निए निरुक्त पड़े, दो बीपी में । मिडराज को मैंने प्रपने पान दिखाना १ एक गंगायाम बीधवरी भी साथ बैठा, उनने मेरी बखी तारीफ की मेरे उन दिनों के दुराने भाषणों में से इन्में कुछ बाद था । सिडराज से बार्ले हुई । इतना खाई होता है इसका बाग दिया जां? ? बहु कहीं से ग्रांवे ? इतावों में दिलकस्ती की से हेता भी पार्टी बाले दिल्ले सन आएंगे ? पार्टी शांव गड़बड़ करके काम की विवादने की कोशिया करेंरे । न केशन पत्राप्त में बहिक ग्राम्तमा में भी पुत्रने को कोशिया करेंपे । उनके प्रति हम क्या रूज गर्नों ? कार्यक्ता पाणी में में ही पैदा होने चाहिए, उनको पैसे देने सेने की बोई बात न रहे ऐसा मेरा पायान है । जुनायों में श्रेरणा देने के बाद फिर हमको विस्त नहीं होना चाहिए, ऐसा मिडराज ने कहा ।

माची को देखा। एकाय जगह में कूमाराम बाट जैने कुछ जायुत कोग दिखानी दिने। पुने केपाता है कि क्षामदान कम है, और क्षामनभा नया करेंबी, इसको रूपरेखा किन्दुन भी स्पाट मही है। तो कार्यकर्ता मेंने गंजे हैं उनके यो कुछ भी दम नहीं है। उनके प्योचे को मामद ही कोई कम हो। उनकी टूनिंग होना मुक्कित है। वैभी को ट्रॉनिंग देगा भी वेक्सर होगा। वे छोड़कर बस देंगे या रहींगे तो भी कियांगे के टट्ट होंगे। ग्रतिरिक्त सामग्री [ ७१

### वयपुर, १८-५-७१

बान कार्यकरांधों की ठीक्र-ठाक सभा हो गयी। भाठ निल्तों के नीम हाविर ये। ४-४ हुमरे निमों के नीम धार्य हुए जाने ना नरकों हैं। जोननेर से कोई नही भागा न निवाई से। बनस्तनी में भी घंकना जमदीब पहुँचा। कुल मिलाकर उपस्थिति ठीक्र-ठाक यो। काम एक पश्चा देर के जुल छोर करीब ठीन पश्चे नमें। बक्त नहीं जबानी बानें बतायी निकर नमा साहित्य सो कीमन ने दे दिखा, २ 3 धारमियों को। कुछ ने पुस्तक भी वरीदों। कुछ में कहा कि इस सो बीन हो। इहें ये कि बचा करना चाहिए, वह दुसे मार्यकर्तन निमा गया।

### बनस्वली १८-०-७१

### बनस्यली, ६-११-७१

धान दिन भर का समय मेरे बक्तांदन कोर भणावो (विद्याप) की बगाई के समा-रोह में नाम नाम। अच्छे उत्तमाह और सक्तास का कार्यवा रहा। बच्छुर से मिद्धाना, राजा कृष्णानी कनाइ कीर तैया उत्तरसात आगे । जोकुनामाई नहीं पृत्तेत सके । धरिवार के सकी जोग आ पहुँने, मिर्क मोहुन नहीं पहुँच पाया। वस्त्वत का आत्मा नहीं हुता। श्रीभारापन्यों का भामा भी नहीं हुमा। देखोंकदरवी आदि भी नहीं आथे। स्वार्च के स्तृत्त के तिए तिजोगी-नाम मारि सभी का नदे। दुवानानारी वाददार और वसीनावाजी नहीं आये। अपने हारका-नामकी का भवर बनवाय साथा। मेरी मावाधिरह के निवधीन में मोथी में मुक्को हुत्वमाना नारिकार क्षन, नदार खादि बहुत कुछ मेंद्र दिया। स्वार्ड में र रुगये महस्ताही मदूर किये ७२ ] प्रत्यक्षजीवनगास्त्र

### वनस्थली, ४-१२-७१

### बनस्थली, २-१-७२

स्नाज सबेरे उठा तो देर से हो, पर कमेदी वालों के लिए एक मोट जिल दिया। यमान को दिला दिया। वोरेन्द्र ने दो बार टाइप किया। यथान, पालिंद्र ने कल के ह्वालों के जवाब तस्मार कर नियं। कमेदी बालों को व्यामी मृत्य दिखे, फिर टाइप करवानर उनकों दे दिये। मेरा नोट भी कमेटी वालों को दे दिया। एक्ते उन कोनों को वाली बच हुमा दिलाने ले गये। हवाई जहाज का इतिहान बताया। वेद विद्यालय की स्थिति बदायी। वोटिंग करायी। बाद में जरूरी वालोंति हुई। मेरे ख्याल से उन नोगों के स्वालों के उक्त-चील उत्तर सिमार मंथे। प्रोक्त का कि उत्तर नोगों के स्वालों के उक्त-चील उत्तर सिमार मां प्रावण को उत्तर नियाल कर स्थाल से उन नोगों के स्वालों के इतिक-चील उत्तर सिमार मां प्रावण स्थाल के बारे में व विकास कर दायान पार में कि हों से में व विकास कर दायान पार में बात तो प्रताल के हिंदी का को कि नाई होते हुए भी यहां पर विकास के कि ती काम को दन्न नहीं दिया जाएगा कभी भी। मकानों की बात दो प्रताल है, पर साधन सामग्री से वनस्थानी विक्त स्था पाया कभी भी। मकानों की बात दो प्रताल है, पर साधन समग्री से वनस्थानी विक्त स्था पाया के उक्त टाक भाषण है दिया, हिन्दों में। उन्होंने भाषण में सन्तेष प्रत्य मार मिल कमेदी का मारा बहुत कि तर सन्तेष । अस्त सरल धीर राजस्थान सरकार पाता बहुत होता साहिए।

### वनस्थलो से जयपुर, द—३-७२

इमर के पड़ीस में बहुत जोर का दर्द-महानारायण तेल की मालिव भी करवायी। एक बार तो मुफ़्को प्रयने स्वास्थ्य के बारे में विशेष चिन्ता होने लगी थी। बाद मे भरोसा हुग्रा कि ऐसी कोई खास बात नहीं है। ग्रविरिक्त सामग्री [ ७३

अवपुर-हवाई ग्रहुँ पर पहुँचकर देखा तो मालूम हुमा कि वरकत जीधपुर न तही मा रहे है। उसके घर फीन करने से पनका हो गया कि वे बोमपुर में ही है। मनानगर नहीं जा रहे हैं, जोपपुर में ही नहींगां टेक्सी से बोमपुर जाने का फीसता कर लिया। ⊏्रैं को के करीय रवाना हो सके, पर भुषाकर फाइल भूल साया मो चापिम श्राना पड़ा। मारी काकी धीरें चनी। मेने पड़ी देखना टीक नहीं समसा। मुफ्को यह स्रयाल हो गया कि सबैरा होते होते बोपपुर वहुँचेंथे।

#### जोधपुर से जयपुर-दिस्ती को, ५-३-७२

सारी रात कार से चसकर संबंदे  $\chi_g^2$  बजे के करीब जीपपुर पहुँचना हुआ। स्वामीकी के यहाँ। ये तथ्यार मिले। उनमें बहुत मामूली मी बातें। जल्दी जन्दी तथार होकर बरकत के हरे पर पहुँचे। धोषा हम्मबार करना पढ़ा। उनके चपरासी ने उन्हें न बजे उठा दिया। वरकत बहुत रवादा गंद हो रहे थे। फाइन पर फीन्न हस्ताधर कर दिय। हम लोग स्थामीकी के यहाँ में भीजन लेक न  $\frac{2}{3}$  बजे रातान हुए। धजमेर बेटिय सम मे भीजन कर लिया। YY बजे जमपुर पहुँच गये।

रामांसहयों को फाइल देदी। श्वाम, सुशकर धीर में तीनो गय। उनसे दिरली की मीटिंग की सलाड भी कर सी।

#### बाराणसी, १३-३-७२

ात हो १९ वजे के बाद बड़े खोर का बन्त लगा। किर २ वजे, ४ वजे, ६ वजे कुल मिलाकर ७--६ व्हल लग गये। बुत्तार भी हो गया। दोपहर के बाद पत्तीना ग्रामा नव नगा कि बुलार उतर रहा है। एक बार तो ऐमा लगा कि मुक्ते उठा नहीं जा रहा है. तके नहीं हुया जा रहा है, बला नहीं जा रहा है, पेमाब नहीं किया चा रहा है, वैठा भी नहीं जा रहा है। दिन भर लेटा रहानीद खुब माती रही-बीच बीच में नीद जुनतों रही भीर फिर मृती रही-६न प्रकार धाराम व्यव विधा गया।

कमत्रोगी को हानत ने बीर दस्त से करते-वरने कमयापतियाँ विपाटी के सही गया। बुनाव में जीतने वाने जनके लड़के को आधीवाँद दिया, उसके मिर पर हाप नत दिया। २१ हुजार उबट में रख दिये गये बताबे-माधन सामग्री का अनावनंक समुदान भी दे दें। 1 कर्ष की बात तो महीने मर नाव करेंगे।

#### सखनऊ से दिस्ली को, १५-३-७२

ग्रांत का मेरा दिन तो वीवारों मं ही गया। मवेरे ४ वर्ष के करीव जागरर बांधरूम गया तब ऐसा लगा कि कमर के पास का दर्द वैसे माधब हो रहा है। पर पूमने नहाने ' प्रारि की इच्छा नहीं हुईं। कामकाज की भूची जनाली। ग्रावरियाँ निख ली। समाचार ७४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

पप देख डाने। भोजन ठीक-ठाक कर लिया। फिर धाराम किया। धाराम से उठकर पत्र निख दिये। भोज सा साक्षा सा किया। उनके बाद लगा कि मेरा सीचा रुका-रुका हो रहा है। दोनो भुजायों में दर्द मा। उन्नहीं सी हो रही है। बड़ी वेचेनी थी। बैंका नहीं रह सका, तहा नहीं रह सका। धाधिक रहेजन पहुँचे-चहीं पर मोहन में बैंक की मोदिया दी। रजनजी के धाग्रह से एक बोनल मोडाबाटर की ली। सीने का तनाव कम हुसा। कुछ बुखार सा महसून हुखा। ऐसा सबना रहा कि कही उन्हीं न हो आए। निमटने की इच्छा भी होती रही पर निमटने गया नहीं। जब गया हो बस्त हुखा नहीं। रात को देर तक नीद नहीं

## जयपुर, २७-५-७२

मोकुनभाई ने प्रधानमंत्री के धनुगोब पर धनक्षन कोड दिया । ऐनवर्ट हाल में मना हुँ जिसने बहुत लोम बोने बताये । करुत्तमाई और मुत्तीता नायर भी । योडुलनाई ने धरने मायणु में नेरा जिक्र भी किया । योडुलमाई को मोनामां का रन बरकर (मुख्यमंत्री) ने पिलाया । कत रात को गजबहाँ हुए का कोन गोडुलनाई के पान बा गया । फिर गोडुल-माई की वात लुद प्रधानमंत्री ने हुई, जिसमें प्र०४० ने बीच बचाव करने की हा कर ली बतायी । मुधाकर पर मनोहर्रावह मेहता के भायणु का धनर घन्छा पढ़ा है। मान को प्रवास सम्प्राप्त सामित को बैठक के समय भी बा पहुँचा था । विद्वराव नक की भी कुछ करने की तथ्यारी नहीं अध्नम पड़ी, राधकुटपाड़ी बजाज की भी । चोडुलमाई पर इन लोगों की स्थिति का भी खास प्रसर राज होगा । धन्तु । गोकुलमाई पर इन लोगों की स्थिति का भी खास प्रसर पढ़ा होगा । धन्तु । गोकुलमाई का धनवन सनाप्त हो गथम सो सन्तीय की बात है । याकी जो कुछ होगा सो होता रहेगा । मैं से तय किया कि प्रवित्त कर दिये जाए, भूमिड़ा के माथ । घटनीस है कि मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कर नहा, स्वपनी बीमारी की हातत में ।

#### घनस्थली, २३-६-७२

छोटे मम्माजी (यादित्य) को उनकी नवी सान पिरह पर १०० रुपये का नोट व ६ क्ये का इमाही (१४६०) नियं कपड़े, बाद के दिन का बाहीवाँद, विद्या विश्वित और फ्रेम किया हुमा । इसी सातिनरह का धानीवाँद देना रह पत्रा धाने नया तथार कराकर फेंग लगा हुमा । इसे सातिनरह का धानीवाँद को नया चित्रित उरदाकर इस यकार भागा नाई के हाथ ये दिस्तवा दिया । उस समय में भी बाई के क्योरे में जा पुता । वाई के नेहरें को देना । उनकी उहरी-उहरी बोलों को भीं। मेरे बांदू या गयं वो में लक्क कर बाहर पा गया। अपने कमरे से खान पर भी बेरे खोनू खाते रहें । वाई की तकतीफ को देलना मुक्तित है। वो देनती हैं वे धना है ।

#### वनस्यली, १४-८-७२

ग्राज प्रमुक कार्यकम में मुक्तको बुलाने के लिए नड़िक्यां तीन बार प्रायीं। मैंने माफ इनकार कर दिया। मेरा नन विल्कुल नहीं होना है। समारोह में जाकर देर तक वैठना श्रतिरिक्त सामग्री ७५

प्रमुक्त नहीं पडता है सो तो हे ही। पर मेरी दिलचस्पी मी कतई नहीं है। मेरी स्वाभाधिक इच्छा होती है कि मै प्रपो स्थान से बाहर निकलूँ ही नहीं, पूपने के अलावा। बनस्वनी में रहें तो तब भी बाहर न जार्क। बचपुर में भी बांक्रर न जार्क। विश्व में के पास न जार्क। बोबनेर में भी बाहर न निकलूँ। बाहर दीर पर जार्क तब भी बहुत कम निकलूँ। सियत दिल को होने का कारण है ही मेरे साथने। जब भी बाहर निकलूँ तां प्रपदाद के तीर पर निकलूँ भी साथने। जब भी बाहर निकलूँ तां प्रपदाद के तीर पर निकलूँ भीर प्रपदाद भी कम से कम करूँ।

#### बस्बई, २७-१०-७२

डॉ॰ गोयल ने कार्डियोग्राम लिया। उने फस्टेक्लास बताया। गुरू का कार्डियोग्राम रेसकर बताया कि बड़ा सस्त स्रटेक था। हार्ट स्टेक तो गुरू में हो चुका या भीर सास चढ़ा सी 'हार्ट फेट्योर' का लक्षण था। हार्ट के बहुत कमजोर होने की 'हार्ट फेट्योर' बोसते हैं बॉक्टर लोग। विस्कुल स्वस्थ धादमों के यानी जिसके कोई भी हार्ट की गिकायत न हो उसके भी प्रचानक 'हार्ट फेट्योर' हो सकता है। जिसके एक बार 'हार्ट प्रटेक' हो चुका है वह माद-धानी 'रसे तो उसके दुवारा और होने की सम्भावना कम रहती है। बाकी हार्ट का टीक से पता नहीं चलता कि भ्रणानक कव क्या हो जाए।

#### वनस्थली, ४-१-७३

राजावी (थी चक्रवर्ती राजयोपालाचारी) की पुस्तक देखी, पन्ने उसटकर, थोडो-भोडी पडकर भी । रामावरण, महाभारत का नार सच्छा लिखा है। कुछ उपनियदी सा महस्व भी लिखा है। गीला का भी। इनका नार रूप धम्छा समक्र से आउपारा। बहुसूत्र पर लिखा होगती उसका भी पता लगाए गे। विनोबानी ने भी उपनियदी के बारे में लिखा है। सब कुछ देख लेने के बाद ही विनोबानी के पास चलना ठीक होगा। कुछ सार की नदी बात प्रजान के विषय की समक्र में खाने की बाबा मुभको नहीं हो। पर्सनीति की स्थित बहुत साफ हो आएमी। इतना तो हो ही वाएगा कि में यह जान जूँपा कि प्रजान के बारे में गीता, उपनियद, बहुमुन का कहना क्या है।

#### चनस्थली, १२-१-७३

काका साहेव कानेज्ञकर सादि आये, २ पण्टे के करीव ठहरे। जिलाकुटीर मे थोडी दूर में ने बचा। काका माहेव घट वे मान मे हैं। उन्होंने भाषण दिया। गांधीयर के चौक में थोडे लोगों की सचा में वे बोले—सब स्त्री को पुरूष से छीन कर नेतृत्व अपने हाथ में वे नेता साहिद की साहे या उन्होंने विचित्र में नेता साहिद की दिया कि में काका साहब की इस बात को नहीं भानता हूं। कल में एक छोटा सा लेख दूवा, वनस्वती नमाचार में। काका साहेव को मेंने वनस्वती नमाचार में। काका साहेव को मेंने वनस्वती नमाचार से। काका साहेव को मेंने वनस्वती नो हाल वता दिया। रिपोर्ट सादि दे दी। उन्होंने साहट प्लेन साहित्य देश करने को सावा हूं, हजार मील से। मेंने उनसे जाते से से से तम्म में बोले—में साहवीबी के दर्शन करने को सावा हूं, हजार मील से। मेंने उनसे जाते समय कहा कि साहित्य देशकर कुछ निखिएगा। बोले-एक महीने में तिल्ह सा

भ्रीर फिर उनके चाहने पर प्र० बी॰ शा॰ की एक प्रति और सीन चित्र भी उनको दिये जिससे वे बहुत खुत्र हुए।

वनस्थली, १३--१-७३

कल मैं बहुन देर तक बात करता रहा। बोर बोर में भी बोला! काका साहेव काने तकर बहुज कम मुदने हैं उनको मुदन के निष्ट बाखिर मुम्को लगा कि मोने में में र मुख दें हो जाएगा, पर दर्र हुमा नहीं। मुक्ते धावका हो धर्यो और एक प्रकार का उर सा मा प्रमा। जो मोने के ममय तक बना रहा रतनवी को मैंने इस बात का थोड़ा सा जिक भी कर विया) वे पूछने भी लगी, पर मैंने उनको विशेष कुछ नहीं बताया मिलेष कुछ पा भी नहीं सिवाय इसके कि मेरे मन में एक घडका सा बन रहा। रान को जब चेन हुमा तब भी मैं मिलत मा रहा एक बार तो यह छोचा कि माज चूमने का काम न किया जाए, माजिल भी न कमागी जाए। परनु धीनेएक चण्टा चूम बिचा। और पास्तिम भी करता सी। बाद में दिन भर में ठीक रहा। यह विचार चरु वता कि मुक्को सावधानी रहनी चाहिए किसी भी कारण में एंगी स्थिनि न बन जाए इसका दुरा ब्यान रहना चाहिए।

#### धनस्थली, १२-३-७३

बनस्मनी समाचार के लिए दिए जासे बाले बपने बड़े लेल को सैंने दो एक दार ठीक किया। इसी चकर से भोजन के बाद ग्राराम नहीं कर नका। ज्ञाम की कुछ लेटता चढ़ा या पर शीद माने की सम्भावना नहीं कथी। मेरे कुछ तो पेट में समर पा, कुछ मदी विश्व में मेरे कुछ तो पेट में समर पा, कुछ मदी विश्व में हो चुका था। नरीजा यह हुमा नि मेरे पोड़ा थोड़ा साम उठ गया तो काफी देर तक चलता रहा माथ मे दस्न हुमा। ज्ञामी भी हो गयी मो वह भी काफी देर तक चलती रही। एक तो लेसिक की टिकिया ली मीर भर दिकिया वेसकी याते। भी भी की प्रशास कर करती पत्ता राज्य भी क्या हो गयी। भी हो गयी में वह भी काफी देर तक चलती रही। एक तो लेसिक की टिकिया ली मीर क्या दिका में वसकी याते। भी भी भी क्या हो गयी। वस्ति की स्वत्य माती भी। भी देशी माल ठीक हो यथा। दानी भी क्या हो गयी। मार वाल को को भी बुला निया। क्या प्रशास पाई प्रशास माने माने माने माने कि भी देलते में कोई गडक तही मानुव हुई। में विक्र हुम ही पोकर को पया। बाईप्रा निव माने पाई पाईप्र मीर कर से पाईप्र मीर की भी देश ते में से माम नहीं स्वा में दहा निवार तो मुकको भी मामा, पर में माम नहीं सका कि यह गड़वड़ को हो गयी होगी। मित परिसम पहले भी कई बार हो चुका है, पर दती देर का मान प्रना हुमा कमी नहीं रहा। व वांगी हो दतनी देर चली मुक्ते मेरोता है कि हाट पर हो खाग ध्वर नहीं हुम है। दूनरे लोगो को चित्रा विश्व हुई मानून हीती है।

#### वनस्थली १५-८-७३

मैने जमकर जितने पत्र लिखने थे सब लिख डाले। तबियन ठीक रही, पर दस्त प्रभी तक समय पर नहीं लगते लगा है। बैसे पेट की हालत तो ठीक ही लगती है। याम ग्रतिरिक्त सामग्री ( ७३

को चीक में पत्ता पर लेटा तव बुद्ध बच्दा नहीं लगा, पर उस समय थोडी देर नीद सो आ गयी। बाद में तो टीक ही रहा। धालकल मुक्ते जंका मी होने लगती है। हार्ट का काम बड़ा भोखेबात है, म लाने कब क्या हो जाए? बाँ० ने इतनी बन्दिं दुवारा लगारी है सो मुफ्ते बसरती है। जो भी हो बाँ० कहे उपयान्त चलता ठोक नहीं हो सकता कोई दूगरा प्रयोग भी डाँ० की राख के बिता नहीं किया सकता धोर डाँ० ने पूछना मुश्किन थीर उनकी राख गामिल होना तो खमम्भव ही है। डाँ० की लाम-ताम दवायों को जारी रखते हुए चौदें जो साम प्रयोग करके देला जा सकता होगा तो सोचेंगे, रतनजी के प्रहमदाबाद में लोटनेटर।

#### बनस्यली, २४-४-७३

मजीना, शक से ऑटोनामम स्कन और ऑटोनामस कॉलेज के दारे मे बात हुई ! मुशीला ने बताया कि स्कूल को आँटोनामस बनाने में वडा जीर खाएगा, काफी खर्च बडेगा, कानिज को ग्राँटोनायम बनाकर सफलता पूर्वक चलाना तो ग्रमस्थव जैसा लगता है। मैने कहा कि झांटोनामस स्कल की जो रूपरेखा तथ्यार होकर मेरे सामने प्रायी है उसमें तो मने कुछ बिसेय दम नहीं लगा। वह तो पुराने ढाँचे की नकल जैसी मुक्तको लगी। वह प्राय वहीं है, थोड़े बहुत धन्तर के माथ। बाकी पुरानी और नयी के गुलो में कोई ग्रन्तर नहीं है। ऐसी हालत में हमको घाँटोनामस स्कल और कॉलेज के चक्कर में मोच समक्रकर ही पडना चाहिए। जिन कारणों ने हमने डीम्ड यूनिवर्सिटी वनवाने की कोशिश को छोडा वही कारण र्घादीनामम स्कूल-कॉलेज के मामले में लागू होते हैं। हमारी जिस योजना में प्रपनी पूरी पचमली शिक्षा को परा. कम ने कम बबीचित, स्थान न मिले जनके लिए हमको क्यों परि-श्रम करना चाहिए बनो शक्ति और बनो रुपना खर्च करना चाहिए? इसके नजाए तो हम मौजदा शिक्षाकम के साथ अपनी पचमुखी शिक्षा के ग्रगो की यथाशक्य स्थान देने के प्रयत्न में प्रपनी शक्ति लगावे, लड़कियों से कुछ ज्यादा काम कराए तो वह भी पचमली शिक्षा के मिनसिले में ही करवाए। किताबी पढ़ाई में जो समय नगता है वही क्या कम है ? नाहक उसी सामान्य काम में हम अपनी बीर लडकियों की शक्ति को क्यों लगाए ? सारी स्थिति पर पुनर्विचार करना होगा। हमको बाश्वस्त होना चाहिए कि स्कूल या कॉलेज सक में भी बाँटोनामी मज्र की जाए तो उसके परिखामस्वरूप प्रपनी पचमुखी शिक्षा पूर्वकीय शिक्षा के अलावा बाकी चारों अगो के शिक्षाकम को थाज से अच्छा स्थान मिल जाएगा ग्रीर पस्त-कीय शिक्षा में आज के मुकाबते में कम समय-शक्ति लगाने से अच्छा काम हो जाएगा । ऐसा न होगा सो फिर ग्रॉटोनामी से हमे फायदे के बजाए नुकसान हो सकता है।

#### वनस्थली, २१-४-७३

प्रोफेसर साहब ने ऑटोनामस रक्त के नये पात्यक्यों के बारे में उनकी व तिवारीजी ग्रादि की जो बातचीत अवसर में हुई है उसका हास बताया। प्रोफेसर साहब को सन्तोप मानूम होता है। राजपाससिंहजी को भी अवसेर से गये थे। वे बचे दृए काम के लिए प्रवर्गर मे ठहूर मये हैं। आयापी मत्र ने अपने उच्च माध्यमिक विद्यालय को घाँटोनामन म्हूल का दर्जा मिल सकता है। यह सब कुछ ठीक है, घाँटोनामी मिलना जायद प्रच्छा भी हो सकता है पर मुक्ते अक है कि यदि घाँटोनामी मिलना हो यह पुरतकीय शिक्षा के सम्बन्ध में होगी। इसमें कियों का दांप भी क्या है। जो जिल्ला म्हुलानी पानू है उनमें तो खाम जोर पुरतकीय शिक्षा प्रदान के सावद घाजकल में भी उपादा समय देना पढ़े थीर इसका मनीजा यह आ जाए कि पचमुकी शिक्षा के दूसरे पारों प्रपा उसमें मुक्ता के दूसरे पारों प्रपा उसमें मुक्ता का प्रा किया के दूसरे पारों प्रपा उसमें मुक्ता का पान भी तो मिलना चाहिए? में समक्ष में अपने प्रचान के बात की तो मिलना चाहिए? में समक्ष में अपने प्रचान के हाम के श्री उनको शनिवार्यत्या शिक्षा का स्वा में की स्वा है हो उनको शनिवार्यत्या शिक्षा का स्वा में की स्वा के है हाय है और उनको शनिवार्यत्या शिक्षा का स्वा में की ही विद्य है धीर उनको शनिवार्यत्या शिक्षा का स्वा में की ही बहिल जीवन नर चलना चाहिए।

#### बनम्यली, १२ मई १६७३

प्रशास ने बनाया कि कोई मिलल्यस्था भी धामदनी के लिए ब्यापार करेगी ती उन पर भी टैंबस नवंसा। ऐसा बिल लोक्समा के सामने धाया हुआ है। यदि ऐसी ही बात इसी रूप में धाएंगी तो धपनी कई योजनाए स्टाई से पढ़ सक्दी हैं। धपने को पाती किल में मारोबन कराने को कोशिया पढ़ पा धपनी योजनाथी को छोड़ देना पढ़ या बात वा अपने पढ़ कराने को छोड़ देना पढ़ या बात पत्र कराने को छोड़ देना पढ़ या बात पत्र का अपने पत्र का प्रमान पत्र के अपने पत्र कमाने बात पादमी भी नहीं है। कमाई कं कामी में मफलदा मिलना भी धामान नहीं है। तो फिर प्रमान के को बात है। बात हो अपने पत्र कमाने बात प्रमान के को बात धी धामान नहीं है। तो फिर प्रमान के को बात है। बात हो अप करेंगे ही नहीं पाद कमाने बात हो अप करेंगे ही नहीं पाद कमाने में समीधन कराने की को छोड़ करतें। वह कोनिज भी समझत पार पड़ कानी है। देवा नागा।

#### बनस्थली, २ तुन, १६७३

मेरा विचार अट्टून बयला रहता है कि मुक्ते क्यू को बीई तकलांफ हो तो उनकी विमेष विन्ता में नहीं करता। पर मेरी नहसीफ के नारख मेरे नियबनों को नक्तीफ हो जाएगी, इस बान की चिनता मुक्ती कातती रहती है। मैं दुनिया में न रहा से प्रकार मुक्ती दुई है जान नहीं होता है। पर बाई, तकतों बादि सब पर च्या बोते यह नहस्ता करने में मैं मिहर उठता है। बात देता है। पर बाई, तकतों बादि सब पर च्या बोते यह नहस्ता करने में मैं मिहर उठता है। बात बस्त में पूछ डराडरा रहने तम नथा है। नत रेर मार्च में तो गड़वड हुई बहु न होती तब तो में बत वक निर्मन हो बाता और नावधानी बरनता हुया निमता रहता। पर बातक तो सेजना ही रात को पत्त पर तहने से केतर नीर सात तक मेरे मन में इस सा बता रहता है। वेंने तो बोड़ा बहुन "हिर अट्टून पट नियस मिता कर तेता है। कि तो बोड़ा बहुन "हिर अट्टून पट नियस " "है मक्तवी" बादि कर वेज है पर चित देना चाहिए बेता तानन नहीं रहता है।

#### जवपुर. ४ द्यवस्त, १९७३

डॉ॰ मध्यों को मैंने बता दिया हि मुसे कोई विकायत या कभी जैंगी भी नहीं समती है। उन्होंने दवायों का नहीं कन जारी रखन को कहा है, पायी लेक्सिस सिहत । स्वायाम के लिए घुमान वन्द रखने पर फिर जोर दिया है। मैंने उनका मतलब समस्ते के कोशिया की। उन्होंने जो कुछ कहा उम पर से मैं यह समस्य कि मेरे सून की चान (फेक्ड से दिन में सून के जाने की चान) वायद धीमी है। स्थायाम जैसा कुछ करते से वह चाल ग्रीर भी धीमी हो सकती है? इसलिए स्थायाम की टाल करनी चाहिए। साधिर वे इस बात पर पार्य कि १५ मिनट बनकर ४ मिनट बैठ आक और १६ मिनट में वापिस झा जाड़। तब मैंने कहा कि द—द मिनट चलकर ४-ए प्रिनट बैठ आक और एक बार लेट भी जाऊ तो उम्मेन क्या कई पह जाला। है सकते वा नहीं रे सके

#### बनस्यली, १७ सितम्बर, १६७३

धनवारों से एक दम रंगी रनायी सवर धानी है जिन्हें पढ़न को मेरा जी नहीं बाह्ता। सत्तावारी लोग अपने मुह मिया मिर्ट्स बनते है। रेहूँ के मरकारीकरण की विफलना को मदूर नहीं करते हैं और बावन का सरकारीकरण नहीं कर रहे हैं भीर कहते हैं कि सरकारिकरण की नीति को हमने छोड़ा नहीं है। यह तो ऐडकास्टेस्ट किया है हमने। बत लोग अरने दूर मानूम होने हैं। इन्दिरा के सरमने किमी की हिस्मन ही नहीं है। इस्टिर्श दिनेमीसिंह को जिलालने पर तुनी हुई मानूम होरी है। इस मान्नले में भी किमी ने इसे ही नहीं की है। किनना पतन हो गया है लोगी का।

पान रतनजी थो मैंने मुनारा वावा से हुई प्राय सभी वानों से बाकिक किया। 
उनकों डर यह है कि फ्रेन-मीनि के शबकें से प्रवान कोई मिनट न हो जरए। मैंने विश्वास्त 
पूर्वक उनको बताया है कि अपना मिनट कोई करना चाहे तो भी कर नहीं सकता। अपन 
क्या कम मोत्तामांची है ? दूसरे, बावा को हुस बुताने नहीं गय, वह म्यप्त प्राप प्रापा भीर 
हमने उससे सहायता नहीं मागी, उनने प्रथने बाथ सहायता बहुवाने को कहा। मैं प्रध्ययन 
करता चाहता है और वह देखना चाहना है कि महत्य की विकासहायता की करणा मुक्तको 
होती रहती है वह कदावित वावा के मान्यमंत्र मध्यने को सित्र सकती है नया? बाकी 
बावा की कोई सी एक बात भी गुच्ची न निकंगे तो भाग वन विश्वक वाला है ?

#### यतकसा से रदानगी, २२ अक्टूबर, १८७३

प्रकुल्नवाञ्च का विजयाप्रियन्दन का पत्र जनस्वनी खावा था। उसकी नकल कलकत्ता धायी। प्रकुल्तवाञ्च के सम्बर का पदा लगाकर फोल किया दो साधना से वात हुई। प्रकुल्तवाञ्च वहा ये नहीं। वे घर पहुँचने ही मेरे पान दोडे धा गये। उन्होने वताया कि उनका ग्रोर साधना का जनवरी से वनस्वमी धाकर एक्ट्रो का विचार है। पक्ती वात कुछ समय के बाद बताएंग। सामीरचजी को भी यह उजवोत्र पसन्द है। सीतारामजी के मामने यह बात नहीं बाखी। घषनी स्रोर में तो अफुल्जवाबू स्रीर साधनामें कहा हुसायाही।

#### जयपुर, ३ नवम्बर, १९७३

मुभ्रद्रकुमार में बहुत देर तक बात होती रही। पाटणीजी की बाद में । स्मृति मन्दिर के लिए मेठीजी (अर्जुननालजी), मेठजी (जमनाबालजी) धौर पाटणीजी के किय ला देने का जिस्सा उसको दिया। बीरोक्टरजी महाराज, दुर्गाप्रसादजी महाराज, मुमुद्रवनरी महाराज, पुरोहिनजी बाहुव (गोपीनाथजी), स्वामी सक्ष्मीरामजी सहित बाठ वित्र हो जाते हैं। ६ वित्र सताने हैं। नवा चित्र किसका होना चाहित ? मुभद्रकुमार ने कहा कि सेटीजी का वित्र मित्रना मृज्किन होगा। बास्त्री मदन के एक कमरे को ही फिलहास स्मृति मन्दिर का वर्ष देना है।

#### वनस्थली, य नवस्वर, १९७३

बोरियाजी (केसरीनासबी, प्रध्यक्ष, माध्यिमक शिक्षा मङ्ख) द्याये। उनके माथ प्रभुत्तानती पारीक बीर एक चतुर्गमहन्त्री भी द्याये। बाद में मुक्को मालूम हुआ कि चतुर्गान्त्री महेन्द्रांमहन्त्री के मेंब हुए है और बी० एड० के प्रदेश की न्यिति देखने के लिए प्रांत हैं। मुन्ते यह ती मालूम था नहीं धीर मैंन उनके सामने ही वडी मख्ती से कह दिया कि कंसे प्रादमी को शिक्षात्रामुक्त बनावन विठा दिया है। प्रायवेट सस्वाधों में बहुत बेना दनम देने की कोशिंग महेन्द्रांसहन्त्री कर रहे हैं।

भोदियाची याद में मुमने बोले कि मैंने भी महंग्द्रमिहची में कहा है कि भाग स्कूलों के काम में प्रयादा तकन दने हो मी टीक नहीं है। बार्ग इस काम को पक्का कर जाना, प्रांटामाम स्कूलों की बान करते हैं मो टीक ही है। बार्ग इस काम को पक्का कर जाना, याद्दे में शहने में पहने पहले । बाकों मेरी राय में बारेंदोमीमी का विषय अर्थ नहीं हो गा। पद भागत करकार है। हिननों मी ब्रांटोमोमस है राजस्थान सरकार बिल्कुल नहीं है, वह तो मगण्यामिका जीती है। जब तक ब्रिंटोमोमस है राजस्थान सरकार बिल्कुल नहीं है, वह तो मगण्यामिका जीती है। जब तक ब्रिंटोमोम के क्षानिकारी परिवर्तन नहीं हो तब तक मोटोमोमों हा दुख सज्यव नहीं है। स्वार्क और राजजी के बाद अपन राजवाजी है, उनके बाद सुमोला, रिवाकर प्रमुक्त हो है। में के कहा भीयो पीड़ो मी वैजार हो रही है। बोर्यकारों ने यह भी कहा कि बमन्यती के किंतने में कई एक बहुत बोच बारवी है।

# : २:

# नवी पुरानी रचनाएं

कान्ति-भक्ति-बचन

( )

हम राम कहे हम कृष्ण नहें,
हम शंभू कहे हम देवि जपे।
हनुमान कहे बहु नाम कहे,
जनता जनता दिन रात जपे,
जनको अभदीक्यर मान रहे,
जनरंजन का हम काम करे।
जनता वस्ती हमरे दिल मे,
जनता विस्ते में हम बास करे।।

# ( 7 )

नवजीवन हो नवजेवन हो,

गव प्राप्त भरे जम राम हरे।

नवभित्त जमें नव भर्म फरे,

गव ब्राप्त प्रेर जम खंगु हरे।

नव निर्भयवा नव साहस हो,

नव स्कृति भरे जम कुरण हरे।

सुज हो अपना बलिदान करे,

नवस्कित भरे जम बैवि हरे।।

#### ( 3)

यह कोटिमुखी जनता कहती,
जम पाच बसे परमेश्वर है।
हम दूसर नाम असंख्य भजें,
जनता खुर ही जमदीश्वर है।
हम बात करें बम ऐटम की,
बम आतम को न पुकार रहे।
जन जाग उठे मुहि विष्णु उठे,
मध-केटम पाप पछार रहे।

# (8)

ितु मात मुरु हम टेव मिने,
हम पूजन शीश नवा के करें।
गुरु शिष्य कु प्यार दुलार करें,
सव शिष्य गुरु सनमान करें।
गुरु को वहु आदर मान मिले,
सव शिष्य गुरु समाज समें।
सव शिष्य गुरु गुजे हो तभी,
उनको मनमार्किक काम मिले।

जितनी जग नारि उसे बननी,
भगिनी विटिया हम मान रहे।
वह आदिम शनित की पुंज उसे,
हम देविक रस में पूज रहे।
वह धर्म व शीत कि रक्षक है,
बह पाप समूह विनाश करे।
गिरते नर को बुउवार रही,
खब गर्न में बो कवहें निगरे।

( )

तनमित नुटी मनमित नुटी,
धनमित नुटी जनमित नुटी।
सव धर्म नुटा सव कर्म नुटा,
सव मान नुटा सव कर्म नुटा।
पहले अंगरेज बुरे कर्मते,
कहते हम थे यह नूट रहे।
अब तो कहना पड़ता हमको,
हमको घर के यह नूट रहे।

(0)

यह फूट हमें कमजोर करे,
हम एक रहे मजवूत वनें।
तव मात करे सबको िक में,
भिड़ जाएं मुजाबित में कितने।
झमडा न करे यदि हो समझ,
उसकी मिस बैठ सबाम करे।
हम कोट अवासत जाई नहीं,
हम सम्बद्ध काट घरे।।

( 5 )

कड वाद मुने कह पारिट्या,
सव नाह का जोर जुनंद करें।
दिलतो अरु अल्यमतो व रित्तयो,
अरु नाित व धर्म का नाम धरे।
भन नाम धरे इसका उनका,
पर बोट रुमाम बटीर धरे।
सवको अपना हक फर्ज मिन,
हम पद्धति बोड़ि कबुल करे।।

( 3 )

यह राज नहीं अपना नगता,
परराज इसे हम मान रहे।
यह मामन है मरता गिरता,
कुइ कानून को नहिं मान रहे।
इस सामन की पण्याह विना,
हम संघटना करने अपनी।
हर गाव समा मजबूत वन,
जब होय हकूमन भी अपनी।।

( 20 )

सय खेत परिश्वम जो करते, हम जीत किसानुं कि चाह रहे। सब मील परिश्वम जो करते, हम जीत म्जूर्स कि चाह रहे। दिन रात हिमाजत जो करते, हम जीत जवानुं कि चाह रहे। जिनसे कल की हम आस करें, हम जीत युवानं कि चाह रहे।।

# ( ११ )

सव भूमि वटे तव भूमि विना,
कुइ आज रहे नहि काल रहे।
जिसमें अपने जितना निपजे,
उस पे कर का निह भार रहे।
करका वड भाग सुगाव लहे,
उसका कुछ भाग समाज लहे।
कम से कम कानुन हो अपने,
कम से कम कोर्ट कवेरि रहे।।

## ( १२ )

सव भेद मिट सम भाव वने,
सव माल बढ़े सवको हि मिले।
मव काम करे रुजगार करे,
सवको सवका सतकार मिले।
सव फर्ज करे अपना अपना,
सवको अपना अधिकार मिले।
सव भाति विकेन्द्रित हो रचना,
सवको निज राज सुराज मिले।

# (१३)

हुम बेखटके अरू निर्भय है,
हुम सेवक है खुदराजें नहीं।
हम साफ खरी सव बात करें,
हमको कुछ लाग लपेट नहीं।
हम काम भला दिन रात करें,
हम लोडर नाहि दलाल नहीं।
तक्ष्मीफ पड़े कितनी हमकी,
हमको उसकी परवाह नहीं।

## (88)

गहिं सोच करें नहिं फिक करें हम स्वस्थ रहें हम मस्त रहें । हम क्वर परिश्रम से न डरें, हम पुरत परिश्रम से न डरें, हम चुस्त रहें । इस पुरत रहें । जब सो यह सास चसे तब सो, शुभ कमें में हो लबजीन रहें । विस्वास करें पुखता अपना, हम आखिर राम-भरोस रहें ।।

## (१५)

हम मार छताग पहाड़ चढ़े, वन वीहड़ में निरमें विचरें। नद-बाड़ मुकाबित में अपदे, हम कूद समुद्र बीच परे। परवेश करें जतती अगनी, जनता-चगदीश पुकार रहे। हम शासन-के धन के वत को, प्रम के बन से लक्कार रहे।।

# (38)

जन प्रक्ति भरे जनक्यन्ति करें, द्व शासन की उलटे न टरें। निज के भुज के वल से उपजे, उस ही धन का उपयोग करे। कहुँ मागन की नींह आदत हो, मिन जीर लगा अधिकार करे। जन सेवक जो नर है बनते, सव गर्ज उठे "व करें तु मरें"।।

# मेरे ७३ वें जन्मदिन के ग्रवसर पर (मार्गशोर्ष कृप्णा ६, सं० २०२¤ वि०)

#### मेरी वर्तमान मनः स्थिति

# (१)

तन को हम स्वस्थ जरूर रखें, मन को मजबूत जरूर रखे। अलमन्त रहे हर हालत में, इतना हम घ्यान जरूर रखे। इक शक्ति रमी कण में अणु में, उसकी पहिचान जरूर रखे, इस बार बहुत्तर पार हुए, हम शाश्वत ध्यान जरूर रखे।।

#### (२)

कुछ चाह नहीं कुछ भाग नहीं, कुछ भी शिकवा फ़रियाद नहीं। कुछ रोप नहीं कुछ मोद नहीं, कुछ आस नहीं अवसाद नहीं। कुछ ताप नहीं अनुताप नहीं. कुछ दाद नहीं प्रतिदाद नहीं। कुछ सीख नहीं उपदेश नहीं, कुछ हास्य नहीं व विवाद नहीं।।

#### (३)

अपनी कुछ गुज रहा न करे, जग के हित की सब गुज रहे। जगसेवक है हम पै जग के, हितसाधन का निंह कुर्ज रहे। जन को अपना हक, माजुम हो, जन के दिल मे निज कुर्ज रहे, जन ही खुद सोच इलाज करे, तब शेप नही कुइ मर्ज रहे।।

#### (8)

यदि तर्क वितर्क उठे मन में, उन मै हम गौर किया हि करे। परवाह जुरा पन कीन करें, परिपालन धर्म सदा हि करें। हम सोचत है मुद्द होनत है खुद का विश्वास रखा हि करें, हम स्वार्थ मनोरय छोड चले, तव काम समस्त हुआ हि करें।

#### (٤)

दल के बिप से हम दूर रहे, बधिकार न मान हमें चहिए। नींह दाम चहें निह नाम चहें, नींह बोकत-सान हमे चहिए। ग्रुभ कर्म करे कुभ ग्रब्द कहे, शुभिवन्तन नित्य हमें चहिए। ग्रुभ में हम सीन सदैव रहे, शुभ केवल एक हमें चहिए।।

# स्फुट कामनाएं

# १. वनस्थली के कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों के लिए

जन का धन का निह साधन था, इक भाव बना दिन में तब हो। अपना कुछ तो बिनदान हुँआ, यह स्थान बना व बडा तब ही।। अपना सब दे इसको इसमें, कम से कम से व चहें तब ही। यह लायक हो अपने सबके, इसके हम सायक हों तब ही।।

२ छात्राओं के लिए यह स्कूल नहीं अपना घर है, यह होटल नाहि दुकान नहीं।

सव जिप्य नहीं समझे धन की, अपने घर में कुड़ खान नहीं ।। सत कमें करे तन से मन से, निज कमें विना अधिकार नहीं । गुरु के प्रति आदरभाव रहें,

कवहूँ घटिया व्यवहार नही।।

# ३. रतनजी के सीर अपने खुद के प्रति मेरा दिश्वास

(हम दोनो एक दूसरे को "मा" से सम्वोन्धित करने है)

मा और सा दो दिखते भले हों, सा एक ही है इसमें शुवा क्या ? सा एक है तो अलगाव "सा" का, कभी न होगा इसमें शुवा क्या ?

# ४ परिवार के सौर निकट के व्यक्तियों के लिए

वनस्थली शिक्षण स्थान ऊँचा,
पँदा हुआ है परिवार में से ।
सो खून-पानी अरु खाद-हड्डी,
पाता ग्हेगा परिवार में से ।।

#### ४ वनस्थली के माथिक साधनों के बारे में

सदा मिने पब्लिक में सहारा, दे राज्य सारे इमदाद अच्छी। कसी रहे सो करलें कमाई, फ्ले फ्लेगी हर साल बच्छी।।

#### मेरी सर्वोपरि कामना

विरक्ति आमिक्ति नहीं हुआ करे, न मोह हो ना ममता हुआ करे। स्वकर्म आमिक्ति विना हुआ करे, कभी च आधा फल की हुआ करे।

# ग्रन्य छन्द

(१)

वो फ्रान्ति का तत्व कहा छिपा है, खोजूँ कहा मैं मुझको बताओं। ईमानवारी दिल की सचाई, दीखे कहीं तो मुझको दिखाओ।।

(₹)

सत्कर्म शक्ती फिर शब्द शक्ती, है झ्यान शक्ती फिर आत्मशक्ती। कहाँ न बोलूं न अराक सोचूं, पूरा करे काम अवश्य शक्ती।।

(३)

ये सृष्टि मे रूप अनन्त कैंसे,
पैदा हुए सो नहि जानते है।
जो प्राणि-अप्राणि असंख्य उनकी,
उत्पत्ति को ना पहिचानते है।।

#### (Y-X)

वो नीमपत्ता जब भी बनादे,
गुलाव का भूल जभी बनादे।
या आमका वो फल जो बनादे।
यो का बबारा जब भी उगादे।।
मनुष्य का बाल जभी बनादे।
या मोर का पंछ जभी बनादे।
चीटी जरा सी जब भी बनादे।

#### ( E)

चले न दूआं चल एकला रे, विनासहारे निभ एकला रे। करेन दूजा कर एकला रे, राजी हमेगा रह एकला रे।।

# (७)

मजल है दवते कवहुँ नही, निडर हैं डरते कवहूँ नहीं। अडिग है चिकते कवहूँ नहीं, कठिन हैं झुकते कवहूँ नहीं।।

#### (5)

मैं भोर को नित्य निहारता है, कैसो छटा है रंग की विरंगी। कहा छिपे थे रंग ये अनोखे, कहा छिपे पाव तथा किलंगी।।

#### (3)

वो भी मदा सा यह भी सदा सा, सा एक ही हैं नीहूं दो कभी सा। सा मे घटे सावच जाए सा ही, सा में जुड़े सावच जाए सा ही।। (सा (यानी रतनजी) के जन्म दिन पर) मनुष्य में क्या पश्च पिक्ष में क्या. मत्स्यादि में क्या फल फूल में क्या ? हैं जन्म होता अरु मृत्यु होती. जाना किसी ने यह भेद हे क्या ?

(११)

एक मोह कर्यंत इधर उधर दूसरायोग, नवल वधू के सामने. कैसायोग वियोग !

(१२)

अिं जगञ्जननी जनरंज्जनी भगवती भवतो भयभंज्जनी । मुरसुधा सकलाहुमुरमदिनी जयतु देवि ! सदाभिव संगिनी ।।

(१३)

कर्मशक्ति का असल मे, होता हल्का ध्यान । शब्दशक्ति भी न्यून है, चिन्तन शक्ति महान ॥

(88)

अकल मे कुछ खास जमा नही,
निह हुआ कुछ ज्ञान मुझे अभी।
पर यही मन भान्त रहे सदा,
न कुछ और मुझे चहिए कभी।।

(१५)

मुपाबना से मुविचार होवे, विचार अच्छा शुभ झब्द लावे । मुशब्द बोने शुभ कर्मे होवे, मुकर्म अच्छा परिणाम लावे ।।

(१६)

भनुकूल कुहे प्रसिकूल नही, कुछ और नहीं तो तटस्य रहें, सबके हम मिल सदैव रहें, न कठोर रहे प्रजबूत रहें।।

# कुछ पुरानी रचनाएं

प्रत्यक्षजीवनकास्त्र (भाग १) में जीवनकुटीर के जमाने के कुछ गीत छप पुके हैं। मुक्ते मुक्ताया गया कि कुछ गीत इस भाग २ में भी देने चाहिए । इसलिए नीचे लिखे ग्रनुमार कुछ गीत भीर दिये जाते हैं—

# सपनो ग्रायो

(इस ४० वर्ष पूराने माने में विस्तव का चित्र सीचा यथ है। विस्तव से बहुतों को नक्लोफ होती है और उसके सभी परिएगम प्रच्छे हों सो बात नहीं है। लेकिन जर्जरित इसारत के गिरे बिना नथी रचना होना ग्रसम्बद चैना होती है। इस मीत में पुरानी रचना के स्थान पर नयी रचना का सपना देखा गया है यही ग्राम्य प्रचय का, बिप्तव का ग्रयना कानिन का हो सकता है।)

भपनो आयो एक पणो जवरो रै, भपनो आयो ॥
काली पीली ऑधी उठी,
चाल्यो मूंट घणो जवरो रै, सपनो आयो ॥१॥
धल को होमयो जल, यल जल को,
संपट पाट घणो जवरो रै, सपनो आयो ॥२॥
दूरंगर टूट जिमी में मिल गया,
देह्यो ख्याल घणो जवरो रै, सपनो आयो ॥३॥
चोरस भोम में दूंगर वण गया,
माया जाल घणो जवरो रै, सपनो आयो ॥४॥
टीवा ऊठ नदी वै लागी,
फैल्यो पाट घणो जवरो रै, सपनो आयो ॥४॥

## विया बाण पड़ी या कांई

(इस गाने में किसान स्त्री अपने पित को मीठा उपासम देती है प्रीर उसे जीव दिलाती है। वह पित से पूछती है कि "तुम उरने का कारण न होते हुए भी नयो उरते हो? तो हैं इरानेवाली चीव ससल में नहीं है जब भी क्यों उरते हो? तुम जिन्दा दिल होकर मुद्दें से क्यों उरते हो? तुम जिन्दा दिल होकर मुद्दें से क्यों उरते हो? सित होकर मीठड से क्यों उरते हो? हतनी ज्याया तादार में होकर मोडे से तोगों से क्यों उरते हो? सबको मान सितागे वाले होकर किसी से भी वरते हो? सबको सान खितागे वाले होकर पूर्व मोगों से क्यों उरते हो? " फर वह कहती है कि "सक्ये होकर पूर्व से मीर खरा सोगा होकर नकती लोगों से क्यों दरते हो?" प्रन्त में उमे जोग मानाता है भीर वह कहती है कि "खरी कमाई करने वाले निठस्लो से, साहकार होकर जोरों से धीर सम्मानं पर चलाने वाले होकर पारियो से क्यों डरते हो?""

एजी विनाबात क्यों डरपोजी. पिया वाण पडी या काई। पिया जिन्द भूत कृण देख्या, एजी छाया सु क्यो डरपोजी, पिया बाण पडी या काई।।१।। पिया जिल्हा दिल थे जवरा. एजी मरदा संक्यों डरपोजी, पिया वाण पडी या काई।।२।। पिया सिघ जस्या थे सवला. एजी स्याला सु क्यों ढरपोजी, पिया वाण पड़ी या काई ।।३।। पिया आपा बोला सारा. एजी थोडा संक्यो डरपोजी पिया वाण पढ़ी या काई ।।४।। पिया आपां घर का मालिक, एजी पैला सु क्यों डरपोजी, पिया वाण पडी या काई ।।५।। पिया सर्वका छो अन्दाता, एजी भुखा सु क्यो डरपोजी, पिया वाण पडी या कांई ।।६।। पिया आपा विल्कुल साचा, एजी झुंठा मूं क्यों डरपोजी, पिया वाण पड़ी या काई ॥७॥ पिया खरा तप्या थे सोना, एजी नकत्यां सं क्यो डरपोजी, पिया वाण पडी या कांई ।। ६।। पिया खरी कुमाई खावा, एजी ठालां सु बयों हरपोजी, पिया वाण पडी या काई ।।६।। पिया साहकार सदा का, एजी चोरा सु क्यो डरपोजी, पिया वाण पडी या काई ।।१६।। पिया गेले गेले चाला. एजी पाप्यां मुं क्यो डरपोजी, पिया वाण पडी या काई ।।११॥

# म्हे ग्राज बोलां छां े

(यह यमें से दबी हुई जनसमूह की वाएं। है। जनसमूह भव उठ खड़ा होना चाहता है। वह परने दिल के दर्द की बात कहने के साम साथ धपनी ललकार भी मुनाता है धीर वेतासनी भी देना है। यह कहा गया है उनसे बिल पर जनसमूह की दबाये रखने का जिम्मा है। पाचवें मन्तर में तीन मेडकों की उपमा दी सपी हैं जिनमें से एक सबसे उत्तर होने ते सुनी बाहित करता है भीर बीच बाला उदासीन भाव रखता है, लेकिन तीसरा दोनों के मीचे दर जाने से प्रमुख हुए अकट करने के लिए मजबुर होता है।

> दुखभरी आवाज सूं म्हे, आज वोला छां। जोरकी ललकार सूं म्हे आज वोला छां॥१॥

वैठ्या वैठ्या ठेठ सूं म्हें, मारी रचना देखली । देखता महे धापना जद, आज वोला छा ।।२।।

पिसता पिसता आज ताई, म्हा को चुरकट हो लियो। फाटगो यो कालजो जद, आज बोला छा ॥३॥

> मायली तो माय म्हा के, वारली वारे रही। कल्लानै या आतमा जद, आज बोला छा ।।४।।

टर्नेकटम ऊपरलो बोल्यो, बिचला के तो खुशी न गम। निचला छा सी "दवे तो हम" म्हे, आज वोला छा ॥१॥

जूती सूं चिय जानै जद तो, माटी भी माथे चढै। आखर तो छां आदमी म्हे, आज बोलां छा।।६।।

चोरी अर सिरजोरी थाकी. सारी दुनिया देखली। थाका हिया की फटगी सो. आज वोलां छा ॥७॥

चोखा छा अर भीत सारा, ताकत पण विखरी हुई। साकत को अन्दाज कर म्हे, आज बोलों छा शक्ता

चानी जतरै वास लीनी, अब नहीं या चान सी। दीखें कीने चानती जद, आज वोला छां।।ह।।

> भोत होगी भोत होगी, अब थे आख्या खोलल्यो । नातर थे पछतायस्यो म्हे, आज बोला छा ॥१०॥

उस्टैंली अरथाका माथा, ऊपर होकर जायली । स्रणत्यो या चेतावणी म्हे, आज वोलां छा ।।११।।

#### नारी मरदाशी

(इस गाने से घर की स्वामिनी का धाह्मन किया गया है। उसे इकन आवरू को समर निज्ञानी बताया गया है। उसने कहा गया है—"गरीवी के कारए। सानी हुए प्रपने घर को रेखो। घर से साने को खनाज नहीं है धौर तब भी बोहरे का दवाब कर्वी दुकाने के लिए हैं सो देखो। उत्हरारे दिन के दुका वे बार बार ब्राकार रोटी मानने हैं धौर पूर्ता परते रोते हैं। वे ही नुस्हारे वच्चे बहाई को भी करते हैं। गुमने तुद करा हुमा तहना पूर्व रखा है कि सान को की सान का ब्राते हैं। पुरुष का दिन घटकता है। वह घर के भीतर घर वन जाता है जिन्न घर के बाहर मिट्टी बंबा हो वाना है। पिन देव वे हाथों में इधिया पहनती हैं, हो प्रवा तो नुम हो प्रपनी ताकन के घर की लाग रखों।)

नारी मरदाणी तु आवल की अम्मर सैनाणी । नारी मरदाणी ।।

खानी होगो टापरो सो देख लै ए सरदाणी। आंड्या खोलर-आस्या खोलर झाक, तू ई के कानी झाक अब तो घर के कानी झाक, नारी मरदाणी।।१।।

> भाज बीत्यो पीसणो जद पीसै काई मरदाणी। घर मे कोनै घर में कोनै नाज, जब भी लेणा की छेदाह, जद भी बोरा को छैदाब, नारी मरदाणी॥२॥

छोरा-छोरी वाबड़ वाबड रोटी मांगे मरदाणी। भूखा रोबै-मरता रोबै नार धारा कान्जा का टूक, भारा हिबड़ा का ये टुक, नारी मरदाणी॥३॥

> दाना में ये बर धर धूर्ज, धारा टावर, मरदाणी। सी सरदी तूसी सरदी तूरोक, याका तन पर लत्तो नांख अब तो यांका तन ने डाक, नारी मरदाणी॥।।।।।

लीरक लीरा धार्घारयो तू पैरया डोलै, मरदाणी। लाजा भरगी लाजा मरगी लाज, धारा नागा तन नै देख धारो डील उघाड़ो देख, नारी मरदाणी।।॥।

> मूछ्यांला को काल्जो तो भार्यो धड़के मरदाणी। घर के भीतर घर के भीतर नार यो तो वण जावे छ नार यो तो घर के वार गार नारी मरदाणी ॥६॥

ढोलाजी तो हातां चुड़लो पैर लीनों मरदाणी । थारा घर की थारा घर की लाज, तू तो हिम्मत करके राख, अब सो मरदी करकै राख, नारी मरदाणी ॥७॥

#### संकल्प

(यह ग्राम जनता के सोयो की घोषणा है। यह उनका इड सकस्प है जिसे पूरा करने के लिए अरुरत पडने पर उनकी ग्रपनी जान तक दे देने की तैयारी है।)

> सही नमुनो सेवा को म्हे पेसकर देस्यां। स्वार्थ अवसरवाद को म्हे अन्त कर देस्या ॥१॥ स्वराज तो आगो वतायो चैन पण दीख्यो नही । गाव गाव में साचल्लो सुराज कर देम्यां ॥२॥ सब करने धन धरती होमी कोई खाली रै नहीं। धन धरती की पाती में महे न्याय कर देस्या ॥३॥ किसाण हो मजदूर हो वा अदबीचल्ला लोगही। दब्या हवा वा सगला नै म्हे न्ह्याल कर देस्या ॥४॥ घणा जणा ठासा फिरै रुजगार वाडी छैनही। रोटी अर रुजगार का महे ठाठ कर देस्यां ।।५॥ कोई की जागीर चाली कोई कै निकल नयी। नयो निकलती जागीरा पर रोक कर देस्या ॥६॥ ठालप का ये कारखाना स्कूल अर कालेज छै। कुमाई की विद्या को विसतार कर देस्या 1७॥ कोई नै हलका गिणे छै कोई नै न्यारा गिणे। आपसरी में भाया को म्हे प्यार कर देस्यां ॥६॥ अंग्रेज तो आगा गया पण साथ देशी रे गया। या सावा ने सिखार हिन्दी त्यार कर देस्यां ॥६॥ चुणावा मे जीत देखी पीसा अर पाखण्ड की । अस्या निकरमा कायदा नै रह कर देस्या ।१०।। झ ठो साची काम सारी वोटा के ताई करै। वोटा का लैलोटा मे म्हे चोट कर देस्या ॥११॥ चढा उत्तरी ख्याल खेलता बीका की घोडी चढ्या। असवारां की करकरी म्हे स्थान कर देस्या । १२।। माथ मैला ऊजल घोल्या ज्यो रिसवत लेला फिरै। पकड पकड एकेक नै म्हे पार कर देस्या ।।१३।। सत्य सांती असतर म्हा का वमगोला को डर नही। देस मे परदेश मे परचार करदेस्या ।।१४॥ निरभै होकर आगै वढस्या सामी ज्यो चट्टान हो । ठोकर दे चट्टान चकनाचूर कर देस्या ॥१४॥ पक्का म्हा का चित्त में यो होगयों संकल्प छै। करवान ई' कै वासतै जी ज्यान कर देस्यां ।१६॥

#### सेरी ग्रनाधिकार चेष्टा

या कुन्देन्दुनुपारहारधवना, या गुप्रवस्तावृता, या वोषावरदण्डमण्डितकरा या ग्वेत पद्मासना । या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिदे<sup>\*</sup>वैः सदा वन्दिता, सा मा पात् सरस्वती भगवती बाड्याधिकारापहा ॥

यह सरस्वती वत्त्रता है। छत्त्र के दूखरे घरए में जो "वीस्पावरवण्डमण्डतकरा" पद है उनसे इतना हो मानूम होता है कि सरम्वती ने प्रपने हाथ में बीसा के रखी है। बास्तव में सरस्वती के चारो हाथों में चार घीजें होनी चाहिए—वो उपर्युक्त पद को इस प्रकार बदसने से हो सकता है।

# वीणावरदाक्षपुस्तकधरा

जिसका प्रार्थ होगा एक हाथ में बीएग है, डूमरे हाथ में बरदान की मुद्रा है, तीसरे में माला है, चीथे में पुस्तक है।

कभी क्षत्री पुरानी रचनाक्षों के साथ इस प्रकार की धनाधिकार चेय्टा, पृष्टता करने की मेरी पुरानी बादत है।

# : 3 :

# वार्तालाप विवरगा

(8)

# हीरालाल शास्त्री की महात्मा गांधी से मुलाकात

सेवाग्राम २०-१-४५

हैं। सा॰ ने २०-१-४५ को दिन के ११ वर्ष वाद वायूची से सेवाग्राम में मुनाकात हो। श्रीमती जानको देवी बजाज धीर तकनी नी थी। ही० झा० ने वायूची से अपना देर ते मिलना होने का बिक किया धीर फिर एक मित्र ने जो समाचार कहनवाये थे नो बायूची से वहें। बायूची का मौन था, दक्षिण, उन्होंने आरम्भिक समाचारों को सिर्फ मुन लिया। वाद में बायूची हो वहें। बायूची हो को के अस्तों के उत्तर लिखते गये।

ही • घा • — जयपुर राज्य धजामण्डल किसानो की सेवा करता रहा है । धाजकल कोई किसान प्रचायत जिंधी सस्या नहीं है । राज्य के पात किसानो की वकालत प्रजामण्डल में की है धीर इस काम ने उमे तफलता भी मिली है । कल को वह
वकालत विफल हो बाए और सत्याधह को नोवत खाजाए तो प्रजामण्डल क्यां
करें ? आपने एक वार कहा था कि किमानों को प्रपने आर्थिक प्रकाों के निए
अपने निज के वल पर सत्याधह करना चाहिए ? तो नया सत्याधह करने के लिए
प्रजामण्डल विकासों को स्रकेता हो कोड़ दे ?

वार्तालाप विवरगा [ १०१

वापू — ग्रासान वात है प्रवामण्डल में से ही सत्यायह सभा खड़ी हो जिसका काम जेल जाना भी होगा । इसमें ज्यादावर किसान होंगे लेकिन वह किमानो की झला सभा नहीं होगी । प्रवामण्डल ग्रंपनी मर्यादा में मदद देता रहेगा ।

- ही 0 बाo बापकी समग्र प्रामनेवा को कल्पना मुन्दर है। पर हमानी कठिनाई यह है कि काम करने वालों की मरुवा बीडो है। कार्यकर्ती कहा से काएवे ? एक गाव मे एक ही कार्यकर्ती का वेठना ठीक होगा ? वह कार्यकर्ती चानू राजनेति में भाग लेगा या नहीं ? उदाहरण के निए, क्या वह प्रवामण्डक वर्किन कमेटी में लिया जा सकता है ? बहुर और कन्ये से कार्यकर्ता वाता है वह कितना भी प्रयस्त गाव बालों में मिल जाने का करे, पर बाव बाले उसे धपने जैसा एक नहीं मानते, ऐसा मेरा कनुभव है और बायद यही क्षत्रुवय वर्षों के बामसेवा मण्डल का है ?
  - बातू— प्रापकी सत्था को ही ऐसे धादमी नेवार करना है। एक गाव के लिए एक प्राप्तमी होता है। उसको गांव में हो उट जाना है। दूसरा काम उससे न लिया जाए। इसलिए वह विकास कोटी में भी नहीं लिया जाएगा। ५ वर्ष के बाद तो उसे भी देहात से मुजारा करना होगा। तब भने ही देहाती न माने लेकिन वह वेहात का ही सेवक तो माना जाएगा ही।

ही • भा • — मैंने वनस्थली विद्यापीठ का हाल सक्षेप मे बतलाथा । उन्होने बनस्थली के

- बढ़ते हुए धार्षिक भार की धोर सकेत किया धीर धनक्यामयासजी लडिक्यों से भावाद प्रैमा बहुत करने की ओ योजना बताते हैं उसका जिक भी किया। बाद में यह पूछा कि बिद्याभी उसे में तुनियादी तातीमा का कितना सदर कित महार तिया आर तिया आए ने जिया भी राज के त्या की सिंह धार में किया भीर सर सिंह महार मिर्जा इस्साइल के रतनजी के शास आर हुए पण की तथा रतनजी के उत्तर को पढ़कर मुनाया। सब हाल सुनकर—
- बायू ने इसारे में सर मिर्जा को लिखे गये पत्र को बहुत अच्छा बतलाया और फिर लिखा —

जब तक पैने बाहर में लायोंगे धीर प्रनोधन होंगे तो १००० लड़ किया भी धाएगी। लेकिन यह सब मैं निकम्मा धानता है। सच्ची बात हो यह है कि या तो लड़ किया प्रपत्ता खर्च लावे या यही मेहनत करके प्रपत्ता खर्च निकारों। उनसे तीसरा प्रार्ग नही है। बाब लड़िक्यों तैयार नही होती डीयस्थिया नैयार करते हो। मैंने बहुत सुना है तुम्हारी सस्था के बारे में। मैं जानता है कि तुम्हारी शक्ति का दुर्ध्यार होता है।

ही । शा॰ — बापूत्री, यह तो बढी तस्त राय ग्रापने तिसी है । शापने वनस्थती जाने का बादा किया था । शापने कहा था-बहा कैनाश होगा, बही शकर पट्टैच जाएगे । १०२] प्रत्यक्षजीवनसास्त्र

इसलिए आप एक दिन वनस्थती चती और अपने हाथ से उसका जैमा चाहो कायापतट करतो । पर एक बात तो तताक्षी—सबक्किंग अपने पर से पैसे ले आएपी तब तो सस्था निर्दोध हो जाएगी क्या ?

- हो । मा पर से खर्च लाने वाली भी संकड़ों मा सकती हैं-
- बापू करके देखी। पना चल जाएगा। तुम्हारा काम ही तब दूसरा होता। यह सनुमव लेने की बान है।
- ही॰ घा॰ इस मामल मे तो थात बहुत करनी होगी। इस प्रकार मैं वारस्वार मवाल पूछता गई ग्रीर काप उत्तर जिलाते रहे तो भाषको वडा कष्ट होगा। भाप जब बोमने लगेंगे तब मैं महीने दो महोने वाद फिर धावाक या।
- वापू- यहाँ रहोंगे तो मैं रात्रि को एक चण्टा दे हुँगा। तब बोलुँगा।
- हीं। मां ने प्रपने धारम मनोय के लिए "एक बात भीर पूछ लेता है" यह कह कर घरास्त, १६४२ में लेकर बाद ठक को घटनाए जनपुर के शवनीतिक क्षेत्र में घटती रही उनका ब्लीस बापूजी के मामने पेच किया। बापूजी मुनते रहे। घरते में हीं। बार ने पूछा जयपुर प्रजामण्डल ने जो कुछ किया, क्या उनसे कुछ धनुचित था?
- बापू मेरा ब्राज कुछ कहता ब्यां है। फिर भी कह सकता हू कि जो कुछ झापने किया दर्भम मैं कुछ अनुचित नहीं पाता ।
- ही ॰ মা॰— तो प्रव स्नापते मिलने के लिए ४व साऊँ <sup>२</sup> द्याव तो नहीं कल साजाओं क्या<sup>?</sup>
- बापू— कल इक्ष्वार है। सीमबार को द बजे बाबो।

इत मृताकात में १- पेण्टा तथा। हो० चा०, रतनबी ब्राटिको बहा सतीय हुन्ना। देर हो चुकी भी इसलिए बापूबी के यही जीवन करके हो० बा० ब्राटि फ्राप्रम से विदा हुए।

# होरालाल शास्त्री की महात्मा गांधी से मुलाकात

#### सेवाग्राम २२-१-४५

(रात को = बजे से ६ वजे तक)

प्राप्तम में बापूजी के मौन छोड़ने में कुछ मिनट बाकी थे । तब तक ही शा० ने वनस्थती विद्यापीठ के काम का बयान किया । पनमूखी-मैठिक, शारीरिक, बौडिक, गृहस्य प्रोप कला विधा का फ्रम कैंसे चनता है सी कहा ।

मौन खुलने पर बापू ने कहा-

खापने सुनाया बह करीव-करीव सब हास सै जानता हूँ। यहाँ बैठे काफी सोम मुक्ते सब प्रकार को खबरे सुना जाते हैं। मैने तो रामदान की लडकी नुमित्रा को मिसा के लिए कही भेजने की बात निकली तब उने बनस्थाली हो भेजने की राग दो थीं। परन्तु देवसाब में चनस्यामदास की सूचना के खनुसार उसे पिलानी भेजा। मुक्ते कहा गया कि बनस्थालों का भोजन भी पिलानी से कुछ कड़क है। यसन में सुमित्रा को तो पिलानो का भोजन भी कडक पड़ता है।

रतनकी-मैंने पिलानी का भोजन देखा है। वहाँ योडा दूध अधिक दिया जाता है स्रीर कोई फर्क नहीं है।

बापू — मैं समका । मुमिना की बात तो मैंने इसलिए निकाली कि मैंने वनस्थली के बारे में सच्छा ही घच्छा मुना है धौर मेख अभिप्राय भी भच्छा हो है यह मैं तुमको बताहूं । मुना है धौर मेख अभिप्राय भी भच्छा हो है यह मैं तुमको बताहूं । मुना भी (हो० बा० को) मैं सापकी तरफ से लो गो प्रेसा रख रहा हूँ वह यह नहीं कि इस प्रकार की सस्या का सवालन आप करें। ऐसी सस्याए तो हिन्दुस्तान में कई है। प्रनम्याम-दास ऐसी कोई सम्या पलाए तो मैं सापति न करूं गा। क्यों कि प्रायक्त ऐसे कार्यके एसे कार्यके पाय पन है उसने में कुछ वे ऐसे कार्यों के पीड़ समात है। परन्तु प्रापके वार मे तो प्रापकों कई बार देखने से और सम्यासाल ने मुस्ते सापके लिए मुक्ते जो कुछ कार्यक हों पा एवं मुक्ति की स्वायत है। उस पर से मुक्ते पर हो प्रमाल पढ़ा है। जिस मानालात दिख्य पुरुष था। उसने मुक्ते कहा था, हम प्रायक्ति पा एक्से जो कहा पर से मुक्ते कहा था, हम प्रायक्ति कार्यक्ति अप पर से मुक्ते कहा था, हम प्रायक्ति कार्यक हों अनुत कम है। तत हम से प्रायक्ति कार्यक से से प्रमाल पढ़ा है। जिस सम्यासा स्वस्थान पिछड़ा हुआ है। प्रमाल कार्यक विस्तु कम है। तत स्वत्त कार्यक्ती सेने दूसरा नहीं देखा। और जमनालाल का स्वत्त मेरे कुलत कार्यक्री सेने दूसरा नहीं देखा। और जमनालाल का स्वत्त मेरे कुलत कार्यक्री सेने दूसरा नहीं देखा। और जमनालाल का स्वत्त मेरे

तिए तो हमेशा बडी बात रही । उनको मनुष्य की बड़ी परख थी मीर काम की सबन थी। वे तो मर गये। काम के बोफ से ही मरे, ऐसा मानता हैं। आखिरी दिनों में उनको में सेवा की वडी कमन रही। उनकी साखिरी दिनों की हामरी से इस बात का प्रमाएा मिसता है। गोपुरी बनाकर बही काम करता करते यारने को बैठ गये। गौत उनको पेड़ी के मकान में गयी। उनके कमन के साखार पर मैंने माना है कि ऐसी सहसा चलाने रहना यह धापका काम नहीं हो सकता।

ही । जान — मैने कभी न सोचा था कि धाप शुक्तमे इतनी वडी सपेक्षा रखते होंगे। नै सचमूच इस बोक्त से साथ सपने आपको दवा हुया पाता है।

बापू—मैं तुमसे भ्रषेक्षा तो रखता हूँ।

ही ब्हार — चनस्थली जैमी सम्बाए भारत में कई हैं यह आपने कैसे कहा ? कौनसी सम्बाए ऐसा काम करने वाली हैं ?

बायू — बहुतरी है। मैं टीक नाम लेकर नहीं बढ़ा सकूगा। यह भी हो कि धापकी सदमा में चलना है ठीक वहीं शिक्षशुक्का इन सब सदमाओं मैं टीक उसी ढंग में नहीं चलता होगा। परण्या घार दे रहे है चैंगी शिक्षा या करीव-करीव चैंसी, नहीं बार्त कहीं एकाब दो कम कहीं धिक्क परम्तु बही बातें वेने वाली कई सस्थाएं देश में बढ़ा सकता हूँ। बड़ोरे की सस्था में करीब-करीब सब यही- एक युडबबारी छोड़कर दिया जाता है यह धैंने देखा है। उनके दोष भी मैं बानता हूँ परम्तु दोयों की चर्मा में प्रभी न एट सा।

नुम्हारे यहां पुष्पवारी, साईहिल, माला, बरखी, ऐसा ऐसा सामान है लेकिन वह कुछ भी मुन्ने नहीं लुना सकते। खादी, हरिजन इरवादि भी है। परनु सेंगे नवर में वह सब कारी कारी है। क्योंकि यह सब लीजें घर तक पहुंचने शाभी नहीं। सस्या में लडकिया हरिजनों को छुए, उनके माल रहे, परन्तु घर बाकर या मनुरात बाकर योहे ही हरिजों को धपने घर बुलाने वाली हैं? कई एक ती खादी भी छोड़ देती हैं। यह ती बुम्हारी मस्या में घपने दिल के माफिक कुछ बाते मिल जाती है इकी जीम से साबी पहुने लेती हैं धीर हरिजनों को भी हू लेती हैं। परनु वे वीजें भीतर तक नहीं पहुँची हैं। सुमित्रा को ही देशों न ? उसने मुक्ते कहा मुक्ते वनस्या जाती हैं न्योंकि वहा बुशमवारी सिला है। और पिसानी भी जाना है क्योंकि वहा सरीत सब्हा है। यह ती बित्कुल साफ दिल सडकी है। परन्तु बह मेरे पास बहुत रही है ऐसा
नहीं, लेकिन रामदास तो रहा न ? बडा सरल और चतुर लडका है।
लेकिन बह भी सब मेरे पास नहीं रहता। यहा का तेज उससे बरदायत
नहीं होता और यहा की शृटिया भी। परन्तु मुफे तो दुनिया को साथ
सिकर चलना है। इमिनए भृटिया बराक करके भी प्राथमवासियों को
निभा लेता हूँ। असल बात यह है कि रामदास भेरे साथ इतना रहकर
प्राप्त बच्चों को चानु प्रवाह की विस्ता देना चाहता है।

मैने कहा धाजकल का बायुमण्डल और ही है। यहीं के महिला धाअम का इप्टाम्त मेरे सामने है। बिनोबा ने उसे ठीक मेरे सिद्धान्त पर चलाना ग्रुक्त किया। तब लडकिया जाने लगी। जमनालान ने भी प्रापति की और कहा—जिन तोनो ने पंचा दिया है उन्होंने यौर लयान से दिया है। दलिए मुफ्ते तो चालू प्रवाह में रह कर ही जेत चलाना चाहिए। बिनोबा निकल गये। सस्या स्थान चनती है, वेकिन उससे क्या तिकलने बाला है? प्रभी मैं उसर चार दिन रहकर माया। विक्रक-शिक्षका, सडकिया सब की बाते मुनकर भाया। एक विश्विका (भीरा) बाल गिर्धिका का काम करती है परन्तु वह वेचारी वाल विक्षा क्या जाने? वेसे तो वह मटिस्ती में प्रवाह चुच सीच साथ हो। अपरी अपरी २-४ बाते पकडती होंगी? परन्तु माटेनरी का हार्ट थोड़े किसी के पकड़ा है ? मैने तो स्था उससे बाने की है, इसी में यह कह सकता है।

धमल बात यह है कि भारतवर्ष को एक सदेशा दुनिया को देता है—
प्राहितक समाग रचना का प्रयोग करके दिलाना है। यह यदि तही है तब
हमारी शिक्षा में युनियादी कानित करके ही वह होगा है। मेरी यह बात
धमण्ड की बात हो सकती है। कोई कह सकता है हम कीनता सबेगा
देने काबित है ? हमारी कायरता देखों गे? फिर प्रमुक्ता जैसे बड़े
दीए भी हमारे में पढ़े हैं। लेकिन यह मब होते हुए भी मेरी मान्यता है—
साता है कि मानतवर्ष बनोवा मुक्त है और उसके पात दुनिया के लिए
मन्देशा है। इसिनए हमको हमारी विधा को भी अनोचे दन से बनाना होगा।
मुखारे यहां की हरेक लड़की अपने शिक्षा को सर्थ की एक एक कोडी
प्रपत्ने बुते पर कमान्ने तब ही वह मेरी करवना में जो शिक्षा है वह हुई—
पड़ी नयी तालीय है।

ही श्रा॰—परन्तु ऐसा स्वावसवन कही हो भी पाया है क्या ? यहा सेवाग्राम भे तालीमी सम भे भी यह कहा चनता है ? बापू--न चलता हो, इसकी मुक्ते फिक्र नहीं । सैंने तो अपनी बात ग्रार्थनायकम् को समभादी । येरा खवास है वे समभ गये हैं । इसी से मैंने सारा काम उन्हें सीप दिया। मेरा काम मार्ग दिखाने का है। वे दोनों इसके पीछे फकीरी लेकर बैठ गये हैं। वे सब कुछ सही करते हैं यह तो मैं न कहूँगा मैं जानता हुँ उनमें भी बुटिया हैं। मेरे में भी है। विना बुटियों का कौन है ? जिन जिन में त्र टिया देख उन्हें निकाल द तो कोई न बचेगा, सबको मफ्रे निकाल देना होगा । और खद को भी निकाल देना हागा । लेकिन मुक्ते तो दुनिया को लेकर चलना है । ग्रीर जो रास्ता मुक्ते सच दीखता है उस पर उसे चलाना है। इसी से न्एाग्राही बन कर बैठा हैं और जितने मेरे प्रयोग में साथ देने साते हैं उन्हें शामिल कर लेता हैं। फिर भी यहा चल रहा है वह 'नयी तालीम' है वैसा भी मानकर चलना जरूरी नहीं । नायकम ने तो मैंने चाहा उससे कही अधिक कर डाला । एकदम सात साल के अन्यासक्रम का प्रयोग शब्द किया और देश-भर में असका प्रचार करने का भी साहस किया । इसमें सरकार की मदद भी ली। उस वक्त तो काग्रेस सरकार थी। पीछे काग्रेस को राज-तन्त्र छोडना पडा । परन्त सरकार ने प्रयोग चाल रखा और विहार प्रान्त में कुछ काम भी हमा है लेकिन मेरी कल्पना का पुरा प्रयोग अभी तक कही नही हमा।

> मरी योजना मे उद्योग ही शिक्षा का माध्यम है और क्षिक्षा स्वावलम्बी हो मह ध्येय है। यह विचारपारा मैने ग्रामाखा महत्व मे ईवाद की। भीर वहीं मुभी इस बात का भी दर्गन हुमा कि साद वर्ष की बुनियायी तालीम पर ही हमें न रहना चाहिए। बल्कि बावक गर्भ में माबे तब से बूढ़ा होकर मरे तब तक की क्षिक्षा की योजना हुम तय्यार करना चाहिए। बाहर ग्राकर यह मैने नायकस्त्री को कहा। उन्होंने उसे पकर्य विया भीर यह परिपद बलायी।

> जिर भी यदि मेरी बात थनी व्यापक न होने वायी तो इतका मुक्ते हु. त नहीं ! मुफ्ते सब करना है । क्योंकि मुफ्ते पूरा विश्वास है कि ईश्वर मेरा नायी है । तुम यहाँ बैठे हो, या यह स्वामी, नरहरि, प्यारेजाल बैठे हैं, इननें प्रामार पर में प्रभान काम नहीं चला हहा । ईश्वर हो मेरा प्रामार है उस पर मेरी श्वद्धा है । श्राव्य तक यह कहने कर परिपाठ रहा कि ईग्वर सत्य है परन्तु में रोमरोजा में मिलने बाग तब व्याक्यान देते हुए मेने कहा कि सत्य ही ईग्वर है । दोनों में बटा फर्के हैं । युनकर रोमेरोजा नाच उठे । इसीजिए कहता हैं जो सच बात है उसे बसाने याना दियर ही है । इसी से कहता हैं कि सच्ची जिक्षा क्या है यह समक्ष तिया दव

फिर सस्या की बोर न देखो। सस्या की परवाह ही न करो। माज उत्टो मना वह रही है। इससे हमारी सच्ची विधा लेने वाले न मिनें, मां-वाप, लडके-लडकियाँ न केवें और मौजूरा विवामीं भी चल जाए तव भी फिक न करो। दस रहे तो दस हो को सिखामो और मांगे बढ़ो।

यह सब जो मैं कह रहा हूँ तुमको जैंच तब ही करता है अन्यथा नहीं । साधम की बहिनो की प्रार्थना में स्तोक हैं :—

विद्वीद्भः सेवितः पर्दिमः नित्यम रागद्वे पिमिः । हृदये नाम्यनुजातो यो धर्मस्तं निवोधतः ॥

मैंने तो कहा, परन्तु नुम्हारे हृदय ने उसे पहिचान कर पकड सेना है धीर प्रपन्ता कर सेना है। यह न हुमा वो सीताराम पण्डित (रएजीत पण्डित के पिता) को सी गत होगी। वे बवे विद्वान थे। प्रम्य निवे थे। प्रमम निवे भेंने सत्याप्रह प्राथम को नियमावती उनके पात थेनी तब दक्ते दिवार इतने वदत गये थे कि मुक्ते तिवार 'प्रहिता परमो पर्म' में से 'प्र' उम्माय है। प्रसन्त वात तो प्रहिता परमो पर्म' यही है—हिसा ही सच्चा पर्मे है। किर बनस्पित, प्रमु, पढ़ी और मनुष्य के व्यवहार से यही प्रतिचारत करने लगे कि "बीयो बीवस्म जीवनम्" यही जीवन का नियम है और हिमा के बिना दुनिया चत्त ही नही सकती। जिर तो वह फ़रिया भी गायब हो गयी। गयी। गायब हो गयी। गयब हो गयब हो गयब हो गय

इसिलए तुम्हारी संस्था में जो परिवर्तन में चाहता हूँ वह तुम्हारे दिल में घुन गया हो तभी तुम उसे करना, वरना मान जो तुम्हारा चल रहा है वह भी वंसे तो प्रच्छा ही है उसमे भी राजी हूँ ऐसा समझे। इसका प्रमास दो मैंने सुनिना का किस्सा मुनाकर दे दिया।

- ही ॰ जा॰ -- प्रापको वात समक मे तो जाती है। सवाज बमल में लाने का है। सोचूँगा धीर कोशिण करूँगा। श्रीर क्या किया वह बताऊँगा।
  - बापूर-वताने को जरूरत नहीं। मैं तो तुमको कह चुका कि परिवर्तन न करोगे तब भी मैं तो राजी ही हूँ।

बनस्थनी मी बातचीत हो चुकने पर एक घष्टे में कुछ मिनट वच रहे थे। मुजीना बहिन ने वापूजी को याद दिलाया कि ब्राप बहुत बोल चुके हैं। बापूजी ने कहा एक घष्टा देने की वात थी। फिर ही॰ शा॰ ने वापूजी से कुछ भीर सवाल पुँछ जिनका सार इस प्रकार है,—

ही ब्यां कि प्राप्त में यह तो बनला दिया था कि प्रयस्त ग्रान्दोलन के सिलसिले में जयपुर प्रजामण्डन ने जो कुछ किया उसमें कुछ ग्रमुचित नहीं था। पर प्राप्त में बम्बई में यह भी तो कहा था कि कहीं का प्रजापण्डल राज से न लड़ने का निश्चय करे तो उस हालत में बहा के कोई सोच ग्राप्टोलन में भाग लेना चाह तो उन्हें रियालत से बाहर जाकर सेना चाहिए ग्रीर प्रजामण्डल को परेशानी में नहीं बालना चाहिए हैं

वाप-जरूर कहा था।

- ही शा — तव तो मेरे जिन माधियों ने प्रजामण्डल से वयावत करके जयपुर में भगडा फैनाया उन्होंने ठीक नहीं किया ?
  - बायू—इसमें क्या कर है ? उन्होंने ठीक नहीं किया। धौर बातचीत के द्वारा राज्य से बितना सुमने पा विषय वह तो पर्याप्त था। इससे जगदा सुम करने वालें भी क्या थे ?
- ही बार सर मिर्जा जयपुर में हैं। वे होशियार आदमी है, फिर भी उनसे कुछ प्रच्छा करवाया वा सकता है।
  - बापू—हां! यह धादमी सूब है। मैंने मैमूर मे उसे बहुत सस्त लिखा था, पर वह मुक्ते छोडता नहीं है।

- ही0गा0-जेटालाल भाई के बारे में ग्रायके मन में कोई श्रम तो नही है ?
  - बापू—नहीं, कोई श्रम नहीं । बेठालाल धच्छा श्रादमी है उसकी लगन वडी है पर वह प्रापने भाषको कार्यदक्ष सावित नहीं कर सका ।
- ही जा — देशपाण्डेजी का क्या हो ? चर्खा सघ से ग्रलग हो गये ।
  - बापू (दु-खित भाव से) मैने उससे बहुत कहा, पर वह नही मानता मै क्या करूँ ?
- हीं ब्हां ब्हां क्या प्रका सबन है। धनश्यायदास्त्रजों भी उसे जानते है। सिद्धराज उसका नाम है। वह ब्रापकी सेवा में ग्राना चाहता है।
  - बापू -- वह यहा झाकर क्या करेगा ? यहा झाएगा तो जस्वी भाग जाएगा फिर भी उसे झाना ही है तो उसे भेज दो । मैं उसे टट्टी साफ करने का काम दे दूँगा । टट्टी साफ करने वालो को भोजन देना भेरे लिए मुश्किल नहीं है ।
- ही ब्या पाजपुताने मे हम लाग कार्यकर्ताओं का एक सगठन बना रहे है, देखिए कैसा होता है।
  - बाप ठीक है, बनाम्रो ।
- क्षें ब्ला॰—हमारे यहाँ राजस्थानी आया के लिए कुछ बान्दोनन उठा हुया है। इसमे बापका क्या खयाल है ?
  - बापू—यह निकम्मी बात है। कल को कच्छ वाले कहने खरोबे कि उनके यहां कच्छी भाषा ग्रलग होनी चाहिए।
- ही शार प्रस्तर के भोतानायजी मास्टर खिबिर में आये हैं। वे प्रापते मिलना चाहने हैं। ग्राप उन्हें थोडा समय दे दें।
  - बापू मुक्ते याद है। भोलानाय के पत्र मेरे पास आये थे। मैं उनसे मिल लुँगा।
- ही शा — स्राप कभी वनस्थली तो आएगे ही पर इस समय तो क्या कहा जाए ?
  - बापू—पाना चाहता हूँ पर यहा वे निकन्नु तब तो कुछ हो। मै तो पुप रहता है। मौन तेनों के बाद एक पण्टे का समय बाज मौने तुन्हे ही दिया है। डां॰ सैयद महमूद को भी नहीं दिया। इसमें मेरी बचत हो जाती है। नही तो मै किमते मिनू और किसते नहीं मिनूं?

ही ब्हा - बापूजी, मत्र में छुट्टी नेता हूँ। समय भी हो ही चुका।

स्वामी ग्रानन्द-ग्रमी तो एक मिनट बाकी है।

जानकीदेवी-बापुजी ग्राप वक यये होंगे ?

बापू---नहीं। ऐसे कार्यकर्ताओं से तो मुन्दे वात करनी ही पढेगी ये कब कब मेरे पास प्रात हैं --

टीक ६ बजे ही ब्हा ब्रादि ने बापू से रहाली।

- भीड १ बापूजी ने इस मुनाकात में सपना दिल खोतकर रख दिया था। उन्होंने एक स्थान पर क्ष्मुपर्य धोर विवाहित इत्त्रपर्य का भी मुन्दर विवेचन किया था, पर वह प्रकर्म निवान ने प्रवाधा। मुभाकार्तों की यह रिपोर्ट नरहरि भाई, स्वामी धानन्य धीर ही क्ष्मा के इत्योग से तस्यार को गयी थी।
  - २ इनका बहुन छोटा प्रम अस्थक्षत्रीवनधास्त्र (भाष १) में छून कुका है। बाद में भोचा गया कि पूरे विवरस्त को अकाश्वित कर देना और उचित धीर उपयोगी होगा।

(2)

## हीरालाल शास्त्री का विनोबाजी से विचार-विनिमय

(१० से १४ तक और फिर १६ नवस्वर, १६७० को हए वार्तानाप का सार)

मोड — भाजकल विनोबाजी के काल बहुत बन काम करते हैं धीर वे धमतों प्रांकी की भी कम कप्ट देना बाहुत हैं। फिर मी वे मेरे लिखे हुए लोट धारि को पढ़ते पढ़े पर्ध प्रीर नेरी बातों का जवाब देते गये। पढ़ते का बहुतमा काम विनोबाजी ते गीय (क्यांज) से कप्पा धीर मेरे घट्टों को विनोबाजी के कार्यों उक पहुँचाते का काम मंग गीतम ते ही किया, मो बड़ी सीम्या के खाया धालिय ने गीतम के साध्यम से ही विनोबाजी ने इसके सम्बन्ध से वादी प्रांती ।

कई नाल पहले में बिहार और बनाल की परचात्रा में विनोबाजी के साप १४-१४ रिनो तक बला था। तब प्रतिदिन एक घष्टे की बादबीत के दौरान मैंने विनोबाजी की विचारचारा और उनके कार्यक्रम को नमन्त्रने की कोसित की थी। जो पुद्ध विनोबाजी ले वार्तालाप विवरस्

मेरे बानने भीर समम लेने में भाषा उसे मैंने उन्हीं दिनों लेखबद कर दिया था। पपने जन लेखों को मैंने हान ही में भपनी "लघु लेखमाला" में छाप दिया। में बाबा के पास आप ही रहा था कि मोड़ी हरियाजनों ने कहा कि "भाष निर्मेशनों के पास जाभो, उन्हें सपनी सात से सहसत कर लो, भाषकों पास काभो, उन्हें सपनी मान काणांगी।" हरियाजनों कहा बातने हैं कि कही पर कोई पहले से जुटी-जुटायों खेता मुभे दिखायों दे भी जाए तो बह मेंना मुभे दिखायों दे भी जाए तो बह मेंना मुभे नही चाहिए। भारतु। पिछने दिवा की मुनाकातों के सिलिंगले में विनोबाजी ने मेरे लेखों को देव-दिखाकर प्रमाणित कर दिया, विक्त एक स्थान पर "वर्ग समन्वय" के स्थान पर "वर्ग निरस्तन" बताया सो वैने ठोक कर दिखा। श्रीमती जान को देवी बजाज के सामने मेरी भारतकथा (प्रत्यक्षजीवनवाहन) की पुस्तक पड़ी थीं। विनोबाजी को वह रिखायों दे गयी ठो मुभे लया कि उन्होंने उसे साब से उठा ली। बाद में मेरे दुखने पर वे बोने "में ग्रायको पुस्तक के सरतरी नियाह के देख मया हूँ। श्रायने बहुत सम्हर्ण लिखा है"।

- (२) मैंने निनोबाजी को अपने नये सकस्य बताये
  - १—मुझे किसी पार्टी मे शामिल नहीं होना है धौर मुझे खुद को किसी भी हालत में किसी चुनाव में खडा नहीं होना है।
  - २— मैं प्रपने मित्रो से मिलने वाली सहायता को छोडकर वनस्थली परिवार से यथाश्वय यथीचित लेकर घपना गुजर कहंगा।
  - १— झपने नये कार्यकम के लिए राजस्थान के वाहर का कोई चन्दादाता मुक्ते आर्थ होकर सहायता देगा तो मैं उसे स्वीकार नहीं करूँगा।
  - ४— राजस्थान के भीनर कोई खुणी से मुर्फ़ देशा तो में ते लूँगा, किमी से मीर्गुगा नहीं।
  - ५—वनस्थली झादि के लिए ब्राइन्दा मैं पहले की तरह मांगता नही फिल्रैंगा, किभी विशेष श्रवस्था में भावश्यक हो जाएगा तो सहारा लगा दू गा ।

मैंने पूछा नहीं, पर मेरा धनुमान है कि मेरे ये सकल्प विनोशकी को स्वभावतः पसन्द शाये होंगे। सब बात यह है कि मेरे इन सक्लों को कमी से प्रयत्न में माना चाहिए या। बनस्पनी का प्रयत्न चलने पर विनोशानी बोले — "मापने महिलायों की येवा का जो काम किया है उसके सुलना महिए कर्ने के काम से की जा सकती है। धापकी सस्या नम्बर एक है। ऐसी सस्या मैंने दसरी नहीं देशों।" इत्यादि।

(३) तिद्धराज ने मुक्तें प्रापम में मिलकर काम करने के बारे में भो कुछ कहा उमका हवाला देकर मैंने विनोबाजी को बताया कि ४२ साल पहले में घ्रकेला ही बनस्पली

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

पहुँचा या। बाद में रतनवीं ने धौर मैंने धिमन्याव से धपना काम किया। फिर तो दर्जरों साथी उस पुराने जीवन-मुटीर के जमाने में वनस्थली पहुँच गरे खौर प्रव तो वहा पर सैक्डों का समृह इक्ट्रत है। बाबा ने पपने खुन के बामुक मुन का हवाला देते हुए कहा हि प्रव्लंत प्रमें काम मुक्त करना ही अच्छा होता है। मैंने कहा— "सिंव खायरों ने प्रवासण्डत- कर्मात के सगठन के काम में चुटना धौर सावित्र में मुस्वमन्त्रों तक बनना मनूर कर तिया या वह किस मुंह से बोल बन्ना है?" किर कैने विनोवाबी को बताया कि जमनावालजी के साल प्राप्त करने पर भी मैं गांधी सेवासण में शामिल नहीं हुया। विनोवाबी बोले "मैं भी गांधी सेवासण का सम्ब नहीं बना धौर में उद्यों जब कभी गया तो "सतम्म" प्रमय के तौर पर ही यथा। मैंने कहा— वाबा धापको क्या बात, प्राप्तो महास्मा हैं। विनोवाबी को मैंने कहा नवाब धापको क्या वात, प्राप्तो महास्मा हैं। विनोवाबी को मैंने वता विया कि मैंने सिव्यया धादि को कह दिया है कि जो काम मैं कर सकता हैं उसके तिए पर पार वाक हरवा में रहने का धौर उनको धिक प्रभावकारी काम की दिता में भोजने का भी नेए विचार है।

- (४) विजोबाजी विहार को सपनी रहानूमि मानते हैं। मैंने उनसे कहा "बाबा, प्राप तो सत है, इनिनए में प्रापको नेनापति के योग्य नही मानता हूँ। प्राप सेनापतियों के प्राचाम हों सकते हैं"। विजोबाजी ने कहा—"सेनापति पद के लिए प्रापने मुक्ते प्रयोग्य टहार दिया तो मैं लुद आवार्थय के किए प्रयने धापको योग्य नहीं चानता है" क्योंकि में तो "मुक्म" की फ्रोर का रहा हूँ। "सुक्म" ये वानने की "सुक्म" या तो बाबा जुद ही दान मकते हैं। बाकी मैं यह समक्षा कि विनोवाजी की इच्छा किसी कार्यक्रम की तक्ष्मील में जाने की नहीं है। ब कहते हैं कि कोई धाकर पूर्ध्या तो मैं धपना विचार उने वता दूँगा। मैंने विनावाजी को बताया कि मैं तो एक "स्थून" से हटकर दूसरे "स्यून" की घोर जा गहा हूँ जब 'सूक्म" मुक्ते दिखायी दे जाएगा नो मैं उनमें ऐना प्रवेश करू गा कि वहाँ से फिर—"न निवस्तंन्ते न निवस्तंन्ते"। मैंने बावा में कहा कि धायके पान-पहास में म्राध परम्परा न पनप जाए। तब वे बोले कि उसी से बचने के लिए तो बाबा "मूक्म" की घोर पराम्परा न पनप जाए। तब वे बोले कि उसी से बचने के लिए तो बाबा "मूक्म" की घोर पराम्परा न पनप जाए। वब वे बोले कि उसी से बचने के लिए तो बाबा "मूक्म" की घोर पराम्परा न पन
- (१) विनोवाकी ने बताया कि विहार में उनके सेनायित अमप्रकाश बाहू होये। माना ने जयनकाश में है त्यार, पदिन्मा का खमाब, नफ़ता मादि कई गुए। बताते हुए एक गुए। ऐमा बताया निसकी जानकारी मुक्ते नहीं थी। वे बोने "वस्त्रकाश जी हताया है। है।" मैंने मन ही मन विस्त्रम के साथ सोचा सावाम। पर मैंने विनोबाबी में कहा—सायके सेनायित की "क्यांनिचारी" होना चाहिए—कम बोनने बाला, उने धनेक कामों में हाथ नहीं इंडिना चाहिए और हर मामने ये धननी राथ नहीं प्रकट करनी चाहिए"। मैंने बोड़ा सा ऐमा ही कुछ गोकुलमाई, सिद्धाब वैदी के बारे से कहा। मैंने कहा-हस लोग प्रवाद परिग्न ही कुछ गोकुलमाई, सिद्धाब वैदी के बारे से कहा। मैंने कहा-हस लोग प्रवाद विद्यान वैदी के बारे से कहा। मैंने कहा-हस लोग प्रवाद कारों, इसरों सब बारों को मुक्कर। हमसे की किसी को भी कई-भोड़ों की सवारी नहीं करनी बाहिए। मैं सीवता हूँ "एकही साथे सब मधे, सब साथे सब बार।" मेरे स्थान

वार्गलाय विवरसः [ ११३

से बाबा तो इम बात को मानने वाले हैं ही। अन्त मे बाबा ने नहा कि अब अध्यक्षकाशजी एकाप्रचित होकर एक ही काम में लग गंधे है जिससे मुफ्ते बडा सतीप हुआ।

- (६) भेने विनोवाजी को बताया कि मुक्ते प्रव तक के मूदान-प्रामदान-जिलादान-राजयदान के नाम में कर्ज्याई दिखायी देती है, प्रपता यह उदान काम मुक्ते प्रवभावकारी सा लाता है। मैंने यह भी कह दिवा कि मुक्ते भुनम ग्रामदान याग्यदान के कार्यक्रम का प्राप्त मुखा देने वाला खेता नाता है। विनोवाजी बोले—"याग्य यह "बोमस" जाम भी हुमा है।" पर उन्हें इस बात का समाधान है कि प्राधित काम तो हुमा है। मुलम गामदान के बारे में विनोवाजी ने क्ष्यट किया कि "मुलन" को बात उनको बगाल में मूनी, मुख्तभ न किया जाता तो प्रापदानों की सच्या ही नहीं बढ़ती। उन्होंने फिर कहा कि मंद्रा में पूर्वी, स्वीम है, पर काल किसी का इन्तजार वही कर सकता। कम्युनियम की बाढ विहार की ग्रीर वहने तती है। इस उसे वहीं न रोक सकते तो क्ष्य कोई ठिकाला नहीं होगा। विनोवाजी ने कहा कि प्रामदान की मुख्य बान तो प्रापवासियों का दिल जोडने की है और अमीम की सारी मिल्कियत गाँव की हो जाने की है दो दोनों काम मुलम ग्रामदान से भी हो सकते हैं। बाज ने यह भी समक्ष्या कि मुलभ श्रामदान पर पहुँचने में एक प्रकार के
  - (७) मैंने बोर देकर कहा कि पहले स्वाधीन शामसमाधी का सगठन होना चाहिए जिमका सरकार में या उनके कानून से कोई लेना देना न ही धीर वाद में प्रामदान का काम में किया जाए। जिनोवाजी कोले—'ऐसा करने से काम ज्यादा मनजूत होगा।'' पर मान में का ज्यादोंने सह भी कहा कि जहां एक-एक परिवार के पास बहुत चौदी—चौदी जमीन हो वहां पहुंचे भूमिहीनों को जमीन मिल जाने से उनका विकास वह जाएंगा धीर फिर प्रामसभा का सगठन भासान हो जाएंगा। परन्तु जहां जभीन काफी हो वहां पर पहुंचे ग्रामसभा का सगठन करना ज्यादा मण्डा रहें सकता है। ग्रामसमाधी की नरकार के द्वारर माग्य करान कराने के बारे में विनोवाजी ने कहां कि मरकार की प्राथसभा के सगठन की पूचना देने मात्र से माग्यता है दे तो ठीक है, पर यान्यता के तिश हो की सांविज नहीं होना पाहिए।
  - (=) मेरी जुद की कल्पना यह रही है कि वामसभाओं को सर्वेषा स्वाधीन होना पाहिए, उन्हें सनकार या कानून की किसी भी प्रकार की सहस्यता कर-मिसती हो तो सरकार की सांधिक महामता वा भी-सहारा नहीं चाहिए। साथ में कानून द्वारा सपाठत पचावते भी एजहान तो रहेंगी तो उनका उपयोग नी गाव की भताई के निए करना चाहिए। धाम-पचायतो का चुनाव निविचोच होना सर्वोत्तन है। विनोबाजी ने कहा कि निविचेच पुनाव होना ही यामराज के सिद्धान्त के समुकृत है। पर मैंने कहा कि कोशिया करने पर भी पूरा चुनाव निविचेच मही से तके की हो के की विचार के के तो चुनाव के किसी हिल्में में वीट पड़ना महूर कर लेना पड़ेगा। बिनोबाजी ने वताया कि एक ही चयह के लिए कई डम्मीटवार कई रहे जाए ते जा उनमें आपस में फैनता करने को कहा जाए। यह न हो सके तो किर को होई जाई हो मैंने कहा-यह समामज जैसी बात है। तब विनोवाजी ने कहा कि फिर बोट पड़ने की हातत में गाँव के महुरखुद्धा उम्मीदवार को ही १० प्रतिवच्चा वोट मिसने चाहिए।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

- (ह) प्रच्ये कार्यकर्ताची की कभी की और उनके मुजारे की व्यवस्था का तवाल मिने उठाया। मैंने कहा कि मांच का कार्यकर्ता गांव में से ही निकल आएगा तब तो यह सवान उदाना वदा नहीं रहेगा। पर सानकर दोन के समय में तो बाहर के कार्यकर्ताओं की जरत परेते हैं। देनोवाजी ने वताया कि प्रत्येक गांव में बैठने वाला एक कार्यकर्ताओं को लरत परेती ही मही। दिनोवाजी ने वताया कि प्रत्येक गांव में बैठने वाला एक कार्यकर्ता होना चाहिए। मान में एक चुमस्कड कार्यकर्ता की होना चाहिए दिसके क्रिम्मे पत्राचेक होने हो प्रत्येक की कर्त्यों बात तो यह है कि कार्यकर्ता को पंना चाहिए ही वही, वानो उने मौब में में ही प्रतन्तस्त्रादि मिन लाए-गांव वाले उने गुजारे के निए जबीन भी है सकते हैं। दूबारे क्रिम्मे पत्राप-गांव वाले उने गुजारे के निए जबीन भी है सकते हैं। दूबारे क्रिम्म वाहर से हो। होनोवाजी ने बनाया कि बगाल के कार्यकर्तायां की स्थित कम पत्रेमें सकता वाहर से हो। हिटे ने बहुन वक्छी है।
  - (१०) मैंने विनोवाजी को बनावा कि प्रापक ग्राम स्वराज्य कोय की वात मुफें
    पसंग्द नहीं आयी । जानननत्र नो जनाने वालो की महावता ने मिननो वाला रुप्या दात या
    साधारण वर्ष्ट पंत्रा भी नहीं नलना । उनका तो वारकण्ड की बतुसी का सा क्य ही आता
    है । नेंगे जोग दिया कि कान्तिवाहक कार्यकर्ता 'कुट्यन्वी' नहीं होना बाहिए। मैंगे
    यह भी कहा कि पुण्य कार्य के लिए तो किसी का भी-वेदवा प्रीर नुदेरे तक का भी-वेदवा
    नद्द किया वा सकता है, पर गानिक के काम के लिए ऐसा नहीं कर सकते । विनोवाजी ने
    हमसे विल्कुल उन्टा मन प्रकट किया । वे वोल-पुण्य कार्य के लिए तो गुढ पैना ही प्राना
    चाहिए-गराववदी के काम में मराव पीने वालो ने मदद नहीं स्त्री वा सकती । पर क्रान्ति
    के सपुद्र में गया के साथ-माथ गया ताला भी ममा सकता है । विनोवाजी ने कहा-प्रान-व्याप्त्र होंगे में राष्ट्रपति ने मवसे पहले व्यवना बन्दा दिया, दूसरे राज्यकर्त्वारियों ने
    दिया तो वे सब प्रपो हो गये। मैंग कहा बदादाता प्रपते हों यो या उन लोगों ने हम सीगो को किसी हद तक सपने वकीभून कर विवा ।
    - (११) प्राप्तवभागों के क्यंक्स के बारे में मैंने कहा कि प्रत्येक ग्राप्तवभा को तोविष्ठसार, मुस्सा, मामान्यविद्या, विकित्सा और मामले-मुक्दनों को कोर्ट-क्षहरों में जाने से रिकेत हुए गांव के गांव में निपदाने का वार्यक्रम हाव में लेना चाहिएगा। तोकिविष्ठरण, मुस्ता, प्रीर मामले-मुक्दनों के काम के लिए विष्य गर्वा नहीं चाहिए, पर मिक्सा व विकित्स के लिए एवां पाहिएगा और (सनवत बाहर के) कार्यकर्ताधी को जररत भी होगी। विनोवाओं नं सरल धीर सस्ती चिक्तम की तरकीव ताजा जड़ी-मूदियों का रम विनानों की बतायी। मैंने कहा कि सावकल गांव वालों का सनीम ''मूर्द लगाये'' विना नहीं होंगा है धीर चित्तिस्तक कहा से मिलमें धीर कोई मिल मी जाएगा दी जनका गुजार के होंगा? सो ही बात विद्या और जितक के बारे, में है। बाजा ने कहा कि वित्तक की जपूर्विविद्यरी को भांति स्वतन छोड़ेजे हुए उसका वेदन मस्कार को देशा चाहिए। मैंने कहा-यह स्वतम यो बात है। विनोवाओं ने मुखा-मरकार के देशा चाहिए। मैंने कहा-

बार्तालाप विवरण [ ११४

मिलं तो ध्राप मञ्जूर करो या नहीं ? मैंने कहा-सरकार के पास सहायता देने को पैसे नहीं है, पर कुछ मिरोगा तो उसे पचायत (यानी स्वाधीन ध्रामसभा नहीं) स्वीकार कर सकती है। बाबा की राय में (स्वाधीन) ध्रामसभा को भी सरकार की सहायता स्वीकार करनी चाहिए। पर मैं मानता हूँ स्वाधीन ग्रामसभा को सरकार सहायता देवी ही नहीं। ध्रामसभा के सामने रोटी-करडा-मकान का कार्यक्रम भी ध्राएमा तो कठिन भी होगा और सरल भी। ध्रामों के प्रतावा कस्तो और शहरों में नगरसभा और मोहस्ता सभाए बनाने की योजना भी मेरे दिमाग में है, प्रथमत विचार कान्ति ताने की हिन्द से । जब मैंने कहा कि भारत में केन्द्र को मजबूत रखना पड़ेमा तो विनोबाजों ने बतावा कि मत्ता नीचे से उत्पर की थोर जानी चाहिए। केन्द्र के पास काम कम होन, पर नैनिक हिन्द में उसे वस्त मन्त्र होना चाहिए। नीचे गांव को भी सजबून होना चाहिए। वांव या गोंवो का समूह भपने स्थानीय उपयोग के नित्त प्रथमी (जिन्सी) मुद्रा तक चला सकता है।

- (१२) इस सब पर मे कान्तितत्व का मबसे बडा सवाल पैदा हो जाता है। यथा गाँव में ग्रमुक काम होना चाहिए जिसे करने का सरकार का कर्तव्य है। उस काम के लिए मरकार में कहा जाए। वह करदें नो ठीक हैं, नहीं करें तो सरकार का मुकादला करके उसे मजबर किया जाए। इसका फलिनार्थ यह होता है कि स्वाधीन ग्रामसभा प्रपन गाँव के श्रावश्यक कामों के लिए उस पैसे को रोक ले जो सरकार के पास जाकर किसी दूसरी जगह दूसरे काम में लग जाता है। नि सन्देह यह संघर्षका मार्गहै और संघर्षही मेरी राय मे कान्ति का मार्ग है। चाहे प्रहिंसा के मूक्ष्म सिद्धान्त के अनुमार हो, चाहे बार्ति के स्थूल मार्ग से हो, पर यह कान्ति का काम शास्त्रत सघर्ष का काम होगा। यानी चुपके-चुपके ग्रीर ममभौतो से कान्ति नही था सकती। हमारे सारे कार्यक्रम को प्रतिगामी बनाने वाले लोग भी देश में हैं। इसलिए हमें कुछ विशेष करके दिखाना पढ़ेगा। पर जाहिर है कि यह सब कुछ ग्रामी की सच्ची एकता और मजबूती पर निर्भर होगा । भारत मे कहने को स्वराज तो भाषा, पर कान्ति नहीं हई । हम किसी से द्वेषभाव तो नहीं रखे, पर मैदान से उत्तरत ही सत्ताधारी से हमारा महाभारत का सा मुकाबना तो अवश्य होगा, यह देवानुर संग्राम जैसा होगा। विनोवाजी ऋन्ति के लिए सघर्ष को ग्रनिवार्य नहीं मानते। "ग्रन्था काम करने वाली सरकार में हम ग्रसहयोग नयो करेंगे ?" वावा ने कहा-"भारत में सान्यवाद का. सम्प्रदायवाद का, वाहरी आक्रमण का आदि कई खतरे हे सो उनका ध्यान भी हमे रखना होगा ।" इस निलसिन में मैं सोचता है कि साम्यवाद और सम्प्रदायवाद को वर्तमान सत्ता-धीशों से प्रोत्साहन मिल रहा है-खाकी देश की मुरक्षा के लिए तो सब कुछ कर्वान कर देना पड़े तो भी हमें चुशी से करना चाहिए।
  - (१३) स्वाधीन ग्रामसभा के सामने राज्य कर की रोकने में पहले भी सरकार के साथ संघर्ष करने की स्थिति ज्ञा नकती है। बरकार लगान ब्यक्तियों से बसूल करती है। ग्रामसभा का स्वतंत्र सगठन हो बाएगा तब गांव के सब ब्यक्तियों का एक समूह हो जाएगा। जबकि गाँव कहेगा कि गाँव का यह लगान है सो ले लो सरकार कहेगी कि हम गाँव को

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

नहीं जानते, हम लगान लेगे सो अलग-प्रलग खातेदारों से लेंगे। यांच कहेगा कि हमाया यह गांव तो एक हो गया है। बाव लगान देने को तैयार है, तेना हो तो से सी-नहीं तो अपने पर जाग्री। इस बीनान का मतलब मेरी राज में होना-क्रमजा, सम्पर्त नित्तीवाजी भानते हैं कि ऐसी स्थित में सत्याग्रह करता थड सकता है। में प्रतम पत्यावतों को सरकारी मान्यता दिलाने के निनाक इसनिए हैं कि मान्यता पाने वाली ग्रामसभा पत्यावत जेंसी हो जाएगी, पत्थावत जेंसी ही नया बातून के प्रत्यांत बनने वाली पत्यावत ही हो जाएगी। बिनोबाजी को जाससभा को कार्यूनी स्थित हो आहे में प्रीर उचके कार्यूनी याम पत्यावत हो बत जाने में प्रीर किर सरकार की सहायता ले लेने से भी प्रापत्ति नहीं है।

१४ — पचायत सगठन की सहज कमजोरी और जुताब के कारए। होने वाली प्रतीम हानि को जानते हुए भी थेरा कहना यह है कि प्रामदानी गायों के निवासियों को भी पचायती जुनावों का वहिलार नहीं करना जाहिए। मैं समफा कि विनोवाजी समयत. इसमें सहकत होंगे । पचायत भी एक हिल्यार है, विस्का वृद्धिमानी के साथ बच्छा उपयोग गाव को मनाई के निए किया जा सकता है। स्वाचीन ग्राममामां के सगठन से प्राम पचायतों के निर्विष्टेष जुनाव में बहुत मदद मिलंगी और पूरा निविष्टेष जुनाव नहीं होगा तब भी निविद्धेष जुनाव में बहुत मदद मिलंगी और प्राप्त विद्याय जात नहीं होगा तब भी निविद्धेष जाता के विद्ध कीन जाना चाहता है और वह ऐसी हरकत वंगो करता है, किसके सामूहिक भावना के विद्ध कीन जाना चाहता है और वह ऐसी हरकत वंगो करता है, किसके सामूहिक भावना के विद्ध कीन जाना चाहता है और वह ऐसी हरकत वंगो करता है, किसके सामूहिक भावना के विद्ध कीन सामा पर विज्ञान प्राप्त को भूठ, वैद्यानी, अप्याचार पर न हो, पर भीतर ही भीतर योजना वनाती है कि फ्लायतों के पुराकता विद्या हो प्राप्त की हिष्या से ताकि प्रामानीस्थों के निविद्य कार से प्रयेश कर उनके 'प्राप्तनी' प्राप्त ने विद्या से ताकि प्रामानीस्थों के निविद्या कार प्रयोग प्राप्त प्राप्त विद्या को ताकि प्रामानीस्थों के निविद्या कारविद्या साम प्राप्त प्राप्त मान विद्या से ताकि प्रामानीस्थों के निविद्या कारविद्या प्राप्त प्राप्त मान प्राप्त की स्वर्य के ताकि प्रामानीस्थों के निविद्या कारविद्या से प्राप्त प्राप्त मान विद्या के निवास मान प्राप्त की साम प्राप्त की स्वर्य के ताकि प्रामानीस्थों के निवास कारविद्या कारविद्या की स्वर्य के ती साम प्राप्त की साम प्राप्त की स्वर्य के ती साम प्राप्त की साम प्राप्त की साम प्राप्त की साम प्राप्त की स्वर्य के निवास की साम प्राप्त की साम प्रा

१५ — उपरितिश्वित व्यावहारिक वातो के धलावा विलोबाजी हे बोच-बीच में सिद्धान्त चर्चा भी काफी हो नयी। बाता ने क्रिया धीर कमें का भेद बनाया जिसे समम्भे में में ने कोणिश की है। बाता कहते हैं कि ज्यो-ज्यो प्रधिकारों व्यक्ति की क्रिया का होती आएगी। उदाहरए के लिए सभा में पुनित्त वाता करते हैं जो तो स्थापिक करने की कोशिश्व करता है, दूसरा धादमी सपीज करके करता है, तीसरा धपना भाषण जुरू करके बाति लाना चाहता है धीर चौया (समर्थ व्यक्ति) प्लेटकार्म पर धानर चूपचाथ खड़ा हो बाता है धीर राभा में साति हो जाती है। दूसरे में ने बाता से कहते कि करी बात की कि एक हमें उनती लान चाहता है धीर स्थाप के साति हो जाती है। दूसरे में ने बाता से कर खा ले, धानर को हम से से सात में तो तो तो एक एक से से ताति हो। सात में से सात के हम से सात में से सात की से सात मूर्य की जा सकती है। बाता को मैंने मुक्ताया कि साप जी सातों के लिए यह स्थिति ठीक हो। सकती है, पर हम की व्यवहारिक कार्यकर्ताओं को देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के से देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के सात से वहनी है। सर हम की व्यवहारिक कार्यकरताओं को देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के से देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के सात से वहनी है। सर हम की व्यवहारिक कार्यकर्ताओं को देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के से देखते दहना पृथा कि हमारे कार्यकरताों के सात से वहनी है। बात की से सात से स्वावहारिक कार्यकरताों के स्वावहारिक कार्यकरता कार्यकरता करता हमें कि सात कार्यकरता करता है।

वार्तालाप विवरण [ ११०

१६ — बिहार बगाल की पदयात्रा में मैने विनोबाजी में बहुत कुछ सुना सीर उसे समभने, पचाने की कोशिश की । फिर सैने पुरी में बाबा से कहा कि आप सुभे एक जिले का काम सभातने लायक मानते हो तो छाप जिले के लिए अपना आदर्श कार्यक्रम बोल जामी. मैं उसे लिख जुगा। वाबा ने कहा-भाष ही अपना लिख लो। मैंने वाबा से कह दिया कि मेरी जब की लिख लेने की स्थिति हो जाएगी तब मैं आपके पास आकर बात करू गा। मैं बीच के समय में विनोबाजों से नवडीप में भी मिला था। पर ग्रसल मे १४० १५ सालो के बाद में अभी बाबा के पास पहुँचा हूँ। बहुतसी बाते साफ हो गयी। पर कार्यकताओं की कमी और उनके गुजारे की मुश्किल के विषय की बेरी खटक धभी नहीं निकली है। मेरे यह भी जमी हुई है कि वाहर की और ऊपर की सहायता जैसे ग्रामवासी को पग और भिक्षक जैसा, वैसे ही कार्यकर्ता को दीन भीर हीन भावना वाला बना देने वाली भीर कानूनी शिक्ज में बाममभा का गला चुट जाने वाला है। जब मैने कहा कि 'वेलफेयर स्टेट" की बात रही होती है तो वे बोले-"वलफेयर स्टेट" "इलफेयर स्टेट" और "इलफेपर स्टेट" "वस्टे फेयर स्टेट" होती है। बाबा कही बीच मे बोल गये कि हम प्रहिसक होते तो रुपया पैसा लटकर भी ला सकते थे। मैं सोचता ही रह गया कि न जाने हमारी प्रहिंसा की या शांति की मर्जादा कव ट्रंट जाए। मूक्त जैसे के लिए प्रहिंसा के सुक्ष्म तस्व को जीवन के व्यवहार में पक्का उतारना कभी सभव हो या न हो, पर मुक्ते भरोसा है कि स्वदेश भारत की प्रतिभा हम शांति की उचित मर्यादा में बने रखने हए हमारी रक्षा करती रहेगी ।

उपभाग ?

पत्र व्यवहार

: 8:

: ४ :

# पत्र व्यवहार

# हीरालाल शास्त्री का पत्र महात्मा गांधी की सेवा में

#### १३-५-४२

भेरे पास श्री किलोरलाल भाई के द्वारा काएक। उपलब्ध स्थाय या जिसका माफी-नाम मैंने उन्हों के पास लिख नेवा था सो धापके देवने मे सा यया होता ? श्री सोहनलालवी दुना के यहा का विवाह ११ मई को हो यया। विज रोशियों को थानिक सममा जाता है उनके सिक्स मेरी जानकरों ये सौर रिट्यों का पालन प्राय- नहीं दिला गया। कन्या ने पर्दों नहीं किया। वरकत्यां के कपड़े सादी के नहीं थे। फतहपुर बाने पर मुन्ने मालूम हुया कि दर कन्या की विन्तुल सही उस का पता थीनोहनलालवी को भी नहीं था। मुन्ने कन्या पक्ष के लोगों ने कन्या का जन्म सापाइ क्रप्या १२ सठ १८८५ का बताया है। यह बात सही हो तो कन्या की उन्न १४ वर्ष से १-- पहींना कम होती है। खड़का देवने मे स्वस्य श्रीर वगड़ा मालूम होता है। उसकी उन्न १७ वर्ष या उससे कम हो तब भी वह देवने मे १२२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

तो १८-२० माल का सा लगता है। लेकिन में मानता है कि लड़की का विवाह कम से कम दो साल ठहर कर होता तो अच्छा रहता और लडके के हक मे भी अच्छा होता. यदि उसका विवाह एकाथ साल एक सकता। मैने ग्रपन पत्र में यह लिखा या कि ''ऐसे धनिक के घर में ऐसा विवाह होना राजस्थान के लिए अभूतपूर्व घटना होगी।" वरकन्या की उम्र कुछ कम होने का दोप होने हुए भी यह विवाह वास्तव में एक अभूनपूर्व घटना माना जा सकता है। श्री सोहनतालजो ने इस भामने में बंडा साहम दिखाया है और कन्या पक्ष के लोगों ने भी कई कठिनाइयो के बावजूद उनके माथ अच्छा यहयोग किया है। श्री मोहनलालजी ने २२,०००/- हजार के दान की घोषला की । बाहर से जो थोड़े से लोग प्रायं उन्होंने साधारण भोजन अवश्य किया, बाकी किसी तरह की जीमनदार में एक पाई भी खर्च नहीं की गयी। इन मारी बातो पर ये में यह नहीं कह रहा है कि वर-कन्या की उन्न का पता लगाये बिना ही मैंने ग्रापको लिखा उसमे मेरी तरफ से कोई गलती नही हुई। मैं ग्रपनी गलती मन्त बुका है ग्रीर उसके लिए माफी चाह चुका है। भाई लादूरामजी भी ग्रपनी गलती सहसूस करते हैं और वे भी माफी चाहने हैं। लादूरामबी ने मुक्तने आकर कहा और मैंने उमग में ग्राकर ग्रापको लिख दिया। ग्रब मैं मोचना है कि मैं ग्रापको न लिखता तो ग्रच्छा रहता । खुद मोहनलालजी ही ग्रापको लिखते ग्रीर उन्ही के पास सीघा ग्रापका उत्तर जला क्राता नो मै इस प्रकार बीच मे नहीं फॉमता ग्रीर न सोहनलाल जी को प्रस्थाया मोचने का मौका मिलता। खैर, जो कुछ भी होना या सो हो गया। मुभे इस बात का सनोप है कि मैने जो बुछ किया वह भीचे सरल भाव में किया । सीहनरालजी भी सीचे सच्चे ग्रादमी है। हम दोनों ने वस्तुस्थिति को सबके सामने साफ कर दिया। ग्रापका ग्राणीवींद पत्र न वहा पढ़ा गया और न सोहनलालजी को दिया यया। ग्रीर तरह से जो ग्रन्छा विवाह हुआ उसमें उस्र मम्बन्धी जो कमी रही वह माफ तौर से प्रकट करदी गयी। मेर मतोप के -लिए यदि प्राप दो शब्द लिख भेज सके तो प्रच्छा ही है। ग्रायन्दा ऐसे मामलों में मैं ज्यादा सावधानी एख गा।

# महात्मा गांधी का उत्तर हीरालाल शास्त्रीके नाम

28-4-82

इतना परिताप बनावस्थक है। हम सावचान रहे। भूल तो सब से होती है। सोहनसालजी अच्छे तो हैं ही।

नोट — गाँधीजों के हाथ से तिसे हुए कई एक पनो और कुछ ग्रन्थ टिप्पािएयों का पुतिन्दा मेरी दिल्ली यात्रा में एक तामें में रह गया था सो खुद तलाझ करते पर भी नहीं मिला। मेरे जीवन में यह मध्यन्त दु खदाबी घटना हुई जिस्ने में कभी नहीं भून सकता। आप सप्रेवी का प्रश्न का सर्य जरुर किसी न किसी से मुन लीजिए—भूत सप्रेजी जैसा मजा तो नहीं साऐगा, पर काम चल जाएगा । अप्रेजी पत्रों में आपको मेरे सवर्ष का नम्मक् दर्गन होगा ।

नमें कार्यक्रम के लिए रुपमा मेरे पास नहीं है। र जस्वान के वाहर न किमी से मागना, न स्वीकार करता। राजस्वान के मीतर विजा मार्च प्रान्त जाम तो ले लेता।

#### होरालाल शास्त्री का पत्र थी सीताराम सेकमरिया के नाम

3-2-69

मानका २६-१-७१ का पत्र मुक्ते कल यहाँ पर मिला।

रुपर मागते समय में कभी किसी ने दब पया हुँगा, यह मुक्ते बाद नहीं है। जिने मान भग कह सकते है ऐसा भी इतने तबे समय मे बीर देश भर ये दो चार से ज्यादा मौकों पर नहीं हुमा होगा। मन में किसी ने कुछ भी सोचा होगा, मेरे पीठ पीछे कुछ भी कह दिया होगा सो मेरे सामने कभी प्रराक्ष हुमा नहीं है। प्राप अवर कभी कभी कुछ, न हुछ तिछ वैते हैं जिनमें नगना है कि कोई न कोई व्यक्ति आपके सामने कुछ, न हुछ, कह देते होंगे। मागने भी मुमको यह बात कभी साफ शब्दों में बतायी नहीं है, न मैं वे ही प्रापंस पूछने की कभी साफ किन की है। मान सप्तान के सामने से सेश चिनन यह है

> चाहे नही नाम न मान चाहे, ऐसे जनों का अपमान नमा हो ? सर्वेस्व की आहुति दे चुके हो, ऐसेन की शौकत शान क्या हो ?

में कोई मपनी कम शान रखने वाला नहीं है, पर जब घुमें मेरा जर्ज पन जाता है हों मैं गाँरी आन को हाक में रख देशा है। पर सामने बात के दर्प के सामने मुख्ते धपने जीवन में एक वार भी मुंका हुया याद नहीं है। मैंन वच्चा मांगवना मान प्रमान के कारण वन्द नहीं दिया है, दर्शविष जिया है कि राज्यमता के साम-साथ चुक्ते पनसत्ता से भी उपर उट जाना है। कच-परक्षों मैंने एक नवा पद निखा है सो इस प्रकार है:—

> सवल है दबते कवहूँ नही, अंडिंग है चिकते कवहूँ नही। निडर है डरते कवहूँ नही, कठिंग है झुकते कवहूँ नही।।

फदुड़ पंच चलने वाला नहीं है, यह सबक तो मैं कभी का मोख चुका हू। जिनकी मैं फड़ड बनाना चाहता या वे भेरे "मुस्पीर" निकले उनके मुकाबले में मैं वेवकूफ ताबित हुआ। मैंने प्रत्यक्षत्रीयनशास्त्र में लिखा है कि मैं अपनी गिनती 'मूर्खों में करता हू। माजकल मेरा ध्यान यह है—

> चले न कोई चल एकला रे, जले न कोई जल एकला रे। करे न कोई कर एकला रे, मरे न कोई मर एकला रे।।

मेरी एक खास बात यह है कि मुक्ते जो कुछ ठोक ग्रीर जरूरी लगता है मैं बही करने लगता है। नाप ठील करने की भावत मेरी नहीं है। इसलिए मेरे सामने जोखिम का मबाल ही पैदा नहीं होगा है। हालांक में जानता हूं कि मैं तो एही से चौटी तक जोखिम मे फैसा पड़ा हूँ। इसमें जीवनकुटीर, बनस्वनी विद्यापीठ, राजनीति, रुपया पैसा, किसी से बिगाड ही जाना भादि सभी कुछ सामिल है। बनस्वसी की और जिकायतन की स्थिति में बहुत फर्क है, यह इस सबको नहीं सुनल है। बनस्वसी की और जिकायतन की स्थिति में बहुत फर्क है, यह इस सबको नहीं सुनल नाहिए। मैं भावन वहें सहायक "मित्री" का महारा हुटने के समय एक बान पड़बाग पान, फिर बहु चुनीती मुक्ते भपने भाष स्वीकार हो गयी भीर भगवनी ने मेरी लाज, आन, बान बान रख दी।

जिस राज से बगान की, कनकते की यह हानत हो रही है उस राज का बिरोध करना मेरा फर्ज है। हिमानव की चीटी से कोई अपनी (बोलती) विचारधारा का हरता मने ही करे, पर जब में किमी की मूठ, वेईमानी से गर्क समझू तो मुफे मच्ची बात कहती ही पढ़ेगी। पिछले सालों में मैं ने राग हैय से ऊपर उठने की कोशिषण जहर की है, मीर सपता है कि मुफे कुछ कामयादी भी बायद हुई है। बहरान किसी का म्रनिस्ट मैं नहीं चाहता हैं। इस देण में किसी को दोषी को दण्ड कभी मिनता ही नहीं है, पर स्वाय में कभी दोपी को दण्ड मिन ही नहीं है। स्वाय से ब्राने क्यों हो।

''हम तो उनमें है-' बज़ादिष कठोरािंग मुद्दान कुत्रधादिष ।'' भेरे विरोधी भी मेरी प्रशासा ही करें, इसके लिए मैं कुछ कोशिष्ठ वो गहीं कर सकता । बाबीजो तक के भी ऐमे फितने ही विरोधी थे जिन्होंने उनकी प्रशास न करके धोर और प्रजुवित निन्दा की । तब मेरी क्या विसात है-भेरे पास कहा है वह प्राह्मित ? सत्य बच्छी मात्रा मे है, पर बहु कठिन कठोर सत्य है जिसे न में हिंगा शंकता, न देवा सकता व में उसके रूप को मीठा कर सकता। मेरी पाती में यह उपदेश कस ही आ सका है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रुयात् सत्यमप्रिय् । पुनस्य में भगवान को लसकार सकता हूँ और अपने ब्राएको में मृत्युजय मानता हूँ। पर दूसरों के लिए, बाई तक के लिए में मृत्यु को कैसे ललकारूँ? हालांकि में शान्ता के गामले में गांचका ह-

## मौन जिसको कह रहे वह जिन्दगी का नाम है

प्राप क्या किसी को भी धपने मन की पककी बात सेरे लिखने से नही द्या सकती। में जो भी कुछ लिखता हैं को उड़ान में लिख जाता हैं।

### होरालाल शास्त्री का पत्र श्री सीताराम सेकसरिया के नाम

#### वनस्थली, १-५-७३

पुमणे 'हार्ट धटैक-हार्ट केल्योर' हुआ उसके पहले तो मैं बहुत बेपरवाह था। पर इतनी चीट ला तेने के बाद मैं बेहद बागते से रह रहा हैं। = मार्च, १६७३ को बेडिया में बंडिया गिर्मोट थी मेरे हार्ट की, सेरे गिर्मेट की। वॉडर में मुफ्को निश्चित कर दिया था। उसके बाद १२ मार्च को ही मेरे हर्कि ती पड़ब्द हुई, उसके धापार पर ही डॉक्टर ने मुक्को केल कर दिया। पड़ब्द बहुन हर्को ती है, यह मुक्को ख़तुमद हुआ और डॉक्टर ने कार्डियोग्राम प्राप्ति की जरूरत नहीं समभी धीर धुम्मे विस्तर पर लिटाया नहीं, घनना किरता वाद कहीं किया। मिर्फ उपायाम के लिए बाहुर चूमने बाता वाद किया, जिसका मत-लब हुआ पर के ओठर नवरवन्द होना। इसिलए ती आपको पायो के विष्त पार के विर पता नहीं काला कि हार्ट को क्व विक्र काराया से वह पता नहीं काला हिस्स हो केले के विक्र काराया से वाह राज हो वाह वाह से के के विक्र काराया से वाह राज हो काला हो बार के बाह के काला के काला के से से हर हो हो है।

श्रीमानी सा स्वभाव होने हुए भी श्रपन अपने की कुछ लास मानते नहीं है। इस सारे में एक नेख जिसने बाला हूँ जो प्रत्यक्षत्रीवनमास्त्र (भाग २) में छुना। कुछ स्थात है, हुद साहत है, जुछ परिश्रम है. हुछ सन्वर्षाई है, जुछ श्राट्यविश्वाम है-बाली प्राप्त पास जुछ शंका भी भुम्नाने नहीं दिलायी देता। यह ठींक है, मैं पदा पड़ा भी भीडा बहुत काम तो कर ही सकता हूँ। फिर भी यह तो महसूम होता हो है कि भी दौड-सूप करने के स्थाय नहीं रहा। दूसरे यदि राजवी का स्वास्थ्य मी ठींक होता तो ज्यादा परबाह की यात नहीं राष्ट्रम के पाम एक वरावर का मदस्यार हो तो बहुत कुछ महारा साथ आए। मुखाकर पहले जितना स्वस्त होता तो भी ठींक होता। मुखीला, कमला, बहु को बाहर मही भेना जा मकता।

## थी सीताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

कलकता, ११-६-७१

ग्रापका २१ ४-७१ का पत्र मिला । मेरे पैर में बोडी बहुत कसर है । वह श्राहिस्ते ग्राहिस्ते ठोक होगी !

हमने कोई जह नहीं हि रतनजी का और धायका साथ रहना या होना एक दूसरे के निए एक प्रकार से जांकि देना है। एक को एक का वस मिनता है। पर यात्राएँ तो प्राप विशेष करके रतनजी के बिना ही करते रहें हैं। रतनजी के तम में प्राप साथ जाए तो फिर प्रधान साथ ही रहे, इसविए अब तो रतनबी और स्थान सादि को ही इन काम को सम्मानता पाहिए। वनस्थान के जीवच्य के निए भी यह प्रस्का है।

बनस्वली के काम के बारे ये खायने जो लिला बहु मैं भी मानता हूँ। धापने मिस दिन बिमटा गाड़ा था उसी दिन इस सिद्ध सूर्य में सिद्ध वर्षी थी और बहु मिद्ध सहा जावता है। धाप है मिद्ध सहा जावता रहेंगी और खपना काम करती रहेंगी, यह मेरा विक्वाम है। धाप हम न रहेंगे उस दिन भी यह प्रपने आप में किक अपन करते छपना काम करती रहेंगी। पर एक व तक हम लोग हैं तब तक इसकी बिन्ता करना और इसके लिए लोबना स्वामाधिक है और करांध्य भी। धाप में अजीव तरह के मिश्रण है और वे कुछ कम यधिक बायद सभी में रहते हैं। पर कुत मिलाकर आप एक ऐसे अजीव खायती हैं, विसको पूरा पूरा बाहर के लोग नहीं मम अनने। धायदी धुन को मैं जावता हैं। और लोग भी आजते हीं कि शायद उनके बाद सबसे प्रपिक में अपनता हैं। और लोग भी आजते हैं कि शायद उनके बाद सबसे प्रपिक मैं जानता हैं। जो भी हो मेरी यह मान्यता है कि धायका जीवन सकत जीवन है और प्रापने जीवन से बहुन बड़े बड़े काम किये हैं। उनका पता कित कित को दिसता क्या रहेगा मानूम नहीं, पर वनस्थली पुकार पुकार कर हर आवश्यों में नहेंगी कि एक ऐसा स्वामी यहीं प्रापा था जिवने एक प्रेरणा वे सब कुछ कर दिया विजकता नमूना मैं मपने प्राप ही हैं।

बनस्थली ना सारा परिवार सकुणल होगा। में ६४ की साल प्राया था, जब जबाइसासजी आये थे। इनने दिनों में लो बहुत परिवंत हो गये हैं: छोटे थे थे वह हो गये हैं, बहुत छोटे वच्चे थे थे पढ़ने लिखने सग मये हैं। हा एक बात बाद आयो जो ना गये हैं, बहुत छोटे वच्चे थे थे पढ़ने लिखने सग मये हैं। हा एक बात बाद आयो जो ना पाच दिन पहने मैंने एक आदमी से कही थी। उसके परिवार से खिला पर खबाई तीन हआर रच्या महोना सर्चा होता है। एक वडके ने मुस्किल में बी० ए० पास किया है। कोई मेंदृक में फैल है, कोई किसमे। पढ़ा सिखा प्रायमी आयद एक भी है ऐसा नहीं कहा जा सहता। उस माई से मैंने कहा कि आस्त्रीओं का परिवार है जिसमें सडकैन्सड़की बहुनेचेंद्र। होटे-बडे सभी बी.ए, एम.ए. है, बी०एड, एम० एड, हैं थीर खर्चा तो से जितना करते हैं काएका क्रिया का दार्ची हम महीने का है उतना ता उस परिवार का सर सोरों मों एम०ए०

पास करान में लबा होगा । आपके पास शिक्षा का क्या काम आपके पास तो पैसा है और पैसे ने प्राप सब कुछ सरीदता चाहुते हैं । आिक्षा पैसो से सरीदी नहीं जा सकती । उसके तिए सन्कार चाहिए, वातावरण चाहिए और खिक्षित होने की यहरी इच्छा होनी चाहिए ।

#### क्षी सीताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

२०-१२-७२

स्रायका १६-१२-७२ का यत्र सिन्ता । स्रायको सस्ती कस नही हुई है, झीर मैंने यह गलत समभा है, तो बहुत लुशी को बात है। साथ साकाश ये उडने वाले भादमी हैं, बहुत कम पृथ्वी पर पैर टेकते हैं, यह मादके लिए खोमा की बात है। साकाश में विचारते हुए भी स्राय-भागे जीवत में इस पृथ्वी पर जितनी रचनाए कर डाली है वे नया कम हैं? मुक्ते माजकल ऐमा नगने लगा है कि इच्छा सन्तिच्छा हमें सब ज्ञान्त भाव में बिना हुछ वडी इलवल किए बन जाए उसी से सन्तीय करना चाहिए।

डाँ. प्रफुल्लचन्द्र घोष का २४ तारील को जन्म दिन है। उस दिन भाषकी भीर से उनको २२ रुपये की कोई चीज अेट व्यवस्प दंदुँगा। प्रापका पत्र उनको मिल गया है।

#### श्री सीताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

कलकत्ता, ७-७-७३

प्रापका २०-६ का पत्र कल मिला। ४-५ के पत्र का उत्तर नहीं दिया जा सका। १४-६ के पत्र में आपने मुमनेशजी द्वारा लिखित स्वननता खवान में राजस्थान के लोगों का बिल्डान इस नाम के प्रय का जिल्लाम लागे किया या पीने सोवा या कि प्रय मिलने पर मिल्ला। इसके बाद प्राप का उनमोचन और धापको समर्पेक्ष करने की उत्तर का रिपोर्ट राजस्थान के पत्रों में पढ़ी। प्राप्य से स्पर्य काफी सर्व हो त्ये होंगे आजनक कामक स्वर्थ हो स्वर्ध सामित स्वर्थ के स्वर्थ काफी सर्व हो स्वर्ध माजनक कामक स्वर्थ हो स्वर्ध सामित सभी लीज सहाथ है। यून्य विकल्य स्वर्थ वा जाय तो बदी बात होगी।

कल मार्ड मामीरणवी के पान बागरा थाया हुया पत्र पढा और सब स्थित तो जी है सी है और नब ठीन ही होगा। नबसे बड़ी बाव है कि बापका न्यस्थ्य ठीक रहे। यह में अच्छी प्रकार बानता है कि बाप बहादुर बादयी है और बाप से एक प्रकार का फरीराना जा भी है और बाप वहे बढ़े निक्य भी करते है। यह नब होते हुए भी वह स्वीकार करना चाहिए कि बाद हम नीग उम्र में काफी बड़े हो बाद है। इच्छा धानिच्छा काम बिगड़े वा सुपरे ग्रेप जिम्मेवारी पीछे के नीगों पर ही रहेगी। रतनजी पर तो बोम है मो है ही पर अपने को मोमें बाम बोम अधाम और मुखीना पर ही समस्ता चाहिए। घेप तो वनस्थती का माथ्य बहुन बनवान है वह अपना काम किसी न किसी से किसी न किसी रप ने करा ही बेगा।

# श्री सीताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

फलकत्ताः, १६-७-७३

भाषका १७-७ का पत्र समय पर मिल गया था और इसके बाद उसके दूसरे तीसरे दिन हो "राजस्थान में स्वतंत्रता सम्राम के सेनानी" बन्ध भी मिला। ग्रन्थ को सरसरी निगाह से देखा । ठीक ही है जिनमें जो बनता है वह करते हैं । सब काम सम्पूर्ण रूप में ठीक मी नहीं हो होते जिससे जो बन सकता है वे उतना करते हैं। आपने लिखा कि अपने यहा सार्वजनिक क्षेत्र, बहुत कम लोग प्रमास्थिक होते हैं। ग्रीर ग्रपन ठहरे भने ग्रीर उदार। इस बात को मैं पहले से ही जानता था और उसका परिस्थाय यह है कि इतनी बड़ी जिम्मेवारी ग्रापने ले सी ग्रीर भले भी नही कहनायेंगे ग्रीर सन्वन्य भी सायद ग्रच्छे न रहे। ऐसे लोग प्रदेशवहारिक ही नहीं होते और भी बहत सी बाने होती है ऐसी वार्ते प्रपने में तो बीतनी ही रहती है। मुक्ते भी दो तीन वन्यन इसी प्रकार के लगे हुये हैं उनके अभट चलते रहेगे धीर नये भी बा ही जाते हैं कारण वात सामने बाने पर मन कहता है कि यह काम प्रपने को करना ही चाहिए। परिशामस्वरूप यह जिम्मेवारिया हा जाती है। शापकी जैसी वहाइरी उदारता तो मुक्त में नहीं है क्योंकि स्नाप बाह्मए। है और मैंने शेप में जन्म तो बनिये के घर हो लिया है न ? एक बार बापूजी ने बात करते हुए कहा या कि काका ठगा जाय इसमे कोई वडी बात नहीं क्योंकि वह ब्राह्मण है मैं नहीं ठगाना चाहता क्योंकि मैं बनिया है। एक बान ग्रीर याद मा गई सरला देवी चौधरानी ने एक दिन मुक्तमे पुछा कि सीतारामजी धाप किस जाति के हैं मैने कहा 'बैश्य'। उन्होंने कहा कि बाप बनिय जैसे लगते तो नही है। ब्राइटिन से, स्वभाव से, व्यवहार से, बातचीत में तो। मैंने कहा कि जो भी हो जन्मा सो वितये के घर ही हैं। मूके भी विनिवापन अच्छा नहीं लगता। क्मलनयन ने एक बार विनये की व्याल्या की थी। व्याल्या शायद वडी थी पर मुझे एक बात याद है जसने कहा था धनावें सो वनिया। खैर यह सब वाने नो है धपने स्थान पर धपनी तो इतनी ही बात है कि जो कुछ प्रच्या लगे सही लगे जिममे मनका भला हो वह करने की कोशिया करते रहे।

षाप इतनी भावधानी रखते है नियमों से बंधे चलते हैं यह अच्छी बात है। प्राप स्वस्त रह भीर मन में भी काम करने गई वह भी क्या कम है एक बात और याद प्रा गई हम कोम इताहगद बंद, काका साहब में वे महादेवीओं ने हम लोगों को बुलाया था। हुछ होगा काल हाताहगद बंद, काका साहब के प्राम धाये वातधीत के मिमिमिल में कहने लगे कि महादेवी विधारीठ में कुछ करती तो है मही बंदी रहती है। काका साहब ने उनसे कहा कि क्या उपका बंदर रहता कम है उनका बैठा रहता ही बहुत काम करता है वो कई सोम बहुत करके भी नहीं कर महते वे चुर हो गये। मैंने भी मीचा कि बात ठीक है। पूज्य गुरुवेव का बातिनिकेतन में बंदे रहता, वापूजी का नेवासाम में बैठे रहता, वापूजी का नेवासाम है उन्हों महार मुक्त स्वाया का स्वत्य है कि धाम दुख करें या न कर दमसभाने के निए सामकी उपस्थिति अधिक से स्विक महत्वपूर्ण है भीर उत्तक्त मूल्याकत नहीं किया वा सकता न उनका हिसाब स्वाया वा सकता है। में यह सामता हूं

१३० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

कि ब्राप वनस्थनी के निए बहुत चिन्तित हैं ब्रीर यह होना स्वामाविक है। एक वात फिर माद मा गई । गाधीओ गुरदेव से मिलने के लिये गये गास्तिनिकेतन । यह उनकी ग्रस्तिम भेंट थी उसके कुछ ही दिनों बाद ग्रहदेव चल बमें । गुरुदेव ने एक पत्र प्रपते सेकेंटरी के हाथ बापजी को बोलपर स्टेमन फेजा। इस पत्र को लेकर नाना तरह की ग्रटकरों लगाई गई ग्रीर पत्रों में उन ग्रहकलो का काफी जिक गाया । वे ग्रहकले राजनैतिक थी पर वे सब गलत थी । ग्रदेव ने विज्वभारनी के लिये जिला या कि आप इसे समाने और अपनी बनाले शायद ऐसा सा ही । गुन्देव चपने बेटे रबीबाबू या चन्य चपनी मस्पनि जमीदारी या श्रीर कछ हिमी के लिए चिन्तित नहीं ये, चिन्तित ये नो विश्वभारनी के लिये। यह स्वामाविक है जिन्होंने जिस चीज को जन्म दिया है उसके पालन-पोपण्, उन्नच होने और मुरक्षित रहने की भावना सबसे ज्यादा उनके होनी है क्योंकि उन्होंने उसके लिए तप किया है ऐसी ही बात बनस्थली के लिए बापकी है। इसरे कोई भी ऐसे बापको कहा से जिल सकते हैं ? ब्रापने लिला जो जितना माथी है, मित्र है घर का है जमको उनना ही हाथ बटाना चाहिए, बात सरप है पर प्राप्ति का नार जो जितका नजदीक है उसके उतका लगता है जितना दर है उतना ताप कम होता है, इसलिए बनस्यली की धरिनशिखा हरदम जलती रहेगी कभी दुभीगी नहीं, जिससे जो बनेगा वो उसमें आहित डालता रहेगा ग्राप तो उसमें एक रूप ही इन गये हैं, दूसरे समिया है। रतनजी, मशीला, श्याम खादि घर के सब लोग उसमे हैं ही वे भी इस घनुष्ठान के प्रग ही नहीं होता ही है। मैं अपनी क्या कह मैं बास्तर में उसका जो बनना चारना था वह बन नहीं पाया । परिस्थिनिया ऐसी ही रही । इसनिए यह अनुप्तान यह यज चलता रहे । इसकी सुगन्ध ग्रीर धुवें ने लीय पवित्र होते रहे । वातावरण में ग्रुह्नता फैलती रहे यह कामना मन मे, प्रात्म में बृद्धि मे, विचार में हरदम चलनी रहनी है। दर्शक तो नहीं है और न दर्ग के रहना चाहना है पर कोई विशेष है यह भी कैसे कह ?

## श्री सीताराम सेकसरिया का पत्र होरालाल शास्त्री के नाम

कलकता, १६-६-७३

धानंक पत्र के दूसरे ही दिन प्रत्यक्षंत्रीवनवास्त्र (भाग २) का परिणिष्ट "सपना मून्याकन, प्रानी कना के" यिन गवा। एक मान ये पड गवा। हम सोग जो वार्त करते हैं और साप जो कहा करते हैं वह उसमें बहुन सच्चाई के माच दिना गवा है। प्रत्यक्षत्रीचन-वास्त्र भी एक प्रकार में नेसी सच्चाई के धाधार पर निस्ता गवा है। यह बहुन प्रच्छा हुया कि साप अपने मन की बातों को, विचारों को, कायों को, येर जीवन को सित तरह जिये देसा किया बसभा वैया प्रवट कर को भीर यह पुष्पक रूप से मबके सामने रख कि । सोत क्या समभी बना कहें इनका बहुन बचा मूहन है मुख्य बात तो सपने धानकी है।

# हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री भागीरथ कानोडिया के नाम

98-2-97

ग्रशोक ने मुक्ते बताया है कि ग्राय दोनो दिन दसेक हुए किशनगढ पहुँच गये थे। सीतारामत्री ने भी मुक्तको लिखा या कि ग्राय किशनगढ़ में काफी नमय तक रहने वाले हैं।

में डोक हो गया हूँ। खतरा जोर का या, पर उससे मैं वच निकता । कमजोरी तो सभी है सो समय लेगी। सचेरे हैं मैं मंत्र, बामको १ रै मील पूप नेता है, जो कुछ मिलता है वही खाकर सतोप मान नेना पडता है, इसलिए बजन नहीं बढ़ रहन है। योड़ा बहुत काम भी कर ही लेता हैं। पाच्या मानेना पूरा होने होते सायद पुस्त के सिक्त काम ने मोड़ा कर होते होते सायद पुस्त के सिक्त कि स्वित बहुत ही नाइक हो रही है। सबेने बयान न्युवाकर नितता क्या कर खेंग ? दोनों माइयां को, सुमीला को भी बारी-वागी में रतनजी के सौर मेरे साथ जाना पड़ेया। साखिर सब कुछ सुमीला को भी बारी-वागी में रतनजी के सौर मेरे साथ जाना पड़ेया। साखिर सब कुछ सुम्हा होता, इस विश्वाम पर मैं सास वे रहा हैं।

हलवासिया दूस्ट का तकाजा धाया था। स्वाम ने उनकी लिख दिया वा कि अगती जुनाई कि मकान वन जाने की धामा की जा सकती है। नाम उद्बोधन केन्द्र के बजाए उद्बोधन मन्दिर मुभाया था जिने मान तिया गया है। स्थाप ने यह भी लिख दिया था कि बादकास्टिंग का काम किमी हुसने मकान ये जुरू करने की भी सीच रहे है। इम सन्वन्ध में दूस्ट की और से लिला धाया है कि धाय राजस्थान में ही हैं सो धापसे राय से ली आए। प्रापका इथर धाना होगा नव देख लेंगे।

ग्रपना विचार एक घतिल भारत शिल्प-कला-उद्योग प्रदर्गनी का है जिसके लिए गवर्नर, मुख्यमंत्री ध्रादि संस्थाक वन रहे हैं। धावको कमेटी की प्रध्यक्षता सम्भावनी है। साम वदा है. इसलिए तब्यारी में समय लंगा।

बरसाद न होने ने बडी जिन्ता हो रही थी। अपने यहा की सेनी कुछ बड़े पैमाने पर शुरू की हैं। भरिया वाले अर्जुनवालकी छेजी के काम में कई प्रकार की सदद करना चाह रहे हैं।

जो कुछ प्रपने से हो सकेगा मो तो मधी कुछ वरेंगे। बाकी धवकी बार स्थिति को सम्मानते-माम्भानते भी एक सान तो लग दाएगा। धवना बात्मविश्वास पटल बना हुया है, यही सबसे बड़ा सहारा है।

## होरालाल शास्त्री का पत्र श्री भागोरथ कानोड़िया के नाम

वनस्थली, ११-७-७३

स्थित बहुत विकट बनी हुई है, फिर भी विक्वाम यह है कि सालेक भर में उस पर काबू पा तिया जाएता। मेंने १९७१ के मध्य भेवा उसने भी कुछ पहने में सीवता शुरू कर दिवा था कि नतस्थली की स्थिनि को ठीकठाक करके १९७२ के मध्य तक प्रपत्नी दौडवूप करता वंद कर दू गा। पर मुक्त पर तो भाजें में ही जोर का बावा बुत नावा कितने मुक्तको दौडवूप करते की हिट से सवया प्रयोग्य बना दिवा। रोकने की बहुत कोशिश्व करते करते भी इस म्यिति का मन पर समर पड ही जाता है। मैं यहा पडा पडा भी काकी काम कर देना हूं—बामकर गाज्यों में तो मफलता भी प्रच्छी वितती जा रही है। कस्पीर, पबाब दिल्ली प्रदेत, विहार, पुत्ररान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेत, प्रस्लावन प्रदेश (नेका) बादि में। बताने उदीसा, ववाल, सानाम, सैनूर आदि से भी मकतता सिगेती। राज्यों के काम से देर लगती है, किमी न किसी को घरना ना देना परवा है। जाने वाले प्रपत्ने पाद कम है—रतनती, स्वाम भीर किसी है द तक मुपाकर और यदा कदा सोहन। इन तीतों वारो का लगातार बाहर जाना पार नहीं पड सकता है। मुगांता-शकू को तो वतस्थानों से जमकर रहता ही पडे। मैरा वन-स्थानी में जमकर रहना भी न रहने के बराबर है—रोजमर्रा को परेशानियों में पड़ना मेरे स्वास्थ्य के लिए हिककर नहीं हो सकता है। सकता

जपपुर वाली जमीन पर महान बनाने के बनाए उसे लीव पर देवे की वात सीव रहे हैं- उसने निजर्ज लाल मना नाल रुप्ये हुर सान मिनना पून हो सकना है। इर एक शत का निम्मा बहुत तोच समक कर करना पेशा। टेनस के बारे में गया विल आया है उसने वन-स्थली है मनस्य जितना सम्भा कर करना पेशा। टेनस के बारे में गया विल आया है उसने वन-स्थली है मनस्य जितना समीधन कराने की सीधक कर रहे हैं। उसके बाद ही कमाई के कामी को हाए में लेता होगा। उन कामी के निए धादमी नहीं है मो सबल भी बड़ा है। अर्मन चर्च से बिना मूर्त के कुछ विशेष रथ्या मिन बाए तो में उसे लेने के लिए घरने मामशि देवार उस रहा हूं — विशेष सुपर मामशि देवार कर रहा हूं — विशेष सुपर मामशि देवार के स्वाप की मदद के लिए करना वाहिए। करकरों में स्वित्य सिंग की से हुख भी जितन माम की स्वाप की मदद के लिए करना वाहिए। करकरों में महिला एक स्थाप माम अर्थ में स्वाप की मदद के लिए करना वाहिए। करकरों में में लियार है को से हुख आपता निम्म से साम की मदद के लिए करना वाहिए। करकरों में महत्व प्राप्त माम की मदद के लिए करना बहु । नवमत्व वी वेच भी भी हो में को से हुख ज्यादा प्रभावित करने की कोशिय करनी चाहिए—उनको भी सममना चाहिए कि ऐसी विकट स्थाप में में से साम की मत्व है मुफ सुम्मता है सो में करता रहता हूं-रुप्ये में बार माम हो जाए तो बढ़ भी बहुत है, यूपने तोगी के सत्त से—बाको दूसरे लोगो के पात कोशिय करने के अरिये भी दिक्वते ही जा रहे हैं।

जब मैं श्रपने आपको कैद में पढ़ा हुआ देखता हूं, ज्यादा बात नहीं कर सकता, ज्यादा परिश्रम नहीं कर सकता, सवास सामने खड़े होते हैं, जवाब तत्काल नहीं सुकते हैं तो ध्यान मन हो जाना पडता है, उसमें प्रकाने के हन न निकनने है तो बीच बीच में व्याक्त और मत भी हो जाना पडता है-पर वह मेरा स्वायी भाव नहीं है-स्थायी भाव तो मेरा फ्रायन विश्वास हो है। हार्ट योखेवाज भी तो है न ? मेरा कुछ कतंत्र्य वाको न होता या में बाकी न समस्ता तच तो कोई बात नहीं थी। वस, इनने में हो समस्त लीजिए।

## होराताल शास्त्री का पत्र श्री हरिमाऊ उपाध्याय के नाम

25-28-50

ग्रापका २४-११-७० का पत्र विना। मैं विनोवाजी की वातचीत के विषय के प्राप्ते केल की एक प्रतिनित्ति प्रापके पास ग्रापकी घोर से इस पत्र का उत्तर ग्राएगा तब तक मैंन महाँगा। या तो वह उस समय उक शायद छप नाएगा, नहीं तो टाइप की हुई प्रतिक्रिप भेज दाँगा।

भाईती जमनालालती की न्मृति के विषय में धापने जो कुछ करने का सोचा है यह ठीक है। गाभी धाधम को पुर्वतीवित करना रो तो वहन पक्के विचार से म्रीर सामने पक्का उद्देश्य रवकर करना चाहिए। धाधम की बोधा के लायक म्रादमी कहा है?

में जी कुछ छपा है सो में पढ गया हु -मेरे वारे में लिखा है सो खासतीर से । मेरी यह प्रतिकिया दुई है कि किसी बेहवा छादमी न बेहदे तरीके से बेहदी बान लिखी है ।

मैं किसी भी पार्टी की शरहा में न पहले यमा था, न धन जाने वाला हूं। मेरा कार्य-कम मो एकदम कालिकारी है, उसके लिए में अपनी जान की वाजी जगाने वाला हूं। कितना वमा पार पड़ेगा मो देखा आएमा। मुफे इस यग्दी चानू राजनीति से कोई मतलब नहीं है, भन्ने ही मैं कुछ स्वाधीन भन्ने ब्राटिमियों की मदद ब्राम चुनावों में करने का विचार करलें लायद।

# श्री हरिमाऊ उपाच्याय का पत्र होरालाल शास्त्रो के नाम

88-88-00

कत प्रापका लेख मिला और एक ही खान से मेंने उसे पढ डाला ! कुल मिलाकर मुफ्ते अच्छा लगा । बाना के बौर क्षापके विचारों का रचप्टीकरण उसमें मिलता है ग्रीर प्रापके प्रेस नोट से ग्रापको स्थिति, कार्यकम, दिशा खादि का सखेप मे दोक परिचय मिल जाता है। १३४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

किन्तु इससे यही छाप मन पर पडती है कि आपका उनका सभी बातों में मतंत्रय नहीं हुसा। आप शुरू में ही अपनी धुन के रहे हैं और वही आयद आप जैसे के लिए सार्यक सिद्ध हो सकती है।

प्रापने उसमें ग्रामसपठन को सरकारी कानून न मानने की बात कही है। यह समक्त में कम ग्रापी। किसी एक बुरें कानून की न मानना तो ठीक है, परन्तु सरकारी कानून की मानना प्रकाशतर से सरकार की सक्ता भी स्विचान की भी न मानने के वरावर हो जाता है। यदि मेरी यह घारएण सत्ती हो तो इस पर माप पुनिकार कर सें।

"सरकार अपनी नहीं है"—ऐना भी आपने कहीं कहा है। "अपनी है फिर भी हम उत्तसे सड़ेंगे" यह रहना और है और "अपनी है हो नहीं" यह कहना दूसरी बान है ? वह फैसी अपनी नहीं है ? जब हमारे बोट से बनी है—सी परावी कैसी हो गयी ?

सरकार की वाकिसी वाहरी सहामता लेने के बारे में मुक्ते बाबा का रख ठीक समसा है। प्रापकी बार्ध बन्दी मुक्ते प्रथमी कमजीये या पलायनवाद जीवा सगता है। यदि पन या सत्ता के प्रभाव में शाकर हम दब जाते हैं, तो कमूर हमारा है। ग्रीर हम इसमें इस भी कहा तक पाएंगे।

पडकर तुरन्त को कुछ विचार मन में उपने वह निख दिये हैं। फिर भी "फ्लेन परिचीयते" वार्ता बात सही है जो कुछ हम कर गुजरें वहीं सही है। सपपं तो प्राएगा, परस्तु जमें न्यौता देना या समय से पहले बुला लेना ठीक न रहेगा।

मैं तो प्रापका पुराना साथी, शिव, भाई, कुछ नी कहिए 👸 और द्यापका प्रशसक प्राप्त भी हैं।

द्यापकी सफलता ईश्वर से चाहता है।

#### हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री हरिश्राक उपाध्याय के नाम

00-59-39

ग्रापका १५-१२-७० का पत्र कन मिला। लगता है प्रपने की एक बार भीर मिलकर बार्से करनी होगी सी देखिए कव तब हो मके।

विनोबाओं के साथ जो लबी बातचीत हुई उससे भेरी सारी स्थिति बहुत साफ है। गयी ! मैं अपनी करूपना की आमसभा का गठन किसी कानून के तहन में नहीं चाहता ! कानून के तहन पठित पथायतें तो हैं हो । उनके चुनाब जब कभी होंगे मैं उनहें निविरोध कराने में सपनी सिक्त समाऊंगा। मौर साम चुनावों में निर्वाचन क्षेत्री की साम पसन्दर्भी के उम्मीदवारों का यथार्थाक सबयेन करने की बात भी मेरे ध्यान में है। जिस रूप में स्राप समके सालूम होने हैं उस रूप में सरकार या कानून को न मानने का सवास नहीं है।

समारे नो, समाप को न्योता देने की जहरत अपने से से किसी को नही है। पर जनता से जो पमुपन, सिलसमायन सा गया है मो बहुन बुरी बात है। दूसरी श्रीर ऊपर भी तरफ से चनकर राष्ट्र के सारे झरीर में ब्याप्त होने वाला अध्टाचार तो मर्वनात कर ही रहा है।

सरकार की या दूसरी भी बाहर की श्राधिक महायता ने जनना के प्राण को बहुन नुकक्षान पहुँचाया है। वार्षकर्ता तो बैसी सहायता से बहुत निर्जीव होते देने गये हैं। दशने वाली सहायता से तो मनुष्य को दबना ही पडता है। कुमूर सहायता लेकर दबने का नही है, कुमूर ऐसी महायता लेने का है।

कान्ति की, बड़े परिवर्तन की, सच्चे स्वश्व की बात न करनी हो तव तो सभी कुछ ठीक है। पर मेरी राय में प्रपनी मीजूदा स्थितियों का कान्ति से कोई सेल नहीं खाता है।

मेरा सोचा हुआ यह सब कार्य अत्यन्त कठिन है यह सबये ज्यादा मुक्ते मालूम है। भेप मिलंत पर।

## थी हरिभाऊ उपाध्याय का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

२१-१२-७०

ग्रापके दोनी पत्र मिस गये।

इत दो पत्नों में आपने सौ० माधीरयी देवी के प्रति जो हार्दिकता और आसीमता-पूर्ण शब्द तिने उनके आगे वे क्या कह सकती है ? सौ० रतन वहन भीर वे दोनी एक ही वार्य में नजी हुई है। केवन कार्य के ही कारण नहीं, परन्तु स्तेह और मापके के प्रतिप्द एडीसी सबब भी इतने टुड है कि इन्हें दो मानना गनन होगा। सस्तु।

दूसरे पत्र में आपने जो स्पष्टीकरण किया है, वह काफी सतीपजनक है। बैसे भी
सापने जो मूलपूत मुद्दें उठाये हैं, उनने मेरा कनई सत्तभेव नहीं है। और सापके जैसा रहें
निकचरी, यस्पर सार्ट्सी ध्वांकि हैं। उन्हें मान के सकता था, पर थोड़ा डर यही रहता है
क कई वर्षों में एकाय-नार्थ के बाद अब भाग नई पिन्स्वित में साथे मार्थ है तो कही समय
में पहले बुख न हो आए। किर भी यदि नकतील की बात में थोड़ा बहुत संपन्ना मान्नीय रहे
मी जाए तो उनकी चिन्ना नहीं है। विनोबा से भी मनभेद रहे तो परेमानां की बात मही
है। यदि मूल विचार में दौप नहीं हैं, प्रथमी भावना खुउ हैं, प्रथमें माध्यन भी ठीक हैं, तो
रिर रहता के साथ काम में युटे रहना ही उचिन हैं। आज वो ध्यमल कठिन लगता है,
साम करने में बढ़ी मरन हो जाता है। बाप जैसे अनुभव-यबद पुरुपार्थी के लिए यह सब
निजना स्वावयक हैं।

भ्रस्तावार वाणी वान बहुन विटल है। भाषको माणूम तो होगा कि माई नग्दाको हे नहने में मैं सबुक सदाबार समिति का अध्यक्ष बना था, मैंने कई बार उनसे कहा कि मुफे छुद्दी दे वीजिए, पर उनका भाग्रह आभी नक मुफे बनायं रचने का है। भ्रव जब आपने भ्रस्तावार की बान उठायी है तो मेरे मन मे नोग या ग्हा है कि बयो नहीं इस मन्या या इस पद का नाभ उटाकर राजस्थार से कोई विजेष कार्य किया चाए ? संपुक्त स्थापार मिति के लेटर हें? पर ही यह पत्र है।

र्वम भी मैं मृद होन रहा है कि धाम-पाम के एक दो माबो को हाय में लेकर उन्हें स्वामत बनाने की दिशा में यत्न कर । यन पूर्वोक कुछ मत्रभेद के निवारण के लिए हो नहीं, परन्नु अपटाबार लिवारण तथा धाम-कार्य की हॉटर से अपना मितना कही हो जाए तो वह प्रस्कृत होगा। नेता तो थव बाहर धाना-वाना बहुत कठिन हो गया। धूने भटके आप इपर हा सकी तो अपन्तु रहे।

## हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री सिद्घराज ढढ्ढा के नाम

२१-७-७१

तुम्हारा १६-७-७१ का पत्र मुक्ते बहुत ग्रच्छा समा है। मेरी कामना है कि जिस चीज की तुम्हें तलाश है वह तुम्हें जल्दी मिल आए।

पू० याजा की बातो को से काफी हद वक मानता हैं। पर उनकी यह ऊँची बात मेरी समफ मे नहीं साती कि "बह भी सच्छा, नह भी सच्छा"। वे सपर्य को प्रीनवार्य नहीं भानते मानुस होते हैं। मेरे खयाल से सचर्य नहीं टल सकता। तीसरी वात यह है कि राज्य भीर कानून के साध्यय में रहते हुए सीर बाहर के चन्दे से गुबर करते हुए कान्ति की वात करता मेरे नहीं जचता है।

हम सरय को नहीं छोड़ सकतें, घाँहमा को (प्रयवा बानित नहीं) को नहीं छोड़ सकते हैं। वाकी हमें बुगाई का मुकाबना कटकर करना पडेचा। उसी के लिए प्राम-ससार को गिश्वित, जागुन, सगठिन होता पढेगा, स्वाई, ईमानदारी के प्राचार पर । यह मार्ग दुवह है, यह कार्य दुष्पर है—हमका फल जब बावे, बावे न बावे, पर कारित की करना करने वालों को इस कार्य के पीछे, पर मिटना चाहिए। तथास्तु।

## थी तिर्घराज ढड्ढा का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

२५-७-७१

मेरे ता० ११-७ के पत्र के उत्तर में आपका ता॰ २१-७ का पत्र कल मिता, पिछले ३-४ दिनों से मैं वैसे भी आपको लिखने का बराबर सीच रहा था, लेकिन यहाँ के कार्यक्रम के कारण समय नहीं मिला।

पूथ बाबा की बातों के बारे में तो मैं क्या कहूँ ? उनकी सब बारों समफ में प्रावे यह जररी भी नहीं हैं, व यह कि सब बातों हम माने । हो सकता है में किस नदर से कहते ही वह हमारी समफ में न प्रावे, या हमारे स्थान से बढ़ हो तथा हो हो । सबान कार्यक्रम का है और मोटे तोर पर सब्द का भी है । इमर्प वाली बात में श्राव हम बहुत कुछ एक राय के हैं। "राज्य और कार्युन के आश्रय" वाली आपकी बात मेरे समफ में कम प्रादी हैं। 'आश्रय' तो बुरा ही है, लेकिन उनका 'बहारा' तिया था सकता है, वरे वाली प्रापकी बात भी प्राव्यातिक हरिट से क्षेत्र हो सकती है पर चदा तेने से भानित समब ही नहीं है, यह मेरी समफ में नहीं भा रहा है। वरि हम तालिक बातों को होहों। कार्यक्रम के लिए तो प्रापका आश्रोबॉद मिल ही तथा है, बीर मेरे लिए तो वह हमेवा रहा ही है। १२६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

में प्रापको पत्र एक दुबारे कारण से निखते वाला था। यहां शावों में घूमते समय की रंगे साम की रहा है भीर उसने वात है तामने प्राती है जिनमें नगता है तोमों पर स्वच्ट अन्याम ही रहा है भीर उसने दो में नुद्ध करना वाहिए। अवलव शिकार करने वो भीवत आए तल तो हम स्वाय दे हैं, लेकिन उस स्टेंब से पहले ऐस प्रायानों में काफी समय भीर जाित समानी परवाह है। एक मामना यहां में १-६ सीन दूर गाव का हसारे सामने है। गाव के हिन में सरकारों कियान में भूमन वा मत्यान है। उसने निए भी काफी समय और शक्ति वाहिए, पर जो लाम हमारे हाव में १ वह भी निपरता नहीं है। सबये और अधित के मानले में यही एक व्यावहारिक किताई आती है। आपने प्रपंत पिछने पत्र में निया या कि ना में हमारे साम हमारे हमार का मान को में सीन प्राप्त में में मान को में मोड पाएगा तो मैं आपनो यगने साम हो देवूँगा। इसतिय मैंन साम हमारे का मह सम है हि जा पह समय है एक को मुक्ति की उस हो। सामने को मुक्तिमें के मार ह समय है कि ना पह समय है। तम हमारे में मिल तम साम हमारे में मिल तम सम्बाद के स्वाय हो। यह सम्बाद की स्वय साम में साम हमारे में मिल तम स्वाय हो। यह सम्बाद हो स्वय हमारे हमें स्वय साम हो हो। मैं में यह सि साम हमारे साम हमारे से मार साम में साम हमारे में मिल में साम हमारे साम हमारे साम हमारे साम हमारे साम साम से साम हमारे में सि साम से साम हमारे साम हमारे साम से साम हमारे में सिता साम से साम हमारे में सिता साम से साम हमारे हो। सित यह साम में साम से साम हमारे हमारे में सिता साम से साम हमारे में हमारे में हमारे में हमारे में हमारे में हमारे से हमारे से हमारे से हमारे साम से साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे से हमारे साम से साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे हमारे साम से साम से साम हमारे हमारे साम से साम से साम हमारे हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे साम से साम से साम हमारे हमारे हमारे साम से साम से साम हमारे साम से साम हमारे साम से साम हमारे हमारे हमारे हमारे हमारे साम से साम से साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे साम हमारे हमारे साम से साम हमारे हमारे साम हम साम हमारे हमारे साम हमारे हमारे साम हम साम हमारे हमारे साम हमारे

# होरालाल शास्त्री का पत्र श्री बिरधीवग्द चौधरी के नाम

90--99--09

हमें सबसे पहुंते सरकार धीर विश्वविद्यालय के धरतर को सममना चाहिए। बनस्तनी ने गुरू में हो समय निगा था कि विश्वविद्यालय की परीक्षाए रिलबाये दिना यह महिला गिक्षण सम्यान हो जस नकेगी। यदि बनम्पनी स्वयन विश्वविद्यालय वन चार तव सी वह गोकरम धादि में वास्तव में स्वतंत्र नहीं हो सकती। उस हालत में मनम्पनी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं नो हुसरे विश्वविद्यालयों को धीर से माम्यता मिसनी चाहिएगी। उक्त माम्यता के निना वनस्थनी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं की कीई कर बीमत नहीं रह जाएगी। परीक्षा की तैयारी के खलावा शिक्षाक्रम में जो कुछ विद्यापता लागी या सकती है उसे साने का यस्त्र पत्र पत्र स्वता होता है, से काम वनस्थनी में प्रपत्नी पन मुणी जिला के हारा किया जाता है। किशो भी विश्वविद्यालय से वनस्थनी का कोई मार्थिक मार्ग पत्र के का मान्यत्व जाती है। किशो भी विश्वविद्यालय से वनस्थनी का कोई मार्थिक मार्ग पत्र के का मान्यत्व जाती है, वह हो भी नहीं सकता।

स्वराज तक वनस्थानों ने कियों भी सरकार से खानिक सहायता स्वीकार नहीं नो । ग्राजकत भारता की समस्त सरकारों से पीया भिनता है। पर वनस्वती कियों भी सरकार के किसी भी प्रकार के नियत्रण में नहीं है, सिवाय दसके कि सरकार जो पीसा देती है उसका हिसाब देखें । इसी प्रकार कियों चन्यावराता का भी दलक बनस्थाती के काम में नहीं है, हिसाब को बाहे तो चन्यावराता मी देख सकता है। और सरकार या बन्यावराता ही बयों. पत्र ब्यवहार [१३८

पिलक सस्या का हिसाब देखने का हक हर दिसी को है। वनस्थानी शुरू में आज तक सबंया कार्यकर्ताओं की रही है और आगे भी उन्हीं की रहेगी। वनस्थानी का ऐसा ही सविधान है।

ग्रीर यह तो घाषको व हमको और सम्भी को सानुस है कि किसी भी काम के लिए पैसा तो जरूर चाहिए, भीर भ्राज के जगाने में पैसा ज्वादा भी चाहिए। पैमा सरकार से लाएं, पिनक से साए, किसी उद्योग पंचे के द्वारा कमाए—ट्रेट हानन में कामंकर्तामी को उस साम में परनी गरिक नमानो पढ़ेगी, तकनीफ उठानी पढ़ेगी और न जगो क्या-च्या सहुत करना पढ़ेगा। कार्यकर्ता को जुड़ का बण्ट उठाकर नावा या कमाया हुआ पैसा होगा तभी तो उसको पुरुपार्थ माना जाएगा। यदि कार्यकर्ता के हाथ में भ्रासानी से पैसा प्राजाएगा हो वह पैसा हो का सम्म कार्यकर्ता को भ्रासानी से पैसा प्राजाएगा हो। वह पैसा कार्यकर्ता को भ्रासानी से पैसा प्राजाएगा हो। वह पैसा साना कार्य हुगा थे

बनस्वभी का तज सदा स्वतज है, स्वतज तज भी असल में तन्जहीन है। सवालन ध्यवस्था में शक्ति के विजा तो छोटा सा काम भी ठीक से नहीं चल सकता, धोर वनस्थली जैसी विशाल सस्या की ध्यवस्था में जो साकत नगानी पड़ती है उसका अन्याज उन्हीं को है जिनके पाम यह ताकत है और जो अपनी उस ताकत को हैंसते सेन्ति हुए इस पवित्र काम में भोकते रहने है। वनस्थली का आकार स्वायात और तमक्षा बड़ा त होना जाता तो यह स्थान सड़ जाता, गल जाता, सूख बाता। भीनिक विकास के विना किसी प्रकार को इस्ता विकास ऐसी स्थाली और गतिशाल संया का नहीं ही सकता था।

प्रापने सच्चे कार्यकर्ताओं की वान लिखी है। आज अपने देश म मेरी जान पहिचान ती ५-७ से उपादा कार्यकर्ताओं ने नहीं है। मच्चे यान सच्चे भी कार्यकर्ता कहा रहे है अपने देश में 7 या तो नेता हैं या नेताओं के दलाल है, या नेताओं के पुरोहित हैं। किसी भी जमाने में कार्यकर्ताओं का उत्पादन "केन्द्र" में नहीं हुआ। कोई महार अपित आपम बनाकर बैंडा दो उसके प्रभाव से पाम-प्रक्षीत में नृद्ध कार्यकर्ता सनने हुए दिखायां देने मंगे पर सारविषक सर्वकर्ता में है। नन सके जिनको अरुवा कार्य में तीन होना स्वीकार हुमा। निसके पाम अपने लुद का केरी भी कमाबा हुआ पैसा है बहु "कार्यकर्ता" नहीं हो सकता, निसके सरकार की या किसी की, छोटी या बधी नीकटी महुर करनी नह नोकरी दोते विना कार्यकर्ता नहीं हो सकता, निसमें कार्यकर्ता किसी वार्यों में मुक्त से कहा-पाँधी-निषि का पैसा एसका अपनेकर्ताचन नहीं निवाद सकता। विनोबाओं ने मुक्त से कहा-पाँधी-निषि का पैसा एतक आढ़ का पैसा है। मैंन कहा "बहुत ठठीक" पर प्रापके नाम से जो कीय इसट्ट किया जा रहा है उससे "जीवित आड" का पंता होगा होगा।

मैंने अपने स्वरूप नामध्यें के अनुमार साची कार्यकर्ता खटे करने का यहा किया था। उनमें मुन्ते कुछ, सफलता भी मिली थी। पर स्वराव ब्राते ब्राते वे ब्रायः सभी कार्यकर्ता सकार्यकर्ता ही नही वस्कि कुकार्यकर्ता भी हो गये। मैं दो ब्रपने ब्रापको कुछ मानता हो मही हूँ। पर जिनको मैं बढा से वडा सानता रहा उनके बनाये कार्यकर्ताधों में से किसने

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

व्यक्ति कार्यकर्ता रूप में बाज जिन्दा है ? उनमें में जो बहुत बड़े माने गये उन्होंने गाणीजों के साथ धन्त में कैसा व्यवहार किया ? क्या वह व्यवहार गांधीबी के चेलों के या उस महार व्यक्ति के गिद्धान्त के लायक था ? धीर बाज विजोबानी का धीर उनके नाम का गोपरा करने बाले कितने नहीं है ? कितने "लोबनदाती" हैं जिनको बाप सच्चे जीवनदानी के रूप में स्वीक्तर कर सकते हैं ? बाज के बानों में विसी की भी शक्ति कार्यकर्ता वनाने की नहीं हो गकती गीर धानित कार्यकर्ता किसी दूसरे का बनाया हुधा नहीं वन सकता-बह तो खुद ही भवती गीर धानित कार्यकर्ता किसी दूसरे का बनाया हुधा नहीं वन सकता-बह तो खुद

एक बात और समफने की है। वह यह कि किसी भी स्वायी विकाशसस्या के द्वारा कागित नहीं हो सकती। न कोई विवाक कागित का विधाही वन मण्डता। अपछी विकास स्वाने के कुछ अपछे विकास अपने विधायियों को "शानित के विधाही" वनने की प्रेरणा दे सकते हैं, पर उस प्रेरणा का असर भी बहुत कम विधाहियों पर होगा। जिन विधार्मियों पर ससर होगा उनमें नडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां वहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां बहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां वहुत कम। और जिल लडके ज्यादा होंगे और लडकियां वहुत कम। असे जिलकारी वनने सकता अपनी विकास स्वाम को छोड़ देगा।

स्रापनों साखित में "प्रध्यातम" की बात निर्द्धी है। स्रध्यातम की बात करने तक का स्रिकार स्रापको मुक्तको तो क्या, जिनका बड़े से यहा नाम है, क्षमा कीजिए उन तक को नहीं है। प्रध्यात्म का प्रम्याद्ध क्या हम कोई क्वल खोलकर करेंगे ? हम लोग ज्यादा से ज्यादा हतना कर सकते हैं कि धामिक और नीतिक सूल्यों की जानकारी इच्छुकों को कराई, सो शास्त्रों, सन्तवाणियों और प्रार्थना के श्रवचनों के जरिये से तो हम बनस्पनी में करा ही रहे हैं।

य स्थारम का अधिकारी महायोगी, महान्मा लोकिक कामों में शायद ही लगा रहे, यह विषवकरपाए का काम भी सत्तन बैटकर ही करेगा। शायको और प्रापके तावियों की विस्त बनित का अनुभव हो रहा होगा को मेरी समक्ष के बाहर की बात है। कभी भीका मिलो पर लाग हम कई दिनो तक साथ रह वसे तो आपकी बत कराएँ निमुंत हो जाएँ।

#### पुनश्य:--

यह सही है कि बनस्वती के कार्यकर्ता प्रपता निर्वाह व्यय तो संस्था से लेते हैं। पर यहाँ पर कई एक कार्तकर्ता ऐसे हैं वो बेनन की सातित्र सत्या में काम करने की नहीं आये हैं। हमें यह नहीं भूतना चाहिए कि बनस्वती में कई माई भी देश में वो मानब-सामगी उपलब्ध है उसमें से ही बाते हैं। बनस्वती भी भारत में हो बनस्वित हैं।

## श्री गोक्लमाई भट्ट का पत्र होरालाल शास्त्री के नाम

#### २१–५-७२

धापका ववतव्य एव खापने श्री वरकतंत्री को जो तार दिये, मुघाकर मुफ्ते दे गया था। उतने मोह, स्वापंतु-वीर्य के दर्शन विशेष रूप से किये। प्रात्तदायी धारा।

ग्राप ग्रपना स्वास्थ्य सम्हालिये । सवको प्रणाम ।

मैं प्रानन्द में हैं। भ्राज का पत्रारम्भ आप में होता है।

## हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री गोकुलभाई भट्ट के नाम

#### २२-५-७२

सुधाकर के द्वारा कल शाम को झायका २१-५-७३ का पत्र मिला। उस जरा से पत्र ने मुफ्तको फकम्कोर ढाला।

मापके उपवास के भून में बिलियान की भावना है। उसका परिलास गुभ होंगा। हॉरियटल में एक दिन डॉ॰ दिशीप के सामने नतावग्दी की बात चन पड़ी तह मेरी जवान से सहसा निकल गया कि यह काम बिलिदान चाहेगा। उस समय भाषके अनशन के संकल्प का मुझे पता नहीं था।

मुक्ते दुःष इस बात का है कि मैं आपके पास आने के लिए भी स्वतन नहीं हूँ। मेरा "स्व" मेरे पास नहीं है तो मैं "आईए?" क्या करू ? धीर स्वार्थण है ही नहीं तो "शौमें" कैसा ? धीर "आएवाणी धारा" कैसी ? मुक्को उठते ही चक्कर पाता है। परसी का कांडियोगाम बहुत प्रस्क्षा आया है, पर बजन और भी घटा है। कमजोरी बठी नहीं तो कम भी नहीं हुई है। ऐसी हालत में क्या कर सकता हूँ ? कैसा अच्छा होता यदि धापके साम साम मैं भी वेठ सकता ?

यह तो हुई एक बात । हुमरे पक्ष की बात यह है कि इतना बड़ा धोवरह़ापट (प्क घरव के घात पाश का) हो नयो पया ? इतना बड़ा (कई घरवों का) कर्ज नयों कर तिया गया ? इतना बड़ा घाटा (कम से कम १८--१६ करोड़ का) बजट मे नयो दिखादा गया है? प्रस्तों के बजट में चार पांच करोड़ क्यों की नया पिनती है? इतना सा सर्च कम करना नया प्रसम्बद है? धीर घालिर इस पाप की रुक्स में विकास की या कल्याएं की बात करना नया अकल्याएकारी नहीं है? जैसे, कानून के बावबूद चोरियां होती है, वैने ही नहें पर नुख बन्दिश है तब भी बबैब दार क्या नहीं बन रही है ? बादून का पालन कराना सरकार ना काम है। जोगों को सममाना समाव सैवियों के साथ साथ विचायकों व मित्रयों का काम भी है। इस प्रकार शैरकार का पक्ष एकदम मूटा है। सरकार वालों मे पूछा जाना चाहिए कि "नुम्हारें पास दिन है क्या ? नुम्हारें पास दिमाग है बगा ? नमें को एथ जुए की बामद में जनता का भना करना चाहते हो ?"

विद्वराज या गया बनाया ? धीर लोग भी हें ही। उनने मेरा कहना है कि प्रपार पुप्राचार होना चाहिए। जहर के सदबारों में भी प्रचार कम है। दिल्ली के प्रतबारों में तो बायद है ही नहीं। में प्रतबार कम देतता हूँ। नम्म पर भी नहीं नेय पाता। अपनी में पिरारणारी' का ममाचार पुप्रकों देर में पिचा। ममाचार मितते ही तो मैंने एक दूमरा तार मुख्यमंथे को धीर टोक दिया। इन तारों धीर बनकार्यों को घरेशा ज्यादा असर होगा, ग्राम जनता के उठ तरे होने का। ग्रापक उपवाम में जनना को बड़ी कर देने की प्रतिम है, पर जनता को मानूम होना चाहिए व ? ऐसं प्रचार को योजना होनी चाहिए। प्रपृत्ती प्रत्या का उत्तका शुक्ष में मान जाने का नहीं है। औरतार (?) तरकार है न ? अपना देतु गुने है। अपनी जीन व्यवस्थानों है। एस होगा नहीं, पर परि गोहुनमाई कदाविष्ट्र मुझे है। अपनी जीन व्यवस्थानों है। ऐसा होगा नहीं, पर परि गोहुनमाई कदाविष्ट्र में भी रहें नी दने उत्तंन की इच्छा का व्याग करने वार्च कुछ दुवरे भी वहे ही जाएगे। नरना क्या बड़ी बान है। मुक्ते यह मोजने से बढ़ा मजा वित्ता है कि मैं पिछते हुकों में मरकर नित्या हो गया। जब मनुष्य को किमी न बिनी निमित्त से सांगे पीछ तरना ही है ती जनना के करवाया के वार्तिन मृत्यु को धामकरा देने के वरवहर हो ही बगा सकता है? हम प्रतिहर मृत्यु को धामकरा देने के वरवहर हो ही बगा सकता है? हम प्रतिहर्ण हो ही गोहुनमाई काम हो है। पीछुनमाई समर हो ही

# हीरालाल शास्त्री के पत्र श्रीमती रतन शास्त्री के नाम

(8)

#### कलकत्ता २४-१२-२८

मेरी शक्ति कम या ज्यादा कितनी भी रही हो, परन्तु यह समफने मे मैं अपने ग्रापको भोला नहीं दे रहा हूँ कि जिस बात को मैं ठीक समकता हूँ उसको करके दिखाने के के लिए मुक्तमें सच्ची लगन है। मेरेकुछ मिद्धान्त तो भाषको मालूम हो गये हैं। जनमे एक तो यह है कि मैं भापको अपनी सच्ची साधिन दना लेना चाहता है। मेरे जीवन का कोई भी कार्य ऐसा नहीं होना चाहिए जो ब्रापको मानम नहीं हो, जिसके मर्स को ब्राप नहीं समक्षती हो और जिसमें बापकी और की महायता नहीं हो। अपकी बाराम से कमा-कर खिला देना. आपके लिए अच्छे कपडे और गहने लादेना, घर के काम के लिए नौकर रख देता, ये मामुली वार्ते हैं। यह तो सभी कोई कर देते हैं और स्त्रियों के प्रति जितना भी भक्छा व्यवहार हमारे गये वीते समाज में रहा है वह जान वृक्तकर या दिना जाने पशुक्षों का सा है। अपनी गाय को हर कोई अच्छा बाट दे देता है, अच्छा धाम क्रम खिलाता है। साफ मूयरी मिट्टा विद्याकर वाघता है, गले मे पटिया बाध देता है, घवसर ग्राने पर सीय रम देता है। अब मैं यह करना करता है कि खानकल के पुरुप भी अपनी नित्रयों के साथ प्राय. वैसा ही वर्ताव करते हैं जैमा गाय भैस के साथ तो मुभे ग्रक्यनीय दू.ख होना है। मैं यह तो मानता है कि वे बेचारे जान बुक्कर स्त्रियों की दुःव नहीं देना चाहते। जान बुभकर द खी करने वाले कुजीव भी होंगे, परन्तु बहुधा तो वेसमभी का वर्ताव होता है और स्त्रियां देचारी. उनकातो कहनाही क्या है ? उनकी एक प्रकार की ग्रादन चली ग्रा रही है जिसके फेर में उन्हें कमी वेशी का भेद भी मालम नहीं होने पाता। आप तो काफी समभ्रदार हो ग्रीर जब मै ब्रामको बाहर की बाते नही कह पाता है तो ग्राप कई बार शिकायत भी करने लगती हो । परन्तु बहत सी स्त्रिया है बिन्हे खाने पहिनने को ग्रच्छा मिल जाए और पतियों के साथ रहना मिला रहे तो उन्हें ससार की किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं रहती।

स्थियों के बारे में मेरे मन में कई तरह की उचल पुगल रहती है। मैं प्रभी निश्चय नहीं कर पाया हूं कि इन देन में दिख्यों के लिए सच्छे में सच्छा धादण साजकत के जमाने में बचा हो सकता है। दिख्या सपने पति को देवता ममफे, यह बान मुफे दरदाश्व है। परन्तु इसके साम में यह भी जरूरी है कि पुरूष सपनी दिख्यों को देवियां समर्के सकतरफा बात कभी भी ठीक नहीं हो सकती। हवी बेचारी पति अंकि के मारे हैं पान हो लेती है, परन्तु पति ऐसे हैं जिन्हें पत्नी मौतिक कभी खूनी भी नहीं। इसको में नाय नहीं, कहता। इसी का नाम सहर्थीमणी विना सोचे समके नहीं रखा गया था, परन्तु भी जन बनाकर लिला

प्र**स्यक्ष**जीवनशास्त्र

1888

देना ग्रीर साथ रह लेना, इसी में सारा सहधर्म समाप्त हो जाता है। महात्माजी ने वर्घा में कहा या कि स्त्रियों को कमाने की जरूरता नहीं है। कमाने की विद्या उनकी मानूम होनी चाहिए जिसमें वं बावस्थकता पटने पर उन्हें दूसरों के मूंह की धोर नहीं ताकना पड़ें। परन् कमाने का काम तो पुरुष का ही है। कमाने का काम पुरुष का और घर की स्वामिनी बनकर, घर की मृत्यवस्था रलकर स्वर्ग का रूप देदेना, घर की रोशनी, घर की सक्ष्मी, घर की शोमा, सहयमिली स्त्री का काम है। दोनों के कार्य का इतना विभाग स्वाभाविक है, ठीक है धीर समक्रमे बाता है। परन्तु बाकी के जिउने भी काम हैं उनमे पूरप का गीर त्रका ना सहयोग और साथ होना चाहिए वो प्रावकत नहीं है। यपने घरों में जब कोई घानिक हत्य होना है तो एक पुण्डले से वायकर ग्ली का मुह डककर पास में बैठा लेते हैं, यह हास्यास्पद श्रथ हमारे उस पवित्र यह का स्मारक है जब हम हमारी स्त्रियों को बास्तव में सहधींमणी मानने ने भीर जब कोई भी धार्मिक हत्य बिना सहधींमणी के ही ही नहीं सकता था। परस्त धाजकल बचा है ? पडितजी और बाबूजी सेजिस्लेटिव धनेम्बली में जाकर था जाते हैं, कालेज में प्रोफ्रेमरी करके था जाते हैं, सभा में व्यास्थान देकर यश लूट नाते हैं, समाचार पत्रों में लेख निराकर विद्वान और विचारक सिंढ हो जाते हैं, ब्यापार में हों। करके कुगल और सफल ब्यापारी कहना नेते हैं, राज के ग्राफिन में बैठकर नामी हाकिय हो लेने हैं, बडे डॉक्टर बनकर शोहरत कमा लेते हैं, बकील बनकर हाईकोर्ट की बहुत से लोगो को मुख्य कर लेते हैं, परन्तु घर में बहुनी या बीबीनी को यह मुख भी पता नहीं रहता कि बाहर पतिदेव क्या काम करके घर लौटे हैं। किसान और मजदूर बेचारे भन्छे जिनके यहां स्त्रो और पुरुष दोनो हो अपना अपना काम साथ साथ करते हैं। परन्तु पक्तरका गिक्षा, यक्तरका सन्यता, यक्तरका सार्वजनिक और पारमाधिक जीवन कितना बरा है. जितना निम्दनीय है <sup>1</sup>

हल्लानोत्पत्ति में पूरव के लिए क्या विम्मेवारी का काम है धौर स्त्री के लिए ज्यावा। इन निम्मेवारी को निवान के लिए स्थी की विभेवत्या देवारी होनी वाहिए धौर बच्छा । सतान वैद्या होकर कैंद्रे धन्छत्ने । सकते किए स्थी का बहुत वा सवस्य लगना चाहिए सौर बच्छा । सतान वैद्या होकर कैंद्रे धन्छत्ने । साथ ही स्त्री का पहुला धौर धन्तिम करोध नहीं हैं। ह्यारा कोंद्रे का करेत रहना मात्र ही स्त्री का पहाचा धौर धन्तिम करोध नहीं हैं। ह्यारा कोंद्रे का लेक के प्रतिहिन के एकान्त जीवन वा परिखास क्या होगा ? इसीनिए ती दिना आवस्यकता की मान्या संसार में साक्ष्य कार्यो करती जाती है। वे कमजोर हो तो क्या, उनके अरख पोध में कठिनाइमा पढ़े तो क्या दिवया और पुरा वे कमजोर हो तो स्त्रा, उनके अरख पोध में कठिनाइमा पढ़े तो क्या दिवया और पुरा वोनो ही प्रयन्त निम्मेवारी को मूल जाते हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य में स्त्री भीर पूर्व दोनो ही प्रयन्त करतराधित्व को टीक ठीक मममलें धौर धपने जीवन का ऐसा नियम करतें कि उनकी और से सावश्यकतानुसार एक दो ही चवान करवा हो तो हनी आ बहुतका भार हस्का ही जाएगा धौर उस वेचारी का कटमम जीवन भी बहुत हर तक मुख्यक हो जाएगा। इस्ते हो जाएगा। हमा दी तो मान्य से हीनो है, कम होना और ज्यादा होना, क्या किसी के हाथ की युता है। जिम साय होना, क्या किसी के हाथ की युता है। जिम

पत्र व्यवहार [ १४५

तरह रामजी हमारे और काम करते हैं बैसे ही हमारे ममाज की लियाो को ग्रीर पुरुषों को वेटा-चेटी भी रामजी ही देते हैं। इन भोने धादिमयों को यह जानना चाहिए कि रामजी को तो वेटा वेटी देने के खनावा और कई काम होते, वे स्वय अपने आपको मुखार लें ग्रीर प्रपत्ने विवाहित जीवन को पवित्रता के साथ और स्वयम के माथ विताए तो रामजी का वेटा वेटी देने का काम मुख्य हुन्का ही आएगा।

ग्राजकल ससार में स्वाधीनता की वही भागी लहर चल रही है। स्थिम कहती हैं "इन पुरुषों ने ग्राज तक हमारे साथ श्रन्याय किया, हम कुचल ढाला, दासिया बनादी, किसी प्रकार के काम की न रावकर बेकार बनादी, अब हमारी थारी आयी है, हमकी पूरुपों के प्राधीन नहीं रहना चाहिए, हमको आर्थिक दृष्टि से स्वाधीन होना चाहिए, प्रपनी रुचि के ग्रनसार काम होना चाहिए। जो हक पुरुषों को प्राप्त है, वहीं हक हमें भी है।" यह हवा ससार को कहा ले जाएगी, इसका कोई ठीक ठिकाना नहीं है। यह स्वाधीनता की लहर ससार को सूखी नहीं बना सकती, इसमें तो कोई सन्देह नहीं है। पुरुपों के प्रति बदला लेने का सा भाव रखना स्त्रियों के लिए कोई प्रशसा योग्य काम नहीं है। स्त्री वर्ग का भीर प्रस्प वर्ग का यह कलह चक लड़ा कर देना ससार के लिए हितकर नहीं है। स्त्री और पूरुप दोनो साथी हैं। एक का दूसरे के बिना काम नहीं चल सकता। उनके परस्पर के सम्बन्ध मे पवित्रता का, तिःस्वार्थता का, समपंश का, सहयोग का एक दूसरे की अपूर्णना को पूर्ण करने का, सम्बन्ध होना चाहिए, न कि आपम में मुकाबिला करने का, भगडा करने का। यह ठीक है कि सबोगवश भली रहने की जिम्मेदारी अकेली स्त्री पर ही लंद गयी धीर पुरुष के लिए स्वच्छन्दता का मार्ग खला हमा रह गया। वस यही सन्याय है। परन्तु इस सन्याय को मिटाने का इलाज पुरुष के साथ साथ स्त्री के स्वच्छन्द चन जाने मे नहीं होगा। स्त्री का पुरुप के प्रति जिल्ला कर्तांच्य समक्षा जाता है, उतना ही कर्तांच्य पुरुप का स्त्री के प्रति समक्ता जाए तो यह स्त्री-पूरुप का जोड़ा अवश्य मुखी रहेगा। भारतवर्प के लिए इसी में कल्याला है कि वह अपने प्राचीन आदर्शको पुनर्जीदित करके आजकल के युग धर्मानुसार ठीक ठीक व्यवहार में परिएास कर दिया जाए।

पत्र को प्रारम्भ करते समय इतने प्रवाह में पड़ जाने का मेरा विचार नहीं था। मैं तो कैवल यही तताना देना चाहानां था कि कार्यस फ्रांदिल में कार्यवाहियों में प्राप्ते दिना प्रकेला ही भाग ने रहा हूँ, यह बात मेरे हृदय में कई बार खटक जाती है। मैं यह सोधा करता हूं कि घल तक तो आपकी धीर मेरी विज्ञा में धन्तर रह गया, उसमें न मेरा विज्ञा है धीर न प्राप्ता । परन्तु घल मैं जितना धाये वढ़ जाऊ धीर धाप जितनी पीछे रह जाओ जसमें मेरा ही मेरा जिम्मा है। मैं प्रतिदिन नाना प्रकार के चनुपत्र कर लू, नाना प्रकार के जान सम्पादन करन्तुं, नाना प्रकार के विचार करत्तु, और इन सब कार्यों में प्राप्ता साथ रहे तो आप केशी सहचारियी धीर केशी सहम्प्रियी। पिछली जितनी कमी रह गयी है उसको स्वावस्य कम कर देने का प्रवन्त मेरी धीर से होना चाहिए, यह भुम्में मेरा निश्चित नहीं। मैं तो इस तत्व को मनी भाति समभने लग गया हूं और मुभको आशा है आप भी जरदी ही सब समभ लोगी। हमारे समाज का जीवन प्र जरूत कई तरह से फूठा है, हमारी याकाक्षाए परिमिन है, हमारा कार्यश्रेत, हमारा विचार क्षेत्र, कुटुम्ब मे बस्वकर समुचित हो गया है, इसका विकास करना, इसको पारमाधिक रूप देना, यह आगे के निए प्रीपास है।

परिवार में जीवन विशाना, बच्चे पैदा करना, मकान बनवाना, जेवर और कपड़े बनवाना, ब्याह, बादी ग्रीर नुकते में स्वयं खर्च करना, धन की बालसा रखना, यह ही हर कोई करता है। मै ग्रव यह बाहुना हुं कि इस माधारण श्रेणी में से नदा के लिए निकल जा का धीर जान बूक्तकर परीक्षी का बत ने लु। क्यों कि गरीबी का बन लिये विना मनुष्प नि स्वार्थ नहीं हो सकता और नि स्वार्थ हुए बिना मच्चा नहीं रह मकता और सचनाई के विना ग्रसली यल नहीं या मकता बीर ग्रमली वल के विना कोई भी ग्रमणी काम नहीं ही मकता । जिस मनुष्य को अपने सर्च के लिये बहुत सा स्प्या चाहिए उसे किमी न किसी का दवीदार नो रहना ही पडेबा। बहु आजादों में नहीं मोच मकना, आजादी में नहीं बील सकता, और आजादी में नहीं सिल सकता है। वह लोगों को सपने मन की बात नहीं कह सकता और मन की बात कहे विना लोग उसका साथ नहीं दे नकते । और बिना साथी के वह ग्रक्षना कुछ कर नहीं मद्भता। रही भोजन बस्त्र को बात, सो किसी भी सच्चे काम करने वाले को मोजन वस्त्र की कमी रह नहीं नकती, और रही तो रही। लाखी करीडी की सख्या में ऐसे ब्रादमी इस देश में हैं जिन्हें न पेट भर सोबन सिलना, न समय पर बस्त्र मिनता, तो ग्रसस्य मनुष्यों के साथ बोडे से मनुष्य जान वृत्रकर हो बाए और भाराम में रहने की गरिक होने हुए भी उसकी अपने काम में नहीं लेना, नया यह ऊँचे दर्जे की बात मही है ? अब दर्जे की बात मुक्ते इसलिए कहनी पड़ती है कि ग्रभी तक हमारे पहा ऐसा ही हरों चल रहा है कि लोग अपने कूटम्ब के बाहर अपना कर्त्तव्य ही नहीं समभने और अपनी छोटी-छोटी जाति के प्रति यह कर्त्तव्य समझते हे कि मौड़ा पडने पर उन्हें बुलाकर जिमा दिया जाए।

पत नी बार यह पत्र मैंने अजमोहन को निलवा दिया है। सीनारामजी भी इस पत्र को रसात होन के पहले देखें । यह पत्र आपके दिसाती आदि भी पत्र तो कोई आपति कहीं है। स्मीत अस अपने परस्पर में ऐसी कम के कम वातें रहनी चाहिए समझा नहीं है। स्मीति अस वातें रहनी चाहिए समझा नहीं रहनी चाहिए समझा नहीं रहनी चाहिए मिल्र समझा नहीं कर पाता हु जो मुझे जल समझ मिनेया जब मेरा और आपका जीवन एक खुली पुस्तक के समझ हो जाएगा जिसे को चाहे पढ़, सीर जुए मता, बेली इच्छा हो बताए पीर मुक्ते दि समझा हो जाएगा जिसे को चाहे पढ़, सीर जुए मता, बेली इच्छा हो बताए पीर मुक्ते दि सता हो जाएगा जिसे को चाहे पढ़, सीर जुए मता को माज, विचार हो विवार, तात में तात, राज में रा, मजी में पड़ा मिलाने को तीचार हो जाओं और पुन्ने विचार हो हि साथ बहुन जल्दी मागे बढ़ जाओगी। में उस क्षाण की प्रतिमा मेरे सामने रस रहा हूं धीर मेरा हृदय एक विवासण प्रकार के प्रानन्य में महन्म हो रहा है। उस क्षाण को जल्दी सामा मेरे हाम में सी है। साद इस यात्रा में मेरा हृदय में साथ दोगी, सह नेरी मानवा है सीर बाला है।

(2)

लांबा, ३१ ३-३६

ता० २३-३ को धापके साने के तुरन्त पहुले में एक खत्यन्त निराणाजनक मीटिय लस्म करके उठा था। कुछ तो मेरी निववत पहुले में ही बराव थी, कुछ, उम मीटिय के परिशास के कारएस से हो। गयो। घीटिय ने विवान यह था कि बाहर चवाने पर कोत कौन किस किस काम की जिम्मेदारी में में को ठप्पार है। निवीजा वही निकल्ता था जो उस दिव के पहुने ऐसी मीटियों का निकल्ता रहा है। मैंने यह साफ बचला दिया था कि "मेरी यह मिकावत की जाती रही है कि मैं हिटल्तर हु, किसी को कुछ नहीं समस्त्रा, सारा काम धपने ही हाथ मे रलना पसन्द करता हूं। किसी को काम का मौका नहीं देता, किसी का विश्वाम भी नहीं करता। धाज मैंने काम के बटलार के लिए मक्के सामने कहा है तब कोई जिम्मेवारी लेते को तस्पार नहीं है तो किर बनलावा जाए किस तर उरह से काम को बाटा जाए। यह हास धाज भी है—पिछले सान में इससे खच्छा हाल करें रह मकता वा पर पर लंद, धन समस्त्रा कोई यह न कहें कि मैं धपना बटलार करना पत्तर वहीं करता हूं।"

इस तरह में मैं विचारों के चक्कर में पड़ा था — यह विल्कुल नहीं सोचा था कि ब्राज कोई मुक्त मे या किसी से भी मिलने को बाएगा। यानी मैं किसी से वातचीत करने की तस्त्रारी में विल्कुल नही था। कुछ भी नोट किया हुआ नही था। फिर राजकर्मचारियो न जन्दी करना शृह कर दिया--हालाकि जो लीग जल्दी सचा रहे थे, उनके प्रधिकार की वात यह नहीं थी-पर उम समय मेरे चित्त पर यही ग्रसर रहा कि इन लोगों की घाधली का मुकाबिला करना टीक नहीं रहेगा । २६-३ को सज्जन नडिकयों को लेकर झाएगी, इसका . मैंन एक मृत्दर चित्र अपने दिमाग मे बना रखा था वह चित्र विगड गया। श्रडकियों को न लाने की बात ठीक थी, यह मेरी बृद्धि ने स्वीकार कर लिया - क्योंकि मैने यह सोच लिया कि साप लोगों के ध्यान में यह नहीं स्नाता होगा कि लहिकयों को बुलाने की बात मस्ते क्यों सभी। लडकियों के साथ मेरा पागलपन का प्यार है, यह तो सभी जानते हैं ? बाकी इस तरफ शायद ग्रापका भी ध्यान नही गया होगा-या कम गया होगा कि मैं विद्यालय के प्रचार की बड़ी धुन मे रहता हूं। में अपने यहा के नाथियों को बतलाना चाहता था कि बनस्थली की बालिकाए क्या चीज है-वे किननी जानकारी रखती है, कितनी निर्भय है। श्रीर किम हंद नक राष्ट्रीय भावों में श्रोतप्रोत है। यह मौका हाय से जाता रहा जिससे मुक्तको वडा दु.ख दुआ। इनके अलावा आपके साथ गोपाल की विशेष श्रीमारी के समाचार भी श्राये—ग्राप जानती है भेरा हृदय इन मामनो में किनता नाजुक है—ग्रीर मैं ग्रपनी जिम्मेदारी को भी कितना ज्यादा यहमूम करता है।

मैंने ध्रापको यह बतलाने की कोशिश की है कि उम दिन की मिलाई में मुझे कुछ मजा नहीं ध्राया । उक्षमें इनना ध्रयुरापन रह गया कि ध्राय लोगों के जाने के बाद मैं यो ही देखता ही रहें गया । न मैंने भाई सारू ऋलानीबी से कुछ बात को, विद्यालय को मार्बी १४८ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

योजना की रूपरेखा की बेहस उनमें मैं कर लेना चाहता था-ताकि व्यट्टियों के बाद हम ग्रन्छी तरह शुरुग्रान कर सकें। ग्रापसे विद्यालय की ग्राधिक स्विति की वाह विस्तार से करने की थी। मुक्तको यह पुछने का स्थाल भी नहीं रहा कि रुपये की ग्रादक्यकता बतलायी जाने पर भागी न्थजी ने श्रापको क्या उत्तरदिया। बापसे एक दो मित्रट तो जरा सी खाम बात भी करनी ही थी। बाप कई बार मिली, परन्तु आपको ग्राप्टवर्य होना होगा कि यह ग्रादमी भी कितना रुखा हो गया है। सार्वजनिक सामलों में यह पायन तो नहीं हो गया है। मैं नीरस हो गवा हु, सो बात तो नहीं है। परन्तु सुक्त में कूछ मजबूती जरूर आयी है। जो ग्रादमी जिस बात में कच्चा है उसी बात को दीक टीक भेल जाने की ताकत भी उसमें ब्राही जाती है बजतें कि वह मच्चा हो। सज्जन से दो बात करनी थी। एक वार उसने मेरी तरफ अच्छी तरह से देखा था। उसी समय इत्तिफाक मे मेरा दिल कुछ भरा हुआ सा था। मैंने बाद भे सोचा कही लड़को यह तो नहीं समऋ गयी होगी कि मैं यहां के -जीवन से दुवी हू। मैं उसका उत्तर पूछता बाहता था, प्रत्येक का नाम से लेकर सड़कियों के बारे में बहुत भी बाने पूछना चाहता या और काम के बारे में उसमें सब कूछ जानना चाहनाथा। यह सब विचार घरेरह गये। श्यासजी से भी कुछ बात न कर पाया। उनका चित्र श्रव्हबार में छुप गया। श्यामजी भी अपने श्रापको कुछ समभने लगे होगे। उसके बारे में खबाल रहा कि उसकी पढ़ाई गडबड में पड रही है। सार्वजनिक कार्यकर्तामी को किस किस बात का त्याग नहीं करना पडता। हमारे ऊपर तो ग्रमल में कम ही चीटें मायी है। बाकी इसी देश मे लोगों ने अपने सब तरह की-सर्वस्व की चाहुित लगा थी है। धन गया, आशाम गया, पारिवारिक जीवन गया, बच्चो की शिक्षा तक भी गयी। और दुनिया ने जाना तक नहीं किस उच्चकोटि का त्याग उन लोगों ने किया है। हमकी भर्मी वैसे त्याग को ग्रवसर नही मिशा है। इस उस कसौटी पर कसे ही नहीं येथे हैं।

स्वापको यह जानकर सन्नाय होगा कि दो एक दिनो मे घेरी तिवयत सासतीर से सुत्र है । सरीर भी अच्छा है धीर यन हे थी मन्त है । बनन १६ वीड के दीचे नहीं तथा है-एक दो पीड बता मानुम होता है । बिना थी का भीवन खब क्य गय है-पि है भीर प्रावदा अच्छी तरह निभ जाएगी-मुक्तो हो बाद बहुत पूजा दहना पहता है- भै प्रपन्न िए किसी से विदेश कुछ कहना नहीं चाहता-चने (शू गड़े) मगवाने चाहे थे ४-७ दिन हो गये, आज तक आये ही गहीं। जो का बादा चाहा था वह भी नहीं खाता है । हरा सात बासतीर से चाहिंदु और वह मिल हो गहीं तथा । यह दो मैंने वेंसे हो दिल दिया है । सात नो सात्र अंत आप हो गयों का बादा था वा वा सात्र बात तो यह है कि रहन-सहन की होट से मैं तैक हैं। जादार छोचने हो, ज्यादा चढ़ने से दिमाय प्यपत्र सा जाता था। कत से मैंने ताच खेतना किर गुरू किया है जब कभी दिमाय ये आरोपन मानूम पढ़ेगा-तभी मैंने सोचा है मैं ताल खेतना किर गुरू किया है जब कभी दिमाय ये आरोपन मानूम पढ़ेगा-तभी मैंने सोचा है मैं ताल खेतना किर ने पत्र कर बात्र के स्वाप्त कर में से सात्र बंदने कर बाता था। युद्ध-साम का सबद तो में से निकल तातर है-पी-हर सात्र सात्र वालता है। चीता के घटपपन के प्रमादा पह भी भोचना है सिंद आ जाती है, तो बाद में पद्धाता है। चीता के घटपपन के प्रमादा पर भी भोचना है कि मीता क्यपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यह है होता है कि ऐसे सनुवाद कर डानू-स्वयान यह है होता क्य ज्यपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यह है होता है कि ऐसे सनुवाद कर डानू-स्वयान यह है होता के प्रमादा यह मी सोचन है कि मीता का जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यह होता है कि सीत जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यह होता है हिता है कि सीत जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यह होता है हिता है कि सीत जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यही होता है है तह है है है है होता है कि ऐसे सनुवाद कर डानू-स्वयान यही होता है है होता है कि ऐसे सनुवाद कर डानू-स्वयान यही होता है कि सीत जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यही होता है हिता है कि ऐसे सनुवाद कर डानू-स्वयान वित्य होता कर है होता है कि सीत जयपुर्ध वोती में अनुवाद कर डानू-स्वयान यही होता है होता है कि सीत जयपुर्ध वोता कर डानू-सात्र सीत होता कर डानू-सात्र सीत होता कर डानू-सात्र सीत है है सात्र सीत होता है होता है। सात्र सीत सीत सीत होता है सीत

विशेष उपयोग नही होगा । एक काम उहुँ का श्रम्यास करने का सोचा है । वहरहास मेरे समय का उपयोग घव श्रम्छा हो आएगा-ग्रीर खब मुक्ते किसी तरह की तकनीफ नहीं होगी। इस शारे मे ग्राप सर्वया निश्चिन्त रहें-धौर सब लोगों को निश्चिन्त करदें।

एक तो भ्रान्दोलन के स्थागत हो जाने से मैं मुखी हो गया। जब म्रान्दोलन जारी मा तो भेरा दिल बरावर वही रहता था । बत्यन्त नम्रता के माथ मही, परन्तु इस सारे काम का बीद' में प्रपने ग्रापको ही समभता हैं। ऐसा अनुभव होना है कि मैं ही इस काम की चला रहा हैं। छोटे भाइयो, बराबर के माइयो, बढे भाइयो और गुरुवनों का नारा प्रताप है सही । फिर भी मेरा स्थान विशेष है कम से कम मैं यही समक्त कर चलता हैं। श्रीय मे सभी भागीदार होते हैं-कूछ विगाड हो जाए तो उसका जिम्मा मेरे सित्राय ग्रीर किसी का नहीं हो सकता। मैं ही इस भड़ाई को शुरू करवाने बाला है-इसमें हार हो जाए या और कोई विष्न ब्रा जाए तो मैं सोचता हैं मेरा मुह काला हो जाए-मैं स्वभाव ने ऐसा मानता हैं। सास कर मेरे कारण में जमनालासजी हैं, जमनालासजी के कारण से गांधीजी हैं यह ऊपर की तरफ और नीचे की सरफ वनस्थली के फक्कड़ो का यह सारा काम है-भीर मेरे विना फक्कड इस जाम में क्यो और कैसे पड़ने ? धन्धेश्वारी साथियों में पाटनीजी जैसे मे थोडा बहुत काम ले लिया है। इन साथियों में कई सच्चे बादमी हैं, परन्तु परिस्थिति से मजबूर हैं कई, ब्रादतो से लाचार हैं कई ! पिही (छोटी मी चिडिया) क्या ब्राकाश को उठा सकती है परन्तु मैं पिट्टी ऐसा ही समभता हैं। यह दूरा हो, चाहे बच्छा इस कारता से मुभ-को चैन नहीं पडता था-बड़ा ब्याकुल मैं रहता था। पीछ रहते वालो ने शानदार काम किया जनता ने बड़ा जबर्दस्त साथ दिया-राज वालो के दान जहर खट्टे हो गये । प्रपना ग्रान्दोयन भपने शिखर की तरफ पहुँचा का रहा था- ऐसे मौके पर गांधीजी ने स्थित करने का सादेश दिया । गांधीजी जैसे महापुरुष के हाथों से हम सूरक्षित हैं-को कुछ नतीजा आएगा वह भच्छा ही माएगा भीर जयपुर के सिर विजय का सहरा जरुर ही बन्धने वाला है। तथास्तु ।

 १५० ] प्रस्यक्षजीवनशास्त्र

में भानता है। मैं भीतर हां भीतर मूटा, मैंने भीतर के बातावरण का सुपार वाहा, अपने ग्रापको कायम रखा, इसका भी कुछ अमर पढा होगा क्या ? यह मैं बाश्चर्य के साथ दिवार करता है। इसरे लोगों में मेरे मन्दर कब्दी उवाट हों जाती है, इसीनिए दूसरे लोग मुफ्ने उवट जाते होंगे, मवंग हमकर काम करता, किस्टाचार के नियम निभावा, दिल के भीतर कुछ हो या नहीं वाहर में व्यवहार अच्छा रखाया यह कवा मेरी मीखी हुई नही है, बुनिया में इसकी जरुरत तो है। यही मबसे बटी कभी चेरी है। यें बहुत कम मौका प्रमारि हीता है। और भेरे पम्भीर भीको में भी काम की गम्भीरता ही चलती रख़ती है।

पिछले १० दिन में (बल्कि २० दिन से जब वह नया गजट राजनैतिक संस्थामी के बारे में निकला था) हमारे चढने का एक नवा किस्मा चल पटा । मत्यावह स्थिपत हमा. तो छुटना ही चाहिए? स्त्रियों को छोड़ दिया गया है तो हमको भी छोड़ना ही चाहिए, लवर उर गई कि जमनालानजी दिल्ली गये हैं-जब जमनालानजी छटकर दिल्ली गये तो हमको भी छूटना ही चाहिए। यहा बेकार बैठे हैं बाहर निकल तो काम करे। जलमें की तय्यारी करे । जनकड सथ की स्कीम ठीक करें । विद्यालय को सम्भालें । इसलिय छुटना अच्छा ही है, इस नरह मैं भी सोचने लगा और लोगों ने अपनी सोची-परन्तु छूटने के लिए सभी अस्कठित मालूम पडते है । कल पहले पहल मैंने यह मोचा कि हमारा जस्दी छुटना ठीक मही हैं हमको जन्दी छोड़ने से राज का पक्ष सजबूत होता है-और हमको छोड़ने में जितनी देर होगी उतना ही राज का पक्ष कमजोर होगा भगडे की खास खास बातें होने के बाद ही हमको छुटना चाहिए-पहने छुटने में काम बिगड सकता है। जयपूर का सवाल बैसे सीधा है फिर भी राज वालो में समक्रदारी या उदारना का माहा विल्कुल वहीं है-सो सीया मामला भी वाद में जनका हुया रह मकता है। किसानों को छोड़ने का सवाल, मीकर बालों की छोडनं का सवाल-ये सीघे नही है। नागरिक अधिकारो को राज यो ही कैसे दे देगा और सच्चा शामन मुद्यार भी करना मुक्किल ही है। असल से ये लोग खुद की सीप से उरते हैं-इमीनिए मारी कोनमाल है-नहीं तो जयपुर में लडाई का काम ही क्या था। अस्तु। पिछने १० दिन हमारे वर्बाद से हो गये। अब हमने यह समाम लिया कि जब छुटेंगे जब छुटे जाएग-हम इम बारे में सीचन की जरुरत ही नहीं। गांधीजी के हायों में मामला है और वे को बुछ करेंगे। वह दीक होगा।

यादी प्रदर्शनी हो रही है किसी बड़े नेना को बुना रहे है। यह सब मुख प्रच्छा है। मेरे मानने भविष्य का उत्थवन वित्र धाना रहता है-राजस्थान ना राष्ट्रीय विद्यापीठन्यन-स्थली, राजस्थान ना राज्योनिक केन्द्र-अवपुर, राजस्थान की सेवक मक्टाी-अजन्य स्थलन आने अधान्या सीचना रहता है। आदिमयों का जोड़-तीड लगाना रहना हैं। कमी-कमी रंपये पैने की चिन्ता भी हो जाती है कारण यह है कि माधारण्याचा बनिकों के माथ मेरी पटने की धामा नहीं किर भी विश्वास है कि काम सामक रंपया ठी आहा हो रहेगा। लांबा, २८-४-३६

परतों की मुनाकान के अन्त की दो वातों के जवाव में उस समय नहीं दे सका। एक तो प्रापने कहा या कि मैं प्रसन्त नहीं दिखायी देना हूँ-सो मुकको प्रमप्त रहना चाहिए। इसरी बात भोजन के बारे में मानीरचंत्री ने कहीं थी।

मैं प्राजकल खुब प्रसंत्र रहता हूँ-यों तो अपने काम काज की (बनस्थली की प्राजिक स्थित की तथा प्रवामवल के आवी कार्यकर की) घोडी बहुत विन्ता सो मुक्ते होनी रहती है-खासकर इन कारण से कि यहां बैठा हुया मैं अपने आपको प्रमहाग्यवस्था में पाता हैं। और बाइर के कार्यकर्ताओं को स्थित वैमी नहीं मानूस पढ रही हैं वैसी से मुक्ते नामें हो मकता। और किसी बात का मेरे विन्त पर कुछ भी बोक्ता नहीं है। उस दिन में गायी बी का पात्रकोट विपयक बनन्दर हिन्दी में देल पुका था। वह बक्त क्या बढ़ दर्दनिक मानी र एक दो जगह मेरे समक्ष में कम बैठा था। मैं उस बक्त का ठीक ठीक प्रमें लगानी की चेवड के मान स्था में भी मान के उपेड कुक में साम में कम बैठा था। मैं उस बक्त का ठीक ठीक प्रमें लगाने की चेवड के मान स्था में भी मी मान विद्युक्त होना रहता है-राजकोट के बाद गांधीओं कलकता आएं। वहां कैती क्या विपयती है सो बीक्त भी मेरे दिला पर या जी दिन जी बोकेट को का का आपने थे चीर विस्तार से बाद करके लोट कुक थे। पहले पित देशवाई आदि में जो समाचार मिने थे उन पर से भी कई तर्क विवर्क कन रहे थे। इस मन कारणों से जम दिन में बात साधारों दिवार विवर्क कन पर से भी कही तर्क विवर्क कन रहे थे। इस मन कारणों से उन दिन में बार आधारों दिवार निमस्त (धयबा, कम प्रमन्न कम हमना हुया) मालूय पहला में बिलता की कोई वात नहीं है।

एक बात यह भी है कि यहा मैं धकेलायन धनुभव करता है। सब नियाहियों धादि में भी वही दोस्ती है-पुक्ति देखते ही वे खिल उठने है-में भी उन्हें देखतर खुश होता है। कि न के साधियों में भी एक दो को छोड़कर कोई ऐसा नहीं है जिसमें मेरी ठीक ठीक न निमाहित हो-दिन एक दो को भीन प्रणवाद किया है, उनते भी बेरी जाहित्य कोई गढ़वड़ मही है। फिर भी यहां को मेंन प्रणवाद किया है, उनते भी बेरी जाहित्य कोई गढ़वड़ मही है। फिर भी यहां के राग दात है में कलाइ करते हैं। करते के महे कलाइ हु-परन्तु डिजातीयता का धनुभव होने से "साथ का" आनी दूमरों के साथ रहने का मज़ करत है। वात है। करते वात प्रेत हैं। करते वात पेनी हैं जिसकी में लिक्ता प्रवत्य नहीं करता-न कहता ही जाता है। करता वातों को सोचना भी भुमको प्रच्या नहीं लगता। एक जरा सी दात को ही लीजिए। में साधारण भोजन करता हूं तो सन्भुच ही एक मिदाल के अनुसार एक जाने हुए धादश्री को निमाने का ईमानदारी के साथ प्रवस्त करने ने तीर पर करता हूं। साधारण्य प्रयोज की निमाने का ईमानदारी के साथ प्रवस्त करने ने तीर पर करता हूं। साधारण्य पुत्रे लोग पुत्रमें सहजुपूर्वित राज सकते हैं कि एना करने में मेरे मा कट्ट उठाकर एक घड़ा प्रवस्त कर रहा हूं। से किन दुर्गाय मेरे सादियों में साधार ही कोई एकाथ ऐसा निपटे जिसके चित में मेरे प्रति सहनुपूर्तिया संतीय सतियों में साधार ही कोई एकाथ ऐसा निपटे जिसके चित में मेरे प्रति सहनुपूर्तिया सतीय को भाव ही।

में ऐसा महसून जनवा हूं जि इन भोगों में से सिंदगंज को यह बात घटमधी की मासून पहती है, उनका का बंद तो दे इन बात का नवान उठा नवते हैं और उब उनकी मेरों अनुतासित ने सौता जिदमा है तो से नुकानवीती करते मुंग मानून हों हैं। इसी वह से सतात में प्रतित्व नहीं होता है 'जे जा कियानुहुंक रहता हूं इस्तित्व उठा प्रमान मा भी रहता प्रतात में प्रतित्व नहीं होता है 'जे जा कियानुहुंक रहता हूं इस्तित्व उठा प्रमान मा भी रहता प्रतान सेप की निक्र मा में क्या कार्या है। पाता हूं कियी बैठता भी हूं तो वह तीचे बजें भी प्रतान सीर केर कियानों मुक्त मात्री नहीं । कारवात निवास का स्वास्थ्य स्वकार है कि पहीं बातों मुक्तों हे को सुकता है जा कर बढ़ी वार्ष पित्रने सत्व प्रसान स्वत्य स्वत्य पहीं बातों मुक्तों हे को सुकता है जिस सोबीती मुक्त पर यह करनीय मात्र होते पहते हैं, बड़ी विक्रीता के बाय कहा जाता है। 'उन्होंन यह बढ़वड़ करती। भीर वह पड़वड़ बारी-सोबीसी ने नाग बान की दिवाड दियां 'निवर नी मो को प्रवास समस्वार और सिक्ता काहिए या जाती है जाता है वह वह बीद वह सीर सोह विक्त मानने ये बारों पुतान का बर्दीत होता है, इस्तिक में विक्त के वह के बीद वह कियो नहीं पड़वा हैं।

भीने पह बन्दाने को बोधिया की है कि मुस्ताने बहेनेवन का बनुसन करों होता है। मेरा इन्ता न्योवल नहीं है कि मुस्तानर इत बालों का बनर कर्ज न पड़े और यह सी मेरे बयोदन की बसी ही सकती है कि सामियों पर सीबी बात का सीया मजरान पड़कर सक्सर उच्छा ही प्रमाण बन्दा हुस्ता मुस्तानों समृत्त पड़जा है। परम्बु इस स्थिति के बाबदुर्व में निरिज्यन और सामायाद की हुम्लि ने स्टूला हूं। इसना सबस्य है जि यह स्थिति ऐसी ही होती हो से एस्ट्रा सन्ता पर सकता था।

मोदन की बाद नो इननी भी है कि जैसा भोजन मैं कर रहा हूं उसने मेरी उन्दुरन्ती कगद्र नहीं हो नक्ती। यहां के पानी की दो उत्तरां है वह तो सबके लिए है-पानी का कोटों में दर्द कर देने का समर मानून पटना है। इसके समावा पीटिटर मौजन न करने है हुछ दुवना होता, बबन कन होना या हुछ कमबोर ना मालून पड़ना-यह हो मणता है। बानी दन्तुरम्ती सगद नहीं हो नक्दी । दो चार महीनों तक मोजन की कमी से जो कन-कोरी काएती वह नहीने बीच दिन तक टीक को दन कर सेने में टीक ही बाएगी। अब मान्दीपन की बारें चन रही थी। तमी (जैयनकुटीर बाले) माधी कार्यकर्ताओं की सीर मे मुल्को मानून परा या कि दनके खरान ने मुस्को "ए क्लाम" मिने तो मी नेपा नहीं चाहिए और यही मेरा समान मी या । बान्दोनन छिटा और हम देन मे पहेंचे । सरन्त ही यह पटा चना कि राज बाने समी राजनैतिक वैदियों के मृत्य नाघारत बर्नाव करना चाहने हैं। हमको बरूर्स मामुम पड़ा कि रावगैठिक कैंद्रियों की हैनियन कायम करवाने के लिए हमको नड़ना चाहिए । इसीनिए हमने मुख हड़वाल की । भून हड़नान में हमारी जीन हुई और हमारी मांग के बनुनार राजगैतिक केंद्रियों को हैनियन कायम हो गयी। उस पर्य-माघारए हैं फिन्ड के मुकादिने में नादा दानों को दिशेष मुदिधार्वे निन्ती और बाद में पता चला कि मैंट्रल देन में दहत मानुनी वर्जाब होने नया । यह तक नेष्ट्रन देन की बाउ मामने न ब्रामी तब तक मूनको मोहनपुरा की सबसाधारए। की स्विति में रहने में कोई ब्राप्ति

(8)

भाराता कैष्प,२८-५-३६

मुझे अहरत मालून हो रही ची कि मैं चोडी सी सिद्धान्त चर्चा प्रायते कर-नाकि प्रांपको मेरे यहाँ के व्यवहार के बारे में किसी तरह का शक्शुवा या बहुम न रहे---म्राप सारी स्थित को सही-ग्रही समक्ष सकें।

ग्रापको पता है कि मैं ग्रपने ग्रापको सच्चा ग्रादमी मानता हुं—इस ग्रयं में कि मैं जानवुभ कर कभी गनत बात नहीं कहता । लेक्नि बेन में रहते हुए मैंने सेवा के मीह में धाकर कुछ काम ऐसे किए जिनके दारे से कभी सीचे सवाल जवाब का सीका था जाए ती उनको ज्यो के त्यों क्वून करने में मुफ़को बड़ा बोर बावे । यह स्थित 'मत्य' की हिट में टीक नहीं हुई । यह बान जरर है कि जिन जेत में हमको रखा गया है उसके नियम हमको बाज तक किसी ने नहीं अनाचे हैं। क्लिने दिन में दिलाई होती है, पत्र व्यवहार कैसे होता है, क्तिनों देर दिलाई होती है, किमी के मामने होनी है या नही, हम मिलने वालों से संब तरह की बान कर सकते हैं या नहीं, बाहर में किसी चीज के बाने जाने की स्कावट है या नहीं - कम से कम मेरे लिए सही बात यह होती कि मैं इन बानो को राज से साफ कराने की कोशिश करना – कुछ बार्ने माफ होनी —एकाष शायद माफ न भी हो पाती-परन्तु साफ होते के बाद जो स्थित होती वह हमारे वहन 'जिलाफ' पड़ती-सीर जो 'मुविधाए' हमकी मिली हुई हम समभते हैं वे एक बड़ी हुद तक कम हो जानी । ऐसा होता तो मैं अपने सामियों की तरफ में 'शाप का पात्र' हो जाना और मेरा खुद का 'सार्वजनिक हित का मीहें भी एक बडी हद तक पार नहीं पडता । वह होना नो बच्दा होना या बुरा—इसका विचार करने के लिए प्रव कौन बेठे ? मैंने सार्वजनिक हित के मोह में बाकर बाप लोगों से राज-नोति की बारों करना ठीक समझा, इसी बारे से पत्र भेजना ठीक समझा, ज्यादा देर तक कामकाज की बातें करने से कोई हुआ नहीं समभा, एकाध बार बेवता ही जाने पर स्नापके बहा पर भौजन कर लेने में भी जोई ब्रापत्ति नहीं सबभी, एक ने ब्रिधक बार गुमनाम से लेख लिखकर और चपके से बाहर भेजकर अखबारी में छपवा देने में गर्व का जनूमव किया, हरयादि । परन्तु मुफ्रको इतना मनोग ग्रवक्य है कि मैने अपनी व्यक्तिगत मुनिधा की दृष्टि में प्राय कुछ नहीं किया। जो कुछ किया वह प्राय सभी कुछ मार्वजनिक हित की हस्टि में किया। लेकिन मद मैंने मोचा है कि यह भी ठीक नहीं था। सिद्धान्त और व्यवहार दोनी की हिट में जैल से बाले के बाद बाहर की विल्ला रखना बुद्धिमानी का काम नहीं है। मिद्धान्त के अनुमार तो यह एक तरह की चोरी है - और व्यवहार के हिमाब से यह सारा प्रपच द लडायी है। इसके अलावा पत्र भेजने और स्वीकार करने का बचा तो जोविस में भरा हुमा भी है। भरा बह विक्वास है कि इतना प्रपच करके भी में सार्वजनिक हित की सिद्धि नहीं कर पाया- गायद ही बुद्ध साभ हुम्रा हो। फिर यह प्रपच क्यों किया गया ? इस मामने त्री वहम बहुत लवी हो सकती है - परन्तु आव लवी बहुस मे पड़ने का मेरा विचार नहीं है। सौधी बात तो इननी ही है कि जब गांधीजी के सत्वावधान में सत्याप्रह चला तो हमारे लिए कोई कारण नहीं कि हम अपने आचरण को गाधीजी के माने हुए तिद्वान्त के विपरीत होने दें । व्यावहारिक हिष्ट में मैं यह मोचता है कि मुमको मपने सायियों की और अपनी निज की स्थिति में राज वालों में बात करने के अगड़े में बन नहीं पडना चाहिए और राज वालो ने किन्ही वार्तों को साफ नही किया तो यह उनका जिम्मा भी है। ग्रापने लाकर सविधन ऑफिसर से इजावन मानी, उसने देदी, कीन-कीन माने धीर कितने ब्रादमी ब्रावें यह साफ नहीं —वो फिर कोई भी १०-५ ब्रादमी ब्रा सकते हैं -यहाँ पहुँचने पर कोई राजकर्मवारी यह फिक नहीं करता कि आपको अपनी मौजुदगी में हमते

मिलावे तो ग्रापको हमको यह फिक करने की क्या जरुरत पडी है - ज्यादा देर तक ठहरने पर भी कोई ऐतराज न करें तो ग्रपन क्यो यह खयाल करें कि ज्यादा देर ठहरना ठीक नही हुमा। ग्रीर जब एकान्त में बैठे बात करते हैं तो अपने आपने सब तरह की बात करने ु को ग्राजादो है हो। इननी बात जरुर है कि जब हमको यह मानूम है कि ग्राफिपरइन-चार्ज महसूस तो करता है लेकिन लिहाज के मारे बुद्ध बहुता नहीं तो फिर हमारा धर्म है कि हम समकी पोजीशन को खराब न करें। बारीक सिद्धान्त के हिसाब से मेरी यह दसीलवाजी ठीक साबित हो या नहीं, परन्तु माधारखतया तो मुक्तको डम्पे सिद्धान्त की हानि नहीं सालूम पडती। परन्तु कोई बिना इजाजत ही बा जाए तो उससे मिल सना तो ठीक नहीं हो सकता उसमे जो लिम भी बहुत है - जयपुर में विना इजाजत था जाए ग्रीर पाटक पर जमको कोई रोके नहीं और भीतर बाने दिवा जाए तो फिर हमारा क्या कुसर हुआ ? कूमूर हुमा तो उनका जिन्होंने रोका नहीं । सेकिन हम यह तो जानते हैं कि नहीं रोकने वाले हमारे साथ रियायत करते हैं-शौर उनकी यह तय्यारी नहीं कि मौका पड़ने पर वे गड़बढ़ को मज़र करलें। दूसरा बिना इजाजन साना यह हुआ कि चुपके से पिछले फाटक पर भाजाए और चोरो की तरह बात की जाए। कुछ प्रापत्ति रहित सामान देने के लिए कोई माधारण श्रादमी भीतर तक बा जाए, यह दूमरी बात है—हानांकि हिमाव से तो उमे भी भीतर बाने देना नहीं चाहिए। गडवड तो लावा में भी चलती थी पश्स्य यहा झाने के बाद ऐसी गड़बड बहुत हो गयी यानी मेरी बर्दाश्त की हद के बाहर हो गयी और जब मुभको यह मालूम हो कि मैं खद भी-सार्वजनिक हिन की दृष्टि से ही सही गृहबह में एक हद तक तो शामिल होता है तो फिर मैं दूसरों को क्या कह सक् ? इसलिए मैंने यह निश्चय किया है कि मैं प्रपने प्रापको जैल जीवन की कडी कसौटी पर क्सू —धौर घोडी सी कडाई जरुरत से ज्यादा भी इसलिए कह कि गुजरे हुए जमाने का कुछ प्रायरिचत हो भौर स्नाइन्दा के जेन जीवन के लिए मुक्को ट्रेनिय भी मिले। विना इजाजत स्नाये हुए स्नादमी में बात नहीं करना, यहां तक कि रामप्रताप जैसे में भी नहीं करना (वह म्राइन्दा भीतर म्राएमा ही क्यों ?) कोई खास काम हुयै विना अपने मकान के बाहर नहीं जाना - मकान की चार दीवारी के बाहर तो जाना ही नहीं लेकिन इस हवेली के सामन वाले चौक से भी बहुत खास काम बिना नहीं जाना, भीजन के समय भीजनशाला में, शीब के समय पालानी म, स्नान के समय स्नानघर मे, पेशाय करने को या आराम के समय उत्पर की धृत पर, घुमने के समय घूमने के स्थान में, काम होने पर साथियों के कमरों मे-इस हिसाब से बाहर ग्राना जाना-जो मिलने वाले मेरे कमरे में ग्रावें उनसे सावारए। वात प्रेम के साथ करली जाए। बाहर पत्र नेजने का तो कोई सवाल ही नहीं। अपने कुशल समाचार के ग्रलावा कोई सदेश भी नहीं भेजना । जो कोई मुभने खुद से मिलने को ग्रावेगा तो वह मेरे पास बा ही जाएगा-जितनी देर उसे ठहराना होगा या ठहरने दिया जाएगा उतनी देर वह ठहर जाएगा—ग्रीर जब मुक्ते स्वतः एकान्त मिल जाएगा तो मैं कुछ दिल खोलकर भी बान कर लूंगा-फिर भी बाहर की बातों को ज्यादा जानने के या उनमें सताह महाविस देने के भीह को मैं जरूर रोकूंगा। मोजन का मामला तो मेरा पहले से साफ है उसमे से इतनी भी बात और वरू गा कि मैं किसी भी हालत में अपनी पसन्द का सांग नहीं मागुगा १५६ ] प्रत्यक्षनीवनशास्त्र

रतोईदार जो कुछ दे देगा उसी को सालूंगा, नाय की घटना बदली नहीं कहंगा। मैं सोचता है कि इतना करले पर मेरा जेल जीवन गुद्ध हो जाएगा और इससे मुक्को सतोग होगा और बिक्त मिलेगी। विजय या नयी तरह का कष्ट मुक्को नहीं होगा। वाहर प्राने जाने के बारे में यह है कि मैं स्वमाव से भी इचर ज्वार जीनने का जीक नहीं रखता हैं। बात करने के बारे में यह है कि मैं तो स्वमाव से ही गमीर रहना हूं — फ्रीर लुद कम बोनता हूं और इसरों की निरांक वालों को नुक्ता पक्षन नहीं करना हूं। अपने काम और विचार की दुन में रहना हूं, मौका हुंबा तो मध्यता की हव मक्सता है।

यह प्रकरण तो मच्चाई का हुमा। अब जरा मी चर्चा प्रहिमा की करू । मै प्रीहुमा का दारोमदार कीमत पर मानता हूँ। इसके ग्रनावा मेरी खानदानी देन ग्रीर निज की प्रवृत्ति भी कुछ प्रकारपन की ओर सुत्ती हुई है। सु सना जाने और चिड़ पडने का ऐव मुफ में है। किसीका ऐव मैं देखलूं भीर तिस पर उसे एँठना हुआ मैं पाऊ तो मुक्ते उस ब्रादमी ने नफरत हो जाएगी- फिर मेरा मन उनसे नहीं मिलेगा । जिन सोगों मे श्रद्धा नहीं, जिनकी पिवत्र सेवावृत्ति नही, जो मनुष्य और मनुष्य के बीच भेदभाव मानते है श्रीर फिर भी साम्यवादी होने का दम भरते हैं, जीवन में जिनका कोई मिद्धान्त न हो, करते कुछ हो कहते कुछ हो-इम नमूने के आदिमियों से मेरी पटती नहीं । केवल स्वार्थ की हिन्द में कोई चले, मनभावनी बान मुनकर खुश हों और कहने वाले की तारीफ करें खुद से मन के विपरीत कोई वह दे तो उसको वेईमान या खराव नीय र वाहर तक बतला दे-बस यह सरीका मुफ्तको नायसन्द पडना है । यह मारा विस्तार एक ही बात का है-मैं कहना यह चाहता हूँ कि भेरे प्रेम में या मेरी श्राहिना में कभी पा रहा है-और सचमुच अपने श्रापको छोटा मान रहा हूँ। हुमरे की कमियो को देखकर मुफ्को उनसे वैराग्य या निकृति क्यों हो ? मेरे अन्दर खराम स्यो धावे ? मै उन वानो को प्रेमपूर्वक बर्दास्त क्यो न करू ? अपने आत्मिनिरीक्षण के क्षणों में मैं इन बातों को भन्नी भाति पहिचानता है। परन्तु एक तरफ मेरे प्रेम का इतना विकास नहीं हो पाता है तो दूमरी तरफ मैं नकली व्यवहार बिल्कुल नहीं करता है-दिसी को देखते हीं स्वभावन में नहीं मुन्कुरा सकता तो मैं नहीं मुन्कुराक गा। किसी में बातों में सगरे की सेरे जी से नहीं है नो मैं नहीं सपूना-मजाक में भाग लेना मैं नहीं चाहूँगा तो मैं चुप ही प्रूमा। इसके विषयीत में देखता है कि कुछ लोग ऐसे है जो एक क्षरण पहने एक श्रादमी की सस्त से सस्त बुराई करेंगे और दूसरे ही क्षण में उससे प्रेमानाप सा करते पाए जाएंगे। वे लोग शिष्टाचार के साचे में ढले हुए हैं और मैं सफा खुरदरा ब्रादधी-लेकिन पुरदरा होना ज्यादा अच्छा जचता है, बनिस्पत नकली व्यवहार के । फिर भी मेरे प्रेम का विकास होने की जरुरत तो है । मैं भवमुख त्याय कर मकता हूँ और चेलेत्र के साथ कह सकता हुँ – लेकिन दूसरे लोग कम त्याग कर सकते हो तो मुक्ते उनको प्यार तो करता ही चाहिए-मैं उनको प्यार न कर पाया तो मैं जरूर छोटा श्रादमी हुना । इस चीज का अन्यास मैं कर रहा हूँ लेकिन नकलीपन और दम अपने मीतर कभी न बाने दूंगा उसकी बपेक्षा तो में खुरह-रेपन में ही बूड़ा हो जाना ज्यादा पसन्द करू था। येरे भीतर सचमुच बिगुद्ध प्रेम है ती

मेरी वाणी में खरास क्यों हो ? परन्तु इस बात का ताल्लुक तो प्रकृति से भी है-मुभ्ते संतोप रहता है कि चिट्रकर भी मैं बग तो किमी का चीतता नहीं, और अनावश्यक रीति से चिट जाने का पना लगते ही मैं दु, स्वित भी हो जाता हैं। फिर मेरे भीनर नायसन्द किये हुए लोगों से हटने की-उनमें वैराम्यहीनता की बादत तो है ही सही । मेरा प्रेम ऐसा होना चाहिए कि मुभसे कोई उचटने न पावे । वहरहाल में तो किमी में उचहूं ही नहीं । मुभको कभी-कभी उपटने के लिए मजबूर होना पडता है, यह मैं जानना हैं-और मैं अपने दचाव के लिए दलील भी कर सकता है-फिर भी मैं यह खुब महमूस करता है कि मेरी सारी दलीलें निरर्धक होंगी मानी वे ठीक हो तब भी। बान तो यह है कि मुभको तो ऊँचा चडना है, मागे बढ़ना है-प्रेम मेरे भीतर है, तो बाहर भी उसका पूरा प्रतिविम्ब क्यो न ग्रावे । मैं प्रेम का प्रतला ग्रपने ग्रापको मानताहुँ तो फिर मुक्तको कोई वृत्त या ग्रविश्वसनीय या चालाक, या ग्रमिमानी या 'हिटलर' नयो समझे । अपनी बात की जिंह रखने का स्वभाव होते हुए भी और अपनी ग्रन्थाई का मान रखते हुए भी मैं 'डिटनर' या अभिमानी तो नहीं ही हैं फिर भी मेरी कोई कमी तो है जिसकी वजह से मेरे दोस्तों को ऐसा खयाल करने का मौका मिलता है। मुझे प्रपनी सेवाग्रो का एवजाना नहीं चाहिए। मुझे नाम या शोहरत नहीं चाहिए, तो फिर मुझे क्या जरुरत पड़ी है कि मैं अपनी अच्छी बात की दूसरे से अच्छी कहलवाने का इन्तजार करूं। प्रच्छा कहलवाने की जरुरत मुक्तको नही होनी चाहिए। मैं तो जो हूँ सो हूँ-मुक्तको मारा जगत ब्रा कहता हो तो कहे, किसी को श्रव्या कहना हो तो कहे मैं तो जहा का तहां ग्रहिंग रहें और अपने कर्तव्य के पालन में लगा रहें। यह सब कछ ग्रहिंसा से ताल्लक रखने वाला विषय है।

मत्य ग्रीर ग्राहिसा दोनो कसीटियो पर धपने आपको कस लिया तो फिर क्या वाकी है। लेकित यह तो मैंने अपनी बात की। मैंने अपने आपको अच्छा बना भी लिया तो नया हो जाएगा, ग्रकेला चना क्या भाड फोड देगा ? सुक्रको साथी और सहयोगी नो चाहिए न ? परन्तु साथी कहा है ? योडे में फनकड लोग है-वे अपने हाथ उवलते हए कडाव में धाल सकत हैं-परन्तु उनमे ऊँची काबिनियन के लोग नहीं है । ऊँची काबिलियत के लोग जो हैं, वे या तो ज्ञालमी हैं, या स्वार्थी हैं, या अध्ययते हैं, या कामतो मे उलको हुए हैं। जो युवक ही है, उनकी ग्रपन भविष्य की पड़ी है-कोई कलकरो जाता है तो कोई बस्वई। २४ घण्टे काम करने वालों की जरूरत है-तफरीह के तौर पर पब्लिक काम नहीं हो नकता। ऐसे लोगों का एक इट तक उपयोग हो सकता है। तेकिन काम उनके भरोने नहीं छोडा जा सकता-तो वह राजस्थान और जयपूर का काम कौन कर जाएगा ? मैं ऐसे म्रादमियों की रचना कैसे करूँ ? इसके लिए वही जीवनकूटीर वाली योजना फिर से ग्रमल में लानी होती। विशेष योग्यता के लोग भी आखिर पैदा होने-हल्ले गूल्ने के मौके पर आकर खडे होने से क्या काम चते ? आज यान्दोलन बन्द है तो आज है आदिमियो की जरूरत । आज कोई ग्रादमी हों तो उनके घीरन की और उनकी सेवापरायणता की सच्ची परीक्षा हो। ४-६ महीने जेल काटने मे काम नहीं चल सकता। जब हमको अपने देशवासियों को अच्छा बनाना है, उनके नैतिक और सासारिक स्टैन्डडों को ऊँचा करना है। और जेल मे ब्राकर १५६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

मी हम बादमें को समफें तो सही, उसकी रक्षा करने की कुछ विन्ता भी तो रखें सही। यह कभी कभी भेरे बाधावान हृदय की निराज कर देती है। एक तरफ वनस्पनी की स्थित का विश्व सामने काता है। दूसरें तरफ नावनीति की द्यावाजियों का चित्र देखना है। उसर यह दिस्ता कर सकता है तो में सबसूत्र ही इंट उसरें तरफ वा कर सकता है तो में सबसूत्र ही इरें त लगता है कि में पूरा भरोबा किन कर सकता है तो में सबसूत्र ही इरें त लगता है। मैंने एक का मरीया करके बात कहरी-उपने उसी को जाकर मबसे पहले कही जिसको किमी भी हालन में नहीं कहना था। एक बादमी मुम्मे पपने सिद्धान्त से में हमी की हालन में नहीं कहना था। एक बादमी मुम्मे पपने सिद्धान्त से में हमें होता हुए वा वात करता है-बीर मुम्में डटन उसी सिद्धान्त का पाचन करने के कारण करें होता हुए बादा है। में पपने वायको सम्बाल नू गा। किसी को सोच समफकर परिवारा कर सा होता हम सा होता हम समकर परिवारा कर या। किसी के विचद्ध कोई मी बात वपनी जवान पर नहीं लाकुना। इससे मुझे सकता है कि मैं पपनी रक्षा सामनरिक पीड़ा में कर्यू, वेकिन मेरे भाईयों की चारित्र गृद्धि कैंमे हो जाएगी ? देश में जो चरित्र होता एकी हुई है, सत्य कोर प्राह्म के मिदानत हो मानने की वात करने लोग लेगो तिन दहाड़े चीरिया करते हुए दिखाई देते हैं। प्रपत्न हाधारण स्थान की सान करते वातर से ने मोर विच हहाड़े चीरिया करते हुए दिखाई देते हैं। प्रपत्न हाधारण स्थान की काल ति ती पिर भगा किन तरह सामा के काम रखा है काल ति सा पर ना किन तरह सामा की काम एकी हा सा देश हैं।

यह सब कुछ है। परन्तु आजा को छोड़ने का काम नहीं, धवडाने का काम नहीं, धवानत ही जाने का काम नहीं। धवन धामको ठीक करना यह पहनी बात अपने नाथियां के दोपों को नम्मानूर्वक कीर वेमपूर्वक दूर करने का प्रयत्न करना, यह दूरारी बात । मैं आजा करना हैं कि आपको इस चन्न के सम्मोध होगा-चीर मेरे बारे से धापको स्वप्त कोर्ट चिन्ता होगी तो बह मन जरूर मिट जाएगी। मैं अने ही चिंड बाठ-अने ही निरास हो जाड़े, भने हीं दुनों हो जाड़े-बेकिन मेरे नक्ष्य का मूर्य मुक्को सामसे दिवायों देना है, मैं अपने 'चरित' पर से हरिगत चिंक नहीं सकना। पनतिया नो मनुष्य करना रहता है। चरन्तु धार उसकी उन्हें ठीक करने को चिन्ता नहीं है नो फिर कोई चिन्ना नहीं।

मुभको सन्तीप है कि झाप सत्य की मर्यादा का पालन मुक्ते कही ज्यादा करती हैं भीर भाषका प्रमन्न मुख झापको भीतरी भहिना का परिचय भी देता है। परन्तु खापको मजबून तो भीर ज्यादा होना चाहिए।

[x].

#### भारतामा कैस्य

राज के माय काम चनाऊ समसीना होना धव भी धर्मभव नहीं है। समसीना हो जानें की मूरत में तो हम लीग धान्तिपूर्वक काम धवाने की धाबा रख सकते हैं। समसीता न हो तब तो फिर सावित हमरी नहाई की तस्पारी ही जन्दी पड़ेवी। दोनी मुत्तों में ही हमकी मपनी मौनूदा स्थिति की नही बाच कर तेनी होती। पूरी बांच तो हम लोगों के बाहर माने पर हो सकेगी, मेकिन उन बाच की पूनिका के तौर पर योडा सा धावश्यक काम हमारे बाहर धाने ते पहले हो बाना जन्दी है। पत्र व्यवहार [१५६

सबसे पहली बात तो हमको यह देखनी है कि हमारी 'जनशिवा' यानी कार्यकर्ताची को सस्या यह सकेगी या नहीं ? आन्दोलन में में हमको कुछ नये कार्यकर्त्ता मिन सकेंगे स्था ? एक तो पूरे समय काम करने बाते कार्यकर्ता और दूनरे खानकर लड़ाई का मौका साने पर काम दे सकने वाले कार्यकर्ता । जो साथी जेल जा कुके हैं, वे इस इंटिंग ने कल्या करने देख सकते हैं कि जेल जाने बात लोगों से कीन कीन सावयी केंगे कैंने साविव हुए । एक तरह में सदीव में थपने अपने जेल अनुमन लिख डालना भी बहुत उपयोगी होगा-उसमें खास खास बादिययों की वर्षों भी बावाएगी । ये 'अनुमन' गुन्त रखे आवेगे । जो नोग जेल नहीं जा पाने, उनसे से भी देखना चाहिए कि अपने काम के आदमी मिल मकते हैं क्या ? कार्यकर्ताओं के हीनेंग के लिए बाकर चलाने का मेरट बिचार हैं । टुनिंग में आने के निए बाकई प्रक्षेत्र धावीयों की जरूरत परेगी । सब साथियों को यह धोवना चाहिए कि अद्भाव कार्यक्री माने अपने सल्या जरूर ही बढ़ानी परेगी । यह मबाल अपने सानने बराबर रहा हो है, पर अबकी बार इस दिवार में खावम विशेष प्रयत्न करना परेगा ।

दूसरी बात यह जाननी है कि बान्दोलन का धाम लोगो पर कैसा और किनना प्रमर परा 1 वो लोग प्रान्दोलन से पहले प्रजामकल से परिचल नहीं ये वे भी कर तो प्रजामकर को जानने लगे होंगे? जो लोग पहले से जानते ये जान से हैं कितने लिंगों का बेम बात या परा? कुछ लोग परिहे भी शुटे नथा? वानी ऐसे लोग भी है नथा, जो पहले तो प्रजामफल को स्वान कर वाकायदा विरोध करने बाले लोग भी हैं नथा? जो पहले तो प्रजामफल का स्वान कर वाकायदा विरोध करने बाले लोग भी हैं नथा? निजामको के हेड क्वाउंदों के तो धपने 'प्रवाटे' (यानी प्राफ्ति संगेदह) होंगे ही-प्रत्येक स्थान पर कम से कम दो धच्छे, मजबूत स्थानीय प्रावमिय की करूरत होगी। तहसीलों के करको में तथा दूसरे बड़े करनों में कोटिया बनाता किस हद तक समस होगा? सानी कहा पर ऐसे लोग मिन सकते हैं या जल्दी पैदा किये जा सकते हैं जिनके स्थीन परिवाद के जाल को निजामदों के हैं बनाटेरों के ब्राये उहनीलों भीर दूसरें करवें तक फैसाउन के जाल को निजामदों के हैं बनाटरों पेत सार्थ उहनीलों भीर दूसरें करवें तक फैसाउन के जाल को निजामदों के हैं बनाटरों के सार्थ उहनीलों भीर दूसरें करवें तक फैसाउन के जाल को निजामदों के हैं बनाटरों के सार्थ उहनीलों भीर दूसरें तक फैसाउन के लाल को निजामदों के हैं बनाटरों के सार्थ उहनीलों भीर दूसरें करवें तक फैसाउन के लाल को निजामदों के हैं क्वारें परिकास के स्थान के लाल को निजामदों के हैं क्वारें परिकास के स्थान के स्थान के सार्थ के सार्थ के सार्थ के स्थान कर सार्थ हों तक फैसाउन के लाल को निजामदों के हैं क्वार के सार्थ कर से सार्थ के सार्थ करते हैं सार्थ करते हैं सार्थ के सार्थ के सार्थ करते हैं कि सार्थ करते हैं सार्थ के सार्थ के सार्थ करते सार्थ करते हैं सार्थ करते सार्थ करते सार्थ करते हैं सार्थ करते सार्य करते सार्य करते सार्थ करते सार्य करते

मान्योलन बन्द होने के बारे में तथा बाद में जो आहिरा पडवड दिलामी दे रही होंगी उसके बारे में लीग क्या कहते हूँ ? "म्रान्टोलन कर ही हो गया नहीं तो हम भी जेन जातें" ऐमा कहने बाल कितने धादनी मामने था रहे हैं ? जो लोग जेन से घटकर घर पहुँच हैं, उनके बारे में लोगों के बचालात की हैं ? और जो जेन से घट्टे हैं उनके खुद के चयालात की है के द्वारा जाने की तथ्यार है या नहीं ?

[६]

#### मोहनपुरा (बस्सी) कैम्प

बाह रे इशम्प 'और वाहरे हम ! हम बैठे बैठे बात करते रहे-श्रीर स्वाम हमारी मोशूरमी में ही कुछ न कुछ लटफर करता रहा । कभी धाता था, कभी बाता था, कभी किवाडों को सडाता था, कभी खोलता था, कभी बन्द करने की कीशिश करता था, कभी इत चीड़ को छेड़ता था कभी उस चीज को छेड़ता था। बार बार तरकीब में कुछ न कुछ खाने को मानता था 'भूस लगी।' "पुत्ती रखी है, बाचार, लेलो बीर खायो" 'मैं उड़ी पूड़ी मही खाता हूँ' तो फिर क्या खायोगे?' 'ठड़ी पुड़ी को छोड़कर कुछ भी दे दो?' मानी खाम दो, रसगुल्ते दो, सहडू दो—क्योंकि ठडी पुड़ी को छोड़कर तो मही चीजें भी। महोड़ोज के खिड़कर तो मही चीजें भी। महोड़ोज के खिड़के के स्थाय खाने खायक छेद बना निया-एक डोरी सवाकर डिक्स को लटका कर फिरसा रहा। इधर उधर जाकर कितनी प्रधायत की सी पता नहीं।

परन्तु मेरे कमरे में ही उसने कई कबाड़े कर डाले-चालू की माम के रस में विगाड़ कर छोड़ दिया, कलम को विगाद दी, दवात कलम बाहर छोड़ गया, ताश के पत्तों को इधर उधर कर दिया। ग्लास को ने जाकर कही रख माया। घडी की डोरी को कैंची से काट डाला । गीता को उठा ने गया उस पर कई तरह के चित्र बना दिये, बाद में उस पर कीरे कागज का गला चढा दिया। पता नही उसे कहा रख दी। आप के जाने के बाद भीजन ग्रादि से निवृत होकर मैंने चीजो को जरा ठीक ठाक किया । कल के दिन के प्रखबार इधर उधर से तलाश करके बटोर लाया। चाकु और कुछ इसरी चीजों की नलाश कर लाया। फिर मैंने रामायस पाठ किया। परन्तु गीता का पता नही चना। भुवह जन्दी ही गीता पाठ करना था। दूसरी गीता भी पास मे नहीं। संगले के कोने करेने में तलाश कर निया, पर गीना कही नहीं मिली। मैंने एक बार स्थास की सन्द्रक की छेडते हुए देखा था। भोचा शायद गीता को सदक में रख गया हो ? जाकर के सदक देखा तो उसका ताला बन्द । मैंने खुला हुग्राताला सन्दुक के फुन्दे भे डाब य्खाया। ताला बन्द मिला ग्रीर चादी नदारद। मैंने ताले को तोड डालने की सोची। जरा सा मुंभलाया। लेकिन संयोग ऐसा हुधा कि सरदारमल के कमरे मे चावी सिल गयी। चावी लाकर ताला खोला तो गीताजी . मन्दूक के ग्रन्दर दिशजी हुई मिली रात के ६ वर्ज के करीव तब मेरी जान में जान ग्रागी ! मेरी कोई भी चीज इघर उघर हो जाए तो जब तक वह न मिले में चैन नहीं ले सकता।

यह सब कुछ हुआ। पर मुक्तको स्थाय पर गुस्सा नहीं छाया। मैं प्रकेला पडा पडा ही हसता रहा। यह बया ? इसविष् कि स्थाय को मैं प्यार करता हूँ और उसकी जबसता को देलता सुमकी अच्छा लगता है। अध्याना की चिड्यों पर मुक्को गुस्सा नहीं प्राया। बात पर काम करने बात कहने पर में प्राय नहीं विषदा। पुलीस के कोधों से मेरी दोस्ती हो गयी। वगने के पास के मोहनपुरा गाव के सड़के भी मेरे दांस्त हैं। उन पर मैं पुस्सा नहीं करता नशीक उनसे संस्था घर ना सा रिक्ता हो गया है।

### श्रीमती रतन शास्त्री के द्वारा लिखे गये पत्रों के श्रंश

#### [8]

जयपुर

कल मैं काकाजी (जमनालालजी) से मिल प्रायी हैं। जनसे डिटेल में पूरी वात तो गहीं हो सकी, क्योंकि एक झादमी जब तक हम सीग रहे बरावर वहां मौजूद रहा।

जिस दिन दरबार रवाना हुए उस दिन काकानी धापके पास नहीं पहुँच सके धीर वे भापको भी नहीं चुना सके । इसका कारए। यह वा कि दरबार भीर टाड साहब से बात करने में बाई बज पए। उसके बाद कोटा के प्राह्मिनिस्टर आए हुए हैं उनके यहा चसे गये। काकाजी कहते थे कि दरबार भीर टाड साहब से उनकी दिन पीस कर बात हुई है। दरबार यह चाह रहे हैं उनके विदेश काने से पहले ऐनाना हो बाए। काकाजी ने कहा है कि यदि फैसना होता है तो थे। चार दिन के धन्दर हो बाएगा। काकाजी का टाड साहब से युवारा मिलना होगा तब स्थिति साफ हो आएगी।

- भैने काकाओं से पूछा कि फालाना क्या समाचार भेत्र दूं तो उन्होंने कहा कि यह समाचार भेत्र यो कि सालरी समजीता स्नाप लीगों से मिले विना नहीं होगा। दखार समने माफिक है। जब जकरत होगी काकाओं स्नाप लीगों को जुला लेंगे या वे खुद प्राप लोगों के पास स्ना जाएगे। निचोड़ साने में टाइम संगेगा। प्रामार समग्रीते के से ही मालूम होते हैं।

राभाकिमनवी काकाओं के पान ही रहेते। काकाबी ने धारके लिए राग से कहत-बाया है कि धारको उनके साथ रख देनें, नवीकि उनको सवाह मधकिर के लिए प्रापकी नवार है। सरकार बाले पोलिटिटल क्षिपार्टमेंट की सवाह बेते रहते हैं। ने राजकोट का भी देवना चाहते हैं। इन कारणों से टाइम लग रहा है। नोटा के प्रास्मिनिस्टर भी शायद इसी काम के लिए धाए मालुम होते हैं।

#### [२]

जयपुर

में कल रात को बनस्थली जाने वाली थी। पर मागीरपत्री का पत्र धा जाने से रुक्त गयी। पत्र प्रापके पात्र भेज रही हूँ जिसे भाग देख ले। मिश्राजी शहर बाला पत्र भी देख लें। विस्कुल प्राएवेट बात है, पर भाग कैसे भी करके देख ही सें। देखकर मिश्रा साहब को देवें। में मोहनपुरा और फालाना दोनो जबह बयी थीं। मालाना में हनुमान से भीर मोहन-पुरा में बीरेन्द्र से मिलना हुआ। बील हद से ज्यादा स्वतरनारु आदमी है, वह गम का भी बाप हैं। बुछ लोगों में घोने से माफी मंगवाने की कोणिश कर रहा है। पर लोगों की हिम्मत दूरी नहीं हैं। वीरेन्द्र कह रहा था कि यथ ने २५ भोले धादमियों को टाज उनके टिकट मनवाये थे। मुखदेवजी कहते थे कि २५-३० धादमियों को टाजे ने तोने मान्य होंने हैं। इस बातों में चोट बहुन ननती है, पर जगाय भी श्या है? मुलदेवजी में भी ज्यादा समाचार मिलना ससमब हो रहा है। इसका कारण मैं शकानी तब थायों बताज मी।

## [3]

जयपुर

सुलदेवजी परसो बाहर गये। दरबार के लिए डूमरे अस्ये से पुछवाने की कोशिय की यी कि वे विदेश कब जा रहे हैं। पनकी बात तो सामूम नही हो सकी, पर प्राज ही जाने की बात साक्षम होती है।

कल काकाजी आप नोगो से मितने वाले थे। मित या नहीं ? मेरे पास नो समा-बार पानन का कोई जरिया नहीं है। कल दोषहर में राशांकिकनजी ने या को फोन दिया था। यह दिन मर रामनाथ में रहा बदाया। सममोते वाली बात का नियोड दो तीन दिन में आ तका है।

घव जयपुर मे भंदामन नहीं लग रहा है। पता नहीं काकाजी से भी कब मिलना हों सकेगा। इमफ्मीते के मामले में इचर या उचर कुछ भी हो जाए तो निश्चिततामा जाए। सभी दो तीन दिन तो अचरफूल से ही बोर्तिंग। आग यह न समर्फे कि प्राप जैन में हैं इसिनिए ऐसी बात है। जैज का तो क्यां? यह तो ६ नहींने की बात है। दो चार सात की होती तो बया था? यह तो खपना कर्तुं या है।

भीर त्या लिखूं ? मीज बहार ।

## शान्ताबाई (उम्र १२ साल) के द्वारा श्रापजीसा [हीरालाल शास्त्री] को लिखे गये पत्रों का ग्रंश

#### [8]

वनस्थली, २७-११-३४

हम तो आपको दो पत्र दे चुके । पर आपने हमको एक भी पत्र नही लिया। वैद्यती ने एक पत्र में थोड़ा सा लिख दिया, क्या जबमें हमारे पत्रों का उत्तर भा गया? हमने वहा सत्य पत्र लिखा था। आपने उक्का भी उत्तर नहीं दिया। भगर इस पत्र का अवाव नहीं रेते तो हम भी आपको पत्र नहीं तिखों। मुधाकर, मुसीला सब को आपको, मामी की, ग्याम को यार भागी है। सुसीला, सुवाकर कहते हैं—जीतो, जब माभी आएगी तो हम लेने को स्टेशन जाएगे। स्थास को विद्यत करर अच्छी हो वाएगी। हमारी पढ़ाई ठीक चत्र पहुँ हैं। पत्र मिनने ही उत्तर देना।

## [२]

बनस्थली, ११-१२-३४

हम महा पर कुमलपूर्वक है। यस की तिवित्व घच्छी हो गयी होगी? माभी माप पास हो गयी हो सो खबर मिल गयी होगी? नहीं मिली हो तो मैं बार मे नम्बर लिख मेन्न पी। मामजी जा, हमकी महनी ने कहा है कि "बस्ते की परस कर रहे हैं, दो तीन परिया मनवा कर रखी है और यमय मिलाकर देवते हैं" सो हमको बडी खुतो हुई। प्राप्ते निल्वा या कि फालदु बात मत करना भो हम तो किसी से नहीं करने है। परलु एक दिन मुधाकर से प्रकाशकी ने होड़ करी। प्रकाशकी ने मुखकर से कहा कि दू इसने पाटे की रोटी खा सकता है क्या? मुखाकर ने कहा—हाँ खा सकता हूँ। आय्य प्रकाशकी और भाभी के तिद्र सीस्ता था पर मुखाकर थकेता ही उस आटे की रोटी चट कर गया। उस दिन प्रकाशकी और भाभी दोनी पूले ही रहे। प्रकाशकी ने कहा—"इसर बाटा प्रोतन कर रोटी बनाइमें"। होटी भाभी ने कह दिया में तो नहीं बनातो, एक ठडी रोटी पड़ी हो से खा लो! पर प्रकाशकी ने वह रोटी नहीं खाबी पीर पूले हो सो गये।

### [8]

वनस्यली १४-१२-३४

प्रभावका पत्र मिला। पड़कर चिता को यदि यानव्य हुया। स्थाम की तिवयत ठीक है, यह बानकर दही जुड़ी हुई। धापनी सा, हमको तो नेव पड़ी चाहिए, फिर ह्याएको मर्नी हो वैसी लाता। हमारा कार्यक्स ठीक ठरह से चन रहा है। वहा पर प्राप्ती पढ़ती हैं या हो? पदार पढ़ती हैं तो किन्ने पाठ पड़े सां विश्वना। व्यक्ति हमको देखता है कि कौन ज्यादा पढ़ा? अगर पढ़ना चुक्त नहीं क्या है तो हम बरूग पर ख्याम को रख लेने स्नीर आभी को हमारे बनावर कर मेंगे। हमने समका था कि आप कत पत्यी तक वा जाएगे सो मंने छुर्हों के दिन कमरा सीथ पोठकर तैयार कर विया था। पर बाप आए हो नहीं, इनने दिन हो गए, आप आपे ही नहीं तो हम क्या करें?

# ग्रापाजी (हीरालाल शास्त्री) का पत्र सुधाकर [उम्र १२ साल] के नाम

सोवा

धात टहलते समय तुम्हारी बाद लागतीर से धायी घीर सैने मोचा कि तुमको एक पत्र तिला जाए। नुम रोजाना घल बार देल देनकर कुछ न कुछ सोचा करते होंगे परन्तु मुमको पता नहीं तुम्हारे जी में क्यान्या घाती होगी धीर तुम घपने माधियों से-सीहन से, हरीग से तथा दूमरों से-धीर तुम्हारे नानाजी, नानीजी घादि से क्यान्या वार्ते करते होंगे ?

हम लोग ग्रचानक ११-२-३६ की रात को पकड़े गये थे-ग्रीर २२-२ तक हमकी जयपुर मे २० मील मोहनपुरा कैम्प में रखा गया वहा पर हमे दो दार तो मामूली भूख हडनाल करनी पड़ी थी और तीसरी भूख हडनात १७-२ की शाम मे २४-२ की शाम तक चली । भूत हड़नाल का कारए। यह या कि राज का राजनैतिक कैदियों को मामूली कैदियों की तरह रखने का विचार मालम पड़ रहा था भीर इसी तरह की शस्त्रात भी उन्होंने कर दी थी। सादी मजा होने से कैदियों से नाम लेने की वात तो नहीं थी, बाकी मामूली कैदियों जैमा मोजन देना (जिसमे थी न होकर दम माना तेन होना), प्राय: दिन रात छोटी सी जगह मे रोके रखना, खुद के अपड़े, विस्तर, वर्तन ग्रादि न वरतने देना (ग्रीर वेतरह के जेली कपडे ग्रीर लोहे के तसले ग्रादि देना) समाधार पत्री की मुविधा न होना-ग्रीर साधा-रए। बर्तांव व्यवहार भी साधारए। कोटि के श्रपराधी के जैसा करना⊸यह सब कुछ होता हुग्रा हमको दिलायी देने लगा तो हमने राजनैतिक कैदियों को अलग हैमियत नायम करवाने के लिए भूल हडताल गुरू कर दी। वह लगानार - दिन तक चली। बीच में २२-२ को यानी मूल हड़ताल के पांचवें दिन राज वालो ने यह सोचा कि हम खास-खास १० मादिमयों की दूसरों से यतन कर दिया जाए और हमारे साथ श्रच्छा व्यवहार गुरू कर दिया जाए इसतिए हमको प्रचानक (जयपुर से ७० मील-मानपुरा से १५ मील) लाडा गई में ले प्राए परम्तु हम यह ते करके मोहनपुरा से चले ये कि जब तक मोहनपुरा वालों का सबाल हल न ही जाएगा तद तक हम मूख हड़जाम जारी रखेंगे, चाहे हमारे खुद के साथ कितना ही अच्छा व्यवहार किया जाए। हमने कम मे कम मांग रख दी थी यानी यह कह दिया था कि चाहे कितनी भी छोटी हैसियत का आदमी हो लेकिन अगर वह राजनैतिक अपराध के नारए। जेन ग्राएगा तो उसको कम से कम इतनी विशेष मुविधार्ये तो दे दो ही जाएंगी। वह मांग इस प्रकार थी-नेहुँ की रोटी, एक छटाक घी, साग-दाल, साप्ताहिक पत्र, पुस्तकें, खुद के विस्तर व कपड़े वरतने की ग्राजादी, महीने में एक बार मित्रों से मिलना व पत्र लिस सकता, जेल की चार दीवारी के मीतर ब्राजादी से घूम सकता । व्यासिर राज वासों को मुकता पड़ा और २४-२ की धाम को, मोहनपुरा वालों की उपरिविध्वित मागे ज्यों की पत्र व्यवहार [ १६५

त्यो मजुर करके मि॰ यग हमारे पास ग्राये, तब हमने भी भूस हडताल छोड दी। हमको २ छटाक (पंक्का) थी, श्राधा सेर दुध, दैनिक पत्र (हिन्द्स्तान टाइम्स ग्रीर हिन्द्स्तान), ग्रपने खर्चे से खाने पीने का और सामान मगवा सकना-इत्यादि बातें विशेष तय हुई। और ग्राजादी तो इसको सब दे दी-बाहर वालो से मिलना तो नियम से ही हो सकता है-धीर हम तो बाहर नहीं ही जा सकते-बाकी इस सम्बे चौड़े किले में हमारा ही राजपाट है। जो लोग हमारी निगरानी ग्रीर सहायता के लिए हैं वे लोग ४० के करीव हैं. हम हैं सिर्फ १० केंदी- वे छोटे बड़े सब हमारे मित्र हैं और हमको प्यार करते हैं। हमारे लिए जयपर पैसेस का एक फस्ट बलास शामियाना सगा दिया है-नयोकि हमने किसे के पराने और दर्गन्य देने वाले मकामो मे रहना नामजूर कर दिया या और दो रात और एक दिन बाहर ही हैरे हाले पड़े रहे । हमारी भूख हडताल जारी थी और सर्दी भी खूब पडती थी, बारिश की बून्दें भी प्रायी। ग्रंड सकानो की मरम्मत और सफेदी भी हो गयी है। बाकी यह जगह बहन ध्रक्छी नहीं है। पानी कम ठीक है, जैसा पानी है वह भी काफी नहीं है, नपा तुला ही मिल सकता है। लाने बाल दो आदमी बेचारे यक जाते हैं। छोटी-छोटी दो बाल्टियों में नहाना, कपडे धोना सब कुछ कर लेता हैं। और अयपुर से बूर है और सडक से भी दूर-भारतीय बाकलाने से भी बहुत दर । हमको खतरनारु नमभक्तर असव रखने की कोशिश राज ने की है।

मेरे बारे में एक खाम बात यह है कि मैं लावा वे मिली हुई पूरी मुविषाधों से लाभ नहीं उठा रहा है। साशावार पर तो पढ़ लेता हूँ। बाली जो की रोटी (बिना पुपड़ी) और एक साग खाता हूँ। बाहर से आमी हुई थोजें नहीं खाला है इससे मुफे कोई तकसीफ तो हों है। फिर भी बन्दिय में रहना धीचा सा काम भी नहीं है। खासकर जब बाड़ी के सब कोग ठाठ से रहने के प्रवापती हैं। इतने छोटे भरण मत की (मैं १० में से प्रनेता एक हैं) मुक्तित तो है ही सही। बाकी अपनी बात का पक्का ज्यादा हूं इसमें मुफ्ति पूर्ण लोग कुछ कह मुन नहीं सकते। मुफ्ति अपनी इम विशेषता से विशेष सतीप रहता है। बाकी अपनी बात का पक्का ज्यादा हूं इसमें मुफ्ति पूर्ण लोग कुछ कह मुन नहीं सकते। मुफ्ति अपनी इम विशेषता से विशेष सतीप रहता है। बाकी अपनी बात का पक्का स्वीप संवीप सतीप रहता है। हो लाएंगे और दुवले ही भी गए तो बाहर निकल कर शीर और ठीक हो जाएंगे। मगर मेरा पक्का विश्वास है कि मैं वहां से उपाद। स्वस्थ होकर बाहर आऊंगा—चंगित मेरा जीवन यहा पर वड़ा समित और विश्वित है।

 १६६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

गया हूँ। गोता धौर रामायण के भिवास धौर कुछ मैं नहीं पढ रहा हूँ। मैं धपने माध्या-एमक पक्ष को हो ठीक करना चाहता हूँ। लोकिक स्वाध्याय तो जरूरत के भुताबिक बाहर भी कर तूगा। मैं कोई भक्त मादमी नहीं हूँ। एक माने में तो मुम्को करीव करीव नास्तिक भी कहा जा सकता है, हालाकि मैं धपने तौर पर वहा मास्तिक हूँ। मैं भक्त नहीं है तब भी रामायण में घेरा मन वहुन चला है धौर गीता से तो घेरा पुराना प्रेम है। मुम्को प्रपने वचनन का तेल राज डर खेलने को भित्र गया। मैं इस तेल में वहुत ज्यादा होगियार मा, वह प्रस्थान तो मब कहा से माएमा? फिर भी मैं खूब खेतता हूँ जमीन कभी-गीयों होने से धौर एक पर जरा लगका होने से दौकने के वेग में माज तो मैं निर पड़े चाने में कभी नहीं होते दी।

मेरे साथियों का कार्यकम इसमें कुछ भिन्न है। बाज बब लोगों के कार्यक्रम को ठीक बैटाने की कोशिश की थी। आशा है आज का प्रयत्न सफल होगा। परन्तु सुभको ग्रफसोम है कि गभीरता के सम्य समय विनाने और कुछ न कुछ उपयोशी काम में लगे रहते के मामले में मेरा प्रधिकाश साथियों के साथ मतभेद ही है। इसलिए साथियों के साथ मेरा मन कम लगता है। प्रथने कार्यत्रम के हिमाब से भी मैं अधिकाश समय एकान्त में बिताता है, इसमे मोश जोर पडता है। इसलिए कि जेल के बाहर में दिन भर लोगों से थिरा रहता था। फिर भी गीता और रामायण के माथ से और कलम दवात के साथ से मुक्तको झनेलापन ज्यादा नहीं भलरता है। वैसे में नहरी भादमी हैं। कभी-कभी मेरा चित्त बडी लम्बी दौड़ लगाता है। मानन किसे की पुरानी काली-काली और ऊ ची दीवारें खडी दिखायी देती हैं। लेकिन मेरा दिल कई बार बनश्यली जाकर धाता है, सैलाने की मैर कर धाता है, क्लकती पहुँच जाता है, जयपुर तो जाता ही रहना है । जेन की या किने की दीवारें इस सैर की कैसे रोक देंगी और कैमे रोक देंगे सगीनधारी पुलिसमैन ग्रीर फीजी जवान । कपडे घोने से मैं पहले घवराता या, लेकिन श्रव तो काम ठीक अस गया। कपडे हैं ही कितने से एक छोटी मी घोनी, एक वडी, एक तीनिया और एक दस्ती रुवाल-स्योकि मै तो इसी वेश मे यहा रहता है। मुफ्तको एक लिखने वाले की कमी ग्रवारती है-क्योंकि मुक्तसे नकल नहीं हो पाती । खैर ।

जर कं बधान में तुन्हारे सामने गढ लावा का एक पुंधता धौर प्रञ्नूरा मा किन तो आ ही भया होगा में क्या मोखता रहता हूँ? एक तो मह है कि अवपुर के लोग हागरें पीछे से धारंगोलन को पूब चच्चा रहे हैं, महर में बडा और खोर है जनता प्रजामध्यक के नाम पर कुछ भी करने को तैन्यार है, और राज की एक नहीं चच्च रही है। ऐसी जोरहार इडनाने की हैं कि राज बाले देखते ही रह गये, उनकी धौर उनके सहायकों को सक्त पुम हो नयी। २०-२० हआर बालमियों का दक्दु होना एक मामूली बात है। एक दिन वर्षों हजार तो स्त्रिया भी इक्टुये हो गयी। जितनी खबरें हमको सिख पानी है उन पर से में ऐसा समझता हूँ। मुफे गांधीजी के उपवास से बड़ी फिन्ता हो गयी थी। बरन्तु मब राज् पत्र व्यवहार [ १६७

कोट का मामला अरूर ठीक हो जाएला। और इनका सबर अवयुर पर भी धनुकुत ही परेगा। बाकी ज्यादावर विवाद में साने के कार्यक्रम के बारे में करता रहता हूं। मैं चालू राजनीति में पिएट प्रमा थोर सज जयपुर राज्य का काम पूरा किल दिना मेरा निकल स्थाना भी बहुत मुक्कित है। इसलिए में राजनीति को क्या पानर करूँ तब भी मुफ्त के इसलिए में राजनीति को क्या पानर करूँ तब भी मुफ्त के इस पाने स्ट्रा ही पढेगा। इसलिए प्रजामण्डल का कार्यक्रम तो चलाना ही है। एक समावार पत्र जयपुर से निकाला बा सके तो जरा मत्र साथे। पत्र निकालने का विचार तो पत्र का ही हो रहा है, कार्यकर्तायों का मध भी चलाना ही एक्सा चाहे वह राजस्थात स्थान ही, वाहे प्रमान ही फ्लब्स साथे। पत्र विचार तो पत्र का ही किल ही किल ही किल ही के स्थान की प्रवास करता भी बहुत जरारी है। इसका मनलब यह निकलता है कि जयपुर महर में एक बड़ा मकान भीर सम्बंध चीकी जमीन हमारे काबू में मा जाए वहा पर हमारा मायम भीर नेल हो भीर प्रमान परवा की है किल हमें हमें के क्या करता है का स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की हम हम हम स्थान की स्थान की स्थान की स्थान की हम स्थान करता हम स्थान की स्थान की हम स्थान स्थान करता मुझ स्थान स्थान करता हम स्थान की स्थान की स्थान की स्थान करता हम स्थान करता हम हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान स्थान करता हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान करता हम स्थान हम हम स्थान हम स्थान हम हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम स्थान हम हम स्थान हम स्थान हम स्थान

दूसरा चित्र मेरे दिमाग में बनस्थमी का है। बनस्थमी में दो तीन अच्छे धादमी पहुँच गये हैं, यह चुछो की बात है। बाकी देखियों की कमी यहा पर है, पैते की कमी भी खूब है। पुरदारी भामी जयपुर में कही हुई हैं—बिद्यालय का काम वे मही कर सक रही है, विकित में सोचता हूं रूपये का कमी से कीन सा अच्छा काम क्कने वाला है। मसल में सो बनस्थानी का बिस्तार ही होने बाला है।

कभी कायेस के भाइयों के बारे में भी कोचन नगता हूं। कुछ भीतरी बातें माणूम होने के कारण मुभायबाज़ के माथ मेरी सहानुभूति विस्कृत नहीं है। उन्होंने प्रव की बार बड़ी पड़बड़ की है। परनु मेरा विश्वास है कि शांध्रस के अपने का भी हुछ न हुछ मच्छा निवदारा हो ही जाएगा। किस्त कराज के साथ देखना है कि निपुरी में क्या होता है। मैं जल मेन होना तो तुमको भावद जिपुरी दिवाता। इस बार माभीजी त्रिपुरी नहीं गहुँच पाँ। यह और भी मुक्किन हुई। देखी।

सच्चों में श्वामजी की ज्यादा सोचता हूं—श्वामजी वयपुर में बाल नेता बन बैटे हैं।
प्रजामण्डल के नारे लगाते रहते हैं—सीर दनपति बनकर—मामूली स्वयंत्रेवल तो में कर मजन-सार्वापाइ में जाने का शराबा करते रहते हैं। मिंग वंग में योले कि आपको हमारी मित्रता रहते थी, अब नहीं हैं—हम कल दनपति बनकर आएये और मोटर पर लडे होकर व्याग्यान देंगे। एक दिन यहा लावा में स्थामजी आये तो यहा भी 'बीचमजाहों मुर्बावाद'— 'प्रजामण्डल की जय'—'बन्दे मातरम्ं' 'महात्मा माणी की जय' मारि बोल कर गये। ऐसे कवंदेस्त है स्थामजी। मैंने भी एक दिन और मिंग बाग ने भी यहा पर कहा कि बच्चे को दलदित बनने की तबाह स्थाप स्था नहीं दे देते हैं ?

## श्रापाजी [हीरालाल शास्त्री] का पत्र वनस्थली की बिच्चयों [छात्राग्रों] के नाम

भालाना कैम्प, १७-६-३६

प्यांगे विल्वतो । में तुम्हारे बारे में बहुत विचार करता रहता हूं। मैं चाहता हूं 
कि तुम लोग सवमुच अच्छी बयो । सचमुच अच्छी बनने के लिए तुमको स्वार्थरित होना 
पड़ेगा —म्बायंरिहत वह होनी है जो जुद तकतीफ उठा कर दूबरों को आराम पहुचाने । 
तुम प्रतिदिन यह भोचा करो कि आज तुमने कौनता अच्छा काम किया? अच्छा काम करों के आज तुमने कौनता अच्छा काम करों । 
परतु उत्तका अभिमान यत करो । तुमको नम्ज तो होना हो चाहिए। अचने आपने अच्छी 
मोर दूवरे की में कुर मत लवाल करों । किसी भी काम हं चबड़ामो मन, न कामों को 
छोटा या बड़ा समको । तुमको परिश्रमी भी होना हो पड़ेगा । काम से कभी जी मत पुरामी । 
बड़ो का कहना मानना और निवमों का पालन करना बहुत जरूरी है । किसी तरह की शका 
हो तो पृष्ठ कर उने दूर कर लो, वात को अच्छी तरह समफ लो परन्तु तुमको योग्य बनना 
है गै अनुसामन पालन करने वाली औ जरूर होना हो हो तरह तो कही तरही सकती 
है गई समुसामन पालन करने वाली औ जरूर होना हम से निवको के छूठ तो कभी वोलना 
है गई समुसामन पालन करने वाली आज कर होना हो या नेवको कूठ तो कभी वोलना 
है नहीं चाहिए, चाहे चुछ हो जाए। वह वोरवाला और देव नेविकता हो ही नहीं सत्ती जो 
फूठ बोल सकती है, जो मन से प्रीर वाणी में नत्य का पालन करने वाली नहीं है ।

प्यारी बिच्चयों ! कहना सरल होता है, परन्तु करके दिखाना मुक्किल होता है। तुम भेरी बात समक जायोगी, उसको मान भी लोगी—परन्तु चया करके भी दिखामोगी। धोटी छोटी बातों में धादमी की परीक्षा हो जाती हैं अपने बार सपनी छोटी बहिनों के करवी, बतन, किताब धादि को संभातना कोई बड़ा काम नहीं है, धपने कमरे तथा गरीर मीर करकों को साफ रखना और वानों को ठीक रखना भी कोई बड़ा काम नहीं है, परन्तु मन छोटी-छोटी बातों में भी नुमने गलतिया होती हैं या नहीं?

बनस्वकी से तुम पढ तिसकर जान्नोगी—कई तरह के काम भी सीख जान्नोगी परन्तु ध्यारी बन्धियों ! प्रच्छी अनना नया सा मृश्कित काम है। तुमको बीरदात्मा समना है देश सिवका बनना है—इसके तिए दुमको सच्चाई और नहाती है साथ जि.नहाई भान से जी तीडकर, घरने देश की भागा का पालन करते हुए काम करना होगा, परिश्रम करना होगा। तुम ऐमा करोगी, इपमे मुक्को शक नहीं है। जेल से बाहर आये पर, तुमसे निमने पर मुक्को नुम्हारे बारे में विश्वको धादि से यही एक बात सुनने को भिले कि घबकी बार तो तर्दिकयों ने कमाल करने दिखा दिया, ध्रम हमको जब्बियों से कोई विकायत नहीं है। जो सराविधों बड़ी है, समस्तार पानी जाती हैं, उनकी जिम्मेदारी इसमें बहुत बड़ी है। स्था में प्रपत्ती जिम्मेदारी को निमाएँगी ? सब कहती है— ही, वेशक तिमादारी हम से

# उपभाग १

: ሂ :

भाषण, लेख भ्रादि

### : ሂ :

# भाषग्, लेख श्रादि

#### १. स्याधीन ग्राम-नगर संगठन के कार्यक्रम की व्याएया

'वर्तमान कुनाव परिषाटी धीर झासन पहाति मेरे विचारो के प्रमुक्त नहीं है। कुनावों के कारण देश में म्यापक धरटाचार फील एमा और झासन पहाति ने साधारण जन समुदाय को प्रमुक्तीर पावसन्त्री बना दिया है। म्याधीन ग्राय-नगर-सराठन का कार्यक्रम जनता को शक्तिसाक्षी बनानं भीर स्वच्छ सार्वत्रनिक जीवन के लिए है।" यह पौपणा राजस्थान के प्रमा मुख्यमन्त्री पण्डित हीराखाल शास्त्री ने यहा निवार्ड में कार्यकर्तामी को उद्बोधन करते हुए की।

बास्त्रीजी ने कहा कि मैं सूद किसी राजनीतिक पार्टी में शामिल नही हूँ, तो इसका मतलब यह नहीं है कि में रिसी पार्टी विशेष के खिलाफ हूँ, न इसका यह मतलब कि मैं निसी पार्टी के सास मुखाफिक हूँ। मुझे विरोध करना है तो बुराई का करना है, किसी पार्टी का मा व्यक्ति का नहीं।

शास्त्रीजी ने स्वाधीन ग्राम-नगर-नसमय्य के कार्यक्रम की व्यास्था करते हुए बताया कि इस मार्यक्रम में सच्चे स्वराज की चावी है और एक प्रकार की कान्ति के बीज भी हैं। जनता प्रपने खुद के प्रयास से किश्चित हो जाएं, मधनी बस्ती की भुरक्षा की व्यवस्था पृक्षित १७२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

के बिना कर, बस्ती ने ये कोई मामले मुक्दमें हो उनका निपटारा कोर्ट कचहरी के बाहर कर लिया करें, धपने सभाव धरियोगों को सत्ता के सामने ताकन धीर अधिकार के गाय रखना गोर्से और जब बाजिब जरूरत मानून पड़ आर तो सत्ता में सुपर्य करने में भी न क्रिक्ट । इन पारो बागों के धतावा पुजाव में हिस्सा लेना मेरा खान काम नहीं होगा। पुजावों में ज्यादातर में तटस्य रहुँगा या कही की जनता का किमी उपमोदवार के हक में विशेष प्रायद्व होगा और बहु उपमोदवार मेरे साथ दण्ड से भी ठींक होता तो मम्भव है में विना क्रिसी पार्टी के निहाब के उस उपमोदवार का समर्थन कर हूँ।

#### २ ममंस्पर्शी उद्घोष

एजस्पान के श्यम मुख्यमन्त्री व बनन्यनी विद्यापीठ के सहयापक पण्डित हीरातान माहनी हा स्वापीत ग्राम-नगर-पाठन के निमसिने में मचाई माधीनुर प्रागमन हुया । हाहनीजी के स्थानीन कार्यकर्तांकी हो नमा में भीर नवयुषकों को सभा में प्रारण हुए । सवाई माधीनुर कीन मं स्वापीत ग्राम-नगर-माठन के कार्यक्रम को ग्रमल में तात की हरिट से श्री धीरेन्द्रसिंह के संयोजकरत में भीन्न ही तर्द्ध सीमीन बनाने वा निश्चय कार्यकर्तांची ने हिला ।

मास्त्रीजी ने बनाया कि सपना यह नवा कार्यश्रम बडा कठिन कटोर है। इस कार्य-नम से लगन बाले को बाने सारम सन्तीय के प्रचावा होई प्राप्ति नहीं हीने बानी है। प्राप्ते पर का नाम छोड कर इस बाम के लिए समय निकाबना होशा और प्रार्थम के बदने तक-सीफ उठानी पहेगी। यह नोई मानूना राजनीति का कार्यक्रम नहीं है। बहिल गम्दी बाहू राजनीति हो जड़ से उलाड़ फैंक देने बाला यह कार्यश्रम है।

गये नार्यक्रम का मुनतरक सोगनिक्षण के द्वारा जनशक्ति को जागृत घीर छगठित करने में निहित है। स्वराज के बाद जनात को वही हुई परावकित्वक्तिता घीर दीनता की वगह नवालजन घीर माहस पैदा करना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। जनता को सक्युव ही गहु गहुन करा देना है कि उसकी हैसियत माजिक की है।

तिक्षण के द्वारा सजानमुक स्वराज, मुख्यादन के द्वारा पुलित मुक स्वराज, शाहमी मममीनी के द्वारा कोर्ट-कच्हरी मुक स्वराज, बनता के समाव सदियोगी नो ताकत के साव पंत कर्ज द्वारा मममुक स्वराज और जुनावों में सन्वतों के ममयंन के द्वारा समीमिमुक्त स्वराज की सीर ले जाना गये सावन के क्येंक्य का बाह्य स्वरूप है।

शास्त्रीतों ने तमे कार्यक्रम को न्यास्ता करते हुए अपने स्थातिगत निक्य को दोह-रावा कि (१) मुद्दो किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य नहीं रहता है। सेरे किसी पार्टी ने सामिल न हीने का यह सतबब नहीं है कि मैं किसी पार्टी के खिताफ है। मैं पार्टी सिस्टन स्रोर कुनाव पद्धति की बुराइसों के खिलाफ हैं (२) मुद्दो किसी खुनाव में खड़ा नहीं होना है स्रोर (३) मुद्दो कार्यक्रम के लिए बा किसी दूसरे सार्वजनिक कार्य के निये भी चन्दा नहीं मानना है। मेरे परिसार का कोर्दे दुसरा व्यक्ति भी निक्ट मबिन्य में व स्राने बाले प्राम सुनावों में खड़ा नहीं होया। में किसी भाई से मांगकर कुछ भी नहीं सूँ तो किसी को देने के तिये भी मेरे पास मुख भी नहीं है। में अपने तन भन से काम करूँ मा अपनी बाखी और लेखनी से नये कार्य-कम का प्रचार करूँ मा और किसी व्यापक सार्वजीनक हित के लिए मुझे किसी दिन तीप के मुँह लगना होगा तो मैं सुक्षी से लग जाऊँ मा शास्त्रीजी ने यह मसंस्थार्गी उद्योग किया।

देग में सर्वेत स्थापन अध्याचार के बारे में शास्त्रीओं ने वहा यह सारा प्रतर्भ चोटी के सोगों भी तरफ से मुक्त होना है। राष्ट्रपति के चुनाव से लेकर खाज तक सत्तावारियों के कारनामों ने राष्ट्रीय जीवन में बनीबि बीर साधियों की प्रदिशक हरया का क्रम चालू हो गया है। चलती हुई राज्य सरकारों को दलवदन करवाकर गिराने का एक खास काम सत्तावारियों ने प्रापते हाथ से ले रखा है।

राजस्थान मन्त्रिमण्डल में जो नये परिवर्धन हुए है उनका जिक करते हुए हा मनीजों में कहा कि मेरी इन बानों में कोई दिलचस्थी नहीं है। मुझे यह पता है कि इन परिवर्धनों को भीडिटी उद्देश्य क्या है। अर्थात् इतने लोधों को कियो मतलब से सत्ता से मुक्त किया पता है, पर यह प्रकट रहस्य है कियों एक ने भी अपनी मर्जी में सत्ता नहीं छोडी है। सीगों को इस बात का पूरा अर्थना है कि प्रस्थान में सता प्राप्ति के लिए सध्यं का नया दौर खोड़ हो। व्यक्तिस में मानना हूँ कि इन परिवर्धनों में परिणास सम्भवत राज-स्थान के सानन की सम्बद्धि में कछ कमी लाने का हो सक्या है।

नवयुवक विद्याज्यों को सम्बोधित करते हुए बास्त्रीजो ने कहा कि प्रपते देश में मिला और रोजनार का समन्वय बैठा हुआ नहीं है और राजनीतिक पार्टिया विद्यानियों का गोपए। करती हैं। साथ ही नैतिक प्रत्यों का मूल्य बहुत पट नया है। मेरी राप में विद्यार्थी को बिचाशका से दनमत राजनीति से सतग रहते हुए और प्रपते बरित्र का निर्माण करते हुए हुख न हुछ सेवा कार्य करना चाहिए। प्रविच्य के लिए मुझे खादा है कि देश में जो भवस्यन्माली भानित होगी बह यवकी के माध्यम से होगी।

#### जनसेवकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता

"स्वराज प्राप्ति तो बाद देश में कुछ प्रच्छे काम अरूर हुए हैं, पर देशवासियों को दो बढ़े नुरुमान भी हुए है। एक तो बह कि धाम अनता में दोनता सा गयी जिससे पह हर किसी काम के लिए सरकार का मुँह ताकनी है। दूसरा यह कि दूपित चुनाव पढ़ित के कारण जनता में बहुत ज्यादा पूट हो गयी। ऐसी हासत में साम अनता में सात्मनिभेरता भीर एकवा की शक्ति पैदा होनी चाहिए।"

ये ग्रन्द राजस्थान के प्रथम मुख्यमन्त्री पबित हीरालान श्वास्त्री ने टोंक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की विशेष सभा को सम्बोधित करते हुए कहे। १७४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

बास्त्रीको ने कहा कि स्वापीन बान-नगर-बगठन का उट्टेबर किसी राजनीतिक पार्टी का समर्थन या विरोध कारत नहीं है। सगठन तो केवल यह प्रयन्न करता चाहना है कि पार्टी पद्धित से जो जुकतान हो रहा है उसने जनता को वचाया जाए। साथ हो तर्वत्र ब्याप्त अध्याचार की गोरुवाम की जाए। यह काम जनता के जिसित, बागुठ और दनवन्दी के स्नाधार के विना सगठिन होने में हो सहता है।

स्था में भावस्था विधार विधार के बाद विश्व किया गया कि टॉक क्षेत्र में कार्यकर्गायों के प्रविक्षण के लिए कई एक जिविर धायोजित किए जाय : शिविधे की तैयारी करने की इंटिट में उल्लिबारा, मालपुरा, टोझा, निवाई आदि तहसीलों में कारी में जररी समाए करने का निवश्य भी किया गया और यह काम स्थानीय उरसाहों कार्यकर्ताणी के जिन्में कर दिया गया ।

### ४. चुनाव परिसामों का विश्लेषस

भारत का सिक्यान सीच नमरूकर ही बनाया गया था। पर उसके प्रदूशार की धुनावत्रगानी चात्र हुई वह बहुन प्रांचक दोवपूर्ण निद्ध हुई है। उसहरणायें, राजस्थान में प्राय एक नाल की बावादी का एक विचानतमाई क्षेत्र होना है। उक्से साधारणत्या पर्याम हैनार मतराता होते हैं। उनमें से देखा गया है कि घोसत दर्ज पच्चीन कुनार मतदाता सना महत्त्र मतराता होते हैं। उनके से देखा गया है कि घोसत दर्ज पच्चीन कुनार सवदाता सना पार्ट अले होते ही हैं। उनके असावा कई एक निरंतीय लोग रावे हो जाते हैं प्राया के साहे होते ही हैं। उनके असावा कई एक निरंतीय लोग रावे हो जाते हैं प्राया के साहे हो जाते हैं। पत्र के कीचिए किसी क्षेत्र में पांच वस्मी-रवार सके हो पत्र तो लोग निम्म प्राया स्वाप्त हो भी तो उनमें में त्रिवाची को से वह उम्मीरदवार जिसके प्रयानी कमानत बान साम प्राया गया है कि एक समय किसी क्षेत्र में का प्रयान प्राया गया है कि एक समय किसी क्षेत्र में वह उम्मीरदवार जिसके प्रायादी का बार प्रयान स्वाप्त में प्राया प्राया की मही निक्त के बुताब जोत गया। एक साल की प्रायादी का बार प्रयास हुनार मतदालाओं का प्रतिनिधि पांच सात हतार बार समें कम सन पाने वाला व्यक्ति भी ही सकता है। प्रयान विन्तिय तो का सार प्रयास हुनार मतदालओं का प्रतिनिधि पांच सात ही नही तथा जिनके मत हारने वाल प्रमीदवारों के हिस्से से या प्रये तहें भी प्रपत्ती घोर का विचायक प्रायो पोंह से मत सात उने प्रयान के मान लेता पढ़ेगा। सत्तावारी के विचायक उनने बोट न देते वाल मतदालाओं में प्रवास का व्यवहार करते भी देशे पुने गये हैं।

हाल में हुए कोक्समा के जुनावां में कुल मतवातामां में से आये में कुछ ज्यादा मत-दाना बोट वालने की थाले । उनमें से माल आये गत बानी कुल में से चौलाई से भी काफी रूम मत स्तामारी पार्टी की मिले, और बाकी बावे मत दूसरी वाटियों को व तर्दलीय सोनी मी मिले । जो कुल मत वहे जनमें ने २/१ मतो से कुल ज्यादा सत्तामारी पार्टी के हिस्में में मार्थे । अविनामितत कामेंस को १६६७ के जुनावों में कुल मतों का २१५ ही हिस्मा मिला भाषरा, तेल मादि [ १७४

था। पिछ्टत व्यवहरमान नेहरू के समय से जो धाम चुनाव हुए उनसे से निसी एक चुनाव में जो उधादा से ज्यादा सात मिले से वे सो कुल मती के आप से कम हो वे। बोट कितने भी मिले हों, इस बार फिर सत्ताधारी पार्टी का लोकसमा में भारी बहुनत हो गया जितने भी आधार पर शोच माले कर देश पर जैसा चाहे वेसा शासन चताने रा प्रदिक्तर तम पार्टी को मिल गया। चुनावों के लिए उम्मीदेवार छाटने का एक ही विद्यान दिसायी देता है कि यह व्यक्ति जीत सकने वाला है या नहीं, चाहे वह किसी भी प्रकार से जीत जाए और भने ही बहु मला भारती हो या नभी हो। सत्ताधारी के हारा जारी किसे गय नारे जीर-जीर से तमाने का मुख्त तो उस उम्मीदवार से होना ही चाहिए, चाहे वह सत्ताधार्टी के मित्राभित को मुख्त हो। तमाने की जीत के लिए जो जातिबाद सादि के हक्क में पर समस्ता हो, न मानता हो। बाहिए ।

मध्याविध द्रनाव कराने की बात बुख पार्टियों वाले बहते थे। पर सत्ता की ग्रीर से यही कहा जाता वहा कि मध्याविध चुनाव नहीं होगे। इसी बीच सत्तावारी पार्टी की धपनी तैयारी हो गयी तब चुनाव घोषित कर दिये गये। दूसरी पार्टियो के मिर पर चुनाव एक प्रकार से ग्रचानक ग्रा गये। विधानसभाग्री ने चनाव साथ के साथ न होने का ग्रसर भी कम साघन वाले अम्मीदवारो के खिलाफ पड़ा । सलावारी पार्टी को सरकारी साधनी भीर वर्भवारियों का उपयोग करने की छट थी ही। सरकारी हवाई जहाज, करीब करीब विना किराये के, प्रधानमन्त्री के सुपूर्व थे। श्राखिल भारतीय धाकाशवाग्गी एक मात्र सत्ताघारी की भाकाशवासी थी। कई लोगों ने यह शय दी कि चनाथ में कुछ समय पहले प्रधानमन्त्री मादि को त्यागपत्र दे देना चाहिए। पर विशेषशो ने बनाया है कि सविधान के प्रमुमार ऐसा करना जरूरी नहीं है और केवल नैतिक हस्टिसे भला कोई भी ऐसा क्यों करने लगा? इस राजनीति की भीर इन चनावों की मैतिकका का तो उसी समय लोग हो जाता है जब किसी भी उम्मीदवार के भूनाव में उच्चतम मर्यादा ३५ हजार के बजाए ३५० हजार खर्च हो जाते हैं, किसी किसी के १०-१२ लाख तक खर्च हए मुने गये हैं और किसी किसी के २० लाख या इससे भी ज्यादा । शायद भूलचुक से ही किसी उम्मीदवार की श्रोर से संच्या हिसाब दिया जाता होगा । यह जिन्दा हाथी को निगल जाने जैमी बात है । फिर मत्ताधारी पार्टी के "गरीबी हटाओं के नारे के मुकाबले में परानी काग्रेस झादि के मोर्चे का नकारात्मक नारा "इन्दिरा हटाओ" हो गया जिसका लाभ प्रधानमन्त्री को खब भिला मालूम होता है। साय ही मोर्चे ने ग्रमना कोई सयुक्त कार्यक्रम पेश नहीं किया। इस सब पर से भ्रामतौर से भतदाताओं ने सीचा होगा कि जो खद क्या करेंगे यह तो बताते नही है तो फिर उनकी स्रोर से गरीबी हटाने वाली (बेचारी) इन्दिरा को हटाने की वाल क्यों की जाती है। इस प्रकार गरीबी हटाने वाली तस्वीर लोगो को एक बार हो पसन्द बा ही गयी। फिर स्त्रियों ने हरिजनो ने और मुसलमानो ने तो अपने तमाम मत नवी काज स को दे ही दिये मालूम होते है। राष्ट्रपति के पिछते चुनाव के समय एक नो अन्तरात्मा की पुकार की घोषणा की गयी थी। दूसरे दल बदलू राजनीति का खेल खेला जाने लगा था। और अब इतनी जीत हो जाने के बाद भी सत्तापार्टी उसी दल बदलू और तोड़फोड़ की राजनीति से बाज नहीं ग्रा

१७६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

रही है। पता नहीं बर्तमान चुनाव प्रशाली में कब तक ऐसे परिवर्तन हो सकेंने बिनके ही जाने से इस सारी योलमान की रोक्याम हो सकें ? न यह पता है कि कब जनमत इतना मगठित हो जाएगा कि वह किसी की भी कोर से होने वाली घायलीवाजी को चलने ही नहीं दे ?

गरीबी हटाने के लिए बया किया जाएगा सो धमी तक जनता के मामने साफ नहीं हमा है। स्वराज के बाद से बेकारी वडनी ही गयी है। पचवर्षीय योजनामी के मन्तर्गत जितने लोगों को काम देने की बात सोची जाती है उससे कही ज्यादा नये वेकार हर साल हो जाते हैं। युवकों को नौकरिया देने या बुढ़ों को विना कमायी पैशन देने के जरिये मे गरीबी नहीं मिट सकती । काम कर सकने वाल सोयों को उत्पादक काम दिया जाने लगे तव गरीबी का मिटना शरू हो । तथाकवित राष्ट्रीयकरण भी शायद ही गरीबी मिटा सकता है। किसान अपने खेत का मालिक होकर काम करता है तो वह जरूर ही ज्यादा मान पैदा करके जुशहाल हो सकता है। पर जिस मजदूर का कारखाने में हिस्सा नहीं वह जी तोड मेहनत क्यो करेगा ? उल्टे वह तो नित्य उठकर हड़ताल करता है, घराब करता है। सरकारी कारखानो तक में मजदर का हिस्सा कहा रखा गया है ? सरकारी कारखाने माम-तौर से घाटे में चलते हैं। इसका कारण यही है कि उन कारखानों का कोई मालिक नहीं है। जिन बैको का राप्टीयकरण हो चका है उन्हें वैकिंग के सिद्धान्तों के प्रनुसार न चलाया यया तो उन वैको की भी दर्गति हो जाना संभव है। नारो ने ग्रपना काम कर दिया। उनसे सत्ताघारी पार्टी की जीत हो गयी। इससे खाये बारो से कोई काम चलने वाला नही है। प्रव नारों से जनसमुदाय में निराशा पैदा होगी और वह निराशा प्रवश्य ही सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ आएगी।

मैं लुद किसी भी बाद का पूरे तीर पर कायल नही हैं। साम्यवादी समाजवाद परिने हो के सिए पुने कहुत कारत्माक तथाता है। वेसे ही समाजवाद का प्रमुक हुतर रूप में सत्तराक सावित हो सकता है। मारत में यदि समाजवाद होगा तो उसे मारति में प्रतिक्षा के प्रमुक हुतर रूप में के प्रमुक होता होगा। क्षमी हाल ही में एक केन्द्रीय मन्त्री ने कहा है कि यदि भारतीय प्रतिका के प्रमुक्त होता होगा। क्षमी हाल ही में एक केन्द्रीय मन्त्री ने कहा है कि यदि भारत में १० सालों में भी समाजवाद लाया जा सकेगा तो वह बड़ी बात होगी, क्यों कि भारतीय जनता समाजवाद के निए तैयार मही है। समाजवाद का नारत सपाने बाती नयी कार्य से एक वर्ष नेता ऐमा कहते हैं हो उसका बया मतलब होता बाहिए? भारत में जो प्रकृति स्थापी दे रही है वह प्रधिनायकवाद की प्रोरं के नान्त्र नाहिए? भारत में जो प्रकृत के एक वर्ष नेता ऐमा कहते हैं, जिस बाद में ध्यांक की स्वतन्त्रता का हरए। होता हो वह बाद मुक्ते भान्य नहीं है। एक व्यक्ति हुतर व्यक्तियों के स्वतन्त्रता में वायक न हो, केवल यही एक रोक व्यक्तियों स्वतन्त्रता में वायक न हो, केवल यही एक रोक व्यक्तियों स्वतन्त्रता में वायक न हो, केवल यही एक रोक व्यक्तियों स्वतन्त्रता पर त्रावायों जो मन्त्रती है। वाकी तो सबको प्रपोत स्वतन्त्रत विचार रखते तथा प्रपत्त प्रपा प्रपत्त करते समाज के लिए व्ययोगी माल पैटा करते की झाबादी होनी चाहिए। राजनता प्रपं पर्य राजना दोनों को ही विकेटित करता पढ़ेगा। बिचा पढ़ित और धर्म रचना का समस्वय विकास प्रपत्त आवश्यक होगा। आज विके स्वराज कहते हैं वह प्राम लोगों का स्वर्ध

मही है। वह स्वराज किन्ही साल सोयों का हो सकता है। "कल्यास्कारी राज्य" ने जनता की पगु, पराजनमंत्री और जिससमी बना दिया है। मेरी राय में हीनता नरीबी को प्रमेशा बहुत ज्यादा बुरी चीज है। मुख लोगों को जनता को ठपने का मौका मिल गया है भौर इस प्रकार उपने बालों को सस्या बढ़ने का प्रवाह चल रहा मानूम होता है। इस प्रवाह को रोकने की समस्यारों और हिम्मत सर्वेद्यापारस्य जम्मतुष्या में आगि नाहिए। नहीं तो समाजवार के नाम पर बहुत बढ़े बड़े, मंमने, छोटे भीर बीने तेताओं का जो एक गिरोह बन गया है वह सीर भी पक्का हो जाएगा जिससे मुक्त पाने के लिए माधारण जनता को सन्ततीपाला बड़ी आरी क्यनित करनी पड़ेगी। मुक्ते संगता है कि भारत में वह क्यनित करने होगी।

## **१: बुराई का मुकाबला**

सब कोई जानते मानते सौर कहते हैं कि इतने नालों के स्वराज से देश की हालत में कोई लास सुभार नहीं हुमा है। "गरीबो इटाओं" के नारे की पिछले दिनों कितनी अपाय जरूरत महतून हुई थी। बया पता गरीबी इटाने के निष्ण कीन कीन से उपाथ किये आहार है। सौर उनके गरीबों किस हद तक छोर कव तक हटेगी? स्वराज के अमाने में जो भी अच्छे काम हुए माने जाएं उनके गरीबी नहीं हटों है। बस्लि बेकारी, महताई धादि बड़ी है। बहुत्हाल किसी को सतीय नहीं दिखामी देता है। तमाम देहात में बिना जमीन के कोई न रहे, जमीन की पैदाबाद बड़े, हद कहने सौर भावें में मास्यक माल के उत्पादन के लिए पृहुज्योग चालू हो जाएं, शिक्षा प्रशासी में मामूब चूल परिवर्गन होकर लिखा की ध्यवस्य होने का सौर तिक्षल होने के सुरत्व बाद युक्को को काम मिलने की सुविचा हो जाए तब गरीबी का मिटना कुक हो सकता है। कीन जाने यह सब छुख किया थाएगा या नहीं?

जो हो, मुक्ते गरीबी से भी ज्यादा विश्वा हीनवा को मिटाने की है। किसी की गरीबी कम हो गयी और हीनवा बढ़ गयी हो वो उसे में बहुव ज्यादा कराब बाद हुई बाहूँगा। स्वराब से देशवामियी की जो राजवत्ता मिली उसने देश के जनसपुराय की पगुता और स्वराब से देशवामियी की जो राजवत्ता मिली उसने देश के जनसपुराय की पगुता और परावत्ता वा अरूर बढ़ी है। वनजीवन पर सरकार दुरी तरह से छा गयी है और सरकार के एवेज्टो का क्षास काम है जनता पर एहसान घोगते हुए उसकी भोती में कुछ न हुछ इतबा देने का, सो प्रथमा कमीधन नाट कर। यह मारी खराबी जगर से गुहू होती है। एक दिन एक वड़ा गयी कहता है हम पनाजों से घन लेकर गरीबी में बाटेंसे। यूसरे दिन वहीं मंत्री कहता है पनवाजों में घन लेकर गरीबी में बाटेंसे। यूसरे दिन वहीं मंत्री कहता है पनवाजों में घन लेकर गरीबी में बाटेंसे। यह सुनते हैं कि प्रस्टावारी का बहुज्जार करना चाहिए। यह सुनते हैं। वानकार लोगों को लगता है कि श्रिट्यारों से बाटेंसे पारीबी नहीं सिंगी। यही सनी

गांधीजी ने हमको सत्य के लिए आग्रह करना सिसाया था। उस पर से ग्रव हमे बुराई का मुकादला करना सीखना होगा। वो लोग बुराई से फायदा उठा रहे है वे बुराई १७८ ] प्रत्यक्षजीवनगास्त्र

का मुकाबना करने के बबाए उनका मुकानका करेंचे जो बुराई का मुकाबना करने के लिए एते होंगे। यदि कोई यह कहे कि बुराई पहले भी थी थीर धाव भी है और लेंडे अपने देश मैं है उत्तर्स ज्यादा करें एक देशों में भी है जो उनसे उनका नामाधन नहीं हो। सकता जो बुराई की मिस्त्रं बची करने सनोध मानकर बुराई को बड से उत्पाद कर लेंक देना बाहते है। ऐसे लोगों को कीच खड़ी होनी चाहिए किन्हें खुद पैमा, पद, प्रतिद्ध घाटि कुछ भी मही चाहिए घोर जो गायु के जीवन में से बुगई का उन्मुतन करने के लिए घनना सनध शीवन धर्षण कर देने को तैयार हो। हुये विध मिला हुया घमुत नहीं चाहिए। इनमें किसी पार्टी विधोप मा व्यक्ति विधोप का मुख्यान करने का खवान नहीं है, जहाँ बुराई दिखायी देशी बही पित एक में बात है। बुराई के मुख्यान में पित पढ़ने के लिए नगर भीर प्राप्त के जनमनुदाय को चया होना चाहिए, धौर वनमनुदाय को जगाने वाने सेवक चाहिए। है कोई बुराई से लंदने की हिस्मत वाले बहाहुर?

#### ६. ग्रनर्थ की जड़

देन की बतेमान स्थित के विषय में चारों बोर विश्वा प्रकट की जा रही है। इस रेख का विषय में रिक है, इसमें किसी वार्वाचोष के, कियों पार्टीर केप की नीति विषय के रक्षके कार्यक्रमधिया के मुख्योंचा की चर्चा मुक्ते बड़ी करते है। कोई भी पार्टी यदि सन्तों निविचत नीति के क्ष्मुसार सपने निविचन कार्यक्रम को सचाई घौर नेक्जीयती के माथ समत में माए घौर यदि वह साध्य की सच्छाई के माथ-माथ माथन की सच्छाई को भी प्रनिवर्ष माने ती उनके द्वारा जनता की भवाई हो सक्ती है। बोधीबी हमको स्थिता पर्य हैं कि गावनीनि में भी मैं विकता बरती जागी चाहिए, हमारे हर काम कर साधार सरय-प्रदिशा होनी क्षाहिए।

मुसीतत यह है कि हम लोग सामदायिकता के विरुद्ध वाल करते हैं, पर हमारे ध्यवरार से मोप्रदायिकता को प्रोस्ताहन मिलता है। हम लोग जातिवार की निरम्न करते हैं, पर हम कदम-कदम पर महारा लेने हैं उसी जातिवार का। हम लोग जूंजीयतियों के विरुद्ध बहुर उमनते रहते हैं, पर हम अपना और प्रपत्नी पार्टी का काम बसाते हैं पूर्वीपतियों के हारा अनुनिक्त गीति से इकर्टे किये हुए उनके हारा अनुनिक्त रीति से प्रप्तन किये हुए यन से। हम कुछ लोगी को प्रतिगामी बनाते है, पर हमसे अुद से अनिवासिता के दौप भरे परे है। हम सुरुत ना मादनों को उनके बोट की सालिर पुमु बनाते हैं और उनका गीपण करते हैं।

यपने यहाँ राजसता बोर पनसता बाने धापत में मिलकर अप्टावार के पुरस्करों यने हुए हैं। बोरकमा के पुनाब के रार्च को बची मीमा ३५ हजार स्थया है, पर पिछली बार किमी के भी चुनाब के ३५० हजार से कम रूपता मायद ही खर्च हुआ होगा ? किर भूठ। दिनाव येच फिया जाता है, बड़ी ३५ हजार के भीतर की रकम का ? जो म्याँवड इत्या भाषण्, लेख ब्रादि [ १७६

रपया कही से भी खर्च करता है, उसे वह किसी भी प्रकार से वमूल कैंसे नहीं करेगा? हमारे यहां चुनाव में राजसत्ता का झीर राजकीय साधनी का दुरुपयोग वडी वेशमीं के साथ किया जाता है धौर जिनके हाथ में राजसत्ता होती है, वे उम्मीदवार मतदाताओं की कई तरह से रिख्यत देते हैं।

इस सारे अनर्थ की जह कहां है ? जैसे भगवान को खोजने के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं है जैसे ही राष्ट्र की इस पातक बीमारी के कारण को भी हम प्रपने मीतर ही पा सकते हैं। स्वराज-भार्ति के पहले सभी तरह के लोगों के सामने जिदेशी सत्ताथारियों को हदाने का सवाल वा और बहुन से लाग कुर्वानी करने के लिए तय्यार थे। तब भी दूसरे महाने के समय में अपने यहा सन्ताई काला बाजार धादि के रूप में देशहों हु कात हत काला हमा सौर गांधीजी के उपदेश के बावजूद कुछ 'दिवायकों' ने शामन की चकमा देने में होंगियारी मानी कोर उन्होंने हिसक कार्यदाहियों में भी यदाकवा हिस्सा तिया, जिसकों काट शायद किसी ने मही ही।

स्थराज-प्राप्ति के तुरन्त बाद ही हमको घपनी मताकोलुपता धौर धनतोलुपता का दर्गन होने भग गया। पण्डित जवाहरलान नेहरू जैसे चिक्त-सम्पन्न नेडा भी घपना जोड-तोड विठाकर जनते से। कोई चरित्रवान व्यक्ति भी यदि किमी न किसी कारण से उनकी प्रपन्ते ध्रमुक्त नहीं तनता या तो उसे वे वर्षातत नहीं कर मकते ये धौर उनके मन की सी बात करने वाले कम घन्छे लोग भी उनकी हुगा के भावन यन मकते थे। पण्डित नेहरू की मजी जिल्ला का सेस ध्रम्यक्त चुने गये स्थापमूर्ति श्री पुरुषोत्तमवान एण्डन को हटाकर लुद करिस प्रप्यक्त बन जाने का घरलाधनीय काम पण्डित नेहरू के द्वारा हुआ सो कौन नहीं जानता?

लगमा उन्हीं दिनों पण्डित नेहरू ने ऐलान किया-चुनावों के दिए काप्रेम टिकट मिर्फ उन्हों लोगों को दियें जाएंसे जो न केवल ईमानदार हो बल्कि जिनका ईमानदार होगा रोमन हो। उन्हें प्रमुक्त प्रदेश के विषय में बताया गवा कि बहा नी प्रदेश जुनाव क्रमिति में बहुमत जन लोगों का है जिन्हें केट्ट की धीर से टिकट नहीं देने की बात है। किर मी टिकट दिये गये उन्हों लोगों को श्रीर उनमें वे किसी एक को टिकट नहीं दिया गया तो वह काग्रेस के जिलाफ खड़ा होकर जीत गया। बाजिए उस व्यक्ति की नाग्रेस विचायक पार्टी में से लिया गया। जब सतावारी पार्टी के पान पर्याप्त शक्ति होती पी, तभी सिद्धान्त की बात की

बाद में किसी समय कामराज-योजना बनी। सब मिन्नयों के त्याय पत्र ते तिये गये स्रीर कुछ के मदूर कर निवें गये, इस पीयाड़ा के साथ कि वे मनवन का काम करेंगे। परन्तु उनमें से किसी विरंते ने ही समवन का काम किया होगा। स्वयं करने का दिलावा पूरा होने के बाद कम से कम एक को वहुत जल्दी ही फिर से मन्त्री वना तिया गया। यो तो प्रच्छे से मच्छे मनुष्य में थी हुख न कुछ कमी वेची पारी जा सकती है, पर जिनको मर्जिन पद में हटाया गया, उनमें कुछ क्षोम वास्तव में बहे चरित्रवान और सिद्धान्तवादी थे, पर उनका लास कुसूर यही था कि वे धपनी वात के पक्के होने के कारख नेता की नापसन्द थे।

बाद मे एकबार राष्ट्रपति का जुनाव होने की नीवत धामई। बहुमत ने किसी एक को नाम जद कर दिया। प्रधानमन्त्री की नियाह एक दूनरे व्यक्ति पर थी। प्रधानमन्त्री ने जमी समय ऐसानिया कह दिया कि मेरी मर्जी के खिलाफ़ करने दालों को मजा पखा दिया जाएगा। गुरन्त ही प्रधानमन्त्री को पक्तन्द का ख़जुक व्यक्ति स्वतन्त रूप से लग्ना हो गया, यह कहकर कि मैं धपने घन्तरारमा की पुकार के अनुनार खड़ा हुया है, किसी दूसरे के हगारे से नहीं। प्रधानमन्त्री ने एक धोर तो बहुनाब वाले व्यक्ति का नामवदणी का पर्ची पीम कर दिया, दूसरी सीर जाहिर कर दिया कि नव सोग खपनी सन्तरारमा के अनुनार बीट वें।

प्राजित अयकर दलबदल का जमाना था गया। केवल उन दिनों में ही नहीं, यदिक प्राज तक भी, यानी चुनावों में इतना मारी बहुपन बिल जाने पर भी, सत्तामारी पार्टी प्रमुत्त स्वाधं के लिए दलबदल लोगों को उकताने में प्रमुखा हो रही है। कितनी बेहुनाई का यह काम है भीर कितनी मान से थीर किनने बहुति बनाकर यह किया जा रहा है? कोग्रेस के हुकड़े हो जाने के बाद दोनों हो हुकड़ों में पहले की भाति सभी तरह के लोग है। दोनों में ही भश्तामा भी हैं तो प्रतिमामी है। पर यह भेद मौश खात है। भस्त में भेद यह है कि प्रधानमानी को उनके एद पर बनाये रखता चाहने बाले कीन हैं भीर उनके रिलाफ जा प्रकृत बाले कीन?

देश में जो बिगाड खाता हो रहा है—अस्टाबार का, सता व घन के लोम का, मिन्नयों धादि के ठाठ से रहते का, कथनी और करती के फर्क का, वेकार नारों का, गार्ति क्यादस्था के लोप का, हिसा का, महमाई का, वेकारी का, गरीवी का, युवकों के देताब होते का, जानिवाद का, साध्यदाधिकता का, आदेशिक और स्थानीय विवादों का, मियान की भूपभूत वातों को समाप्त करने का, अपूर्विधियरों की अवहेलता करने का क्रकाः प्रधिनायक वाद की और बडने कान्यस सबका भून कहा है ? भून को और कहां लोजने की जाए ? फलत. जिस पार्टी के २३-२४ वर्षों के शासन में यह सब धनवं हुमा, उसी से जबाद तबव करता होगा ।

प्रस्यन्त दू से का विषय तो यह है कि यह सारी रिवर्ति हमकी मुद्रा गई है। हम सोचने मादूम होने हैं-मसागत धीर दलगन राजनीति में तो ऐसा होवा हो सही, अध्याचार किस जमाने में नहीं वा भीर भाजकन किस देख में नहीं है ? किसी भी जरिए से किमी के हाथ में घन भा गया या राजसत्ता म गयी तो वह भतिरिट्ट हो गया और उसके तमान पार भुना दिये गये। ऐमें लोगों के बारे में यह कहने वाले भी कुछ लोग पिन जाते हैं "कंगे भी होंगे, पर ये बेचारे से देकर काम तो कर देते हैं।" अपने यहां और भाजदी न सही, पर गोलमाल करने की पूरी भाजदी है और रुष्ट मिनने का भय किसी को है नहीं। जो हो, वर्तमान सत्ताघारी से इस स्थिति को बदलने के लिए कुछ होगा नही ग्रीर जो बास्तव में भले व ऊँचे दर्जे के नि.स्वार्थ लोग हैं, उनकी मुनता कौन है ? जब किसी सिद्धान्त को न मानना ही सिद्धान्त वन जाए तब क्या हो ? ऐसी हानत में किन्ही सज्जनों को नगा चढ जाए और वे नमें होकर मैदान में कूद पड़ें और सर्वमाधारए जनता के बीच में जाकर सलल जमाएं; और तब जनता उलट पढ़े, ऐसी धनसत्ता और ऐसी राजसत्ता के खिलाफ शान्तिपूरी बगाबत करने के लिए । वस, यही दीपक टिमटिमा रहा है, अपने से यहुत हूर । हमको उसी दिखा में थड़ा के साथ, विस्वास के साथ चलना होगा । तब मागे का रास्ता भी स्वतः मिनता जाएगा ।

#### ७. शास्त्रत जीवनमस्यों का हतन

मृष्टि के आदि भरत का कुछ पवा नहीं। न यह पता कि यह तमाम कैसे क्या हो गया होगा? परन्तु आस्यावानो की तरह बैजानिक भी यह मानने लये है कि हमप के अलावा कुछ न कुछ घहका भी है। वह भड़क्य मान नक किसी की एकड में नहीं प्राया मालूम होता है। ग्रीर ग्रांकिर भनुंहिर के अनुसार केवल "स्वानुभूरोकमान" ही है।

जो हो, सानव जीवन में कुछ नैतिक पूल्य होते हैं। "वर्ष के घनुसार कुछ कर्तव्य हैं तो कुछ प्रकर्तव्य हैं, छुछ सही तो कुछ गकत। उक्त कर्तव्याकर्तव्यो से भी एक तो वे हे जो प्रशायपकता पटने पर बंकाशानुसार बदल सकते हैं। बाती कुछ जीवनमूल्य ऐसे हैं जिन्हें सनातन, शाखत कहा जा सकता है, यथा "पिहिंखा सत्यास्तयम ।"

मनु महाराज ने धर्म के वस सक्साण गिनाये, याधीओं ने ग्यारह वस निश्चिन किये। योगों ही जगह बाद, प्रहिमा और सक्सेय का स्थान सर्वोधीर मानूम होता है। मनूम्य रहन-सहन भावि मामलों में प्राजादी बदल सकता है, पर वह सत्य की श्रहिसा और प्रस्तेय को प्रपत्नी जोलिया पर छोड़ सकता है।

परन्तु पहन-सहन प्रार्टि में भी झाजादी बरतने का नतीजा चोरी करने का वानी दूसरों भी भीज प्रमुखित रीति ने हड़व क्षेत्रे का एव धरने लिए तग्रह करने का जकर हो सकता है। जो मेरी राय में ममाजवाद के प्रचलित सिद्धान्त के विषयीत है और वीरी के द्वारा सग्रह करने वाला ने महिलक हो सकता है, न सरव्योल ।

मारत में ऋगेतिकता का प्रसार मसावह है। खनीति पहले न रहो हो सो बात नहीं है पर धाज जैसी अनीति कभी भी नहीं थी। आज तो हाथ को हाथ साथे जा रहा है। आज तो आजारी के नाम पर, बुद्धि विवेक के नाम पर, विज्ञान के नाम पर हर कोई सपना फूछ भी दोय न मानता हुआ कुछ भी करने के लिए अपने आपको स्वतन्त्र समक्षता है।

जो राष्ट्र में, समाज में अमुषा हैं वे जीवन-मूख्यों के मामले में सबसे झीवक दोपी दिखायी देते हैं। तब क्या किया जाए ? व्यापारियो, राजकर्मचारियों को दोपी ठहराया जाए १६२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

तो वकोल कहा बचे हुए हैं ? विल्क चिकित्सक ग्रीर शिक्षक तक इसी लपेटे में फसे जा रहे हैं। सताधारी लोग तो अप्टाचार के कई प्रकार से पुरस्कर्ता ग्रीर ग्रमुधा हैं ही।

दमका रहस्य यह है कि सबको ज्ञान और ठाठबाट के लिए बहुत मा रच्या चाहिए। वह रच्या कहाँ से छोर की छाए ? छत्वच्य ही वह उचित उपायी से नहीं मिलेगा तो उसके लिए छनुचित उपाय काम से लेन पड़ेंगे। बोरी करो, फूंठ बोली, दूसरों का गना जाटो थोर ठाठबाट बाल बड़ें बन जासी और खान से रही।

जुनावों में इस तमाम बुगाई का सबसे ज्यादा दर्शन होता है। जीतने के निए कुछ भी किया जा सकता है, तो किया हो जाता है। छोटे-मोटे जुनावों में भी हुनारी रूपये सर्च करने पड जाते हैं। जितना बडा जुनाव जतना हो भीर मनावार। राएक के जिए कादून बनाने वाले प्रधर्मरत हो रहे से तो इस भारत राष्ट्र का रक्षक कीत ?

## प्रतिकृति । प्

"राजसत्ता कभी गलती नही कर सकती"

हाल ही में मैं एक लेख "साम्बत जीवन-मून्याँ का हनन" सिल चुका हूं। मैंने जानकृत कर केवल सत्य, ब्राँहमा और धरतेय, इन तीनो सो ही शास्त्रत जीवन-मूत्य माने हैं। इस तीनो मे भी सत्य का स्थान मनके ऊचा है। बहा तक मैंने समक्रा है, बिनोवाजी केवल प्राप्त की ही 'पाप' मानते हैं, बाकी धर्वनिक बातों को वे जेवल 'दोप' कहते हैं। परस्तु किसी मी एक दोज मे से, यवाशील-चारिज्य के ब्रमाय मे में, प्रसस्य करी पाप प्रवम्य पैया होता है।

विद्यार्थीकाल में जानी हुई कई बातें मुके याद हैं। उनये से दो बातों का निक मैं साज करता हूं। एक नो 'सर्वे गुएग. काचनमाध्यमित' सर्वान् तमाम स्वगुएग, तमाम दौर, सारा पाप ये सव पनसत्ता के नीचे दव जाते हैं। जिनके पास पनमत्ता है उसमें मद गुएग मान लिये जाते हैं। दूसरे राजा से अर्थान् राजसत्ता से कभी कोई यलती नहीं हो सकती। पानी जिसने कैसे भी राजसत्ता वो हिषया निया उस 'सर्वेगुएग सम्पन्न' के सव पुनाह भुता चिमे जाते हैं।

धौर राजसत्ता व धनसता में धन्दहनी मेल बहुत देखा गया है। ध्रपने भारत में सत्ताचारी लोग धनपनियों को कोसते कभी चक्रते नहीं, पर चुनाव में उन धनपनियों का बिपुन धन काम में सेकर जीतते हैं। धनपनि धक्ते में सत्ताचारी की बहुत निन्दा करते हैं, पर उसे ही जिजाने के लिए चुपचाप ध्रपना धन दे देते हैं। कुछ दिन पहले समाजवारी मत्ताचारी ने धपनी उद्योग नीति का बुद्ध विक किया, उसका यू चीपवियों के सगठन के द्वारा स्वागत किया गया। राजसता और बनसता के मुकाबले में किसी विद्वान की विद्वता की, बंजानिक के विवान की, मुखोर को बहानुदी की, चरित्रवान के चरित्र की, ईमानदार की ईमानदारों की कोई खास कद्र—कीमत नहीं। ये वब राजसत्ता और धनवत्ता के द्वारा चश्च में किसे जा सकते हैं। और जो दोनों या एक सत्ता के बश्च में न साने की जुरंत कर बैठे तो उसे कुचना जाने को तैयार रहना चाहिए। अर्थात् जो प्रपने दूबरे गुखों के बारख बढ़ा हो जाएना सी उसकी खैर नहीं होगी।

जो लोग होशियार होते हैं वे या तो राजनक्ता के पंछि दोड़ते हैं और उसे पकड़ कर बैठ जाते हैं या वे अनुल पन बटोर कर कुबेर बन बैठते हैं। जो बहुत ते लोग ऐसा नहीं कर सन्दें हैं में राजसत्ता या घनसत्ता दोनों में ने कियो एक के चिपके रहते हैं और अपना काम बना लेते हैं। सर्वेनाश्वरण जनसमुदाय चुपके-गुणके राजसक्ता और घनसक्ता दोनों की निन्दा करता है और बाहिर में जनकी सलाम बजाता है। जनममुदाय बरता है कि उसका कोई मुकसान न करते।

कोई व्यक्ति बानेदार जैसा मामूनी पुलिस घषिकारी बन बाता है तो उससे सारा पास प्रशेष बरने लगता है और उसी को मुरुकर राम राम करता है। कोई दूसरा व्यक्ति बड़ा प्रोफैसर बन जाता है नो उसके लिए यह कहा जा सकना है कि "छोरे पढ़ाता है की।" मैं सोचता हूँ कि स्वय गांधीओ राजनीति के हतने बड़े पुरस्कर्तान होने तो केवल उनके महास्मापन की बहुत ही कम कद्र होती। बिसकी राजनीति में चलती है, सोग केवल उसी का प्रभाव मानते हैं।

मैं एक ऐसे बड़े ब्यक्ति को जानता हू जो गाबीबों के मक्त समभ्ते जांत थे। वे गाभीजों नी छाया की भीति पीखा करते रहते थे। पर जब धन्त के दिनों में गाबीजों का राजनीतिक प्रभाव कम हो गया जब पिंडत शवाहरताल नेहरू और सरदार दलसभाई पटेल तक ने गाभीभी की बात मानना छोड़ दिया नव वे बड़े व्यक्ति करने लगे प्रव गाभीगों की प्रार्थना समा में बूढ़ी विधवाधों के छतावा कीन बाता है? उसने खुदने तो गाभीशों को छोड़ ही दिया था।

मह बस्तुस्थिति है त्रिष्ठे मानने से शायद ही कोई छउवन मनुष्य इनकार करेगा। परन्तु निहित्सवार्थ तो अवश्य ही राजसत्ता का और धनमत्ता का ही गुएगान करेते। बाकी सोगों में साहुद और शास्त्रिश्वाम नहीं है वे सीच ही नहीं मक्की कि उनका किया भी कभी कुछ हो सकता है। उन फिर इन नास्कीय स्थिति को बदलने का क्या? निराश होकर बेज जाना चाहिए? हाँगिव नहीं। इसकी तथा अन्य सन्वत्तित्रन विषयों की चर्चों में सपने इसकी तथा अन्य सन्वत्तित्रन विषयों की चर्चों में सपने इसकी तथा अन्य सन्वतित्रन विषयों की चर्चों में

### ६ साथियों की ग्रहिसक हत्या

जद स्वराज के लिए सवर्ष चल रहा या तब तत्काल कुछ पाने को नही या। इन-

निए हमारी तीचे दर्जे की बृत्तियों के प्रकट होने का मीका नहीं था। फिर भी कुछ दर्जे और साम लोगों नक के जेन जीवन की जो बानें मुनी जनसे सन्देह हीता या कि हम लोग उनने ऊंचे दर्जे के सादभी नहीं होंने क्या <sup>9</sup> हमारे राष्ट्रीय चारित्य की खराबिया दूसरे महत्त्वुड के दिनमें और किट स्वयान के बाद मामने आयीं।

१२१९-५० में हमारे मोरियन नेता ने ऐनान किया कि चुनाव में कांग्रेम टिकिट इन मोर्गो को रेते चारिए जो न निर्फ ईमानदार हो दिक्त जिनहो जनका में ईमारवार होने की न्यानि भी हो। उन्हों दिनो तरकाचीन कार्येम धन्यक्त को हटाकर दे खुद कार्येन खपक्त बन गरे थे। जिन कार्येम धन्यक्त को हटावा उनके त्याय और ईमानदारी का तीहा साम दीर से माना जाता था।

मुक्ते कम में कम एक राज्य को तो प्रस्तक बानकारी भी। उसके खाबार पर मैंने नेना को निका—साम केवल इंसामदार लोगों को टिकिट देने की बात करते हैं भीर समुक्त प्रदेश की चुनाव समिनि से नो बहुसत उस लोगों का है जिन्हें बार केन्द्र की सीर में टिकट पाने के लायक नहीं मानने हैं। ताहम टिकिट उन्हों से से भीर और वांस्रेम के विरद्ध जीवने काने एक कोई मेजन को तो किट के कार्यों से के बिचा गया।

कई मालों के बाद कामराज योजना याची दो परने मिरे की घोलाघडी थी। वब मिनाों के त्यापण ने निये गये और उनमें ये कुछ के त्यापण मद्भर कर लिये गये, इन ऐनान के माय दि वे मंदान का काम करेंगे। सनय दिये गये योजियों में ने सायद एक ने भी जाम तीर दे पार्टी का काम कर जिया। मन्त्रद था दो लोय नेता को प्यमन्द नहीं ये इन्हें एक बार बाहर निकाल कर जिस हो बरा।

नागरूर का किल्मा ब्रामा । उसमें भारत के प्रधानसभी हो सम्भवतः उनकी महीं के जिनाक सन्मोना स्वीकार करना पड़ा । ब्रीर न्हन्तमयी स्थिति में उनका देशन्त हो गमा । उनकी मृत्युं के बारण की बांब कराना भारत सरकार की मंत्रूर नहीं हमा । हिनमा । वार्ष मृत्युं नहीं समा । वार्ष मृत्युं नहीं हमा । हिनमा हो गोरपुन हुमा, पर सरकार टत में मान नहीं हुई। विचारों पता है कहीं हमने प्रधानमन्त्री को सार दिना हो है जिबर नान ।

राष्ट्रपति के श्वेतव का सामना भाषा । बहुमन ने ऐसे व्यक्ति को नामवद कर दिया को प्रधाननन्त्री को पत्न्द्र नहीं था । प्रधानमन्त्री ने उस व्यक्ति का नामांदन पत्री भी रणियन कर दिया । पिरुट विश्व तरह ने उस व्यक्ति को हराया गया तो कितको माधूम गही है । चारों स्रोद कन्त्रपत्था की सामाव बोन बळो । भीर स्वबदन का दौर अन पड़ा । सनुगानन पत्र का इन्से बहु व्यक्तियुक्त कर होता ?

हिर प्रधानमन्त्री ने नुछ न नुछ क्ट्कर धपने नुछ ताथियों नो धनगकर दिमा। बाद में जो कुछ काम हिया गया वह सब उन साथियों के रहते हुए नी हो सकता गा। और जो काम प्रधानमन्त्री के वस का या खायर इरादे का भी नहीं या वह तो कुछ व्यक्तियों के मतम हो जाने से भी न हुमा, न होने वाला है। जो मान प्रधानमन्त्री के साथ है उनमें से कितने उनके घोषित विचारों को मानते हैं ?

इन कारखों से में कहता हैं कि नैतिक हिन्द से हम रसातन में पहुँच पुके हैं। प्राम सीर से हमारे साथी मन्त्री बनने या चुनान टिकिट पाने के केर में रहते हैं। कुछ तो विद्यात बाले सोग भी होंने हो सही। बाको ज्यादातर का मुख्य तिद्यानत कुछ बनकर बने रहने प्रीर नारे लगाने का मालूम होता है। राजनीति में बायद कुछ थी धनुचित व होता हो, पर मैं ती नैतिकता की बात कर एडा हं।

### १० घातक बीमारी

मैं जो कुछ लिखता रहा हूं या कहता रहा हूं उसका हॉग्ब भी यह मतलब नहीं है कि राजनीति में काम करने वाले लोगों से बच्छे आदमी हैं ही नहीं मदबा स्वराज प्राने के बाद से लेकर प्रव तक देश में कोई अच्छा काम हुमा ही नहीं। यच्छे आदमी न हो तो एकदम अत्य की सी स्थिति कर जाए। मुक्ते डुल इस बात का है कि जो सम्झे लोग हैं उनके साम जवात चलाती चलाती नहीं है मौर हुमरे लोग उन पर हावी हुए रहते हैं। जिसके हाथ में सर्वोच्च सता है उनकी हृति अपनी पसन्द के लोगों को ही प्रपने पास रखने की ग्रीर उन्हीं की वात मुनने की है।

कुछ पुराने और बडे सोग सत्ताचारी को पमान्व नहीं थे। उनका पहने तो इसरे लोगों से पीछा करवाया गया। ताकि दुनिया के सामने उनकी तस्वीर खराव हो जाए। फिर मौका पाकर उन्हें खरेड दिया गया। थो लोग सत्ताचारी के चारो घोर वने हुए हैं उनमें कई खास सादमी ऐसे दिखायी देते हैं जिनके बिनारों व सत्ताचारी के विचारों से मेल खाता हुआ मानूम नहीं देता। उनमे से दो-एक ऐसे भी हैं विनके बारे में सत्ताचारी को शक्ति रहना पढ़ता है, न कभी ये लोग मेरा तरना उत्तरने की योजना बना बैठे। रावनीतिक प्रेक्षक ऐसे लोगों को अपने स्थानों पर सुरक्षित नहीं सममते हैं।

सबसे बड़ी और घातक बीमारी यह है कि हर किसी नो कुछ न कुछ, चाहिए। केन्द्र में मन्त्रिपद, लोकसमा या राज्यसभा की सदस्यता, राज्यपाल का घद. किसी विश्वविद्यालय की वायस-चालपरी, किसी कमेटी की प्रत्यक्ता या सदस्यता, किसी राज्य का मन्त्रिपद, विद्यानसभा की सदस्यता धादि। नीचे उठर कर जाए तो जिला प्रमुखता, पंचारत समिति का प्रभानपद, सरपच का पद, कम से कम पच का ही ब्रोहदा। इनमें से किसी भी पद पर होता कोई पाप नहीं है। पर कैमें भी पद हिष्याने की कोशिय की जाती है, सो सूरी बात है। १=६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

विने ग्रपने लिए कुछ न कुछ बरूर पाहिए वह उसी बीज को पाने की उपेरतुन में वस जाता है और उसे पाने के लिए वह कुछ भी कर मकता है। उबके लिए वही मिद्राल बन जाता है। युद कुछ बन जाने के सिद्धाल के साथ साथ उसका दूसरा सिद्धाल हो जाता है परने मुकाबले में किसी को न बनने देने का, न बना रहने दंने का। इस धारे फ्लेड में बेचारी जाता किसी को याद नहीं रहनी है। जाना के बीट के लिए लुभावने नारे ईनाव किये जाते है। इच्छा से श्रीनच्छा से उस्मीरदार लोगो का नारे लगाना वर्म ही जाता है।

जहाँ तक मैं पानना हूँ दूसरे देखों में देखमांक का इतना बढ़ा प्रमान नहीं है। मैंने मुना है कि एक बड़े देख में कोई व्यक्ति ऊचे पर बर जाकर प्रयना व्यक्तिगत काम भी बनाना है नो उसमें कोई चुराई नहीं घनकी जायों। ग्रह कव हो तब भी ऐहा मार्ग प्रवनते वाने को प्रयने देखा भाग से तो चुरी निनाह ने ही देखा जाएगा। परन्तु पूकि प्रपनी जतता में चैतना की कमी है, ऐसे स्वार्थी सोगों के खिनाफ कोई जोरदार प्रावान नहीं उठायों ना सकती। इसीशिए चपर्युंक बोमारी बढ़नी एटती है।

#### ११ एकमात्र इलाज

भिद्धने केल मे तिस पातक बीमारी का दिक वैने किया है उसका एकमात्र रूपाठ है—चनता गिक्षित हो जाए, जागृत हो जाए, स्विटन हो जाए, उसमें पूकाबला करने की हिम्सद मा जाए और वह सपनो क्वा को प्रपत्नी ताकत से बयने हाय में लेने ! जिसके हाम में सता है वह उसे अपनी खुणी में दुसर्ग को नहीं संस्ताएला ! प्रपेक्षी पर इतने जीर का बनाय नहीं पढता थायों है हिन्दुस्तान में बने एकने की स्विट से होते तो बया वे इतने प्रसादनी से प्रपत्न मात्राज्य ओड़कर बने जाने हैं और औड़ते-खोड़ते भी वे हमारी जान को एक प्राप्तत तो बड़ी बर ही गये ।

मारत में स्वराज प्रामा सी बरता के हांब में नहीं प्रामा । बहू किमी राजनीतिक गार्टी के हाम में आया, उस पार्टी के किन्हीं लीरों के हाम में प्रामा । बहू पार्टी प्रममा में लोग प्रपर्न हाम में प्रामी हुई सता को किनी भी दूसरे के पास, जनता तक के पास चारे रिना गभी नहीं चाह सकते। बतताज की रखा करने बाली स्वतन्त्र बर्गुडिशियरी के पास हुए परिमार हैं।। उन्हें छोनने की कोशिया की या रही है, राजनीतिक एम्रपात के दिना सामन की चवाने जानी वो स्थापी विभिन्न सचित है, उने खेडा वा रहा है धीर उसे प्रयन प्रसा में ताने की सो हर कोशिय की ही वाली है।

बह साच प्रमिक्स राष्ट्र को धावनायकबाद की बोर के जाने का है। जो ततावारों की हो में हा न मिसाए उठे हुपल दो, बाहर निकाल फंडो बोर वो वो हुवरों करने वाने हो उन्हें प्रन्तान रेजो, जब तक वे सिर उठाला जुरू न करें। हिन्दुस्तान में बह सब सम हिसान्ह्या के निता हो सन्ता है वो हमारे देजने के या हुवत है। विकका उट्टें वर वेन-केन प्रकारेण वने रहते का सबसा साथ उठाते एक्टे का है, वे सतावारी का प्रकारता नि कर सकते। वे तो ग्रपनी भुरक्षा की खातिर केवल सुर से वाल मिलाने का काम कर सकते हैं। इसलिए मुकाबला करने वाले नये लीय होंगे।

जो इस प्रकार हाँ में हा नहीं मिला सकते वे प्रपत्ने धापको इस घषे से स्रलग कर संगे सीर वो ऐसा नही कर सकते वे जहां है वहीं केवल पर रहेंगे । नीचे से उत्पर तक कड़ी से कड़ी मिल रहीं है। एक के खिर पर हुसरा, दूधरे के लिर पर तीसरा, तीसरे के सिर पर वीधा भीर चौधे के सिर पर पावचा। कत्ता एक पात्री के हाथ से दूसरी पार्टी के हाथ से बत्ती जाएगी, सब भी यह हाल जैसा है बैसा ही सना रहेगा। पूजीवाद के स्थान पर जन-तारिक समाजवाद स्रोर अनतारिक समाजवाद के स्थान पर साम्यवादी समाजवाद हो जाएगा, तब भी यह स्थिति नहीं बदलने वाली है।

इस स्थिति को धदलने की, क्यानिकारी परिवर्तन लाने की व्यक्ति कनता के हाथ में है। जनता प्रयनी चिक्त को पहिचान से घीर उसे काम में लेने का पबका विचार कर ले और सातित होकर घावा बीस दे। कई एक बातें तो कानून को तोड़े दिना ही हो सकती है। यदा पुलिस और कोर्ट-कचहरी में न जाना, उनका बहिक्तार करना तो जनता के खुद के हाथ में ही है। और बहिन्कार करने की चिक्त प्राचार तो फिर कानून तोड़ कर सत्ता की घनने हाथ में के लेता कीन मुक्तिक हैं। देश की बीमारी का यही एक पबका इलाज है। मुक्ते यही विधा जनता की सिलाने की कोविश करनी है।

#### १२ स्वदेश की बीमारी

हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी बीमारी यह है कि अपने यहा जैसी चाहिए बैसी देश-भित्त की भावना सही है और स्वार्थ की भावना ज्यादा है। कोई वहा सौका आजाए तब तो देशवासी आम तीर से एक होकर परिस्पित का मुकावना करने को सैपार हो सकते हैं। वाकी रोजमर्रो के जीवन में तो ज्यादातर तीन वसार्य के वशीभृत हो रहे हैं। हमारे किसी काम से देश का फायदा होता है या नुकसान दस बात की हमें शायद ही परवाह होती है। हर-एक आदमी को चाहे जैसे करके अपना काम बनाने की बिन्ता रहती है। देस से जो आपक अप्टाबार फीत रहा है उसकी जड़ हमारी इस स्वार्थ आवजा मे है। हमरे महायुद्ध के बाद और फिर स्वराज के बाद तो ऐसा "ववराक" पड़ा है कि किसी को किसी का मरोसा ही नहीं होता है। कोई किसी राजभीतिक बार्टी का मेन्द्र है तो वह सबसे पहले अपने असे की सोचेया। उससे आये बटकर अपने युट्ट के भने की सोचेया। और उसके आरो प्रपनी पार्टी के भने की भोच सकता है। पार्टी से अपर उटकर देश के सने की पहला स्वान देने बात लीग बहुत कम है। बात की बाती है देश के माने की और काम किया जाता है सपने क्ये के के बीच सकता है। पार्टी से अपर उटकर देश के सने की पहला जाता है सपने कु के सते के लिए। और ऐसा करने से सम्ब-मूंह, व्याव-प्रन्याव, ईमारावी देशानी, जवित-प्रमुचित का कोई सवाल सामने नहीं प्राता है। पानकसंवारियो को तो सही या गलत अस्टावार में सीन याला ही जाता है, पर जिनका जनता के सेवक होने का दाबा है उन्होंने सबसे बाजी मार रखी है। खास कर जिनका सत्ताधारी पार्टी से कुछ भी लगाव है उनके द्वारा होने बाली गोलमास की तो कोई हद ही नहीं है । जिस पार्टी के हाथ में ग्राज सता नहीं है उसके पास कल सत्ता ग्राने पर वैसी ही गडबड़ उस पार्टी के सेवकों के द्वारा नहीं होगी, इसकी कोई गारन्टी नहीं है। यह कहावत विल्कृत ठीश है कि सता मन्ध्य को बिगाडती है। कानन बनाकर पनावत-राज स्थापित करने की कौशिश की गयी; पर हमारे एक साथी का कहना है कि पंचायत राज तो नही हथा और राज-पंचायत हो गयी मतलब यह कि बड़े राज में जो अध्दाबार है वही धवायत के इस जरासे राज में आ गया। और इस सारे अनमं की जह में है बोट और चुनाव। धुनाव में खहे होने वाला किसी भी तरकीय से मतदाता को अपने पक्ष में कर लेता है और कही से भी लाकर प्रनाप शनाप रुपया अर्च कर देना है और फिर लगता है उस लगे हुए रुपयो की बनुली में । ठेठ चोटी से नेकर ठेठ एडी नक यही बात है। राष्ट्रपति का चुनाव ईमानदारी से न हो ससद सदस्यों का चनाव ईमानदारी से न हो हो फिर कौन से चनाव में वेईमानी नहीं होगी? समद के एक-एक उम्मीदवार के चुनाव में नालों राजें हो जाते हैं। और किसी भी पार्टी की भ्रोर से चुने गये तथा निर्देशीय सदस्यों को एक न एक प्रकार के लीभ लालव से तीजा जा सकता है। यह तमाणा विद्धले सालो में बहुत ज्यादा देखने में धाया है। जब देश के मा जनना के नेता कहलाने वालो का ऐसा चुरा हाल हो तो फिर ग्रच्छा हाल किसका होगा ? जो ऊ चे ऊ'चे नारे लगाये जाने है उनका मतलव बौट बटोरने से हैं। कल गरीबी हुटाओ का नारा लगा था, बाज अध्दाचार भिटाको का नारा लगना शुरू हुआ है। वैक का या किमी उद्योग का राष्ट्रीयकरण हुआ तो एक साथी ने कहा . यह राष्ट्रीयकरण नहीं है, यह तो मरकारीकरण है। बेरोजवारी मिटाने का दम भरने वालों के लिए हमारे साथी ने कहा कि बात करते हैं वेकारी मिटाने की, और काम करते हैं वेकारी बढाने का। परन्तु प्रपने बीच में इस तरह सौचने वाले और पर्त की बात कहने वाले कितने हैं ? और प्राम जनता की भरोसा किसका है ? नारों में कुछ चमरकार जरूर लगता है जिससे घडी भर के लिए लोग वश में कर लिए जाते हैं। बाद में एक नारे का जोर कम हम्रा कि दूसरा नारा लगाग्री। नारों की कमी क्या है ? जो एक पार्टी वहत अच्छी हो सकती है, वही वहत ब्री भी हो सकती है ? सवाल ग्रच्छी-ग्रच्छी बातें करने का नही है, सवान है कुछ कर गुजरने का, कुछ करके दिखाने का। जनता को अपनी तरफ खेंचने के लिए किंतुनी ही लुमावनी बातें की जा सकती हैं। जनता भी खिच सकती है, खिच जानी है। पर उसका भ्रम दूर होते ही उसे लुभावनी बात करने वालों से ग्लानि हो जाती है और फिर उसका श्रम दूर होता है। ऐसा करते-करते उसे किसी का भी भरोसा नही रहता। उसकी यह राय दन जाती है कि ये सब सोग यों ही है, ये बोटो की सातिर सब बाते बनाते हैं। और जिन्हें लेने को विद्या याद है वे कभी कभी कोई काम कर भी देते हैं, पर करते है उनको ध्यान में रखते हुए कि जिनके बोट उनको मिले हैं, वाकी दूसरों से तो वे बदला लेने की सोचते है।

ऊपर की पिक्तमों में इस कलम से स्वदेश की बीमारी का कुछ ज्यादा बुरासा विश्र सिच गया दिखता है। बुरा हो या कैसा भी, पर यह चित्र असलियत से दूर नहीं है। तब भी इसका यह मतलब हुर्गिज नहीं है कि बुराई के बीच में भलाई का ग्रंश है ही नहीं। यदि भलाई का ग्रंण हो हो नहीं तो प्रचय हो जाए । बाखिर पार्टी वालों में भी भने सादमी हैं, जिनके हाथ मे राजसत्ता है उनमें भी भने बादमी हैं। देश की मताई के कई काम नही हो मके होगे, कुछ गलतियां भी हुई होगी ? पर स्वराज के बाद कुछ ग्रच्छे काम तो हुए ही हैं न ? धीर सबसे ज्यादा ग्राजाजनक बात तो यह है कि इस देश की ग्राम जनता की नाडी भ्रमी तक टीक चल रही है। हालांकि कल्यासाकारी राज की कृपा से जनता में परावलिस्वता, पगुता और दीनता हा गयी है। हाम जनता के बीच मे जो असस्य दलाल पैदा हो गये है जनके जरिये से सब काम विगडता है और दलाल लोग अपना खद का और अपने मालिको का काम बनाते हुए थोड़ा बहन टुकड़ा कुछ ऐसे लोगों के सामने फिकवा देते हैं जो जनता में किमी हद तक जावृत हैं। ऐसी हालत में स्वदेश की भयकर बीमारी के इलाज के लिए उन भले प्रादिमियों की खोज करनी होगी जिनको किसी भी चीज का नवा नही चढ सकता और ऐसे लोगों को अपना सारा आचरण व्यवहार ऐसा रखना होगा कि जनता को उनका . विश्वास करना ही पड़े। किमी को उन सज्जनो का जरा सा भी स्वार्थ न दिखाई दे, ग्रौर जब स्वार्थ होता ही नहीं तो दिखायी क्या देगा ? ऐसे सतपुरुषों को एक जगह ग्राना पडेगा भौर अपने-अपने स्थानों की जनता को शिक्षित, जागृत और सगठित करना पढेगा। कोई चमत्कारी अवतारी पुरुष पैदा हो जाए तब सो कहना ही नया ? पर जब तक कोई ऐसा महापुरप नहीं दिलायी देता है तब तक सञ्जनों को अपनी पाँती का कुछ न कुछ भला काम तो करना ही बाहिए न ? "इतना भयकर विगाड खाता हो गया है, ऐसी ग्राग लग गयी है, ऐसी बाढ म्रा गयी है. ऐसा तफान बा गया है. ऐसे कालचक मे हम लोग घर गये हैं कि श्रव किसी के कुछ भी करने से कोई ननीजा नहीं है।"इस प्रकार की निरामा में दबने वालों में तो क्या कहा जाए <sup>?</sup> पर जिनमे योडा बहुत भी आशा का ग्रंग वाकी है, जिनमें कुछ भी जरसाह है, जो अपने घर के काम का नुकमान करके वस्ती की भलाई के लिए कुछ भी इच्छा रखते हीं उन्हें तो अपना काम शुरू करना चाहिए । हम यह सोचते तो नहीं बैठ सकते कि हमारा कौन साथ देगा और कोई भी साथ नहीं देगातो हम स्रक्तों से क्या होगा? रॉकेट के इस जमाने में हम लगडाते हुए पैदल चलकर कब तक पह चेंगे ? ऐसी शकाग्री को ध्रामे मन में आने देना ही कमजोरी है। कोई ब्रादमी हिम्मत करके खड़ा होगा तो उसका साथ देने वाले भी निल ही जाए थे। समुद्र ने टीटोडी के य'हे वहा दिये तो टीटोडी अपनी चीच में समृद्र का पानी ले लेकर उसे मुखा देने का सकस्प कर बैठी। टीटोडी में भमूद्र सासी न हुया होगा तो न हुया होगा, पर उसने साहस तो किया और उसने धात्म विश्वास के नाथ एक निश्चय तो किया । तव अपने निश्चय के अनुसार काम करने में उस द्यारम सतोप तो हवा होगा ? यहा डरने फिसकने का क्या काम है। ग्रपने सामने किसी एक पार्टी का खंडन या किसी दूमरी पार्टी का मंडन करने का सवाल नहीं है। अपन तो भोली जनता को सामने खड़ी बुराई से आवाह करने का इरादा रखते हैं। बुराई का जिक तो हम करेंगे ही सही, साथ में बुराई की काट भी हमें करनी पड़ेगी। जनता को अपने ग्रिधिकार के लिए सचेत करना है, उसे जगाना है और जागी हुई जनता जरूर ही संगठित होगी। एक गांव भी बच्छे बाधार पर सगठित हो जाए हो। वह बमाल करके दिखा सकता

१६० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

### १३. साधन, सुविधा, समानता

एक दात हम सभी जानते हैं कि वनस्थली का काम मौतिक सावनों के दिना यकायक मूह हो गया था और धाज तक भी वनस्थली को वही परपरा बली बा रही है कि कोई भी नया काम पहले चानू कर देना भीर उसके लिए साथनों का बाद में जुटते रहना ! ऐसी हालत में भपने यहा लवा भागे में भागे बढ़ता रहा है और सायदनी उसके पीछे-पीछे जसती रही है। अपने पान किसी भी समय जायद रूपता वना नही रहा, बल्कि हमेगा ही कम या जायदा कजी अपने उपर बना रहा। मैं मानता है कि इसी कारए। से वनस्थली के पास एक सीकि विभेष जारी ही हो हो कारए। से वनस्थली के पास एक सीकि विभेष जारी ही भीर बढ़ती रही है।

दूसरी बात यह है कि बनस्थली के सचालन-व्यवस्था विभाग मे पूरी जनशक्ति भी कभी नहीं जुट पायों । और अपने पास बाज भी वह शक्ति वर्याप्त साता में नहीं है । शिक्षा का काम तो अपना काम है ही । शिक्षा विभाग से काम करना अपेक्षाइन कुछ मासान माना जासकता है। कम से कम शिक्षाका काम भामतीर पर दशा हमाती है ही। परन्तु ध्यवस्था के काम में चौबीसो घटे तनाव बना रहता है। इसलिए व्यवस्था के लिए सुयोग्य कार्यकर्ता बहुत कम मिलते हैं। उदाहरुए। के लिए अपने को प्रशासन सचिव आज तक नहीं मिल पाया है। वैसा ही सेवा अनुभाग को पुरा ध्यान देकर सभान सकने वाला कार्यकर्ता भी अपने पास नहीं है। इसके अलावा अपने यहा आमदनी के स्वतंत्र नये जरिये खडे करनी चाहते है और जो हैं उनको विकसित करना चाहते हैं। यथा महार सोकप्रिय बने और उसकी भामदनी वडे एव सेती से अपने को बढती हुई आमदनी होने सगे। नये जरियों मे एक तो जयपुर के बनस्थली सबन की अभीन में किराये के मकान बनवान हैं, ग्रन्छी ग्रायुवें-दिक रसायनशाला शुरू करना चाहते हैं, उनी खादी का काम चालू करना चाहते हैं और जयपुर में एक वाधिक मस्ति मारत कला उद्योग प्रदर्शनी करना चाहते हैं। म्राज प्रपनी भ्रामदनी जो ३।। लाख के करीब है वह २-४ साल के भीतर १० लाख की हो सकती है। पर इन कामों का जिम्मा लेने वाले अपने पास कौन 'हैं ? जीवनकूटीर की भाषा में मैं करूँ तो "है कोई हमसे लड़के वाला ।" प्रथन घनामाव के कारण कई बार प्रथने लिए ग्रावश्यक भीर उचित्र सुविधाएं जुटाने से उतने सफल नहीं हो पाते। हालाकि गुरू के मुकाबले मे भाषण, लेख बादि [ १६१

प्राजकत मुनियाएं काफी वड गयी है। पर साथ ही मुक्ते कभी-कभी देखने सुनने को मिलता रहता है कि हमारी मुनियाधों की भूल कुछ ज्यादा वडी हुई है और प्रपने कुछ लोगों की मानोदया, क्षमा कीजिए मुक्ते कुछ "वाजाक" मी दिखायी देने बगती है। इस "वाजारुपन" को मैं वनस्वनी के लिए श्रष्टुम मानदा हूँ। हमे श्रपने लिए सुनियाए चाहिए तो उनहे जुटाने की भीर उपस्थित कर देने की अपनी बक्ति भी वडती चाहिए? प्रपने कार्यक्र जुटाने की भीर उपस्थित कर देने की अपनी बक्ति भी वडती चाहिए? प्रपने कार्यक्र जांगों की महण रिक्त स्थानों सहित ११७ है। उनमें में हम एक भी व्यक्ति प्रशासन विभाग के तिए स्थी नहीं है मक्ते हैं श्रीर जरा है से स्थान स्थान का सीवा बार्ज से सकने बाला व्यक्ति भी हम क्यों नहीं है पार रहे हैं?

वनस्यक्षी की लीमरी बात यह है कि यहाँ पर पहला जोर कर्तव्यपालन पर है। सब पूछिए तो अपने यहाँ बही बर्ध में कोई "अधिकारी" है ही नहीं। वनस्यती का अपना सिविधान बना हुआ है और उनसे अपूरा चमने बहा तक भी है। वनस्यती का क्यान सब बया हो गया है, पर कोई छोटा काम भी तक धौर नियमीश्मिय के बिना ठीक से नहीं चन मकता। वनस्यानी में जो अधिकार सा दिखाधी दे सकता है वह भी बास्तव में इस विश्वास सस्यान की रक्षा करने का कर्तव्य हो है। उक्त रक्षा मजबूती के साथ न की जाए ती प्रमुने इस संस्थान का विघटन गुरू हो जाए। यह अपाने की सुबी है कि ज्यादातर छोगों को उचित-अनुचित व्यक्तिगत ताम उठाने की किक ज्यादा रहती है और लाम-अग्नित के लिए साममों को उपलब्ध करने की चिन्ता करने वाले सीग जैसे देश में बैसे प्रमुने महीं भी बहुत कम है।

मेरे मन की एक बात और है, वह यह कि वनस्थली भी अपने इसी देश के, अपनी इसी ममाज व्यवस्था के ब्रन्तगंत है। चालु समाज व्यवस्था मे जो समानता है उसमे ज्यादा समानता हुम अपने बहाँ नहीं ला सकते और जो देश म ग्रसमानता है उसे ज्यादा न हो जाने देने के लिए तो हम कुनसकल्य हैं । हमे यह नहीं भून जाना चाहिए कि बनस्पली कोई भरकार नहीं है, बनस्वली कोई कारखाना नहीं है, बनस्वली कोई दकान नहीं है, बनस्वली कोई होटल नहीं है, वनस्थली में कोई देने वाले और कोई लेने वाले अलग-प्रमण नहीं है । अपनी हो समानवर्मा कार्यकर्ताओं की एक महली है जिनके लिए जो कुछ साया जा सके उने धापस में योग्यता ग्रीर काम के अनुसार बाट लिया जा सकता है। जाहिर है कि उस बटवारे में समानता नहीं लायी जा सकती । कई एक स्विधायों की समानता निर्वाह-व्यय मीर जीवन-स्तर की समानता के बिना नहीं लायी जा सकती। प्रश्न है कि निर्वाह न्यय की समानता की खातिर हम लोग थोड़े बहुत भी तैयार है क्या ? तमाम बेतनवानो की धौसत निकाली जाय तो पता नही ग्रधिकतम पाने वाले का कितना कम हो जाए और न्युनतम पाने वाले का कितना ज्यादा ? कम पाने वाले को ज्यादा मिलने लगे तो वह जरूर खुश हो जाएगा । पर ज्यादा पाने वाले को कम मियने लगे तब बया हो ? इसलिए भाइयो और बहिनों को ग्रयने-ग्रपने हाल में मस्त रहना चाहिए और हत्के विचारों को अपने मन में नहीं ग्राने देना चाहिए । जिसे समानता चाहिए उसे खटने की, खपने की, गर मिटने की समानता का यहन करना चाहिए, न कि छीना-भगरी में जो कुछ मिल जाए उसे ने भागने की समानता का।

### १४. 'संस्था' माने क्या ? , 'सुविघाए'' माने क्या ?

मुक्को "गस्या" जय्द उन समय बहुत सटकना है वब उसके प्रयोग के पीछे एक प्रकार का सेदमान सा दिएग दिसावों दे बाता है। अपने सब लोगों के मिन जाने से "सस्या" ताम की चीज बनती है। प्रयांत हम सब "सस्या" है। हम सोगों ने मरिन जाने से "सस्या" ताम की चीज बनती है। प्रयांत हम सब "सस्या" है। हम सोगों ने मरिन कराता है, कोई सिन खिलाता है, कोई भीजन कराता है, कोई हिसाद एतता है, कोई एत्या लाता है, कोई प्रवेष करता है। क्या साते बाते की या प्रवस्थ करने वाले को कोई "मस्या" मान बैठे तो वह बड़ी गतत बात होगी। वतस्यमी में, "मेनेजमेट" नामकी कोई विडिया नहीं है। किस विभाग, प्रवन्य विभाग अपने ही तो हैं। उन्हें हम हम्म दे सकते हैं, यर यह जानकर, सोखकर कि पैसा है या नहीं, लावा जा सकता है या नहीं। यास में पैसा क्या हो तो उने प्रयान कार्यों हो। या स्वर्य सी वात दिखारी हे मक्यों है। किस विभाग स्वर्य हों तो उन्हें प्रतिवार्य कार्यों में हैं। पहले बणाना परेता। ऐसी परिस्थिति में कुछ विशेष प्रावश्यकतामों को हम सीग यपाणिन धमरान के हारा पूरी कर सकते हैं।

वनस्यभी की मूर्गि में जीवनकुटीर की मावना व्याप्त है। यहां जब श्रीनर नेठें तो एक नीम के नीके, नाम लने की भी पैद्या याद में नहीं। किसी ने करासी जमीन दे दी, कुछ मैंने मांग छात्री। दो जार अभेपिडा वन गयी, एक कुमा लोर डाना पाया। नर्मी में दिन भर नू में सिक्ते रहते, वरमात से बाधा धानी क्षेपीबयों के भीतर निर्दा, नर्सी में डिट्टर्सि रहते-जोर की सामी भवती हो भोवन करते हुए ही एक हाथ में रीटी तिए दूसरे शाम से पहले का सामी भवती हो। भोवन करते हुए ही एक हाथ में रीटी तिए दूसरे शाम से एक्टर्स एक्टर्स एक्टर्स होने लगा तो थी. वापा सिक्स प्रत्य के एक्टर्स एक्टर्स से में प्रत्य के ११ वजे तक कार्यक्रम भवता जिसमें १०-१२ मोंच पंदन चनता भी शामिन था। धनाव खत्य होने लगा तो थी. बागरा स्रादि सक्की मिनाकर टिक्डर सेक लाये। वीसनेवातियों ने काम करने से हन्कार रूप दिशा तो लुद ने पीसना शुक कर विया, गारा ईंट पकड़ाने वाले मजदूरों ने साना वाद कर दिशा तो लुद नवपुर वन गये।

 उत्तमें द्वोटी लड़िक्यों को उठा कर फॅंक दिया जाता भीर साथी लोग बहुती हुई सब्कियों को बचाते । निवाई तक पैदल जाना, पहाड़ पर चढ़ना, दूभना, वहा से नीचे उत्तर के प्राना ग्रीर गोठ में जीमना । ७ कपया मासिक में साना, कपदा, दूतिया, तेल-साबुन, किताब व कांपी मासि सब नुद्ध । ७५ रू० मामिक से बजादा किसी साथीं को नहीं मिले, कई कई साली तक । प्रपने ऊपर कर्जा जहां हो तो चैन नहीं पड़े। इस सब में मुक्त बैंसे पानाने को मजा ग्राता, मुख मिलता-इससे हमारों ताकव बढ़ी, शारमिक्शना बढ़ा। चनस्थनी शुरू से प्राज तक सबेतन्त्र स्वतन्त्र पही, यहां किसी बाहुर याले का कोई दखल नहीं।

धीर बाज की वनस्थली में दखल तो भाव भी नहीं, रुपये की इतनी जिम्मेदारी वद गयी तब भी। ब्रागे चलकर रुपये के मामले में ग्रीर भी स्वतन्त्र स्वावलम्बी ही जाना है। ग्रपने यहा कौन-कौन है जो रुपया मानकर लाने के लिए राजो हो जाये, ग्रीर सफलतापूर्वक साम भी लावे । बनस्थलो क्या कोई सरकार है या यहा पर कोई नगरपालिका है ? यहाँ सो प्रयम सब भाई-बहिन एक वडे से परिवार के सदस्य है। जितना जहाँ से मिल जाए ले बाबो, कमाया जा सके तो कमालो, दे सको और देना चाहो तो कुछ प्रपने पास से देवां. सेवा-मुल्क के नाम से, कार्यकर्ता कल्यास कोप के बहाने । कल्यास कोप को न मानो ग्रा उसमें कुछ न देना चाहो तो खुशी ग्रापकी । जो जमा पूजी हाथ में ग्राजाए उसे बाट खाग्री । बाटने का कुछ न कुछ ग्राघार तो रखना ही पडेगा । जो काम ग्रनिवार्य हो, ग्रस्यन्त ग्रावश्यक हो उसे पहले करलो, इसरे-मीसरे नम्बर बाले काम अपने आपही बाद के लिए छट जाएंगे। मेरी इतनी लम्बी चौडी कथा का कोई वह अर्थ न लगा डालें कि मैं आज भी जीवनकुटीर की या शिक्षाकुटीर की बाले वनस्थानी में ने प्राना चाहता हूं। ग्राज महक बनी हुई है, हमें चलती हैं, कारें दौड़नी हैं, चुड़दौड़ होती है, हवाई जहां उड़ते हैं, विश्रली की रोशनी है. पानी के नल लगे हुये है, पानी योजना का काम चाल है, देखीफोन है, आक है, तार है, अहार है. बैंक है, साय-सब्जी की दुकान है, दर्जी है, नाई है, धोवी है, जूरिया गांठने दाला है, बॉक्टर है. वैद्य है, पबके मकान हैं क्या नहीं है ?

धोर-धीर मुन्दरता भी आ रही है, सजाबट भी होने सगी है मनोरंजन के लिए प्रपना लुद का नाचना गाना ही क्या कम है? मैं खुद मुम्बिश प्रमुविधा को ध्रीर मनोरंजन कक लिए समान के लिए मनोरंजन कक लिए साम किया की तो में सखियां सम-मता हैं। जो कर्म-भगवान में लीन है उसके लिए क्या मुविधा, क्या प्रमुविधा? सत्कर्म में ही उसकी गुम्बिश है। सक्वीफ में उसका ख्राया है। बन्दे का भी तो बाब भी मन्त यहाँ है.

"भना करो और वुरा न सोचो, आराम छोडो नकलीफ पाओ। अज्ञान्ति त्यागो, सुविद्या न सोचो, सत्कर्म में से सुख शान्ति पाओ।। १६४ ] प्रत्यसनीवनगास्त्र

पर प्रापके बाराम के लिए मैं तन-मन से हाजिर हैं। बपनी बन्चिमों के लिए मैं प्रारुघ के तारे तोड कर सा मनना हूँ। मायी चाई-चहिनो की, "तकनीको" को मिटाने के लिए मैं क्षय कुछ कर सहजा हैं।

### १५. स्त्री घौर पुरुष

पिदानी बार प्राने यहा काका माहेव कालेलकर में 'की-मुदा' के विषय में मैंचे विकार प्रपत्न किये ये वैसे ही कियार अपने एक दूनरे प्रिय माणी को जोर में माणने साथे हैं। इस विकार आपने एक दूनरे प्रिय माणी को जोर में माणने साथे हैं। इस विकार को एक दूनरे के बोल में स्थान कर के किया में किया है। अपने देश और माणते में बारे और में प्राने देश कोर माणते में बारे और में प्राने के बार के माणते में माणते में कारी अपने प्रकार करना हुआ दिल्लाओं के माण मन्याय होता विकार के माण काम माणते में कारी हमाने के मी किया में माणते की माणता माणता माणता करना काम काम माणता करना काम काम माणता करना काम काम माणता करना काम काम काम काम काम माणता करना किया से काम काम स्थान प्रकार करना विचय तो ''की और स्थान' है।

हम लोग प्रत्यक्ष देवते हैं कि हुआं और पुरुष की प्रारोर रचना और मानन रचना में कता है। नहीं मेद कम्बेयम् और अनुजन्मान के द्वारा प्रसाशित होता जा रहा है। हुनी मोर पुरुष में किसी प्रमुख्य का प्रहृतित्वत्व मत्तर है तो उसकी विस्मेदारी कि तर है। उस मत्तर के कारण रूपों और पुरुष की घपनी प्रपत्नी सर्पादा वन जाती है तो दूसने कितका दौर समस्य जाए ? मारत में मारी का स्थान बहुन केंचा माना पता है। हुनारे यहा नारी की देवी के रूप में उपानना होतो बाती है। और प्राप्त भी हम लोग नारी की पूर्य मानने हैं। इस स्थित में नयी रामानों के प्रयाव से जी कुप्रसाव पड़ रहा है वह धनित्यकारी है। प्रपत्ने देवा में तो बाहुन में भी स्त्री और पढ़ के धरिवारों में कोई धन्तर नहीं है। मतनब यह कि दोनों के बीच के प्रमुख का प्रयोग प्रस्ता ना ता है।

सभी के साथ माता जनने का याजरतक और पहित्र कर्नुबा तथा हुआ है। माता जनना एक मात्र क्ष्मी का ही सिक्किट भी है। क्ष्मी के क्षरीर और आनत में माता जनने योग्य पुरुष भी है जो पुरुष में नहीं है। समझा को जम्म के के खतारा करा पाना भी पात ही नस्त्र मुख्य कर सक्ती है। इस नमें जमाने के समुद्र करी में दक्षी में सम्मास का काम परिचारिताओं पर द्वीदिन सानी पानाए स्राप्त कर्ने कर के विभूत सावरास करती हैं। इस प्रकार कर निवार कराने कर समुद्र करी में दक्षी में सम्मास का काम परिचारिताओं पर द्वीदिन हों। सावरास करती हैं। इस प्रकार दूसरों के मरीने पर होंड़े हुए कन्तों में कोई दूसरे ही गुण प्रवृद्ध सा जाएं। माना के अनावा स्वत्रहर्षा भी नारी ही हो सत्त्रों है। नारी को बना करता है कि नह स्वपंत्र के स्थान के पारत्वर पुरुष के नोचे स्थान की सरक साने की, पुरुष में दाइकों के स्थान की सरक साने की, पुरुष में दाइकों के स्थान की सरक साने की, सरक साने की, स्थान की

इन सबके बावजूद स्त्री को अपनी इच्छा के अनुगार सभी दोत्रों में नाम करते की आजादी हासिन है। में खुद तो यहां तक सोचता हूं कि स्त्री चाहे तो वह फ़ौबी काम भी बयों न करें ? भ्रासी की रानी मध्मीबाई की "नारी छेना" बनाकर नेमृत्व करने की ओ कहानी मैंने मुनी, बहु मुभको बहुत पसन्द भ्रायी । अपने यहां वनस्थती में हम लोग शुरू से ही लड़िक्यों को पुडरावारी का अम्यास कराती आये हैं और अब फीजी कवायद का, बन्दूक चनाने का, हवाई जहाज उड़ाने का अम्यास भी कराती हैं। यह सब कुछ करते हुए हम जनाने हैं कि हमी बही बाग सफतातापूर्वक कर सकेगी की उसकी शारीरिक भीर मानसिक मर्मदात के मीनतर होगा। साहस और निर्मयता हो स्त्री में भी होना ही वाहिए, मेरी कहना की प्रत्येक नारी को बीरवाला होना चाहिए।

सार यह है कि स्थों को पुष्प के जैसे ही अधिकार चाहिए और है भी, बैसी ही आजादी होनी चाहिए और है भी। पर अधिकार और आजादी का उपभोग पुरप अपनी मर्यादा में करेगी जो होगा। दोनों की मर्यादाएं निश्चित है और भविष्य में भी निविचत होती रहेगी। स्त्री पुरप की होड़ करने को जाएगी तो वह इ.क पाएगी उपलब्ध एवं हो के उपल्या में से ही पुरप को भी स्त्री की होड़ करने की जरूरत नहीं है। चैर हो के हुए करने की जरूरत नहीं है। चैर हो के हुए करने की जरूरत नहीं है। चैर हो के हुए करने की जरूरत नहीं है। चैर हो के हुए को का पाय और और समाव की निवन चाहित वैते ही पुरप के पूर्णों का भी। नये जमाने की परिश्वित में परनी और पित अपने कामी का आपस में इच्छा पूर्णों का भी। नये जमाने की परिश्वित में परनी और पुरुष एक दूसरे के पुरक है की वे बने दहिं, हसी में उनका अला है।

### १६. शुभकामना (सवाई मार्नासह हॉस्पिटल, जयपर से)

श्रदेल, १६२८ में माई सीतारामकी से मेरा प्रथम मिलना हुआ था। उस समय वे जीवन के ३६ फाल पुरे करने को से, में २६ वे सात के मध्य से था।

मीतारामजी मारवाडी बालिका विद्यालय के मनत्री थे। एक पढे लिखे ग्रहलकार के तीर पर मैंने उनके काम में मदद की। थोडे समय में विद्यालय का रूप बदल गया।

राष्ट्रसेवा में तन्मय होकर जीवन लगाने हेनु सीवारामकी ने प्रपता प्रव्हा चलता हुआ धन्धा खोड दिया मो वही वात वी । ऐसा दूसरा चंदाहुन्स मिलना मुश्किल है ।

मीतारामजी ने जेल यात्राए की थौर तन्दुरस्ती बाजुक होते हुए भी उन्होंने कष्ट सहन किया। पर उन्होंने राजनीति से किसी फन प्राप्ति की जरा भी इच्छा नहीं की।

सीतारामजी ने कलकत्ता महानगर में शिकायतन जैमी अच्छी महिला शिक्षाए सस्या स्यापित करके बहुत बड़ा काम किया। उनकी मन्य समाज सेवाए भी कम महत्व की नहीं हैं।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

वहित भगवानदेवी का पत्नी के रूप में साथ मिला सी सीतारामत्री के लिए बरदान सिद्ध हुया। पत्नी के हार्दिक सहयोग में पति के जीवन में पूर्णुता झा गयी।

१६२६ के प्रारम्भ में सीतारामजी ने मबसे पहले व्यक्ति महायता देकर जीवन-कृटीर वतस्यती को स्थापना को सरल बना दिया। सीतारामजी वनस्यती के ''प्रादि महर'' है।

वनस्पनी विद्यापीठ के जन्म (१६३४) में सेकर धाद तक मीतारामजी ने उसके माय क्रमिलता प्रमुख को है। वनस्थली में सीतारामजी वरावर पोतीदार है।

कुछ लोग बापम में बच्छे, मित्र होते हैं। पर मुक्त में अपने किमी एक ही मित्र का नाम लेने को कहा जाए तो मैं तरस्त गर्व के माथ सीतारामजी का नाम ले दूंगा।

सीताशमजी वी दोषांयु, स्वस्यता, प्रसन्तता के लिए मेरी गुमकामना। उनकी कोमलना एव मुद्दता फ्रीर उनकी करणा एव वेदावरायणता सदा बनी रहे। तयाल्यु।

भवति चात्र दोहादवयम---

हीरालाल उजड्ड है, सीताराम नफीस । तब भी दोनों एक है, मानो विस्थावीस ॥१॥ दीर्घकाल से है, वेघे, वत्थन स्नेह विचित्र । बना रहेगा सुबंदा, भाव अभिन्न विचित्र ॥२॥

### १७. वनस्थली-शिक्षा

सई. १६७३.

प्रपत्ने यहा वनस्थली में पिछले घडतीन नालों में लड़कियों की शिक्षा के लिए जी कुछ वन पाया है उसकी चारों और तारीफ हुँदें हैं विनमें घपने की भी स्वपायत सतीप होता रहा है। पर सच्ची बात यह है कि प्रपत्न लोग बहुत कुछ विशेष नहीं कर पाये हैं। कारण यह कि प्रपत्न वास्तव में जैंचे चाहिए वैसे स्वतंत्र नहीं नहें प्रवान्त देश के शिक्षा सवक्ष प्रचलत विश्व के साथ प्रपत्ने की भी जुड़ा रहना पड़ा है। घपना सोचना यह पा कि शिक्षा सर्वान सम्पत्त होंचे को साथ प्रपत्न की अनुदा रहना पड़ा है। घपना सोचना यह पा कि शिक्षा सर्वान समुख होंनी चाहिए, यानो पुस्तकीय घिक्षा के घतावा दूसरी धावस्थक शिक्षा भी प्रिनवार्येतपा होनी चाहिए। याना चुस्तकीय विक्षा, आरिक्त विक्षा, ब्यावहारिक शिक्षा भीर कला शिक्षा। यद वहा यह कि उस्ते नारों काम वहुत कुछ किताओं से पढ़ाई के नीचे देवे रहे। ज्यारा से ज्यादा समय किताओं में लाने के कारए। प्रपत्ने विशेष कामों में बहुत

देश की शिक्षात्रप्राली मे कोई स्वास परिवर्तन माज तक नहीं किया जा सका है।
मुपार के नाम पर यदा-कदा कुछ किया गया तो यह एक दम फटे हुए करहे के देवन्द
लगाने देशा हुम है। यह हारी आत इननो पित्री—पिटी हो उकते है हि दहका आत्मत
तक्त करना प्रयने मन को कच्छा नहीं नगता। राप्ट्रीय पेमाने पर कुछ हुमा नहीं, हो नहीं
रहा है, जन्दी हो कुछ हो जाने की भाषा नहीं। तब भगत अकेले क्या कर सकते में भीर
पाइन्दा बगा कर सकते हैं? डीम्ड मुनिर्वादिटी बन जाने से धपना रास्ता कुछ साफ हो जाने
की बोटो बहुत सम्मा बनने सनीत्री। यर बच्ची ही मच्ची समक्त में आ गया कि डीम्ब
पुनिर्वादिटी बन जाने पर धपन स्वतन हो जाने के बजाए कुछ ज्यादा परतत्र हो जाएं।
भारीतामस स्कून व कनिज हो जाएंगे तो उनसे भी सपने की दिशेष प्रामा नहीं रखनी
चाहिए।

सारे देश में जिसा के दांचे में सामूलपूर्त परिवर्तन हो तव कुछ हो सनना है। वैसा परिवर्तन करने की तीयारी या इच्छा मों सत्तायोशों को दिखायी देवी नहीं है। ऐसी हानत से मूपने यहां के लेने कुटपुट प्रयत्नों से विशेष क्या होने वाला है? यह पासित प्रयान में तो उसी होंचे में उसे हुए हैं — सपना दिमाग भी सन्तवन्त उसी परिधिय मुनता रहता है। जब प्रयन्ते यहा तद्दक्षियों की शिक्षा का काम मुख्य हुआ या तब से लेकर माज तक प्रयनी एक ही विचारागा गई। है, भेते ही वह भनुभव से कुछ परिष्ठान होती रही होगी। प्रसत्त में तमाप प्रशा ही अपने से मुख्य क्या वासकर किलायों पढ़ा है में साथ ख़ुब हुई प्रयानी नेतिक, ज्ञानीरिक, व्यावहारिक, कलात्यक विष्ठा तो जीवन के प्राग ही है जो न केवल विद्यार्शिकाल में बहित हा मारिक, व्यावहारिक, कलात्यक विष्ठा तो जीवन के प्रग ही है जो न केवल विद्यार्शिकाल में बहित हा साथ हा भी पत्ता विद्यार्शिकाल में बहित हा साथ ही

प्रमात् को विषय जीवन के अंग जैसे है उनको न केवत शिक्षाकाल के थोहे समय में ही बहिक हमेबा के लिए व्यक्ति के जीवन के साथ जुड़ा हुया होना बाहिए। यह तो ठीक है कि घपन जान गिला प्रणाली में बंधे हुए होंगे तो एक्किय विष्या के स्परिध्य करता हैना प्रपने की भी महर करना होगा। वहरहाल प्रचानुकी शिक्षा के दूसरे बारो क्यों की पातों में भारितर कम से जी कम ही रामय जाएगा। उन कम समय में भी धपने को काम बलाना पढ़ेगा। जहा तक समय हो धपने को ऐसा हिमाब बिटाना बाहिए जिससे घपनी शिक्षा के चारो ही अगो को पुस्तकीय शिक्षा के ताथ-साथ परीकाओं में भ्रतिवास स्थान मिल जाए। किसी अप को परीक्षा में अनिवास स्थान देना किसी न किसी कारण से असम्बन्ध हो जाए तो घपने को किसी दूसरी युक्ति वे उस थय को धनिवासेता स्थापित कर देनी चाहिए।

समय की कभी के अलावा अपने नामने दूनरी कठिनाइया भी है जिन्हें दूर करने के लिए अपने को ययाख्यन यत्न करना पड़ेगा । ब्राचीरिक शिक्षा और शृहस्य शिक्षा के लिए अपने पास पर्याप्त स्थान नहीं है और उन दोनो विक्षाओं की समान करने के लिए अपने को मानव मिक्ति भी यधिक सवानी होगी। अर्थात् शिक्षक-विक्षिकाओं के निए इन दोनो कामों से रसपूर्वक योग देना समब होना चाहिए। उपयुक्त स्थान सुनम करने के लिए पैना

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

चाहिए जिसका जुनाट अपने नो करना होगा। साथ ही गिलक-विध्वकाओं को अपने शिक्षा के समय काम में रम बाना होगा। दो-वार-चाब-सान पीरियड पुस्तकें पढ़ा देने धीर पढ़ानें की होगरी करने के समावा दूसरे कामों में विनियोजन में भी ज्यादा हे ज्यादा विकास-गिलिका भाई-विहित हिस्सा सेने और वे सारे काम को वीविन रीति में चलाएँग तमी अपन नमस्वाती गिक्षा के प्रति प्रपूर्व कर्तव्य का पुरा पानन कर सकेंगे।

### १८. स्यापना दिवस, सितम्बर, १६७३

विद्यापीठ स्थापना दिवन के उपसध्य में पण्डित हीरासाल शहनी द्वारा 'संकल्प पाठ' किया गया। 'सकस्य पाठ' के पश्चात् इस सवनर पर प्रपने आवी की व्यक्त करते हुए शाहनीजी ने कहा

सदा की भानि बाज भी हम यहा इकट्ठे हुए हैं। बाज फिर हमने घपने संकल्प को दोहराया है और अपने लिए दिव्यशक्ति का आबाइन किया है। शब्द में शक्ति भरी पटी है। हम ऐसा मानते हैं कि प्रारम्भ में और आगे-पीछे जिन वैदमत्रों का भी उच्चारण िया गया उनमें जो शब्द ग्राये उन शब्दों में ग्रसीम दिव्यशक्ति है । वनस्यसी की इस भूमि में मैं एक भावना विशेष ना, भाव विशेष का सूखा है, उस शक्ति की खीज में हैं जिस प्रतिक का हमने प्रावाहन किया है वह प्रतिक उस भाव में है और वह शक्ति भी उम भाव की खोज मे है। ध्रवना सिद्धान्त तो चलते जाना है। "चरैवेति चरैवेडि"-चक्षा चल, चला चल । हमारी घुन "एकला चलो रे" की भी है । सक्त्य होना चाहिए मक्त्य में सिद्धि होनी चाहिए। हम नराय में नहीं रहते हैं नयोकि संशयातमाविनश्यिन । हम श्रद्धापूर्वक चलने हैं। जिसकी जैनी श्रद्धा होनी है बैसा ही बह होना है। यो यच्छ द्धः स एव सः। जो शक्ति है वह अद्धा में ही है। श्रद्धा में बुद्धि का दखल नहीं चलता है। हम बिस चीज की खोज में है वह बुद्धि से परे हैं । 'यो बुद्धे: परतस्तु स.' हमारी खोज की वह वस्तु जिमनी अनुभूति मुक्त नहीं है, हमारे पान है। उसी शक्ति के सहारे हम निभ रहे हैं, निभते रहे हैं, निभते रहेपे-बहत भानन्य के नाथ । बढने रहेगे धनन्तकाल तक । उस शक्ति का यदि सादि नहीं है तो मन्त भी नहीं है। पता नहीं हमने कब से चलना मूरू किया था। ग्रीर पता नहीं है कब नक चलते रहेंगे, पर चलते रहेंगे, बढते ग्हेंगे । हमको शरीर की शक्ति चाहिए, चित्त की गिक चाहिन, मन की शक्ति, प्राप्त की शक्ति और उसने आगे नक्ष्मातिनक्ष्म, निराकार, निविकार, मर्वेथ्यापक आत्म शक्ति चाहिए । आत्मशक्ति प्राप्त हो जाए हो सब शेप शक्तिया दौड़ी चली खाती हैं।

मिन तिया है, सोचना भी रहना हूं कि अयु के, परमाणु के, इनेबहोन के आगे एक भीर प्रस्तन मतिस्थानी चीन होनी चाहिए। 'एटमवय' में इतनी शक्ति है तो फिर 'पातमनम' में निकरी शक्ति होनी इनकी करना नहीं की जा सकती। अपने को आरम-भक्ति का साझात्कार हो वाए, तब तो बहना ही बचा ? बाकी उसके बिना भी उसी के बतनु पर हमारा कम चल तो रहा ही है। कल में सोच रहा था, बात भी कर रहा था। पहले रतज्ञी से फिर वही बात मेरी कुछ प्रत्य साधियों के सामने मेरी जवान से निकल बयी कि पाच व्यक्तियों का मुफ्ते ऐसा व्यान साता है निन्होंने यह कहा है कि इस बनस्थली की सूमि से विद्येपता है, दममें प्राप्त पंत्रा है। यह मुफ्ते भी बनस्थली के बात्यकाल से ही लगता रहा है। यह पुक्ते भी बनस्थली के बात्यकाल से ही लगता रहा है। यह विरोध की मादना लेकर भी जी व्यक्ति प्राप्त यह भी स्वनुक्त हो गया और हमारे पन की मी बात करने मग गया। किहती दूसरों के कहने की कीयत कुछ भी हो या न हो, पर इस भूमि में कोई शक्ति विद्योप है, यह बात बार-बार कही जाती है तो मुक्ते भी लगने लगा है कि है तो सही हुख न बुख । मेरी जवान से एक दिन बहुंगाविरम् के स्थान के लिए निकल गया कि किसी दिन यह तिब्द पीठ हो जाएगा।

### १६. मेरे मानस का वजन

झस्टूबर, १६७३

में प्रपत्ते चातक जैसी बीमारी के कारण एक प्रकार से सपन हो गया हूँ, इस बात को भूल में बात देश करें लिए बहुत मुक्किल हो रहां है। मुझे देश की बिगड़ी हुई भीर बिगड़ी जा रही स्थित में कुछ विशेष करते का सपना करते वा माल्म होने लगा तब मैंने 'स्वाभीन-ग्राम-गरम सगठन' के नाम में एक मूलत. ऋतिकारों कार्यक्रम हाम में लिया था, पर बीमारी के बाद जम कार्यक्रम को चलाने के लिए दौड-पूप करने के लायक मैं नही रहा हूँ । दूसरे, लोकवाएंगे के स्थानत प्रकारत को किर से चालू करने के सिलांसलें में भी मुफतें कुछ जन नशी पा रहा है। तीमरे, प्रपत्ती जनस्वी को कुछ ज्यादा बिगड़ी हुई बितांस स्थित को सामान्य सबस्या में साने के लिए मान-दौड़ करने की इताजज मी मुफतें नही मित्र रही है। इस तीनों बातों का जनता मेरे भानत पर कमी-कमी ज्यादा हो जाता है।

"स्वाधीन ग्राम-नगर-प्यवन" के कार्यक्रम की कत्यका को तो मैंने प्राय. छोड़ हो दिया है, सिलाय इसके कि ब्राज के जैसे चिरे हुए जमाने में भी कोई एकाप्र सनत से काम करते बाते नि स्वार्थ कार्यकर्तीकर्ता थेरे सामने दिखायी दे जाए तो मैं उनके करिये से उस कार्यक्रम की पुनर्नीवित करने का विचार कर सकता हूँ। सीक्याएं। के पुन: प्रकारन का काम मैंने जब भी जैसे भी उससे हो सके सुवाकर के जिम्मे छोड़ दिया है। वनस्वनी के काम के लिए दोड़-बूग करने का काम ज्यादाकर रतनजी के बीर थोड़ा वहुत स्थाम के जिम्मे छा पढ़ा है। रतनजी की मदद के लिए सिद्धामं की दीयार किया गया है। प्रहुलाद घोर बीर यथ पान पात हो। है। प्रहुलाद घोर बीर यथ पान पात घोर है जिनको यदाकदा दौर पर निकक्तने के लिए खदेड़ा जा सकता है। घोर में सुब हो नवस्थाने में बेला हुआ ख्यान है, क्लम है, ज्वान में जितना छोर जी कुछ हो। मेरे मानस पर यह दूसरा बजन है।

जो यह स्थिति वन गयी है जमी को पक्की मानकर अपना सतीप कर लेने के सिवाय दूसरा उपाय भी नया हो सकता है ? पर ऐसी हालत में वनस्थली मे जो कुछ काम हो रहा है उसमे तो भेरा समाधान करने का सामध्यें होना ही चाहिए, नहीं तो मुक्ते लगने लग जा सकता है कि वनस्थलों के लिए मेरा ग्रीर मेरे लिए बनस्थली का ग्रस्तित्व किस काम का ? कही मुक्ते ऐसा ही लगने सब जाए तो न जाने मेरे मानस पर कितना अमहय वजन हो जाए । ऐसा न हो जाए उसके निए क्या करना चाहिए ? एक तो बनस्यती के जिम्मे विचयों की शीलरक्षा का जो वहन बडा काम है उसे हम सदा की भांति सफलतापूर्वक निभाते जाना चाहिए । दूसरे, शरीर से-हाथ से व्यायाम, गृहकार्यं, शिल्प झादि कामी की करते का स्वभाव छोटी बड़ी सब बच्चियों का बन जाना चाहिए। सीमरे, बदलते हए जमाने में खादी के प्रति किसी का अनुराग हो या न हो, पर वनस्थली में खादी का परिस्थान करने की करपना किसी की भी नहीं होनी चाडिए। चौधे, सारिवक ग्राहार-विहार में ग्रंपने यहा किसी तरह की डिनाई नहीं मानी चाहिए । भौर पाचवे, गर्मी को ज़ुट्टी के अलावा सेशन के बीच में किसी इसरी छटटी की चाह शिक्षक की या छात्रा की-किमी की भी नहीं होती चाहिए। मार यह कि जो जब तक बनन्थली में रहे उसे कम से कम तब तक यहां की भावता के साथ प्रपनी एकरूपता का अनुभव करना चाहिए । वस ऐसी स्थिन वनस्थली में बनी रहे तो मेरा समा-धान बना रह सकता है। मानस पर के तमाम वजन को हरका करने का यही सबसे अच्छा उपाय है। बाकी तो यह निश्चित है कि अपना काम पहले से भी ज्यादा ठाठ धीर शान से चलवा रहेगा । तथास्त् ।

### २०. मेरी मनः स्थिति

#### मोहनपुरा (बस्सी) क्य, २६-६-३६

यो तो प्रपने उद्देश्य की पूर्वि के लिए मैं बरावर नकों में ही रहता है-ध्याकुल रहता हैं, बीर प्रात्मविश्वास की मजबूती का अनुभव करता रहता हूँ। परन्तु धानकल मैं कुछ ज्यादा स्याकुल हो उठा हूँ और सजबूती का भी विषेष अनुभव धुमको हो रहा है। सारी पीने का सवाल मेरे लिए कभी सवाल के रूप में रहा ही वही और बरीर में कुछ कमनोरी, पेट में कुछ नकब दिखायों देने लगी तो कुछ जिलता होने लगी थी, बाकी घट ठीक है। डॉक्टर की साथ से नीजू का पानी तेने साथ साथ हूँ, और भी एकाम परिवर्तन किए है। यपना काम में रापने शाप हो करना पमन्द करता हूँ। कोई प्यार में करदे, मेरा काम करके प्रतन होता हुंदा मानून पढे तो ऐसा झादसी मेरा काम कर सकता है। किनको नोकर समस्रा जाता है यह तुम होकर काम मुक्किन म हो करे। इसिए मुम्मको झात्रकर प्रपंत्र साथ पानी है उन्हें में मू स्थाने झार क्यार पानी है उन्हें में मू सपने झार अपनी नारमाई, किन्तर आदि ठाने में, प्रपंत्र झार पानी का कु था भर लेने में, अपने झार बाती लोटा न्यास साफ करने में विशेष झानन्द होना है। जुता पहिलाना छोड़ देने से भी तांव्यन वड़ी गुझ दहनी है। काटो के परीस में जाते ही यह कांटा बाद का जाता है, जो सेरे दिल में नया हुया है ध्यनी उट्टो स्व सिद्धि से तातुक रहने साला कारा।

प्रपत्ने पाम-पड़ोस के जनवल के बारे में मैं कुछ चिन्तित घवकर हो जाता है। हम सोगों में चारित्य का हाम हो गया है। हमारे घन्दर वह बज की सी मदबूनी नहीं है, एक तरह की तमागवीनी है। परन्तु हमी बामग्री से काम जेना होया । इसिन्तर पुत्रकों घनना खुद का नपनेक भी कदाना होगा। मजबूनी प्राव्यक्त पाक होने के प्रतास हुछ बीजिक वैपारी और कुछ बजीकरण भी नो होना चाहिए वह बचीकरण प्रेम ग्रीर वितय के बजते से प्राप्ता। प्रक्र भी बहु सर जबने बढ़ाने की जन्मत है।

लेकिन में करणना वरके देखता हूँ कि यही सोचे कि योलमाल होगी, राज को ममभीत से पीक नहीं ग्हेगी, गाजीजी की नई प्रणाली को राज बल्वे हमारी कमभीगे हो समभी भी रें व मह भी बानने होगे कि वब दुवारा मलागृह को हो। करेगा नहीं किर दवा बंगे वाए? सरामह ने होगा तो बचा होगा? गायर राज बाले सपनी किलाजनी बना सकते है हमरी सरामह कर होगा तो बचा होगा? गायर राज बाले सपनी किलाजनी बना सकते है हमरी सराम खंडी करके, लोगों को प्रजामण्डन के विमुख बन्ने की होगा करके, साप्रवाशिक वंगे को खंडा करने की लेहा करने, जागोंग्डारी को उक्ता करके, किलाजों को हुए देकर के भीर हुए उस प्रमान करके, प्रजामण्डल वालों को जवान खोजने की साजारी न दे करके इस राज हो साम सकते हैं हि प्रजामण्डल वोलों का हुए। यह में प्रानग हैं कि लीप प्रमाण्डल को काफी पहिलाज तथे हैं—उनको यह बजता देता मुश्कित नहीं है कि उन्हें भूतर हो सुंकी है, चाहे राज वाले समस्यक के कारण से ही सिकी है, चाहे राज वाले प्रमाण्डल को किलानी हो तो वह अवामण्डल के कारण से ही सिकी है, चाहे राज वाले प्रमाण्डल को किलानी हो तो वह अवामण्डल के कारण से ही सिकी है, चाहे राज वाले प्रमाण्डल के बिराजी ही सीविया देते गेह हो—प्रजाणक्ष्य की बाद को रोहरों हो सिकी

गर्ज से ही सही परन्तु प्रजामण्डल के मस्तित्व के कारण से राज को प्रजा के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पडा है, ग्रीर करना ही पडेगा।

फ्जं करो राज के साथ सम्मानपूर्ण समक्तीता नही होगा? तो किर मैं क्या करू गा? छूटने के बाद मबसे पहने नो मुक्त को जनता की मनः स्वित देशनी होगी, कार्य-क्तांकां से सलाह करनी होगी, अपनी रचनात्मक झिंत को नापना होगा, फिर गाभीजी है बात करनी होगी, उनमें थोडा कहा समाधान कर लेना होगा। मेरा विकास है कि गाँधीजी मेरा स्त्रोप कर देंगे मैं भी उनका सतीप कर दूंगा भीर काम का मिनसिसा जम जाएगा।

परन्तु सवाल तो यह है कि मच्चे दिल से कोशिया करने पर भी सत्तभीता न हो, प्रवामण्डल का प्रांतादी के साथ काम करने का हक स्वीकार न किया जाए तो मुसको वह म्बिटि कितने तमय तक महन होगी? मुसको एक तब्य बगी हुई है, वह मही कि मुकको तो प्रभी से मंकस्य कर लेना चाहिए कि मैं तो इतनी कोशिया के बाद, इतने नमय के बाद कल के बाहर नहीं एँगा। उस बड़े जेस में रहा तो बया धीर इस छोटे जेल में रहा ठी क्या?

प्रपत्ती मिक्त का प्रन्दाजा लगाना, गांधीजों ने बात करना, किसान कार्यकर्नाओं और सीकर बानो का छूटना इस सब के लिए प्रथल करना, कुछ उठा नहीं रखना । इन सब कामों के लिए जितना समय अगे उन के बाद मुक्त हो दुबारा जेल में बाकर बैठ ही जाना चाहिए। यह समय तीन चार महीनें के ज्यादा का तो नहीं हो सकता। ज्यादा में ज्यादा सिमन्द रखन क । उसके बाद तो सीधे जेल ने पहुँचने की सीधी तयारी ही करनी होगी। प्रपत्ती मर्मावाधों में रहते हुए भी ऐसा मुम्बस्तर पहले ही था जाए तो इसरी बात है।

प्रजामण्डल का समझीता हो जाए तो तुरन्त ही मुझ को किमानों का सवाल लेना पहेगा। उनके लिए कुछ सतोपजनक व्यवस्था अमुक अवधि के मीतर होनी ही चाहिए। उस व्यवस्था के क्षतर होनी ही चाहिए। उस व्यवस्था के प्रवस्य हो जाने के बारे में मेरा और किमान कार्यकर्ताओं का इतमीनान हो ही जाना चाहिए। प्रजामण्डल के समझीते के बाद उस काम के लिए किनता समय क्यांडा से व्यावा प्रश्नों — इसीने से भी सतोपजनक परिद्याम न विकले दो फिर किसानों के सामके तो नेकर केस कारा।

इस तक्ष्य में मैं हूं यह लहर निश्चय के बरावर ही है परन्तु थोडा सा धीर सोवने की गुजाइस रख लेना ठीक होना।

### (28)

#### "TRYST WITH DESTINY"

#### (Answers to UNI Questionnaire)

#### Ouestion Answer

- 1. On August 14, 1947, on the eve 1. When India gained independence of India's independence. Jawaharlal Nehru told the nation: "Long years ago, we made a tryst with destiny and now the time comes when we shall redeem our pledge, not wholly or in full measure. but very substantially".
  - What were your expectations at that time and how do you view India's someconomic development in twenty-five years of independence?
  - 2 As a front-rank soldier in the battle for freedom, what were the values and ideals for which you fought and how far do you think those values and ideals have been achieved? Do you consider that the ruling party that led the nation to freedom has followed, or deviated from the path which it had chalked out 9
- 3. In the first ever Congress Election Manifesto, drafted by Jawaharlal Nehru in 1945 on the eve of the elections to the Central and Provincial Assemblies, II was stated: "The most vital and urgent of India's problems is how to remove the curse of poverty and raise the standards of the masses "
  - What is your assessment of the achievement of this 25 years old objective of National Policy?

- my expectations were that we would build a strong and progressive state based on decentralisation of political and economic power The socio-economic development in the country, however, has been far far below and very much against my expectations The problems of poves rtv and unemployment have been aggravated due to wrong and weak policies.
- 2. We fought for freedom with ideals of integrity and justice in all fields of life These ideals are a thousand miles away from achievement. The greatest responsibility for this is that of the ruling party which started deviating from these ideals almost from the very beginning of its career of governing the country.
  - My answers to questions I and 2 cover this question also.

What were your views then on a united interested nation and country? Would you like to modify, amend, or expand your TIATUS NOW ?

- On the achievement of independence. I thought we would build a really united and integrated nation where political exigencies would have the least importance. I see no reason to change my views. In fact, I have become stronger in my views and have a definite feeling that if the ruling party had shown greater courage. integrity and idealism in action our progress would have been far more significant and on a much more firm basis.
- How far, in your view, have we progressed in the matter of achieving national integration? What are the obstacles, of any, to be overcome.
- National integration means a feeling of unity prevailing in the people of the country as a whole Lam sure that, instead, of progressing in this respect, we have gone very much backwards in many ways The political selfishness of the ruling party and lack of courage in holding on to principles have been the main oheracles
- of national planning and reconstruction, with particular reference to the prime necessities such as food, clothing and shelter and essential amenities, such as education, health and social welfare?
- 6 How do you evaluate the results 6. Results of national planning and reconstruction with reference to nrime necessities such as food, clothing and shelter have been most unsatisfactory. In education which has evidently been nohody's business, there has been indiscreet expansion In health we have perhans done some what better. The utilisation of resources Drovided for social welfare services (e.g. community development) have been scandalously misused.

7. What, in your opinion, are the 7. (i) The achievements on which achievements on which we can look back with pride and what if any, are the developments of features of national life which you feel are not creditable for us ?

- we can look back with pride ane --
  - 1. Integration of erstwhile princely states with the rest of the country and the abolition of the sazirdari and zamindarı systems.
  - 2 Over all political stability in favour of democracy
  - 3. Recently, better defence preparations of the country
- (ii) Features of national life not creditable to us are :-
  - 1 Ever increasing corruption in all forms from top to bottom,
  - 2. Shameful play of power politics resulting in defections and the like.
  - 3. Personal and public life of political leaders.
- 8 What is the India of your dreams in the Golden Jubilee (1997) ?
- 8. India of my dreams in the Golden Jubilee years (1997) is a strong and self-reliant India which does not take unwise interest in others' affairs and concentrates on sorting out and solving its own problems, an India in which the common man instead of being exploited by corrupt" representafives "enjoys read power which travels from bottom upward to the ton

What I need add to the above is that whatever material progress we might claim to have made is more than negatived by moral degradation Everybody seems to work for one's own selfish ends, then may come the group, then the party and at last, if at all, the country I feel that from the very start we should have worked with revolutionary fer our for wholesale socio-economic changes consistent with India's genius Instead we २०६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्य

started in a halting and indecisive manner. The result was that the masses lost all faith in us. Even now, unless we sincerly and effectively carry out our much talked of piecemeal measures for (i) ceiling on land and urban property, (ii) housing, (iii) drinking water, (iv) unemployment and (v) price control, etc. we shall certainly not regain the people's confidence. Socialisation and nationalisation can be meaningful only if the worker enjoys a real feeling of sharing ownership.

#### (२२) A TRIBUTE OF AFFECTION TO

#### H. H. Maharaia Sawai Man Singh of Jainur

(Written for a Souvenir published in his memory)

In 1922-23 I used to see an innocent-looking face of a boy of II-12 years of age in a lower class at the Mayo College. Ajmer the boy was often pleading before the 'Maharaj' for more marks in English translation. The charming boy was His Highness Maharaja Sawai Man Singh of Jaipur and as, Jaipur Raj motamid at the Mayo College myself was the 'maharaj' i. e. guru.

A few yeers later I happened to be the Secretary in the Foreign and Home Departments of Jaspur's newly constituted Council of State. In that capacity I attended the darbars of the boy Maharaja who attracted all the darbaris including myself with his naturally half-smiling face.

The same face I later saw a thousand times, and lastly on June 26-27, 1970: even then the half-smile was there, as usual. I could not lift my eyes away from the face until it was covered by sandalwood and other funeral material.

Sawai Man Singh was brought up and educated in anglicisd atmosphere and he was used to speaking English, but to me he always spoke in his broken Jaipuri. The Maharaja's pleasant manner won one and all who came in personal contact with him.

As a fighting public worker. I was against British rule in India and so also against the Maharaja's own British-controlled regime in the historic State of Jaipur. Even so, Sawai Man Singh looked upon me as his "maharaj". Not that we never had a sort of wordy duel, but that was all enjoyment.

His Highness Maharaja Sawai Man Singh was a magnanimous and open-minded ruler who was ever antious to see his people free in spite of the unconceated pressures from Delhi. The Maharaja began to assert himself even at the young age of 25 when his Council of Ministers was presided over by a Britisher.

And when he got Sir Mirza Ismail as his Prime Minister the Maharaja openly made friends with the anti-British Jaipur Rajya Prajamandal. In 1942 the Prajamandal was up in arms against the British, २० = ] श्रदयक्षत्रीवनज्ञास्त्र

even preaching against war efforts. The Maharap and his Prime Minister stoutly resisted Delha's onslaughts and refused to suppress the Prajamandal in any way.

Soon after an elected Representative Assembly and a Legislative Council were brought into existence and also a Prajamandalist "popular" Minister was included in the council of Ministers. And afterwards, naturally, there was a full popular Ministry in Juipur, the first of its kind in the whole of Northern, Western, Eastern and Central India.

The largest share of credit for all this advance was the Maharaja's own Maharaja Sawai Man Singh was always a constitutional head of the State, never interfering in administration though invariably helpful in times of difficulty. As his Chief Minister, I enjoyed the privelege of acting as his friend, well-wisher and counsellor. Even after the formation of the United State of Rajasihan, the Rajparmukh continued to be the same jovial and unassuming Maharaja.

Along with his natural sense of dignity the Moharaja had his simple manner. His conquering personality was unrivalled. With me, he was happy to sit on an ordinary durine in the shade of a grove of trees and eat the delicious dish of 'churma-dal-bati' from a "pattal of dry leaves. Once as a man of sport, the Maharaja took me to his favourite Polo and succeeded in securing from an ignorant though admitting Chief Minister a handsome donation for the Jaipur Polo Club.

Not long before the illustrious Maharaja was taken away from our midst he expressed his desire from Europe to discuss with me the welfare of "our home State." I cannot say what his particular ideas at that time might have been, but I know he was always anxious to do something for the welfare of the people of the State. As such his memory will, for long be enshrinded in the people's heart.

### २३. ग्रजातशत्रु राजेन्द्र प्रसाद

(राजेन्द्र बावू की पुष्य विधि के प्रवसर के समय रेडियो द्वारा प्रसारित वार्ता)

डॉ॰ रावेन्द्रप्रसार (रावेन्द्रवातू) का जन्म ग्राम जीरादेई (जिला सारत-विहार) के मध्य वर्गीय कायस्य परिचार में श्री महादेवमहाय के घर ३ दिवस्तर, १८६४ को हुमा । वानक रावेन्द्र को घराते पाना-दिवा से अच्छे सन्कार मिले । रावेन्द्र को प्रारम्भिक शिक्षा उद्गे-ध्यात्मी में हुई । उनका विवाह १२ सान थी छोटो उनक में हो दलन-प्रस्तर की रात-वंगी देवी के साथ हो गया । रावेन्द्र की ब्रावे की शिक्षा उच्चरप, पटना और कमकत्ता में हुई । विषायी रावेन्द्र पर्वे हुई । विषायी रावेन्द्र पर्वे हुई । विषायी रावेन्द्र पर्वे हुई व सुकत तेज वे । ब्रारम्भ से लेकर एट्टेन्स, एफ० ए०, थी० ए०, एस० एन वक्त प्राय समी परीवामी में उन्होंने प्रथम स्थान पाया । सोम्पता के ब्राचार पर उनको छात्रवृतिया भी मिलती रही ।

प्रियेशवाबू ने कनकता में विहार क्वन की स्थापना की। लॉर्ड कवाँन के द्वारा किये गये बग मग ने पावेश्याबूक के हुवया में देग-शिक्त काप विदेश रूप से जातून कर दिया। तभी उन्होंने स्वदेशी की प्रतिवा ले भी। पावेश्याबृ ने बिहार छात्र सम्मेलन के संगठन में भागे वढ़कर भाग किया। मन्मेयन ने १६२० तक बड़ा प्रच्या नाम किया। पावेश्याबृ ते १६२१ के प्रायेशवान में प्रायेशवान के सौर १६११ के प्रविचेशन में प्रायेशवान किया काप्ति में स्वयंश्यक वर्ग और १६११ के प्रविचेशन में प्रयिव मारतीय किया कर्मिय हो छह स्वयंश्य । रावेश्यवाबू ने प्रारंश सी० एस० के लिए इंगलंड जानि के प्रपेत विचार को कई कारणीं है स्वयं द्वारा | देशा। विचार के सिंग्स देवक समिति में वाहने हुए भी वाधिय नहीं हो सके। उन्होंने क्वकता में १६११ से १६१६ तक सक्तवा के साथ बकावत की।

१८१६ में पटना हाईकोर्ट वन गया तब राजेन्द्रवायू वहाँ आकर वकालत करने लों। धम्मारन मिलन के मिलसिले में महात्मा गांधी बिहार गये तब राजेन्द्रवायू ने कम्पारन में नील के परेत जमीदारों की जुल्हा जमारती ने एयुवत को रखा कराने के काम में उनकों बढ़े परिशम के साथ प्रहमोग दिया। गांधीबी के महत्याक से राजेन्द्रवायू का काया-पत्तट हो गया। उनको अपने हाथ से हो अपने सब काम करने का धम्यास हो पत्ता और उनकी दूसरों की लाजिर करन उनने की, जेव आने तक को मनोशुन्ति भी तभी वन गयी। १८१५ में राजेन्द्रवायू ने पटना से भवेजी दैनिक सचनाइट और १६२० में हिन्दी साप्ता-हैक 'दंग" निकतवाया। राजेन्द्रवायू को कबम से कई एक प्रथो की रचना भी नमम के प्रमुगार होनी रही।

रोसेट एक्ट और जिल्लानवाला हरवाकाष्ट्र के छलस्वरूप गोणीओं ने १६२१ में जो समझोग मारोजन बालू किया उनमें मध्येत मुद्रे से सबसे पहुंचे मामिल होकर राजेन्द्र-बाजू ने काजत छोड़ दी। उसी साल में राजेन्द्रबादू और बिहार के दूसरे सार्वियों ने बिहार विद्यारिक की स्पापना की। स्वय राजेन्द्रबादू ने बिहार हिलापीक की गिसियल का काम २१० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

संभात तिया । गया में पंडित मदनमोहन मानवीय की ध्रध्यक्षता में हिन्दुसभा का प्रथम प्रधियेतन हुया निसके स्वागनाध्यक्ष राजेन्द्रवाबू बने । १६२४ में क्षोक्तावा में को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधियेशन हुआ उसके अध्यक्ष राजेन्द्रवाबू हुए । उसी साल राजेन्द्रवाबू पटना की नगरपानिका के अध्यक्ष चुने गये । १६३६ में वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दुवारा अध्यक्ष हुए ।

अब नायेस से स्वराजपार्टी वन गयी माँ राजेन्द्रवाबू गासीशी का साथ देते हुए समिन्ननेनवादी पक्ष से वयान् अवेशों से समझ्योग करने वाने और धारानमाशी में जाने का विरोध करने वाने पक्ष से रहे। १६२३ में राजेन्द्रवाबु के कमतः खादी, हरिजन, पादिवासी, गोनेन्छा, राष्ट्रभाषा झादि रचनात्मक प्रकृतिनधी को धापना निया। १६२६ में राजेन्द्रवाबु स्वरानी विदेश यात्रा से सान्द्रिया के झाटल नामक स्थान पर एक पुर्विपरीधी सभा से गये तव युद्ध ममर्थक मोगों ने उन पर हमला कर दिया। १६२६ में श्रीहपुर (विहार) के सत्यावह के समय पाजेन्द्रवाबु पर नाटियो की मार पद्यी। १६३० के नमक स्थापह के सिनमिन में राजेन्द्रवाबु पहनी बार विप्यार किये गये। दूसरी वार वे १६२३ में विहार के सुनरे नेजाओं के साथ गिरस्वार हुए।

१६३४ में बिहुतर से सुबंकर क्षूकम्म झाया। उसमें राजेन्द्रशङ्ग में जो निस्तृह संवानसं हिसा वह बेमिलान था। वनेटा मुक्कम्य के ममस राजेन्द्रशङ्ग को सरकार ने वनेटा नहीं जाने दिया तो उन्होंने कराबों यहुँ ककर विस्तायतियों की बेसा की। १६७० में राजेन्द्रशङ्ग ने कांग्रेम के शानदार वर्वा अधिवेगन की शानदार सम्प्रक्षता की। राजेन्द्रशङ्ग कांग्रेस और पुस्तिम लीग के सममीते के लिए भी जिल्ला में लम्बे समय तक बातचीन करते रहे, पर वह सफल नहीं हुई। वांग्रेस के वर्षा अधिवेगन के कुछ पहने गांधीजी ने कांग्रेस से सत्ता होंगे का विवार जकट किया गी राजेन्द्रशङ्ग ने उनका ममर्थन किया पा। पर वे सुई गांधीजी के पाल जहां नहीं वे होते वही समय ममय पर आकर उनकी समूल्य सताह वरा-वर केते रहे।

१६१६ में श्री मुभायचन्द्र बोन के स्थागचन्न दे देने पर दुवरा श्रीर १६४७ में सामार्थ कुरकानी के स्थागचन दे देने पर तिवासा राजेन्द्रवावू कांग्रेस ध्रव्यक्ष बनावे गर्थ । दूतरे महायुद्ध में भारत की श्रोर से योगवान देना स्थीनार करने से पहुंच कांग्रेस ने से उनने मुद्र सम्बन्धी उद्देश्यों का स्थाय करना चाहा । इस सामले में प्रमेज कांग्रेस का सर्वाप मही करा मके । माधीनी ने व्यक्तिगत सत्याष्ट्र का कांग्रेक्स चलाया । प्रमेशों भी श्रीर से सर स्टेफोर्ड निप्म भारत आये, पर उनकी थोजना से कश्येम सहमत नहीं हुईं। विप्य मं प्रगेज भी भारत होंग्रे धान्योनन का प्रस्ताव ववई में च श्रमस्त, १६४२ को पान कर दिया । दूसरे दिव ववई सादि सनेक स्थानो पर गांधीजी, राजेन्द्रवाहू मादि नेता निरस्तार कर विये गए।

भाषण्, लेख ग्रादि [ २११

२ भितान्वर, १६४६ को मारत में झन्तरिस सरकार वनी विसमें काँग्रेस की भ्रोर से १२ मत्री लियं गये। राजेन्द्रवाजू को कृषि व खाद्य मत्री बनाया गया। भारत का मित्रधान वनार के लिए जो परिषय बनी जनके प्रध्यक्ष पर पाजेन्द्रवाजू का चुनाव हुआ। ११ प्रसन्त, १६४० को भारत स्वाधीन हो गया और उसी समय भारत का विभाजन होकर पाकिस्तान नाम से अत्तन देश वन गया। २६ जनवरी, १९४० को भारत का नाम तिष्यान लागू गया और राजेन्द्रवाजू भारत के अन्तरिस पाज्यति चुने गये। १९५२ के प्रामन्यानी के बाद राजेन्द्रवाजू द्वारा और १९५७ के चुनावों के बाद तिवारा पाज्यक्षित चुने गये। राजेन्द्रवाजू द्वारा और १९५७ के चुनावों के बाद तिवारा पाज्यक्षित चुने गये। राजेन्द्रवाजू द्वारा और १९५० के चुनावों के बाद तिवारा पाज्यक्षित चुने गये। राजेन्द्रवाजू द्वारा और १९५० के चुनावों के बाद तिवारा पाज्यक्षित चुने गये। राजेन्द्रवाजू द्वारा और १९५० के चुनावों के बाद तिवारा पाज्यक्षित चुने गये। राजेन्द्रवाजू

राजेन्द्रबाबू का व्यक्तित्व उनकी घपनी नम्रता, सादगी, सरलता, शासीमता, सहित्युता, नि स्मृह्ता, म्रास्तिकता म्रादि के कारण अनुषम था। राजेन्द्रबाबू को देशरून, अजातताज को प्रति प्रव्यपुरण कहा गया। राजेन्द्रबाबू गांधोजी की भाति सत्य और प्रहिंसा के खिद्याचों के भीर उनके अनुसार व्यवहार करने के कायल थे। राजेन्द्रबाबू थिरोधी एक खाना राजा थे एवं ये पर्य मंत्रक सत्य पर प्रविच रहते थे। वया, उन्होंने हिन्दू कोड विक की स्वीकृति नहीं थी। राजेन्द्रबाबू भारतीय सस्कृति और सम्प्रता में पूर्व साम्य रखते थे। वे हिन्दी-हिन्दूस्तानी के प्रवत्त सम्प्रक थे। पर वे ब्रायो और नवीनता का भी बहिल्कार करने के पक्ष मंत्रही थे। उनमे प्राचीनता नवीनता का मुन्वर समन्वय था।

महारमा गांधी ने कहा था—"राजेन्द्रवाजू का त्याग हमारे देन के गौरक की बस्तु है। है। राजेन्द्रवाञ्च का जेमा नक्षमानूर्याध्यवहार है बंदा नहीं भी रिसी भी नेता का नहीं है।' पांचत जवाहरनाल नंहरू ने कहा-उनकी मुद्रा धौर आखे भुवाधों नहीं जा मकती, क्यों जनमें सच्चाई क्रमकती है। डॉ. राधाकृष्यणु ने कहा-राजेन्द्रवाञ्च से जनक, बुद्ध धौर मांधों की छाप है। लाई निनिधमों ने कहा-डॉ राजेन्द्र प्रमाद बाहर-शीनर दोनों हो और मृद्र, प्रमुद्द की भागि मीठे धौर रमपूर्ण है। बीचे सीटे दिलासों देने वांने राजेन्द्रवाञ्च की समरण-धाक्ति गजब की थी धौर वे दमे की वीमारी के वावजूद ध्यक परिश्मा ये। वे उच्चकोटि के विद्यान, महान् शिक्षाशस्त्री, विश्वाट मनीची धौर यहन तत्त्वस्त्रा थे।

प्रोजेन्द्रवाहू का गंजस्थान से, राजस्थान की सम्याधों से धौर सर्व थीं जमगालाल बाज, मीताराम सेकमरिया, मांगोरण कानोहिया थादि प्रनेक राजस्थानियों से क्रियेष मान्यत्व रहा था। राजेन्द्रवाबू स्वास्थ्य मुधार के लिए वयपुर सीकर प्रांत परिवाली में से में । एक बार उन्होंने राजस्थान में जन्दा भी किया था। वे १६४० में बनस्थी विद्यापीठ को देखने धाये तब उन्होंने प्रथमी दो पीतियों को शिक्षा पाने के लिए वटे चाव से तक्तस्थानी मेजा था। उन्होंने जयपुर राज्य प्रजामण्डल के कार्यकर्तायों को राज्याधिकारियों के साथ इंडताकुत नम्रता का अवस्थार करने की सनाइ दी थी। प्रथने राज्याधिकारियों के साथ इंडताकुत नम्रता का अवस्थार करने की सनाइ दी थी। प्रथने राज्याधिकारियों के सोथ दाव राजस्थान में सरसारकहर के पापी विद्यामनियर चौर वनस्थनी विद्यापीठ गये थे। वनस्थानी विद्यापीठ के तो वे धार्यप्रता ही थे।

#### (२८)

# VALLABH BHAT As I knew and thought of him

How I wish Vallabhbhai had been born 15 years later (than 1875) and Gandhiji had died 10-15 years later (than 1948)! Had it been so we would have been living in a different India, an India of our dreams.

As it happened, Vallabhbhai was born as early as 1875. Being the son of a valiant fighter in the first war of Indian Independence, Vallabhbhai got all the fighter's qualities in paternal inheritance.

Vallabhbhai matriculated at the age of 22 years when he could have easily passed both his M A, and LL B He passed the District Pleaders' Examination when he was 25 and was a barrister at 28

In defference to Vithalbhai's desire Vallabhbhai kept himself back from going to England for barristership. Even the news of Javerba's death could not disturb him in a court argument.

Though he had established himself as one of the most successful criminal lawyers quite early, Vallabhbhai could not make a start in public life before he was enrolled as a member of Gujarat Sabha at 40.

When Vallabhbhai first heard of Gandhiji he only ridiculed him a mere idealist But, later, Gandhiji's unique leadership of Champaran's Salyagrah against foreign indigo planters made a deep impression on him

There after Gandhin inspired him whether it was relief work in times of famine, plague and influenza or municipal work as a member or president of the Ahmedabad Municipal Board.

Or it was the organisation of a no tax campaign in Kaira; or it was a movement against the Rawlott Bills or it was the Congress Party campaign for elections to the Municipal Board of Ahmedabad,

About the time of the Calcutta and Nagpur sessions of the Congress, Vallabbhan responded to Gandhul's call for non-cooperation with the British Government. He gave up his practice and burnt all his foreign clothes.

Under Vallabhbhai's chairmanship the Reception Committee arranged for the first time a simple and business like Congress session

भाषण, लेख आदि [ २१३

at Ahmedabad in 1921. Two years later Vallabhbhai conducted the National Flag Satvagrah in Nagpur.

It was in 1928 when Vallabhbhai at 53 led the famous Kisan Satyagrah of Bardoli, unparalleled in discipline and sacrifice, to a successful conclusion As a result the grateful kisans gave him the title of Sardar.

The Karachi session of the Congress in 1931 was presided over by Vallabhbbat. In 1936 he was elected chairman of the reconstituted Congress Parliamentary Board Since then he was the party boss upto the end of his life.

Vallabhbhai was elected chairman of the Reception Committee of the Haripura session of the Congress which gave a new direction of selfhelp and selfreliance to the oppressed people of the Indian States.

In 1945 Vallabhbhai organised the Congress Election campaign for the Central and Provincial Legislatures. The same year he got Dada Mayalankar elected as Speaker of the Central Legislative Assembly.

In 1946 Vallabhbhas joined the Viceroy's Executive Council as Home Member Alter independence he was made Deputy Prime Minister holding the portfolios of Home Affairs, States and Information and Broadcasting

Vallabhbhai reached the pinnacle of glory as a fighter in 1928. He was the principal party organiser for over two decades. His last and greatest achievement was the peaceful integration of the States,

Personally I was hist attracted towards Vallabhbhai in 1929 when I visited Bardoli Afterwards, at a meeting of the Charkha Sangh I rudely told him—"You cannot control Banasthali's work from Ahmedabad"!

It was again at Bardoli and in the presence of Gandhiji that Vallabhbhai asked me; have you got the strength to fight the Maharaja to which I replied—we are going to fight with our own strength.

It now seems to me that Vallabhbhai relished my brusqueness and I eventually accepted him as the leader who could lead. Vallabhbhai, knowing men's strength and weakness, fully relied on them. २१४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

Once in Jaipur when I was putting before Vallabhbhai the details about the formation of the first responsible cabinet in Jaipur State he simply said—Look here, you have to join the Cabinet as Chief Minister.

To a deputation of Rajasthan congressmen pleading that the 1948 Congress session should be held in Rajasthan Vallabhbhai simply replied: hold the session in Jamur, inform the Congress President (Rajenbabu).

Regarding the estimated deficit of Rs 15 lakhs in the Congress session Vallabhbhai said: "manage it with some of the Rajasthan Princes; but don't speak to Jawaharlal about it. I will speak to V.T. Krishnamachari"

Having talked to three seniormost congressmen of Rajasthan about the Chief Ministership of the new State Vallabhbhai said to me; "these friends want you to be the Chief Minister and I agree with them."

In reply to Jamaram Vyas' telegram Vallabhbhat steroly warned him 'Hiralal Shastri owes his premiership not to Pradesh Congress Committee but to my choice of leadership at the unanimous request of you all "

Vallabbbhai's first spectacular success in the process of the States' integration was in Orissa. With joy in his sparkling eyes. Vallabbbhai put it to me: "What happened in Orissa." I said—'your first great victory."

The above rupning parrative of Vallabhbhai's eventful life and the brief resume of my personal contact with him together with all that I came to know about him from time to time would reveal him as a truly great man He had a large heart and a clear mind. He had only one ambition in life and that was to serve India. While adhering to high principles he was a practical man of action. His judgement of men and matters hardly ever erred. He was not a mere talker. He never cared to be popular, popularity sought and found him. His life was full of sacrifice. Twice there was the sure chance of his becoming Congress President, but he stepped down for the sake of others. To Bombay Governor Dumley's offer of premiership Vallabhbhai's laconic reply was: "I am not going to be Premier." He could have put up his claim to India's Prime Ministership, but knowing that Gandhin was somehow not for him, he agreed to take the second place in which capacity he was conscientiously loyal to the accepted leader or more correctly to the country's cause. Vallabhbhai never vacillated : he was always decisive. He had no love

भाषरा, लेख ग्रादि [ २१५

of glamour, his hving was simple and austere. The great Deputy Prime Minister of India had hardly any belongings: a small old box was perhaps the only luggage in his tours. Vallabhbhai wore plain khadi woven out of the yarn spun by his devoted daughter Maniben who was his personal secretary as well as his personal attendant ever prepared to do any small job for her Bapu. Maniben was Vallabhbhai's sole guardian and protector for over two decades. Then Vidya Shanker the versatile private secretary was alone equal to half a dozen officers. In the State Ministry V. P. Meron was the States Minister's giant secretary and adviser. I saw the able H V. R Jengar taking the Home Minister's orders on bulky files. With such personal, private and official aides, Vallabhbhai disposed off business of state in minutes Vallabhbhai was a hard taskmaster and a strict disciplinarian, whether it was the case of Nariman or Khare or even Subhashbabu Vallabhbhai always went upto the bitter end Vallabhbhar might have anneared ruthless, but he had a laying heart hidden within his steel chest Vallabhbhai believed in the economy of production and more production. To the Muslims he was never unfair. but he did not like the policy of appeasement. Vallabhbhai was considerate in his dealings with the much-maligned princes and capitalists and he got everything out of them all without causing offence to them Vallabhbhai was no believer in empty slogans . but he was all for the toiling millions to whom he really belonged As I have said I wish Vallabhbhai had been born at least 15 years later and had left us 15-20 years later. I also wish Gandhiji's Choice had fallen on Vallabhbhat to enable him to make India intrinsically strong. There is no knowing if the catastrophic partition of India could have been averted even if Vallabhihai had sided with Gandhiii to the very end . The British were determined to break the country into numberless pieces It was Vallabhbban's quick and wise action which foiled those pefarious designs Without Vallabhbhai Hyderabed and even tiny Junagarh would have gone if given the opportunity Vallabhbhai could have saved the whole of Kashmir for India and there could have been no betraya) of Tibet and later China would have certainly not dared to cross into Indian Territory Vallabhbhai could have secured the cooperation of all sections of the people for the moral and material progress of the country Then, India would have automatically risen in the estimation of the nations of the world. Let us now hope that a man like Vallabhbhai would once again take his birth in Bharat and raise it to its full stature! There can be no power on earth which could make India forget the immortal Vallabhbhai who will be enshrined in the hearts of his countrymen for all times to come

मोट .--पडित जवाहरत्मल नेहरू के स्वर्गवाम के बाद किया हुआ मेरा आकाशवासी प्रमारस्स प्रत्यक्षजीवनपास्त्र (भाष १) में छर चका है।

### २४. सालगिरह, विचारतरंग

११ नवस्वर को वेरी साखागरह है। ७४ साज पूरे होकर ७४ में में प्रवेश होगा। माज से १२ साल पहले मेरे एक साथी गजकमंत्रारी ने प्रपत्ती खुद की सालगिरह के मौके पर करा या कितनी मुसंता को बात है कि सालगिरह को खुजी का दिन माना बाता है। जनने गाम में साखगिरह के दिन इब बात का रज होना चाहिए कि उन्न में से एक साज कम हो गया। मेरे सोचने के सनुनार तब बात यह है कि मनादि चीर प्रगत्त काल के सामने गताविष्यपों और सहस्थाव्ययों तक की भी कोई गिनती नही हो सकती तो किसी एक यायमों नो सी पचाल साल की उन्न की क्या गिनती हो सकती है बीर उसकी उन्न के किसी एक साल के पटने वा बढ़ने की तो बात हो क्या की जाए ? देनगाडी में सफर करते हुए बन एक बड़ा स्टेमल माता है तो कुछ बनोय होता है कि चनो इतना रास्ता तो कट गया और माने मब इतना बाजों है।

से मनना की बहुवना करते करते हैं एन हो जाता है। जो बुद्ध रिखायो देता है उसके सात्वा न दिलावी देने वाला बहुत-बहुत ज्यादा है। न काल की सीमा, न देग की सीमा। कहते हैं महत्य से में ही हच्च पेदा होता है। 'तुफे नपता है कि किसी दिन भीतिक विज्ञान ही सारमा की निद्ध कर देगा। दिना तो सात्र भी है ही है कि वर्षा अर्थ प्रसु पीटी होती जानी है त्यां त्यो उसकी शक्ति बदतो जाती है, यहा तक कि धहचय अर्धु-परमायु की बड़ी नारी गांकि मानी जाती है। मुक्त के सुक्ततर, मुद्धवर से सुक्ततन ऐसे चनते-चलते भहत्यका सा जाती है भीर महत्व में सचिक शक्ति हो जाती है। इस प्रकार पूर्व्यातिक प्रसुवन के स्वाद की स्वाद की नहीं होता होना क्या ? चीर बहुवन है, जाता ने उस्टे चनते नमें तो स्कूल की ओर बढ़ते बढ़ते समुद्ध, वहाड़ सादि के विश्वांस तक नहीं पहुँच सादरे करा

वो हो, इन ह्या है जानों से बना बड़ा मनतव न्या है ? बोर निए सतवब को बात यह है कि मैं किस में पैदा हो मया, पंता है ह्या तब से पुके साल सा पहा है और मैं निवा है । जिन्दा हैं तो पुके हुख न हुख करना पड़ता है । तब मैं सोचता है कि जो हुझ में हुख करना पड़ता है । तब मैं सोचता है कि जो हुझ में कर वह पड़्या सेरा बमें हो आता है । भी सक्सों में से प्रमाने में था नवा बड़ी मेरा स्वयमें हैं । त्ववमें में पते तो ही "मिट जागा" सच्या है, बसोंक परसमें को "मयावह" बनाया है । मेरे स्त्यमें को ही मरना स्वयमें मानं वाले समायमाँ मिल जाने पर जाने पुक्को हुख मुख्य बपेया होने सावी हैं । किसी से भी प्रमेशा पतन को बृत्ति से प्रमंत्र बायकों बचाते हुए स्वयमें में जीन रहना, परी प्रमास मेरे करने का है। इन बब्दों के साथ में बात के दिन वनस्थानों परिवार का समिया पत्र क्षिता कर हता हैं ।

परिशिष्ट

### परिशिष्ट

### प्रस्तावना

परिशिष्ट १ में प्रत्यक्षजीवनकास्त्र (भाष १) को पाय समीक्षाए दी गयी है। पाठक देखेंगे कि पायों ममीक्षाए अपने-अपने हग की हैं। प्रत्यक्षवीवनशस्त्र का प्रयार करने का प्रय तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। प्रयार किया जाता तो सम्भव है वहुत सारी समीक्षाए कहीं न कहीं प्रकामित हो जाती। अस्तु।

परिग्रिप्ट २ में मेरी रचनाओं को दोहराया गया है। उन रचनाओं में मेरे विचारों भीर मन्तव्यों का सार मा जाना है।

परिभिन्द हे में "अपना मृत्याकन—अपनी कलम से" नाम का मेरा आरम-परिचयात्मक एव मारम-समीक्षारमक लेखे दिया गया है।

हीरालाल शास्त्री

## परिशिष्ट

(१)

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग १) की समीकाएँ

### परम स्नेही श्री सीताराम सेकसरिया की स्नेहमयी प्रतिक्रिया

(য়)

"प्रस्कानीवनकारव" की उद्योक रही और चार पौच दिन पहले जब मैं जीमने को दैंठ रहा था। उस समय पीस्टमैन पैकेट लाया तो मैंने उसे खोलकर प्रच्छी तरह देखा। गेंट पर, स्वपंद, कागव सारी चीजे मन्मोहक लगी। नीते रग पर चेकेट शक्सरों में पुस्तक का धीर प्रापक, काम बहुत दिलंग पुस्तक पढ़ने लगा यो यह इच्छा हुई कि धीर प्रियक का धीर प्रापक बहुत ति के पहले पढ़ने लगा यो यह इच्छा हुई कि धीर प्रियक को भी जानता है। एक्स धीर काव्य को भी जानता है। इस प्रया प्रापक कि विका को में जानता है। इस प्रया प्रापक को साम जानता है। इस प्रया प्रापक को साम नाम पर चिल्तन, उद्वेग, प्रयन्त्य, बहादुराना दग धीर राजपूर्ती साम प्रयट करता है। मैं सापको नवदीक से खानता है, हसलिए मुक्ते ज्यादा प्रच्छा लगा भी समकता है भीरों को भी खब्छा सनना पहिए। किसी को मूक्त से ज्यादा प्रच्छा लगा भी समकता है भीरों को भी खब्छा सनना पहिए। किसी को मूक्त से ज्यादा प्रच्छा तो साम का सकता है पर बहुतों को मुक्त से कम ही प्रच्छा लगेगा, पर धच्छा तो सभी को लगता ही चाहिए। किसी को अच्छा न भी लवे दी द्वा परवाह वह सी प्रपत्न देग से सिला ही गया।

स्रापके नाम साथे हुये पन्नो मे पाच पन्न मेरे, श्री पाटनीजी के भीर कुछ सौर के भी सब पढ़े गया। इसके प्रनावा आपका थीवनवृत के अधिकांस भाग पढ़ हुका है। बाकी सब मी पढ़ता है ही। धपनी बात सपने को घण्छी लगती है, इसीलिये मुक्ते पढ़ने मेर चार सि है। पुस्तक में उपन्यास की जीती रोजकता है, मन लगता है। पढ़ने में जोर नहीं प्राप्ता। साधारएं पाठक भी क्षिय ते और सहजता से पढ़ सकता है और ममफ मकता है। लेवक की विशेषता शायद यही है कि वह कठिन बात को भी सहबता से ब्यक्त करे और पाठक उसे सहज समफ सके और हदयंगम कर सके। 'श्रव्यक्षजीवनबास्त्र' में यह बात मुक्ते लगती है। फिर वह पिछले जाशीस वर्षों की राजस्थान की हत्ववत का राजनीति का और प्रापकी साधना का इतिहास भी है। हो सकता है सब घपनी-वपनी इपिट से सोचे और विचार करें पर 'श्राप को पूत प्यारो लगें' ऐसी ही सपनी बात है। (a)

"प्रत्यक्षजीवनणास्त्र" पूरा पढ़ लिया । यहूने वाले पत्र में वितना लिखा या । पूरा पढ़ने के बाद बहु भीर भी धन्छा लगा । इधर पाँच सात वर्षों में शायद इतने चाद से मैंने किसी पुस्तक को नहीं पढ़ा । छ सात सी पुष्ठों की पुरत्यक देशकर में उर बाया करता हूँ पर प्रत्यक्षणीवनशास्त्र" को सुकृ हामा पत्र जाव मीका मिला पढ़वा गया भीर इसमें रम भाता रहा । प्रात्य देशों की मृत्यु पर जो पत्र मापने तत्वजी को लिखा या । गायद वह मुक्ते प्राप्त ने पड़ावा पत्र पारा पर पुस्तक में वह को पढ़ावा भागे हम से प्रत्य का नाव मह सुक्ते प्राप्त ने प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति प्रप्ते प्रप्ति का भीर प्रप्ते मान का जो जिल्ला भावने उससे प्रप्ति मान का कि प्राप्ति का भावने प्रप्ति मान भावने सात का भावने प्रप्ति का भावने प्रप्ति का भावने प्रप्ति का भावने प्रप्ति भावने प्रप्ति का भावने प्रप्ति का भावने प्रप्ति भावने सात का भावने प्रप्ति मान भावने प्रप्ति का भावने भावने भावने प्रप्ति का भावने भा

#### श्री मुन्ननहसन की राय

"मटके हुए सिपाही की ग्राप बीती"

नवभारत टाइम्म, नयी दिल्ली (२८-११-७१)

भारत के इतिहास भे धाजाबी के सिपाहियों की एक धजीव थे एी रही। मुख्य
मित्त-सीन किया में रहते हुए भी में नोग जस संगठन को तिवादिता, व्यक्तिन्द्रजा और
मतानव के विरुद्ध मर्थेव नडते रहे, लेकिन अनिम विक्लेपण में न तो कांग्रेस के भीति मतानव के विरुद्ध मर्थेव नडते रहे, लेकिन आनिम विक्लेपण में न तो कांग्रेस के भीति न मित्रुंव को स्वीकार हो कर पामे । ऐसे भठके हुए सिपाहियों को सूची बहुत लम्बी है इस
मूची में मर्थेशी जयप्रकास नारास्तर, जे० औठ कृपनाती, आजार्थ नरेन्द्र देव, राममनोहर
लीहिया और महाबीर त्यागी जींस हुजारों लोग सात्रे है इन भटके हुए सिपाहियों के मुजाबते
एकके गोगालन और ई० एस० एस० नम्बुतिरिपाई यींसे तेता बहुत अच्छे रहे, जो कांग्रेम करमुखत प्रकार नमय पर धनग हो गये और एक मुद्ध विरोध पाम प्रवास प्रवास करने और उसके
माध्यम से एक प्रवुद्ध जनमत तैयार करने के रचनात्यक कार्य से जी जान से हुद गये। मुक् के बरमी में एस० एउ डांगे, भूरेश गुप्त धीर एक बार्य से भी शही भूमिका रिनायी।

राजस्थान के पहने मुख्यमन्त्री और वनस्थानी निर्धापीठ के सस्थापक पित होरा-लाल मास्त्री भटके हुए सिपाहियों की श्रेणों में बामिल है। प्रत्यक्षत्रीवनवामत्र उनकी मास्त्रक्या है। १६५२ में इसका नेवक इस ननीजें पहुँचा या—"वडे घारवर्ष की बात है कि देश में दतना कुछ हो जाने के बाद भी बिस अदार उन दिनों प्रत्य की प्रतीक्षा पी माज भी हमें उत्ती रचा में अनय की प्रतीक्षा करने ही रहना है बब तक प्रत्य धर्मात् वहीं कांत्रित न होगी तब तक मुंके नहीं तथता है कि हमारे देश में करनाया का मार्ग तुन जाएगा। रचराव्य के वाद विश्व चाल से हम चनते आये हैं वह ठांक नहीं है। इनीलिए हमकों पहले की भागि पत्र भी प्रत्य की प्रतीक्षा करनी पहेंगी।" दे एक प्रत्यत्य जावनीतित्र का आवेश पूर्ण क्यन मही माना जा मकता। कारस्त्र, पित्र होसानान बास्त्री एक कुटिन राजनीतित्र नहीं बल्कि एक तैत्रस्त्री कार्यक्रतों रहे हैं और इसके कई प्रमास्त्र इसी यन्त्र से अपनक्ष हैं कि नामें के प्रति उनका मोह-नय ध्यानक नहीं बल्कि एक सतन-गन्य सपत्र के परिशाम पा। १० प्रमन्त्र, १९११ को नेहस्त्री के नाम प्रपे एक पत्र में उन्होंने सार-नाफ लिखा पा कि कार्येस होरा "समाजीकरस्य सीर विकेटीकरस्य के प्रयासी में बील दे डालने के कारस्त

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

प्रोर प्रगतिहीन घोर निण्यल प्रगतिवादिता के कारण, प्रनेक लोगों को कावेस से प्रमण होकर नये राजनीतिक ब्लाननाने की प्रेरणा मिली है। मेरा यह विकास परता जा रहा है कि राजनीतिक स्वनन्त्रता के बाद धाने वाली प्राणिक कांत्रित लागा कांग्रेस के यस का राह है। वास्तविकता यह है कि धोरे-धोरे मुक्ते पकीन होता जा रहा है कि कांग्रेस के सामने जो महाद उद्देश या बहु प्राप्त हो। गया है धोर धव कांग्रेस—जन स्वराज्य के फर्कों पर हाय माठ करने मे लगे है। मैं इस बात पर धाववस्त हो चला हूँ कि देश के धार्यिक तंत्र को इस तरह परिवर्तित करने के लिए, कि उसके फायदे धाम धादमी को पहुँच सके किती प्रम्य प्राण्तिमाली धान्योतन को अल्पत होगी।" इस पत्र को धमाप्त करते हुए शाहत्रीजी तिवर्ति हैं—"मुक्ते धावका है कि कांग्रेस से जो चलत रास्ता धन्तियार किया है वह उससे हरोगी नहीं और इससे मुक्ते यह लगता है कि धारत में इस वहत कांग्रेस के विद्य एक धारवोन्त दिइना जरूरी है इस्तिए कुछ तो कांग्रेस से निराजा होने के कारण धौर कुछ इस प्रति धारवीन की सफतता में विकास होने के कारण मैंने धरपनी छोटी सी औका को मिदय के धरात मानु में ले जाने का निगवय किया है। माजी जीवन कोई भी रूप बशी न ले, एक बान मर्ग्या सुनिवरित हो होते वह वह कि मेरा जीवन सदा की भाति इस देश की धनन्त्र से में ही बीतेगा।"

माज इस बात को बीस बरम हो गये पहित हीराताल शास्त्री प्राज सत्तर बरस के वृद्ध हैं और वनस्थली में विरक्त जीवन विता रहे है। यन हीता है कि इस वहादुर बूडे से यह सवास पूछ कर इसे शरीमदा न किया आय कि पडितजी ! उस प्रति-भ्रान्दोलन का न्या हुआ ? जी चाहता है कि उन बूटी झांखों के सामने १६५४ के आग उगलने वाते हीरालाम के ये शब्द न माये जाये-श्राह्मां और क्षत्रियों का यय अब समाप्त हो गया है श्रीर ब्राज पूजीपतियों का युग है। ब्राज तो पूँजी वाले का-काफी पैसे वाले का ही बारों भौर बोलबाला है सर्वत्र उनका प्रभूश्व है । इसी कारए। जनतन्त्र होते हए भी हमारे देश मे चुनावों में धनहीन हिस्सा नहीं ले सकते । एक चुनाव के लिए हजारो, नाखो रुपया चाहिए भौर कोई भी घनहीन उतना रथया खर्च नही कर सकता । किन्तु ग्रव वह युग समाप्त होने वाला है और हाथ मे मेहनत करने वालों का नया युग आने वाला है इसमें बुद्धिजीवियो का भी सहमीप रहेगा, इसमें अधिक समय नहीं संगेगा । यह स्वराज्य की तरह हमारी करपता के पहले भा जाएगा, उसे कोई बाहे या न बाहे काग्नेस बाहे या न बाहे फान्ति प्राकर रहेगी उसके लिए हमें तैयारी करनी है। इच्छा होती है कि साम्भोजी से पूछा जाए कि प्रापकी यह कैसी तैयारी है कि १६७१ से लोकसभा के मध्यावधि भूनावों से ग्रापकी नाक के नीचे सीकर में एक साधारण किसान तीन पूंजीपतियों के खिलाफ चुनाव लड़ता है यौर धापका उसे आशीर्वाद तक नहीं मिलता ? कृष्णकमार विद्वसा के खिलाफ उन्हीं के वारखाने का एक ब्रदना मजदूर लड़ता है लेकिन आप सत्ताघारी कांग्रेस से यह ध्रपील तक नहीं करते कि स्नाप बीच में मत पडिए, मालिक मजदूर की यह सीधी टक्कर हो ही जाने दीजिए ?

समीक्षाएं [ २२७

राजनीति के अजग जिवाणीं भी धनसर पहित हीरालात शास्थी वैसे पुराने लड़ाकां को स्वार्थी प्रीर व्यवस्था का घ्रम मान लेने की भूल करते रेखे गए हैं। हम सममने है कि गारहीजी की ईमानदारी खब तरह के खरेह से परे हैं। हा वह धवस्य कहा जा सकता है कि तत्कालीत पेवीदा राजनीतिक परिस्थितियों की उनकी समफ ठीक नहीं रही भीन ज्यानिक करों नहीं के जम कर मोर्चा नहीं ले पाये। इस शवितमान व्यक्ति के कुछ न कर पाने के उनकी व्यक्तियात हानि वां हुई सी हुई लिकन देश के समाजवादी प्राप्तीतिक को वाक्त वहा नुकसान पहुँचा है। अब ध्ययर शास्त्रीजी समफ भी जाय कि उनकी प्रस्त जगह लाखों किसानों मजदूरों के बीच धी धीर उनका प्रसत्त काम या समाज बादी संघर्ष के लिए उनहें सेवार करना, तो शायद उनके ७० वर्ष उन्हें समक्ता देंगे कि प्रवाद रही हुकी है। ही, नवे पानतीतिक कार्यकर्तां को उनकी इस प्रारम्कया से बहुत कुछ सी करें की प्रस्ता निक्त वस्ती हैं।

#### (**3**)

### बन्युवर श्री वियोगी हरि की भावना

(दैनिक हिन्दुस्तान, नयी दिस्ली ३०-७-७२)

गीता की यह उक्ति कि "स्वयम नियन श्रेय परधमों मयावह." नाहे जितनी भी दिसीको से मसरण नहीं ठहरती, भने ही उसका सर्थ या ब्यान्या पपने हग से काल प्रीर स्थान पर हरिट रखकर की आए। सकतर 'स्वं की ब्याल्या करते हुए हम जितना रावडवा नाते हैं, उतना 'पर' की ब्याक्या करते हुए नहीं। सपनी स्वय की तवीयत से यह पर्याप यह उठीक नहीं उठता। 'पर' की स्थान्या के विन्तु तथा रेखा की तरह 'पर' की प्रपेषा रखते हुए सी मुलन निरंपेक्ष होता है। काली कमली पर कोई दूमरा रग बढ़ने की हिम्मत नहीं करता। 'परघम' प्रयान मोहक क्य दिखाकर समय-समय पर प्रतोभन देता है सहीं जीवन में क्यो-क्यों प्रपान मोहक क्य दिखाकर समय-समय पर प्रतोभन देता है सहीं जीवन में क्यो-क्यों प्रपान मोहक क्य दिखाकर समय-समय पर प्रतोभन देता है सहीं जीवन में क्यो-क्यों प्रपान मोहक क्य दिखाकर समय-समय पर प्रतोभन देता है सहीं जीवन में क्यो-क्यों होता है। उदस्त स्वी होता है सहीं की प्रपान सात होते होता होने वाला नहीं। उसके मीठे फल भी बदहनमी को प्रपन साथ के हाते है और बाद में मुंह का स्वाद विश्व खाता है क्यों कि उनके स्वत्य प्रजुकृत रस नहीं होता।

मेरे सामने एक मृत्यर वध 'अत्यवातीवनवास्त्र' अम्मृत है। लेलक हैं वस्पुतर हीरासाल बास्यी। इसे इन्होने वनस्थती मे ४१ साल पूरे होने के बदसर पर प्रकाबित कराया है। त्रव के पांच भाग है। पूर्वकथन, जीवनङ्गत, रचनापंचवती, अतिरिक्त सामग्री स्रोर जनस्वयन

यह प्रय एक सम्भी आत्मक्या है— एक ऐसे व्यक्ति की आत्मक्या जिसके प्रपत्ते विवारी पर दूसरी की खाप बहुत कम वही है, जो हमेशा कुछ कर पुत्रने को तैयार रही है, जो स्वभाव से निर्मोक और कनकड तवियत का है और जिसते राजनीति को प्रवर्ग जीवनहास्त्रमा में वाधक नहीं वनने दिया। कहा बचा है कि "वह एक प्रटका हुमा मिपाईँ हैं"। यर ऐसा मानने को जी नहीं करता। वह प्रपन्ने स्वीकृत लक्ष्य से भटका नहीं और उसने प्रपन्ने आपको उसक्याया नहीं। शत्कालीन परिस्थितियों से प्राप्त साकालिक फल की यदि जीवन-सिद्धि मान लिया बाए तो बात दूसरी है। प्यप्ति है कि हम प्रपत्ने स्वय के जल से उन्हों सीचित रहे। मिंद वालिया, पत्तिया, और फलो पर इस्टि न टिकी तो उसाहना देने—दिवाने का कोई कारए। वहीं।।

वनस्पत्ती मे जो पवित्र बीब कभी बोया गया था, एक बिनजुती ऊबड लाबड जमीन पर उसका प्रकृरित और पस्तवित होना और फुलों व फुलो से बद जाता, क्या बहु लेखक के उतार-चढ़ाव वाले जीवन का एक मुनहरा पृष्ठ नही है ? जब वे मतात्मक राजनीति के भेवर में पढ़ पंग्ने थे, सब वनस्थती अपने 'रचनात्मक सकेतों से उन्हें बुला रही थी। याद आता है कि राजस्थान के मुख्यमन्त्री पद से हटते गमय उन्हें मैंने वचाई दी थी और कहा पा कि वनस्यती ही उनकी सच्ची कर्मभूमि है, और वही उनकी मुक्ति-भूमि भी है।

प्रात्मकथा के लेशक की विविध विधायक सेवाए जिनमे राजनीति प्रमुख रूप से प्राप्तिल है प्रोर जोवनकुटीर तथा वनस्थती विद्यापीठ—ये ऐसे स्थारक हैं, जिन पर प्रतिकृत हवा-पानी का प्रसर पढ़ा नहीं।

राजरोतिक क्षेत्र में भास्त्रीजी १९३६ से १९६२ तक रहे किन्तु फिर भी वे भ्रपने जीवन-लक्ष्य की क्षोर सजय से । देश की विविध--मस्याफों के प्रति वे माज भी सलग है भोर उनके दिल में सभी हुई धाय सुभी नहीं है। भारतीय सस्कृति में उनका पूरा विवयात है। वे मानते हैं कि वाहर से उथार जी हुई राजनीति ह्यारे देश को बास्त्रीयक भ्रष्य में समुद्ध भीर उज्ज्वल नहीं बना सकती।

हाँ, बास्त्रीजी एक क्षेत्रक ही-नहीं, विल्क प्रच्छे कवि मी हैं, कवितामी में मरलता, भाषा में मिठास भौर कैसी में अपना एक बाकापन है, जो उनकी कविषय नीचे की पक्तियों में हम राते हैं:---

> चाहा मिले तो परहेज क्यों हो, नहीं मिले तो परवाह क्यों हो ? हो पास में तो दिर्या दिली हो, लेना नहीं तो फिर चाह क्यों हो ?

नहीं किसी से कुछ चाहना है, नहीं जरा भी कुछ वोलना है। अच्छा बुरा हो, सब श्रोलना है, नहीं जवां से कछ वोलना है।

किया जरा भी उपकार मेरा,
कृतज आजीवन मैं रहूंगा।
भलावडाभी मुझ से हुआ तो,
जवान से मैं न कभी कहुँगा।

घोखा कई बार मुझे हुआ है,

ठगा गया किन्तु ठगा नही है।

भता खुशी से सबका किया है,

बाहा कभी एवज् में नहीं है।

अनेकता मे वस एकता है, अभेद होता वस भेद माही। विरोध माही अनुकूलता है, आराम होता तकलीफ माही।

ष्ठ य के चीचे साथ में जो नामग्री दो गई है उसमें का ग्रीयकान पठनीय ग्रीर विचारणीय है। राजनेताओं, सत्तामारियों एवं धनेक मित्रों को लेखक ने जो पत्र हिन्दी तथा सर्वे जो में सिलं है उनको तत्कालोज राजनीतिक परिस्थितियों एवं लेखक के मनोमयन का लाग सच्छा परिचय मिलता है।

श्री हीरालाल शास्त्री का यह प्रत्यक्षजीवनशास्त्र निस्सदेह पठनीय एव उपादेय प्रथा है। प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र (भाग १) के ब्राधार पर डॉ॰ मदनगोवाल शर्मा (हिन्दी विभाग, राजस्वान विश्वविद्यालय) कृत "वनस्थली का वानप्रस्थी" नामक समीक्षात्मक पुस्तक का श्री चन्द्रकिशोर गोस्वामी (संस्कृत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ) हारा संकलित सारसंक्षेत्र :

तीन वर्ष पूर्व पडित हीरालालजी बाल्ती डारा लिखित ग्रन्य प्रत्यक्षजीवनशास्त्र के प्राप्तार पर 'वनस्यली का वानप्रस्थी' श्रीपंक के सन्तर्गत डॉ॰ मदनगीपाल शर्मा ने शास्त्रीजी के तप, पूत व्यक्तित्व और कृतित्व का एक विषय समीक्षात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। वाँ शर्मा के इस समीक्षात्म में शास्त्रीजी के तप पूत विवाद कर वे विवेचन प्रस्तुत किया है। वाँ शर्मा के इसिक्स के विविध प्राप्तामी-रचनारमक व राजनीतिक कार्यकर्ता, प्रशासक, वक्ता, विवादक एवं कृतित्व के प्राप्त को प्रमासक, वक्ता, विवादक एवं कृतित हथ्या का मनन-निकस्प किया गया है। प्रायुक धौर भावक को पैनी हृदि के प्रन्य का पर्याप्त सथन कर डॉ॰ शर्मा ने जो परिलाम विकास है, उनसे प्रत्यक्षजीवनशास्त्र को गहराई से न पढ सकने वान लोगों के लिए भी बास्त्रीजी का वहुमुक्षी व्यक्तित्व एक चित्र की माहराई से न पढ सकने वान लोगों के लिए भी बास्त्रीजी का वहुमुक्षी व्यक्तित्व एक चित्र की माहराई से न पढ सकने वान लोगों के लिए भी बास्त्रीजी का वहुमुक्षी व्यक्तित्व एक चित्र की माहराई से न पढ सकने वान को माहराई से प्रतिक्रतामी है। उन वहाँ जनका तीन मीन्य उनके विवेचन में पढ़े-पदे सिलता है वहा वह प्रतिरचनमा से वचते हैं कहाँ उनमा की नीन्य के प्रविक्त विवेचन में पढ़े-पदे सिलता है वस वह वह वह विवेचन लेख के ही हुन्छ प्राप्ती को इस रच में सक्तित्व कित के हिन कुछ प्राप्ती के पर में समीक्षा करते हुए बाँ० शर्मा सिवत है—

"किसी भी व्यक्ति के लेलकीय व्यक्तित्व का सबसे सही परिचय उसके धारमचरित से मिनता है। " वचपन की नटलट घारानी तथा विवार्यिकाल की उच्छ लकताओं के जो मेरी रस धारमविक्तिएसएसर चिन बारनीवी ने लीवे है, वे साहिरिटक सौरएस प्रीर कला की हिन्द से प्रायस्त उत्कृष्ट वन पढ़े हैं। """विवार की समी धवस्थायों और स्थितियों का यथासमंत्र कुलकर वर्णन किया है। इस खुलेयन धौर वातचीत की सी सहजता ने उनके लेखन को समीव व प्राएवन बना दिया है। """"विवारीवी के गण्य की माण ते जेवाल की तहन सुनीव माणा है" """यही कारएस है कि सहकुतर्गमंत्र तस्तम शब्दावती के साथ है। उसमे दैनन्दिन प्रयोग मे आने वाले लोक प्रचलित धनरेती, उर्दु, वयपुरी ग्रारि भाषा भी प्राप्त की साथ है। """ "यथि वातनीवी प्रपंत त्र तिस्तम के साथ की साथ प्राप्त के साथ की साथ

२३२ ] श्रत्यक्षजीवनशास्त्र

धीर राजस्यानी में निसित समस्त गद्य-गद रचनाओं के घनतोइन से यही प्रमाव पड़ता है कि यदि प्राप्तीजी राजनीति और सार्वजनिक सेवा के धेव में नहीं धाते तो संभवतः एक उन्हांस्ट कांटि के साहित्यकार के रूप में इनके व्यक्तित्व का विकास कीई प्राप्तपं की बान नहीं हुई होती। """ शास्त्रांजी का धपने सहस्य पाठकों से आबहु है कि वे किसी मो रचना में काव्यक्त की कोज म करें तथापि यह स्वीकार करना होगा कि अनुभूति की मीनिक निजा और समित्यक्ति को इंसानवारी विद काव्य के प्रनिवार्य तत्व हैं तो हुदय के इन उद्गारो को कविता की सज्ञा में श्रानिहत करना हो होगा।"

"शान्त्रीजी के पत्रों से सदनरोचित तर्क ग्रीर भावना का समावेश पाया जाता है। क्यार्य के विस्तार से बचते हुए सीये काव की बात पर ग्रा जाता ग्रीर गौरवारिकता के वक्कर में मानास्त्र में एक प्राप्तिक के पत्र स्वयन्त्र की विशेषताएँ हैं।" डॉ॰ कार्यों ने समावित्र के विशेषताएँ हैं।" डॉ॰ कार्यों ने सामिति के विपारों को रार्वोनिक ग्रीर ममाजनात्रियों वो बर्गों में विसक्त किया है। वीस-प्वीस विचार विमार किया है। वीस-प्वीस विचार विमार किया है।

"मृष्टि के प्रतन्त पक्षेय नहत्यों की उपेक्ष्युन में व्ययं दिमाणी करारत करने दी प्रयंक्षा मार्ग्याजी प्रत्यक्षत्रीवन मर्सों में सनुपातित होने के महत्व की स्वीकार करते हैं जो उन जैसे कर्मन समाजनेत्री व्यक्ति के लिए सर्वेषा स्वामाविक और उचित्र है। प्रत्यक्षत्रीयन सर्वेष हो व्यक्ति को ओवन के क्रियामीन और संतुन्तित नियम और मिद्राचार प्रदान कर मकते है। """प्रत्येन स्वतन्त्र विन्तन में उन्होंने वहीं से बड़ी हित्त्यों से भी तिक्रकों कर में मनना बुनियादी मतभेद, उनके प्रति धादर रखते हुए, सर्व्य की पक्ष्य के स्वस्य इप्टिकोग्रा से प्रीत्य होते हुए प्रषट किया है। उन्होंने ऐसे सामाजिक मर्त्या को कहने का भी साहत किया है जिस्हें वैचारिक फैनन के प्रवाह और मत्ता की आधी के विरोध में कहने का साहत्य बढ़को नहीं होना।"

शास्त्रीजी की वक्तृत्वशक्ति के सम्बन्ध में डाँ॰ शर्मा का विचार है-

"जिन्होंने प्रास्त्रीयों को जयपुर शहर की बोपड पर धववा गांव में विशान क्यक समृह के बीच भागए देते हुए मुना है वे जानते हैं कि वे क्तिने प्रभावधाली बन्ता रहे हैं, विशेषत अपपुरी वेंगी में दियं गये उनके जानएएं में वा पूर्व हैं हैं विशेष गये उनके जन-जागरए गीरों के निकान का तो कोई बबाव हो नहीं हैं !""" अपने भागएगों में प्रास्त्रीयों ने कमी मुत्तम्मेवाओं से काम नहीं लिया । बरी-वारी कहकर जनता को प्रगते साथ भागवा के बहुत में वहां ने बाता किन्तु प्राध हो ठीत कार्यक्रम के किनारे उसे लगा देना, पारी पीजिनगित्र करा के कर में कार्योओं की रही हैं। प्रप्ते प्रतिपत्ती को हाजिए जाती ने नाजवान कर देना धौर तर्क के देन सक्तर हुमी-हुमोकर करवाना भी दुखतो रागों के पारी को जीतकर रख देना धारत की विशेषताएं हैं।"

मारत्रीची के जयपुर राज्य में दुख समय तक महकमा मर्त्रेषुजारी और हाई स्टूल में काम करने के बाद मोतमिदराज मेयो कॉनेज, प्रसिस्टेस्ट प्रकालफ्टेस्ट जनरस, फॉरेन व होम डिपारंमेण्टम् के सेकेटरी, जयपुर जन प्रतिनिधियों के मन्त्रिमण्डल के मुख्यमन्त्री ग्रीर फिर गयुक्त राजस्थान की रचना होने पर राज्य के श्रीप स्थानीय प्रश्वासक मुख्यमन्त्री के रूप मे कार्य करने का श्रवसर मिला है। प्रश्वासक के रूप मे उनकी सफजता ग्रीर लोकप्रियता के कारणों की चर्चा करते हुए डॉ॰ शर्मा लिखते हैं—

"ग्राहम्बर श्रीर भ्रष्टाचार से शारतीजी को चिंढ रही।"" " 'कम से क्षम व्यय मे ग्रन्धे-से ग्रन्छ। काम'-इस एक उदित से जनकी शासन व्यवस्था का सही मृत्यांकन कोई भी तदस्य समीक्षक किये विना नहीं रहेगा । ""सयुवन राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में शास्त्रीजी ने राजनीतिक जठापटक में समय न्ययं खोने की अपेक्षा राजस्थान के एकीकरण के ऐतिहासिक दायित्व को चोंचकाचिक लाघव से सम्पूर्ण करने की ग्रोर ही ग्रपना सारा ध्यान कैन्द्रित रला। " ""शास्त्रोजी ने इतना भारी दायित्व होते हुए भी अपने मित्र-मण्डल मे केवल १० मत्री ही सम्मिलित किये। "" ग्रीर सचमूच इस छीटीसी टीम की साथ लेकर थोडे से समय में कम से कम साधनों का क्या कर शास्त्रीजी ने विशाल राजस्थान के एकी-करए। का जो कार्य किया है उसका मुख्यांकन तो जनप्रशासन विद्यान का कोई प्रतिभा सम्पन्न शोधकर्त्ता ही कभी प्रस्तत करेगा। राजस्थान के समक्षदार और दनिया देखे लोग धाज भी उस मित्रमहल को ईमानदारी, एकता, सादगी मीर मितव्ययिता के लिए याद करते हैं।"""ज़हरी सरकारी काम की उपेक्षा कर दौरे कर-कर मत्ता कमाने की प्रवृक्ति शास्त्रीजी में तो दूर शारित-मत्रिमण्डल से भी नहीं रही। स्वयं शास्त्रीजी में तो एक सार भी टी॰ए॰, डी॰ए॰ बिल नहीं दिया। "" प्रशासक के रूप में एक और सफल काम उन्होंने राजकाज में हिन्दी को आगे बढ़ाकर किया। न केवल राज्यकार्थ में हिन्दी के ग्रिथिकाधिक प्रयोग के लिए राज्याचाए ही प्रसारित की बल्कि यह भी देखा कि गभीरता से उन पर श्रमल होता है कि नहीं। "" उन्होंने खुद ने किसी भी फाइल पर कभी एक बार भी एक भी टिप्परा या मादेश अग्रेजी में नहीं लिखा।" "राजस्थान के निर्माता के रूप में उन्हें सदा ही याद किया जाएगा।" रचनात्मक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ के रूप में शास्त्रीजी के व्यक्तिस्व को परस्ते हुए डॉ॰ धर्मा का कहना है-'विद्याधिकान में ही 'प्रयास' तथा "विद्यापिजीवन" नामक हस्तिखित पत्रिकाक्री की योजना तथा जयपुर में राजस्थान चात्रालय एव छात्रमण्डल का सचालन भादि कार्यों में युवक शास्त्री की रचनारमक सहजात प्रवृत्ति के बीज अपे हुए दैसे जा मकते हैं। भारतीजी के व्यक्तित्व की गरिमा ग्रीर प्रतिस्ठा की कहें मत्रिपद या सत्ता मे नहीं बब्कि उनकी सुदीर्घ सेवा परायस्ता मे रही है। """ शास्त्रीजी एक ठीस कार्यकर्ता और कृशल राजनीतिक सगठक रहे है । बाहे संघर्ष का सकट-काल हो, चाहे मुलह सममौते की नाजुक घडी । दोनो ही स्थितियों में उनका व्यक्तित्व समान रूप से निखरकर सामन आया है। दोनो ही स्थितियों में उन्होंने निप्पक्ष निर्मीक निर्णय और माचरण की हढता का निर्वाह किया है। "" कमंक्षेत्र के धनी इस कार्यकर्त्ता को 'टेवूल वर्क,' कभी पसन्द नही ग्राया ।'''''रम विरुगी थान्यस्वली का शब्दिक सूत्रधार श्रयदा कानूनी दावपेचों का ग्रखाडची उसने कभी नहीं बनना चाहा ।"

ध्रत्यक्षजीवनशास्त्र

शास्त्रीजी के व्यक्तिस्व के उपमुक्त विविध पर्क्षों का विश्लेषण् करने के साथ डॉ॰ शर्मा ने उनके सहिलस्ट और महन व्यक्तिस्व का निरूपण् करते हुए लिखा है—

"शास्त्रीजी अपनी वैशभपा या रुचियों में लेशमात्र रुमानियत या चटक मटक की थोर ग्राक्टर नहीं रहे । """वादी की घोनी, लम्बा-ढीला कुर्ता और देशी बते इस "सदा बहार पोशाक" मे राजनीतिक मौसम या किसी आर्थिक ज्वार-भाटे से कभी कोई अन्तर गही ग्रापा । " के बेशभपा में, न बोध में, न सम्बोधन में और न ही सम्बन्ध निर्वाह मे-कभी किसी प्रकार का रग शास्त्रीजी ने नहीं बदला । वह सदा एकरंग -एकतान ही रहे ।"" बस्तृत सीधी-सादी सच्चाई मादगी-इस सम मत्र में शास्त्रीजी के जीवन और कर्राव्य की मुल-प्रेरणा खोड़ी जा मकती है। ऊपर ऊपर से बक्खड और व्यवहार में रखे-च्ये से ें दीमने वाले शास्त्रीजी कोमल और गहरी भावनाओं के घनी हैं।"""शास्त्रीजी की प्रकृति में सिद्धान्त और भावना का विचित्र मेस है।"" कतजता में महना और प्यार में रुठना-यही जनकी श्रम्तरग श्रात्मीयता की दो कसौटियाँ हैं।"""विचारो की हदना शास्त्रीजी में कट-कट कर भरी है। " " अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन में समान रूप से वे वचन के घनी रहे हैं। "" कमंशोसता में उनका ग्रधिक विश्वास है। भविष्य की चिन्ता उन्होने कभी नहीं की । वर्तमान के पूर्ण मद्पयोग का व्यान ही उन्होने सदा रखा है।""" शास्त्रीजी का व्यक्तित्व ऊपर से ग्रारोपित नहीं है ग्रापित देश की भूमि ग्रीर उसके जन से ग्रपनी प्रवृत्तियो ग्रीर प्रेरगाओं के स्रोन ग्रहण करता हवा एक सचेप्ट विकासशील व्यक्तित है जिसमें अपने दग से अपना मार्ग तराशा है और तप और अनुभव ही जिसकी वास्तविक पजी है।"

"विरोधामासो के विषम रंगों से बनी इस तसबीर में कुछ भी बनहोनापन सा घट-पटापन नहीं लगता।"

बुदि और वाणी किसी भी विषय को संमभने धीर कहने का माध्यम होतो है किन्तु विषय हो जब स्थापक, महाव और गरिशाय हो तो थे सीमित माध्यम क्या कर सकते हैं ? तम समसते हुए भी बहुत कुछ प्रतमसमा धीर कहते हुए भी बहुत कुछ प्रतमसमा धीर कहते हुए भी बहुत कुछ प्रतकहा रह ही जाता है जो धीरो को प्राणे सम्मने-कहने को सदा श्रीरत करता रहता है। व्या शास्त्रीयों के भी स्पितल के साथ यह बात नही है ?

#### [2]

#### डाँ० कुमारी पन्ना द्विवेदी

(हिन्दी विभाग, बनस्थली विद्यापीठ का समीक्षात्मक श्रष्ट्ययन)

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र पण्डित हीरालानशास्त्री द्वारा खिखित उनका स्वय चरित्र निरू-पर्ए है। पूर्व कथन में उन्होंने कहा है—

> प्रत्यक्ष सत्यस्य विवेचनाय निजानुभूतेः परिदर्शनाय स्वकीय चारिह्य निरूपणाय ग्रन्थं करोमि प्रियरंजनाय ।

"मैं कैसा क्या मनुष्य है, मेरी कैसी क्या मान्यताए रही है, मेरे पास जो हुछ प्राइतेट या पिरुक है सो सब एक जैसा है। इस सब कुछ का सक्षेप में समावेश प्रत्यक्षत्रीवन शास्त्र में करने का राज्य किया है।......इस प्रत्य के प्रत्यक्ष स्वत्य का विवेचन है। मेरी धनुप्रतियों का परिवर्णन है और मेरे चारित्य का निक्ष्मण है और इससे मेरे प्रियजनों का मनोरबन होगा।" लेखक के जीवन में चटी हुयी विविच प्रत्यक्ष घटनाओं, प्रत्यक्ष सम्बन्धों का पुस्तक में मुनदर विवेचन है।

पुस्तक के शीर्षक और विषय वस्तु का स्पष्टीकरण करते हुए भी लेखक ने कहा है—
"अरुसकीवनशास्त्र का समाध इस प्रकार है। प्रत्यक्ष है जो जीवन सो प्रत्यक्षशीवन, परयक्ष
जीवन सा शास्त्र, प्रत्यक्षतीवनशास्त्र । प्रत्यक्ष माने मुशे जो जैसा प्रत्यक्ष दिखापी देता है
सही मेरे लिए सत्य है, वही प्रत्यक्ष नय है। विसे में मही वेस सकता, जिस में नही जान
सकता, जिसका प्रमुक्तान भी में भच्छी तरह से नही लगा सकता उसकी में क्या बात करूं?
दूसरे सुचित्रों की बदायी वार्ष पूरे तीर पर मेरे मने नही उतरें तो उनका भी में क्या
कर्के? पर प्रत्यक्ष के विषय में थवा सुनिश्चत है, पक्षी है। वहीं मेरे जीवन का प्राथारहै।"

लेक्क की स्वीकारोक्तियों भीर सम्पूर्ण ग्रन्य के अध्ययनीपरान्त यह सहज ही कहा जा सकता है कि पुरक्तक में उनके जीवन के सथार्थ का, प्रत्यक्ष सत्य का रवरूप उकरा है। रनका जीवन दर्जन रमण्ट हुंसा है। और यह प्रत्यक्षजीवन दर्गन ग्रांसामी पीडी के क्षिये दिशा मुक्क बनेगा।

लेशक ने बन्य को 'मेरे चरित्र' का निष्णस्य कहा है। झोर सायद इसीनिए प्रन्य मे जीवनहृत्व मात्र ही नहीं बर्ज् चरित्र को प्रकास मे लाते के लिए लेखक की स्वरचित कवि-ताऐ, पत्र, तेलां, आपरण और टायरी धादि को जी सम्मित्तित किया गया है। पत्तत पुरत्क केवल सारक्षम्य मा जीवनी न होकर चरित्व निष्मस्य का साथत हो गयी है। इस साक्षत्र हारा, विनिध्न माध्यमों से लेखक ने सपने खीवन को प्रस्था किया है। यहाँ पुरत्तक को सबसे वडी उपलिख है कि वह मात्मक्या, जीवनी, चरित्र निरूपण, पत्र, बावरी घौर भाषणों का रसारवादन एक साथ कराती है। महात्या गाधी, पण्डित नेहरू, ठाँ, राकेन्द्रप्रसाद प्रारि की धात्मक्यायों की मार्गि अस्तृत पुस्तक सार्वजनिक ध्ययता रावनीतिक इतिहास न होते हुने भी एक कर्मेठ, २६ धौर प्रवन इच्छा शक्ति वाने व्यक्ति का प्रामाणिक वैयक्तिक इतिहास है इसमें दो मत नहीं हो सकते।

सम्पूर्ण पुस्तर पान मायो मे विभाजित है। वहला भाग "पूर्व कवन" जिसमें लेखक ने ग्रन्य रचना की प्रेराणा को स्पष्ट किया है। पुस्तक की विषय बस्तु के सम्बन्ध में सीक्षप्त सूचना री है।

दूसरा माग "जीवनजूत" शोर्यक से जिस्सा गया है। जीवनजूत की प्रमारिकता के विषय में उन्होंने स्वय बहा है-जीवनजूत भेरा लिखा हुमा है (पृ ६५२) जीवनजूत के नाम से जो कुछ लिखा गया है वह कवस एक व्यक्ति का जीवनजूत मान है। उक्त व्यक्ति के जीवन की घटनाओं के सिलसिरों में किन्हीं दूसरे व्यक्तियों का जो सम्बन्ध प्राया सो भी सहज मान से जिसने में आ गया। (भा दो अस्तावना)। अपने इसी सहजमाब को लेख के पूर्व कथम में मीर अधिक स्पर्टता ही है-ज्वपन से लेकर मेरी उन्न के एवं हो सार तक की जो वार्ते निस्त कर में मुफ्ते यान सार वी किन्ही को सार कि की जो वार्ते निस्त कर में मुफ्ते यान सार आवी गयी उन्हें मैंने उसी कर से ज्यों का स्पो साफ साफ जीवनजूत में लिख दिया है, विना लोड मरोड के बिना दुखा विद्या की साम साफ जीवनजूत में लिख दिया है, विना लोड मरोड के बिना दुखा विद्या की

जीवनहुत्त पाच अध्यायों में विभाजित है। यहना अध्याय तीन उपभागों में विभाजित है। १९६६ ई॰ में १६१६ ई॰ तक वचपन विद्यापिताल जोवनेर में बीता है। इस भाग में शास्त्रीजों ने अपने वश का परिचय (पू. ६) देते हुये अपने जन्म और बास्पकान (पू. १३) को घटनाओं का जिक किया है (पू. १४) आराज्यिक शिक्षा दीखा का सुन्दर वर्णन किया है (पू. १४) )

इस भाग में १९१६ से १६२१ तक का विद्यार्थीकाल है जो जयपुर में बीता है। रायवहादुर सर गोरीनाथ पुरीहित से सास्त्रीजी का प्रथम परिचय इस भाग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपविच्य है जिसने उनके भागी शीवन को बहुत प्रीषक अभावित किया। पुराह्म को बात की प्रथम विवाह (पू २०), मातामही को देहान्त (पू २१), परनो का अचानक निषन (पू २२), तथा तस्काल दूसरी सगाई और १६२० की गाँग्यों ये पुत दूसरा विवाह। इसी काल से एक उल्लेखनीय वात हुई लेखन के मन में इस विचार का उपना कि वह किसी बाव से जाकर प्राथम बनाए और प्रामवास्त्री की सेवा करें (९. २४)।

तीसरा भाग जवापुर राज्य की नौकरी का है १६२१ से २७ तक महकमा मर्डु गयु-भारी में हैड प्रसिटेंट श्रीर अजमेर के मेयो कॉलेज में चवपुर के मोतमिदराज पर पर कार्य किया । फिर फायनेन्स की ट्रेनिंग लेकर जवपुर राज्य में महकमा हिसाब में ग्रसिटेंट ग्रकाउ- ग्टेट जनरल का कार्ये किया । बयपुर राज्य की कौसित का पुर्गणतन हुया, पुरोहितजी कोरेन व होम मिनिस्टर बने घीर जाम्बीजी मेक्टेरी । इस पर पर रहते हुये निरस्तर प्रपत्ती बिद्रोहीशुनित का परिचय दिया (पृ ३१) । १६२१ में पारिसारिक स्थिति वडी विपम हो गई। प्रचानक पिता, पत्नी ग्रीर नवजात पुत्र की मृत्यु लेखक को हिला गयी (पृ. ३३) । इसी प्रयप्ति से उन्होंने होत्तरा चित्राह प्रतन्ता के साथ किया । सरकारी नौकरी द्योजकर पितानी जा पहुँचे (पृ ३३-२४) ।

दूसरे प्रध्याय के पहले जयभाग में रचनात्मक वेबा की तैवारी है। ११९७ से २६ तक का समय सास्त्रीमों ने भावी योजना के हेतु पर्योच्य पर्यटम और मम्पर्क स्थापित करते में विशाया है। पिनानों में श्री पनव्यामदास विवक्ता से सम्बन्ध हुया। थी हरिपाठ जयगस्थाम के साथ सावस्मनी धाथम में गांधीजों के दर्गन किये (पु. ३७)। कपकरों में भी सीताराम मेंव्यत्तिया में भेट हुई जो खाग चक्कर उनके परम प्रमिन्न मित्र व महस्योगी बने (पु. ३८)। गांधीजी के बाशीबांद से बास्त्रीजी में रचनात्मक कार्य को प्रारम्भ करते की सोजना वनायी (पू. ४९)। दुर्गायवाद समा के बाय स्थान की खाज हुई। जयपुर राज्य भी निवाई तहनील में बनस्यली गाव पसन्द प्राया (पू. ४२) लेखक के स्वय के के स्वय में

दूसरे उपभाग में जीवनकूटीर वनस्थली (१६२६ से १६३६ नक) का विवरण है। वनस्थली मे शास्त्रीजी ने जीवनकुटीर की स्थापना की जिसका मुख्य काम वस्त्रस्वादलम्बन, दीमारो को दवा देना, गाव के प्रौढ़ी क लडको को रात के समय पढाना, सहकार समा तथा कूरीति निवारण स्नादि था (पू. ४७) । इस मारे कार्यक्रम को चलाने के लिए कार्यकत्तांश्री भीर सर्भ का प्रायोजन बड़ी तत्परता और हिम्मत के साथ किया (पु ४=)। जीवनकुटीर का रचनात्मक कार्यक्रम यहत सफल हमा (प ४१)। अधनपुर्व साहम ग्रीर लगन की नीव पर पार्टी सस्था वहत उन्नति कर गयी लेकिन इससे भी शास्त्रीजी की सन्तीप न हम्रा, वे कान्ति चाहते थे (पृ ५३) । इसी बीच १६३५ मे उनकी प्यारी वेटी शान्ताबाई का स्रक-स्मात निधन हो गया । असाधारण होनहार पुत्री की मृत्यू भावूक पिता को दहला गयी उन्होंने न्वय लिला है-शान्ताबाई की चिता में अग्नि प्रवेश के होते ही मैंने अपने को भक्त-भोरा श्रीर मेरे भीतर ही एक धावाज बोल उठी-देश में जितनी लडकिया है वे सब तुम्हारी बेटिया है। जितनी चाही अपने पास रखी और शान्तावाई की जगह उनको माना पहाग्री-निवामी, सेवा के लिये वैयार करो (प. १५)! वस उसी क्षमा से जीवनकुटीर में शिक्षा कुटीर भी बन गया (पु ५७) । सन् १९३६ में शिक्षा कूटोर का पहला वार्षिकोत्सव हुन्ना। भाज का वर्तमान वनस्थली विद्यापीठ उसी का प्रतिफल है जिसे बास्त्रीजी ने भपने खून ग्रीर पसीने से सीचकर इतना बड़ा किया है। स्वराज में पहले संस्था के लिए उन्होंने कभी सर-कारी मदद नहीं मांगी । सर्वप्रथम नेहरूजी के कहने से स्वतन्त्र भारत की सरकार से धनुदान मिला (प ६१)। वनस्थली विद्यापीठ शास्त्रीओं की ग्रद्भुत इच्छा शक्ति का प्रतीक है। यद्यपि शिक्षाकुटीर के प्रादु भाव से जीवनकुटीर का प्रकट रूप बहुश्य सा हो गया परन्तु २३६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

प्रच्छन रूप में वह यब भी विद्यमान हैं। (पृ. ६३)। शीसरे उपभाष में बनस्मतो विद्यापीठ लोकवाएरी, जीवनमन्देश, नवजीवन कुटीर, नवजीवन सन्देश, मातृमन्दिर विद्यालय, जीवनेर ग्राहि की स्थापना का विवस्सा है।

जीवनवत्त का तीसरा अध्याय लेखक के जीवन के राजनैतिक पहल की खोलता है। १६३६ से ११६२ तक का समय शास्त्रीजी ने राजनीति मे विताया है। यद्यपि उनका व्यक्तित्व गन्दी राजनीति के लिये नहीं बना या फिर भी अपनी कान्तिकारी भावना के बरीभत उन्हें प्रचलित राज्यसत्ता का विरोध करना आवश्यक लगने लगा (पृ० ६६)। जयपुर राज्य प्रजामङल के प्रधानमंत्री पद पर कार्य करते हुये जेल गये (६७) शास्त्रीजी प्रतिल भारत देशी राज्य लोकपरियद के प्रधानमंत्री हुए । सुविधान परियद के सदस्य बने । जयपुर राज्य के मुख्यमंत्री हुए फिर विशाल सयुक्त राजस्थान के मुख्यमंत्री बन कर उन्होंने राजपूताना की रियासती का एकीकरए। किया। (पृ० ७७) शास्त्रीजी के राजनीतिक जीवन में सरदार घरलभ भाई पटेल का वड़ा हाथ था। उसकी मृत्यु के बाद पड़ित नेहरू से मिलने पर णास्त्रीजी ने ५ जनवरी, १६५१ को अपना त्यागपत्र है दिया । अपनी समस्त राजनीतिक मफलता विफलता का विवरण उन्होंने स्वय प्रम्नुत किया है।" राजस्थान के एकीककरण के काम को मैं प्रच्छी तरह करके छोड़ गा। यह न होता तो में मुख्यमंत्री न बनता और बन गया तो क्षणभर में छोड़ कर झलग हो जाता। बीर यदि में यह महमून नहीं करता कि मेरे साथियों ने मेरे साथ अत्यन्त अयोग्य व्यवहार किया है तो मेरे अन से विकार नहीं आता भीर मेरे बारे में किसी को भी निकम्मे भ्रम में पड़ने का मौका नहीं मिलता । मुक्ते किसी के दवाव में प्राकर लोकसभा में नहीं जाना चाहिए या। इस प्रकार मुक्ते कुछ दुर्भीग्य पूर्ण बानो का सरत अफसोस है तो मुक्ते अपने काम से आन्तरिक सतीप भी।"

जीवनशुत्त के चीचे बाद्यास में लेखक ने जीवन जगत के विधिन्न पक्षों पर अपने विचार प्रकट किसे हैं। पूर्ण दार्जिनक की माति अपने जीवनदर्शन का निर्माण किसा है। मुख्य में उनका विश्वास नहीं है। जीवन से किसी भी कठिनाई से वह प्रवर्शत नहीं। वहीं मान से उनका स्वरूप विख्वास है। जीवन का कोई पक्ष उनके शासने चकारास्तक नहीं है

पाचनें प्रध्याय (उपसहार में) बास्त्रीजी ने प्रपने सम्बन्ध में सब कुछ बता दिवा है। घर परिवार का विवरण [90 १०४), प्रपनी आहतें. स्वकाव, मुग्त, बवगुण [90 १०४ १०४) धारि। पु० १०७ पर लेखक में सब बाग बीती कह कर आगे के लिये कार्यकर्म बनाया है। उनकी कामना है अपने लिये कुछ सी न चाहते हुए किसी के लिये चुरा विवतन या कपन न करते हुए और सरकार्य पर अधिन एहते हुए राम होच परिहत और मोहदुत होकर अपने अपनी समुद्र में फैक देना, जनती साम में मोहद देना (पु० १०६) समवतः मही कामना उनका जीवनबास्त्र है। इसी प्ररुण से वह कठिन से कठिन कार्य का बीड़ा उठा फैते हैं।

समीक्षाएँ [ २३६

जीवनहृत में निखा हुया मन्त्रूणं विवरण पुस्तक सर्वाविक सञ्चल, रोचक ग्रीर गतिश्रील माग है। इसमें ग्रात्मक्या है, जीवनी है। एक कमंठ स्वनिभित कर्मयोगी का वृत्त है। उसका जीवनदर्शन है।

पुस्तक का दीसरा भाग रचना पचत्रती जास्त्रीजों की स्वरंचित कविनायों को छटा हुया प्रकाशन है पहले शतक में जीवनवृत्त और जीवनसिद्धानत है। दूसरे शतक में परिनार और परिल्मों का विवरण है। तीनरे से शतकर्ग, कार्लिश । वीचे में संवर्ष आस्मित्वात है। पोंचवा गतक जिलाह कि का जात असे य का प्रत्यक्षतीवनवासन है। प्रस्त में सुख और खन्द वीर्षक में मधेस से खुनाई, १९७० तक को रचनायों में से छटे हुने पहुट छुर है। जिलक एक प्रच्छा भावनाशील कि है। कई भाषाओं में किंवता रचने की उनमें क्षमता है।

चौप भाग (धितिरिक्त मामधी है) की प्रस्तावना में ही लेखक ने कहा है कि दू कि प्राप्तो वारे में लिखना था इकियर खासतीर पर मेरी लिखी या बोधी हुई बातों को ही प्रतिरिक्त मामधी है स्थान मिलना चाहिए (मृ० २२०) परन्तु दूसरो का सम्यन्य भी मुक्ति मीर मेरे काम के धाता रहा है इमीनिए कुछ सामधी दूसरो के सिथे चत्रादि में से भी देना जबरी हो गया (पू० २२०) समस्त सामधी को लेखक ने पाच भागों में बाटा है। है। (१) १६१७ मे १६७० तक की डाबरियो से सिथे हुए कुछ आ था। (२) शुरू से लेकर जुनाई १६०० तक के कुछ पधो के नमूने, सिविध पद्मावित के नाम में। (३) मेरे कुछ भाषण और बक्त्य (४) मेरे के हुई सीर मेरे पाछ साथे हुये कुछ वत्र है। (४) मेरे कुछ के ता परी हों से प्रति हुने २२०)। लेखक मोचता है कि इस प्रतिरिक्त सामधी से त्रिजामू गठकों को उसके विषय में कुछ सोची जनकारी हो जाएगी।

वायरी व्यक्ति का पूर्ण वैयक्तिक दस्तावेव है। ७-४-१९२१ को सिखी हुई डायरी में खेलक ने मान्नी जीवन के लिए कुछ प्रतिज्ञा की है (पूर्व २२६) प्रोत्त स्वयन-समय पर उनके जीवन में जो बढाव उतार प्रधान है वह जायरी में या किन है (पूर्व २२४-२९६)। पडिट नेहक, भी निगतिस्तप्ता प्रारं डॉ॰ जाकिर हुचैन धारि का वनस्थानी प्राप्तमन इन्हों वायरी में पूर्व्यों से ही जात हुप्ता। शास्त्रीजी स्वय में एक सस्था हैं। जनका मन सदैन भयनी सस्था की जनति के निर् प्रयत्स्वील रहता है (पूर्व २६४)। अपरी के भुते हुवे जो पुष्ठ प्रकाशित है वह से स्वयं के जीवन की विविचता पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। जनमे स्पटता है स्वामाधि-कर्ता है।

विविध पद्मावती में बास्वीजी द्वारा रिचत पदा हैं। कविताए हिन्दी, प्रदेशी, सस्कृत रागस्थानी नापास्रो में सिली गई हैं। कवित्वशक्ति बास्त्रीओं में प्रचुर मात्रा में है। प्रतय प्रतीक्षा, पनकड्माब, जिनवानी को फरेखों (पृ० २७६-२७६), कठिन परीक्षा (पृ० २५६) स्वारि वड़ी मुन्दर सीर मार्गिक रचनाएं हैं।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

पत्र व्यवहार के अन्तर्गत जास्त्रीजी द्वारा लिखे हुए पत्र तथा दूबरों के द्वारा शास्त्रीजों को लिखे गये पत्र सकतित है जिनके लिए उन्होंने कहा है कि सत्य को प्रकाश में लाने में पत्र व्यवहार का महत्व कुछ अधिक माना जा सकता है (पू० ६५२) । १७६ पूछी में सकतित ये पत्र शास्त्रीजों के बहुमुखी व्यक्तित्व को उजायर करते हैं। गाधीजी, नेहरूजी, सत्वार पटेल, सर पिनां इस्साइल, सर यो. टी. कृष्णुमाचारी, जमनालावजों बचाजा आदि को लिखे गये पत्र तेवलाई, भावनायों और कार्य पढ़ति को अनतालावजों बचाजा आदि को लिखे गये पत्र तेवलाई, भावनायों और कार्य पढ़ति को अनतालावजों में लाते हैं। थरिन्तु प्रपत्न प्रपित्र को प्रकाश में नाते हैं। यक्ति को पत्र पत्र का भी दर्शन की सीताराम सेकसरिया को लिखे यये १ पत्रों ये शास्त्रीजों के प्रस्तरंग पक्ष का भी दर्शन हीता है (पु० ४१६-४२५)। बालशीजों का एक पत्र जो उन्होंने कन्त्रकत्ते को तिला या। पूर्ण वैस्तिक कीर बढ़ता भामिक है। अभिग्न पित्र को स्त्तिपत्री को दिवात होने पर अपनी पत्ती की लिखे गए ये हुद्योग्राया आप्त्रीजों के कोमल हृदय के दर्शन हैं।

भाषण, वक्तव्य नेलक के सार्वजनिक व्यक्तित्व को जापित करने में महायक होते हैं। रचनारमक कार्य में विश्वसार करने वाले कर्यंठ और एकान्त साथक के भाषणी में न राजनोतिक प्रचार है, न सक्दाडम्बर न, कृषिनता। वह एक कर्मचोशी की सीधी साधी बाणी में। क्यों का सन्देश है। चाहे वह राजनीतिक मच ने दिया गया हो या कार्यकर्ता शिक्षण चित्रिक के तत्वावधान में।

सेल भीर युनेटियों में भी लेलक के जीवनदर्शन का समन्त्रय है। इस सार्वजिक भोषणाभी में भी माराजीज़ी का सैदानितक व्यक्तित्व अध्यक्तवा है (पृ० ५५१-५६२-५६९) कार्य करने की मद्युन प्रेरएता के बीच तर्क-विनर्क (पृ ५६४), भावी रचना (पृ० ६०१) प्रकेले ही समन्त घायित का वहुत (पृ० ६०४) करते हुये (पृ०६०४) भावित्य की भाकी भी देखी गांधी है। घपने सपनों को साकार करने के स्तियं अकेत ही वहें चलने को लगन है (पृ० ६०८)। समर्थ में ही शक्ति पैदा होगी है। अपनी आग्तिरक प्रेरएता से चतकर भवित्य का मार्ग निर्मित हीता है (पृ० ६३२) मान्यमित्र तिवालय, जोवनेर के १० वर्ष के कार्य विचरणा में प्रकृति होते हैं (पृ० ६३२) मान्यमित्र तिवालय, जोवनेर के १० वर्ष के कार्य विचरणा में प्रकृत होते हैं (पृ० ६४०)।

मापा की हर्षिट में पुस्तक सरल, मुबोप धौर प्रवाहमयी है। हबय लेखक के व्यक्तित्व की मार्गि ही प्रवाद, माधुर्य धौर स्रोज बुक्ती से जुक्त है। हिन्दी, प्रवेजी, सहज्ज, जई, राजस्थानी सभी पर लेखक का समान प्रविकार है। उनमें लेखक धौर कवि दोनों के जुक्स है।

पुस्तक की शैंकी लेखक के जीवन की माँति ही वैविध्यपूर्ण है। ग्रात्मकथा, डायरी, रविद्या, पत्र, भापरा, लेख ग्रादि समस्त शैंसी रूपों का लेखक ने वही कुशस्ता में निर्वाह किया है। श्रीली प्रयोग की इंग्टिने अस्तुत पुस्तक बात्मक्या के क्षेत्र में एक नधीन प्रयोग है।

द्यारमरुषा साहित्य की एक सकत विचा है जिसमें व्यक्ति का विश्लेषणा तो होता है। है, य्यक्ति क हिंद्यकोश वा भी परिचय मिलता है और साथ ही व्यक्ति का सम्पूर्ण पियेग वैयक्तिक सदर्भ रखते हुए भी मुगलोध की सम्प्रक बालोचना प्रस्तुत करता है। नेक्ट्रबी, राजेन्द्रबाबु और बांचू को बारमक्या मा परियेग प्राय एक सा ही है, उपन्त होनो के तीन क्यक्तिको ने को परिवेग की वोन क्य प्रमुख किये हैं। चारमीजी भी जाहा एक मीर सप्यंगील राजनीति की बटिन गांठों से जुड़े, वहीं दूसरी मीर रपनारसक चिन्नक की गीतल खाया मे उस ब्यक्तिक वे बीचन तस्य का लाभ पाया है। इसीलिए उनकी जीवनी प्रारमक्या मान स्होक्त प्रस्तावीक का नास्य हैं। हर नये प्रमुश्य की हर स्वतिक स्वायक्ति नयी होती है धीर इसीलिय ग्रैनों के क्षेत्र में भी यह पुस्तक नयी है। युग चेतना के प्रस्त प्रमासन के चीन विक्षण में भी भी मूमका निमायी है धीर व्यक्तिक्ष न प्राप्त भी प्रमुश्य की स्व

## उपभाग १

## परिशिष्ट

: २ :

प्रत्यक्षत्रीवनगाहन (भाग १) मे नेरी बहुत सी रवनाए छ्व चुकी है। भाग २ मे भी बोडी मी रचनाए छ्वी है। भाग २ तब्बार हो खुका तब मेरे मोचन में धाम कि कुछ चुनी हुई रचनाए इतमे परिजिट्ट के क्य में बोहुत दी बाए पी तो ठीक रहेगा। मतः यहा पर २१ छन्द दिने आ गहे है, प्रधा (१) अंध रचना का उद्देश्य, सस्कृत छन्द १(२) हत्व चिन्तन, हिन्दी छुट १ कोर (३) व्यवहार दर्गन, हिन्दी छुंद १०। में समभना हूं कि उक्त छन्त पर से परे मेरे सीच विचार का उद्धोटा गा नक्का पाठकों के सामने मा बाएगा। उस नक्का पर से पो की को कुछ मिने या ग मिनं, पर उसके मन्तुत ही जाने में मेरा छारमसतीप ध्रवस्य हो जाएगा।

## १. ग्रंथ रचना का उद्देश्य

प्रस्यक्षसत्यस्य विवेचनाय, निजानुभूते. परिदर्शनाय । स्वकीयचारित्व्यनिरूपणाय, ग्रंथं करोमि प्रियरन्जनाय।।

#### २. तस्वचिन्तन

( ? )

जिसे नहीं मैं पहिचानता हूं, जिसे जरा सा अनुमानता हूं। प्रणाम मेरे उसको, उसी पें तमाम मैं जीवन वारता हूं।।

(3)

जिसका वहुं आदि म अन्त पता, जिसका कहुं नाम न रूप पता। जिसकी कहते अमिता प्रभुता, कहते पमता हर फूल-पता।। नहिं मानुम है उसकी प्रभुता, वह व्यापक है हमको न पता।

यह जीवन है चलता - फिरता, इमको यह केवल एक पता!।

( ₹ )

अनादि अनन्तं अखंड अभेद्यं, अरुपं अनामं अमेयं नमामः। अजातं अनामं अहय्यं अचिन्त्यं, अजीर्णं पुराणं नवीनं नमामः।। (8)

जो वम्तु सर्वेद्ध रमी वताते, शरीर में व्याप्त कही वहीं है। पता नहीं क्या वदलाव होता, न लाश में क्या रहती वहीं है।।

( )

जो भी स्वयं है वह आतमा है, जो आतमा वो परमातमा है। स्वयं हुआ यों परमातमा है, क्या भिन्न कोई परमातमा है।।

( ६ )

आराम क्या है तकलीफ क्या है, में सोचता हूं मुख-दु.ख क्या है। आश्चर्य है जीवन - मृत्यु क्या है, पतानही बन्धन - मोक्ष क्या है।

( 0)

है प्राणशक्ती फिर भावशक्ती विचारशक्ती फिर शब्दशक्ती। है एक आगे फिर कमेंशक्ती, संसार की चालक पांच शक्ती।।

( = )

सामेक्षसत्यं निरपेक्षसत्यम्, है तीसरा भी व्यवहारसत्यम् । कभी नही जो परिवर्तनीयम्, जो शास्वतं सो निरपेक्षसत्यम् ॥

(3)

जो देश-काले परिवर्तनीयं, सापेक्षातायुक्त द्वितीयसत्यम् । सत्कार्यं मे वाधक जो नहीं हो,

वही कहाता व्यवहारसत्यम्।।

( %)

हिसा न होवे परमार्थ हो तो, हिसा वनेगी यदि स्वार्थ हो तो । रक्षा वने निर्वल की जहां पै, तो भार दे हिसक को वहां पै।।

## ३. व्यवहारदर्शन

( १ )

हो मिल्ल को हिप्ट सदा हमारी, सभी जनों को हम मिल्ल माने। अमित्रता का व्यवहार कोई करें उसे भी हम मिल माने।।

( ? ) 、

हो ऐक्य सच्चा परिवार माही, हो ऐक्य पूरा हर गाव माही। हो एकता राज्य व राष्ट्र माही, हो एकता विश्व तमाम माही।।

( 3 )

म काम मेरा भगवान का है, चिन्ता मुझे क्यो भगवान को हो। भंकोच क्यों हो मुझ को जरा भी संकोच हो तो भगवान को हो।।

( × )

नही रुक् गा चलता रहूंगा, जैसा वनेगा करता रहूगा। चट्टान से भी मुठभेड़ जूंगा, नहीं हहूंगा टुकड़े करूंगा।।

( 2)

संकरप ना हो न विकल्प होवे, न तर्क उट्ठे न वितर्क उट्टे। चिता न होवे न अशान्ति होवे, न यैर्थ छूटे नहि चित्त उट्टे।। ( & )

चाहा मिले तो परहेज क्यों हो, नहीं मिले तो परवाह क्यो हो। हो पास में तो दरियादिली हो, लेना नही तो फिर चाह क्यो हो।।

(0)

चाहे नही नाम न मान चाहे, ऐसे जनों का अपमान क्या हो । सर्वस्व की आहुति दे चुके हों, ऐसेन की शौकत-शान क्या हो ।।

( = )

नराज़ राज़ी कुछ भी रहा करो, बुराकि अच्छा कुछ भी कहा करो। न मान दो तो अपमान ही करो, बखान जो हो करना किया करो।।

( 3 )

दिमाग से ये कुछ और सोचे, जवान से ये कुछ और वोले। जो वोलते सो करते नहीं ये, हो स्वार्थ तो भी परमार्थ वोलें।।

( १० )

प्रात. उठे ये इक वात वोले, मध्याह्न में दूसरि वात बोलें। संध्या पड़े तीसरि वात वोले, करे नये जो दस वार वोलें।।

# उपभाग १

: ३:

परिशिष्ट

# ग्रपना मृत्यांकन ग्रपनी कलम से

प्राय. ७० साल की उन्न तक की नेरी झात्मकथा "अरपक्षजीबनशास्त्र" (प्राय १) एक बंदे से प्रस्य के रूप में प्रकाशित होकर पुरानी पड़ चुकी। बाद के तीन सालो की कथा पिछले पूटों में भाग २ के रूप में द्विसके परिशिष्ट १ मे प्रत्यक्षजीवनशास्त्र की पाच समीक्षाए भी सी गयी हैं। उनत दोनों भागो में और माग २ के परिशिष्ट १ में क्या क्या लिखा गया है सो मुक्तकों जीक से साद नही है। प्रस्तुत केल में प्रपनी कलम से अपना मूल्याकन करने का मेरा विचार है।

ठेठ बचनन से लेकर प्राज तक के प्रपत्ने जीवन का चित्र भेरे मानस में ज्यो का त्यों खिचा हुमा है। उनने चित्र को प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग १व २) के द्वारा प्रकाग में से से किसी भीर को कुछ मिला हो या न मिला हो, पर मेरा धवना भारमसतीय अवस्य हुमा है भीर में मानता हूँ कि मेरे प्रियजनी का रजन भी धवश्य हुमा है। वहीं भारमसतीय वाला भीर प्रियजनरजन बाला नवीया इस प्रस्तुत लेख में से निकलेगा, ऐसी माया मुमको है।

१५-{६ साल की उम्र तक मैं जोवनेर के मधने वहें से परिवार में सकेता बच्चा मा त्रितकी मा १५-१६ महीनो का छोडकर राम के घर जा जुकी थी। वेहद लाड प्यार की स्थिति में मेरा परावनवी भीर "इक्लखोरा" वन जाना स्वामाविक या। जोवनेर हाई स्कूल में कक्षा ६ तक तो मुक्ते ठीक ठाक शिक्षक मिनते रहे। पर वाद में कक्षा १० तक की ज्यादत्तर खाई (मिएत व सक्कृत को छोड़कर) मुम्को अपने बाप ही करनी पड़ी।

ऐसी हालत में मेरा अकेलापन बहुत बड़ गया जिससे मैं पढ़ाई के मामले में एक धोर स्वावसंबी हुआ तो दूसरी ओर मेरी जानकारी बहुत कच्ची और अधूरी रह गयी। पता

पत्यक्षजीवनशास्त्र

नहीं मुक्को हिन्दी, ध्येत्री, संस्कृत और उर्दू का सही सही तिसना कैसे या गया ? पर तिसने के मुजबले में बोलना मुक्को विल्कुन नही ग्राया। सासकर ग्रदेशों का भेरा उच्चारण गतत सलत हो गया और ग्रयनी बात कहने में मैं सकोची चन चया मी प्राजकत भी हूँ।

जमपुर कतिन में मेरी बहो बोबनेर हाई स्कूम जैमी हानत रही। क्का द भीर है दोनों की परीक्षाए मैं एक साद दे चुका था। फिर जयपुर में भी हर सात दो-दो परीक्षाएँ एक साद देने से मुक्त पर भार बहुन बना रहा और मैं बनात में होने वाली पढ़ाई को भी। सिरोप प्यान नहीं दे एका। जयपुर कतिन में पढ़ाई की बहुत घण्डी ध्वस्था भी नहीं थी। सारे विद्याप्तिकाल में मैं भूपनी पाठय पुस्तकों के सताबा कुछ भी विद्याप नहीं पढ़ सकता।

एकाथ हान की छोडकर साल दर साल पहले दूबरे नवर से पास होते रहने से मेरी गिनती भने ही होशियारों में होती रही भीर भने ही मैं लुद भी प्रपने आपको होगियार दिखार्थी मानना रहा, पर हज्जी बाग यह है कि मैं अपनी धरणतता को साम रक भी दूबरी के सामने मार्प आने साथक मानता है। मुक्तको हर कोई धादमी मुक्ते ज्वादा जानने वाला नगता है। मुक्तको यह भी ननता रहा कि जास जकरत के बिना मुक्ते ज्वादा जानकर करना भी बया है और जाना भी कितना जा सकता है?

सास्त्री व बो॰ ए॰ पास करके मेरा विचार एक साथ प्राचार्य, एम॰ ए॰, एप॰ एन॰ वी करने का या, पर वह नहीं हो सका। दो दो परीक्षाधों की वरह काम भी एक साथ दो दो मेरे जिममें पहें जिनमें लगन बीर मेहनत के कारण मैं जैसे तैसे निमता तो पहा, पर उस स्थिति में विभिन्न स्थानों पर प्रानं वांन की विभिन्न सोगों से मिनने जुनने की, प्रदर्शनी मेना प्रादि देलने की, मेने-चे काम सीखने की, सैर-सपाटे विभिन्न आनकारी करने की स्थान मुझे के बराबर एक्टेंग मिली।

परिशास यह हुमा कि एकान्तिकता मेरे स्वमाव का अग वन गयी। जीते गुढ़ के परिशो में बैठने का मीका मुमको बहुत कम मिला, वैसे ही किनी दिक्षेप काम सिलाने वाले के पास काम सीलने के तीमाय्य से भी मैं बचित रहा। ऐसी हानत से मैं जिन्दमी मर पूरी तरह से किसी एक का नहीं वन सका। किमी के अधीन न होना नेरे जिए बानवानी गुण या बीप रहा है। हालांकि जरूरत के साफिक चले ही मैं समय-समय पर "बहै तोगी" के पड़ीस से साता जाना और रहना भी रहा।

जरापुर में मुफानो उस जमाने के एक गौरवधाली घर में रहने का मीना मिल गया।
उस घर के एकमान बातक की बिद्धा-दीसा के बारे में मैंने अपने विचार निर्मावता के साथ
प्रश्नेकों में मिसकर सरक्षक को दे दिये। मुक्ते उन दिनों के एक बढ़े ठिकानों में बहुत मन्धी
रूपूलन मिस कमी भी। बहुता भी भेटा अन्बाह स्वमाल दता रहा जिससे मेरे पास पढ़ते वाले
विद्यापियों के बारे में मैंने एक सवा बीहा पत्र उनके सरक्षक को तिए दिया था। मेरे पत्रो
से दोनों मरस्क्षक प्रमालित हुए थे

महक्तमा महुँ महुमारी में भेरी हैड झिसरेंट के पद पर नियुक्ति हुई। महक्मे के बड़े हार्किम मेरे महरवान थे। उन्होंने एक बार भेरे काम के बारे मे बुख ऐनराज सा सिख-कर भेन दिया सो मुक्ते बहुत मुक्तित लगा। मैंने भपने आहुनन की वजह से उनको लग्ना पीडा और बहुत ही सक्त जबाव लिख मारा। जिसका पश्चाताप मुक्त को ग्राव तक है। बार में भागव्यक ने मुक्त चेते माड़ को भंगो कलिज के साहबी बीर राजागाही ठाठ की हुया मे पहुँचा दिया जिसके सायक मैं विल्क्षत नहीं था।

मेदी कतिज में पहुँचते ही मेरा मुकाबता वहां के "वह साहव'- में हो गया। साहव ने जिम तरारे में मुफ्तें बात की उद्यों के अनुरूप मैंने उनको जबाब दे दिये। मेरे पीधे, जयपुर दरवार का जोर या को में सेक्सो कतिज में बना रह गया। फिर तो एक 'माहव' से मेरी 'दोत्ती" जैसी हो गयी और उसने मेरे लिए लिया कि मुक्त जैसे "हिन्दुस्तानी" उसके देखने में कम आये हैं। किसी विदेशी के द्वारा मेरी यह प्रश्वसा अपने देशवासियों की हिट्ट से मुक्तको एकदम असाध लगी।

मेरा दूसरा मुकाबला मंभी कांतिज मे पढ़ने वाल राजकुगारों से हुया। प्रमनी जान में मैंने उनकी सीक्षा कर दिया, प्यार के साथ बूढ़ सहती में । पर उन्होंने कुछ बाहरी लोगों से मिनकर नेरा मंग्री कांनिज से सबावला करवा दिया। कांतिज के 'साहवों" को मेरा दबादता मजुर नहीं था। इसिलए उनको व मुक्को भी समभ्यते के खिए जयपुर कौरिसल के मध्येज भेसीडेट को खुद को अवभेर की यावा करनी पड़ी। श्रेसीडेंट ने मुक्त से कहा-यग मैन, तमहारा भविष्य उज्जवन है।

बन्धई के प्रयेज प्रकाउटेंट — जनरल के घाँफिस में मैं मामूलीती लबी प्रगरली, हेडी मेडी पगड़ी, तीन लाग की घोती, मीजा विहीन देशी जूती पहनने वाला लबा पूरा प्रावमी मराठे चपरासिमों के अनुसार "आरवाई!" बना रहा ! इ डियन ग्रांडिट सविव की दो कड़ी परीसाधों की मुक्ते कुल ७ महीनों में पास करना था। इश्वीलए अपने रहने के कमरे और प्रकाउन्टेंट जनरल के घाँफिस के धलावा मुक्ते में बंदई में किसी भी स्थान को देलने का प्रयादा किसी से भी मिनने का भीका विवकत नहीं पिता।

बबई से जयपुर लीटने पर मेरी निजुनित झसिस्टेट झकाउटेंट जनरल के पद पर हुई। दो अकाउटेंट - जनरल मेरे अफतर वे। उन दोनो के ऊपर बाहर से आए हुए एक रायबहादुर स्पेंचल अकाउट्स ऑफिनर वे। रायबहादुर ने रिव्यस्त के हिसाब किताब की नयी योजना बनायी। मैंने उम योजना के विकट्ट एक वड़ा तमछा नोट लिखकर कीसित्त के अपने असिक्ट के पास सीचा नेक विचा जिससे वे अमावित हुए पर विनमत्री भ्रदलनो और रायबहादुर के फूकाबले में मेरी नहीं चल सकी।

फिर ऐसी परिस्पिति आयी कि मुक्को नयी कौंसिल आँफ स्टेट में फॉरेन प्रोर होम डिपार्टमेंट्स का सेकेटरी बना दिया गया । भेरी ट्रेनिय फाइनेन्स की थी, पर मैं सेकेटरी बन २५४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

गया किन्ही दूसरे विषादंभेण्य का । मुक्ते झॉफ्स के काम का "श्र झा ६ ई" भी नही घाता या । पर मैं एक अनुभवी महक्सीं की सदद से काम सीख गया । "सहकमासास" यानी सिष्यालय में मैंने इतनी मेहनत, ईशानदारी और सजबूती से काम किया कि चारो और मेरी बाहदाही हो गयी ।

मेरे मिनिस्टर का मुक्त पर छट्ट विश्वास था। मेरे तिथे हुए विस्तृत नोटो पर वे विना देने हरताक्षर कर देते थे। पर सबेज मैसीडेट को बढ़ी चिड़ होती थी कि यह कौन प्रादमी है जो हर बात से बिलाफ नोट लिख देता है। दो एक खास मुद्दो पर तो मैसीडेट से मेरी सीधी मुटेगेड जैसी हो गयी। इस तरह की टक्कर लेने से सुक्की बड़ा मजा माता रहा भीर में ठाठ से प्रपना काम करता रहा। सुकको पर पर बने रहने न रहने की बिस्कृत पर्योह नहींथी।

ध्यांवित एक दिन स्वनामधान्य सेटीओं (पश्चित धर्तुंनसानवों) की एक ही बात ने उत्त प्रच्छे सरकारी मोहदे को छोड देने के लिए मुम्को एक कटके के बाद तस्यार कर दिया। उन दिनो राज की मामूको सी नौकारी सोडना भी झाहान कान नहीं या। पर मैंने मूं ठे सभ्चे बहाने वनाइ प्रको मिनिस्टर कारि बुदुर्गों को राजी कर लिया धौर सार्द्वजनिक में बा की तस्यारी की इंग्टिंग है हॉटमोडनी जया जयनानामबों के मास्यय से मैं मनस्यान वासरी के राम रियानी – करकता पड़ेंग गया।

कानकते में कुछ महीनों तक मीतारामजी (सेकप्तरिया) यादि के सहयोग से भोड़ा सहुत सेसासार्थ करने के साथ साथ में प्रपने धाये के काथ की तथ्यारी भी करता रहा। अपपुर होंडे देने माले मुक्त जैसे धारमी को कमकता गड़ी भा सकता था। हालांकि अपने सादा रहत सहन के विषय जाने के अपने में मिंदि करायों में न रह कर प्रसत रहता था। पर किसी गान में आकर बैठने की प्रपनी तमसा के कारण मैंने कलकता व विषया हाजस को जल्दी होंडे दिया जिससे की पत्री साम के साहर बैठने की प्रपनी तमसा के कारण मैंने कलकता व विषया हाजस की जल्दी होंडे दिया जिससे लीग झामबर्च में पढ़ गये।

मैंने गांधीजी के पास वर्षा पहुँचकर प्रवाश धामसेवा की योजना के लिए धामीवाँव प्राप्त कर किया। पर मेरी मदद करने वाले जमनालालती और धनस्थामदावजी को मेरा फ़रेले का गांव में जाकर बैठना नहीं जचा। भीने धवने दोनो सहायकों को दो हुक जवाब दे दिया। और मैं रामभ्रदोंने गांव की तलाज में चल पढ़ा। मचे काय के जुरू करने में मुक्करों कीतारावजी का हारिल—धाविक सहाया मिल गया और बाद में तो सामीरचर्या (कानी-ड़िया) आदि मिन्नों की सदद भी मुक्के मिन्नों कर सामित स्वार्थ में तो सामीरचर्या (कानी-ड़िया) आदि मिन्नों की सदद भी मुक्के मिन्नों कर मधी।

जीवनकुटीर (बनस्वली) में हम लोगों ने हर दर्जे का सस्त बीवन विनाया । वे रिन मेरे घोर रतनवी के बीवन के सबसे प्यारे दिन ये। चीवनकुटीर ने मुभक्तो पत्या लागे को पिदा सिखादी । पर मैं तो चाहे जब घटकर बेठ बाता गा, यह कहरूर कि मैं किसी के पास चन्दा मागने के लिए नहीं बाऊ या विसका नतीया जाहिरा तौर पर बडी मारी तर्ज- लीफ उठाना होता या। पर जीवनकुटीर के प्रायः सभी साथी कार्यकर्ता उस "तकलीफ" मे पुख का धनुभव करते थे।

जमनालाजडी ने मुक्की याची सेवालंघ का सदस्य बनाना चाहा, पर मैंने साफ इनकार कर दिया। उन्होंने मुक्की चर्ला सब से सहायता दिलवाना वाहा, पर मैंने चर्ला संघ की कीसिल के प्रेम्बर वहें नेताबों से कह दिया कि मुक्ते प्रपने काम में किसी का कट्ठोल मंजूर नहीं है। जीवनकुटीर को विका बात के चर्ला सुध ध्रीर गांधी सेवा सध से सालाना मदद मिलने तभी। धीर घनस्वामदासजी धादि से सहायता माने विना जीवनकुटीर की गांधी कई धालो तक बढ़े मजे से चलती रही।

जीवनकुटीर की मीति बावे होकर राज से भगड़ा मोल न सेने की धी पर अनुभव ने मुमको बता दिया कि राज का मुकाबला किये बिना काम नहीं चतेगा और एक दिन जीवनकुटीर के वार्षिकतिस्त्र के अवकर पर मैंने अवानक ही एक "भीवरा भावरण" दे बाता। उसके बाद में अवपुर राज्य अवामक्त के सबदन में जी जान से लग गया। उसके साल में एक क्रवाय अवामक्त के सबदन में जी जान से लग गया। उसके सालेक अर पहले वनस्थती में एक करूस असम को लेकर वनस्थती विद्यापीठ की गुहसात गिकाकुटीर के नाम से हो चुकी थी।

सदा की माति में फिर दो घोड़ों पर सवार होकर बलता रहा। वनस्पती विद्यापीठ को सहायक मिसते नमें। एक ने कहा—"धमुक स्थान पर विद्यापीठ को ने चलो, मैं इस लाख रुपरे दे डूँगा।" मैंने कह दिया "विसा रुप्ये की मुक्ते मिसता होगा उसे बनस्पती में ही धाना परेगा") मेरी धारत है कि जिस काम को करना में मजूर करता हूँ वह काम मेरा 'परेनन' हो जाता है। इसलिए मैंने प्रवामन्दल के प्रार्थिक घादि तमाम जिन्मों को प्रपर्यात खारी से प्रपन्ने निर पर से विद्या।

प्रजामहरू—संगठन को खमाना उस जमाने में बढ़ा टेडा काप था। राज से फंगडा कर लेनों हो बहुत प्राज्ञान था। पर वयपुर प्रजामण्डल ने "बताकर फंगडा नहीं करना दो बबना भी नहीं" की नीति धपनाथी जिसके फंतरस्वरण जस्दी ही प्रजामण्डल का प्रार्थ्य लेंडा मंबदूत संगठन वन प्रथा। प्रजामण्डल की तमाम नीतियों का ठोस सैडानितकव्यावहारिक अग्नपर था, जिसमें किसले को कोई स्था नहीं था र नेरा सावचा है कि सन्ते रूप सरका प्रजास का सरका प्रचारक वह काम खुद ही होता है।

१६४२ के ब्रादोलन के सिलेसिले में गांधीजी ने बंबई में बातचीत के दौरान कहा पा कि कही का प्रजामण्डल राज से न लड़ने का निश्चय करें तो बहा के जो लोग प्राग्दोलन में भाग लेना चाहे जनको राज्य के बाहर बाकर लेना चाहिए और प्रजामडल को परेग्रानी में नहीं बालता चाहिए। अपपुर प्रजामडल ने महाराजा से सीमी लड़ाई न करते हुए मिल्क जनकी मिली भगत से राज्य के भीतर और बाहर क्षत्रे जो विख्य जाहिरा व पोशीदा बादिया कार्यक्रम चलावा। अखित भारत देशी राज्य सोक्ष्परियद् की राज्युताना रीजनत कौसित के प्रधानमंत्री का काम मेरे मुपुर्द कर दिया थया तो मैंने जनती ही लगन से उस काम को किया जितनी लगन से मैं वयपुर प्रजामन्द्रत के काम को करता था। फिर जब मुक्की परिपद् के केन्द्रीय प्रधानमन्त्रियों में शामिल कर लिया थया तब भी मैंने देसा कि तमाम काम का जिम्मा मुक्त पर ही था पड़ा है। उस जिम्मे को जब तक घ०मा० देशी राज्य सोक्ष्परियद् कायम रही, मच्छी तरह है निमाने की पुरी कोशिया मैंने की।

जब भारतीय सविधान परिषद् बनी सब गोकुलमाई, बर्माओ और स्थासनी के साथ मैंने भी उसका घरस्य बनना मजूर कर निया । मैं परिषद् का सदस्य बन तो गया, पर उम हैमियत से मुक्तें हुछ भी काम नहीं बन पछा । बर्गोकि भेरा एकाव ध्यान जयपुर-राजस्थान की तरफ था। प्रपत्ती जैसो मन स्थिति में मुक्को सविधान चरिषद् में नहीं जाना चाहिए पार मैंने उस समय शायद यह सोचा होगा कि दिस्सी के सम्पर्क से मुक्को जयपुर राजस्थान सबची काम में कठा सदद मिन जाययी ।

जपपुर राज्य का मुख्यमध्यी बनकर मैंने सयक परिश्रम किया। महाराजा और मिनम्पडल के बीच में एक दीवान भीर ये। पर भिनम्पडल ने दीवान का ससर प्रप्ते काम पर बिस्कुल नहीं होने दिया। बाद में राजस्थान का मुख्यमध्यी बनने से पहले ही मैंने उक्त रीवान के राजप्रमुख के सनाहकार बनने बनाने के इरावों को सफल नहीं होने दिया विसमें मुभै बहुत जीर धाया। मेरा मानना है कि राजप्रमुख का वैसा सलाहकार बन जाता तो जनसक्ति के हुक में ठीव नहीं होता।

राजस्थान के मुख्यमित्रायकाल से छपने आई० सी० एस० ऐडवाइकरों का मैंने पूर्य मान रखा भीर उनके भनुभयों का पूरा लाग उठाया । पर जब कभी उन्होंने मेरी राय के विपरीह दिल्ली की मदद से बुद्ध करना बाहा दो मैंने उनकी नहीं चनने दी । उत गुरू-पुर के प्रमुख माने में दिल्ली कर प्रमुख धानकल चैता दो नहीं था, फिर भी काफी था। जो हो, मुम्फो जयपुर-विश्ली के बीच कोई माग दौड नहीं करनी पड़ी विससे में राजस्थान के एकीकराएं के काम में एकाग्रदा के साथ तथा गढ़ सका।

मेरे हाम में क्सी तरह ने बिष्ण धाया तो वह मेरे उन बाधियों मे से कुछ की तरफ के बारा जिनकी सिफारिश पर सरदार पटेल ने मुक्को मुख्यमंत्री बनने के लिए कहा या। मुक्त पर मिनमंद्रल का विस्तार करने के लिए कहा या। मुक्क पर मिनमंद्रल का विस्तार करने के लिए बेहद दवाव द्वाना गया। मुक्को यहा उक्त कर रिवाया गया। कि पदि में बमुक-अमुक को मिनमञ्जल में नहीं हों तो में मुख्यमंत्री नहीं पह सहुन में में के इस्त पर कि से स्वतार पटेल के कहने से मुख्यमंत्री वना था, वे कही तो मुख्यमंत्री वना था, वे कही तो मी हट जाऊ गा, पर दबाव में बाकर किसी को मधी नहीं बनाकरा।

मालिर मेरे उपर्युक्त सावियों ने प्रदेश काग्रेश कमेटी में मेरे विरद्ध प्रविश्वास प्रस्ताव पान करवाकर सरदार पटेल को तार द्वारा मुख्ता क्षेत्र ही । सरदार ने तार का जवाब तुरन्त तार से दे दिया कि हीरासाल शास्त्री की प्रदेश कांग्रेस ने मुख्यमत्री मही बनाया या। सरदार ने मुक्तो कह दिया कि तुम धपने काम मे ससे रही और प्रदेश कांग्रेस में मत जाया करो। ऐसी हालत में सायियों के दबाव में आकर राजस्थान के एकीकरए के अगीहत काम को बीच में ही छोड़ देवा मुक्को नहीं जचा।

इतना निखते निखते मुक्को खयात होता है कि इन तरीकों में मेरे हितेंगियों तक को कुछ मेरी परिनिया जैसी दिखायों दे सकती है। यर मैंचे हमेशा बही किया जो मुक्को ठीक सता। जो काम मेरी राय से ठीक नहीं लगा उसे कियी के दबात में करना मुक्को अपने कर्तव्य के दिख्य सा। अपने कर्तव्य के प्रित्त कर्तव्य के दिख्य सा। अपने कर्तव्य के पूरा कर्तव्य के दिख्य सा। अपने कर्तव्य के प्राप्त कर्तव्य के विद्य सा। अपने कर्तव्य के पुरा कर्तव्य के विद्य सा। अपने क्यां पुत्रकों किया विद्य के प्रोर विषकार की सालसा नहीं थी तो मालिस मेरा होनि साभ हो ही क्या सकता या ?

यहा पर मुक्तको एक बात को एकदम साफ कर देना है। यह यह कि राजनीति मेरा पेता नहीं था, मैंने राजनीति को धये के तौर पर कभी नहीं प्रपनाया। मैंने कभी प्रपक्षे प्रापको राजनीतिक या किसी दूसरे प्रकार का भी "नेता" नहीं माना। मैं तो सारी जिल्दगी परानी भोकात में सिक्त एक कार्यकर्ता रहा हू। जो काम मुक्ते पसन्द घाए उसे कुछ भी कीसत पर एकाप्रता व हमानदारी से करना घोर उस काम की एवज से कुछ भी नहीं चाहना, यही मेरा सिद्धान्त रहा है।

मैं पीछे मुडकर राजनीति से सबिपत धपनी भूलो को बाद करता हूँ तो में एक तरह से दहल सा आता हूँ। १८४७ तक की तो किसी बात मूल का ब्यान मुसको नहीं है जिसका उल्लेख मुझको करना चाहिए। पर उस जमाने से भी दुनिया को निपाह में मुझ से कोई मूल हुई मानी जा सकती है और यह भी कहा जा सकता है कि प्रमुक भूल से मुझे ममुक दुकेसान हुया। पर घाखिर मेरी भूल तो यही न हो सकती है जिसे मैं खुद सचमुज ही भ्रमनी मूल मानू?

१६४८ के जुरु से मैंने जयपुर राज्य का मुख्यमानी बनना पजूर कर लिया सो मेरे जीवन की सबसे वहली वही भूम नेरी नियाह में हुई। किन्ही भी कारएों में मुमलो मुख्यमंत्री बनने के निए शिरत निया होगा, पर मुखे जन कारएों के सामने मुक्ता नहीं माहिए या । मुमलो मुलूम होता रहता है कि मैं बयपुर के मुख्यमंत्री का पर स्वीकार महीं करता तो मेरे जीवन का ननना दूसरा ही होता थीर जहा तक मैं सोच सकता हूँ यह मुख्य नवता होता । मस्तु ।

मुक्तको इस बात का सतीप है कि मैंने जैसे वयपुर का वैसे हो राजस्थान का मुह्यमंत्री बनने नी नभी नोई नोशिया नहीं की। पर कोशिया न करना काली नहीं पा। मेरे लायक तो मुख्यमंत्री पद को घस्त्रीकार करना होता। इस्तिए मैं मानता हूं कि राजस्थान का मुख्यमंत्रीपद स्वीकार करके मैंने दूसरी बड़ी भूत की। जब दिल्ली की धौर से मेरे कुछ २५६ ] प्रत्यक्षजीवनशस्त्र

सामियो पर मुकदमा चत्राने की बान बायों तो तम तरफ विशेष ध्वान न देता, मैं मानता हूँ, मेरी तोमरी भूल थी।

मुक्दमों के मन्द्राभ में मैंने अपनी विष्मेदारी न वमक कर दिस्ती की नमनी मो नो हमा मो हमा। परन्तु, हानांकि मुक्ता यह मानूम बा कि कुछ सामियों के कारताने भने नहीं रहे, मुक्ती कम मे कम यह तो देग्या ही चाहिए या कि किस सामी पर लगाने गये किम इन्डाम के माधिन होने की कानून के माफिक किननी मुंजाइस है। जो हो, इसमें तक नहीं है कि यह मारा प्रकरण दु लदायी हुमा।

राजस्थान के एरीकररण के काम का मुख्य धंय पूरा हो चुका था। मरदार पटेल के देशत के बाद पदिन जवाहरसालजी में बात होने पर मैंने तुरंत ही मुख्यमित्रक छोड़ना तय कर लिया मी बहुन प्रच्छा हुया। और यह भी सच्छा हुया कि मेरे या मेरे किसी भी साथी मनती के लिए नये मतिपदन में सामित होने की करणना तक मैंने नहीं की। परन्तु मेरा विरोध करने वाने मेरे माथियों ने सी साथ मायहार मेरे साथ विराध वह मुम्मको प्रसं तक प्रख्याता रहा और भीत में कुरेदता हुए।

उन मध्यनं का ननीजा यह हुआ कि मेरे शोवर प्रतिबोध की सी मावता जाग उठी। ग्रीर जब काग्रेस के कई माथी और हूनरे लोग भी उस नमय को कांग्रेस सरकार का विरोध भरते का दरादा लेकर मेरे पाम प्राये तो में उनका साथ देने को तैयार हो गया। यह सही है कि मुम्मने वाम्तव में ही बुख नही चाहिए था। ऐसे प्रान्त से उस निरम्ब कमाड़े में विमी के भी कहते में भीर किमी भी कारए से मुक्ते पान पापको निष्य भहीं होने देना चाहिए था। ऐसे मज़कुं में बहता संग्र काम नहीं था।

मेरे मन मे सह या कि जिन लोगों ने मेरे साथ ऐसा किया है जनको हो सके तो मबा चलाना चाहिए। उन दिनों मेरे भीतर और मी वो एक दुरे विचार उठे थे। पर वे विचार उठकर ही रह गये। बाद में एक दूसरे बड़े साथी के बाद वो व्यवहार हुमा तो मेरे साथ हुए व्यवहार के सित हुए भी साथ सा। बढ़ उछ साथी के बहुत से अनुवायों मेरे पास माये तो प्रतिशोध मीर ममेवदना के मिने हुए भावाबेच के कारणा में फिर एक बार निरामेंक मानडे में पड़ने को सदसर तैयार हो गया।

इन प्रसन की मेरी यह दूसरों बड़ी मुख थी। दोनों हो मौतों पर तैन धनने करर पूरा दोक्ता ने निजा। किमी धीर ने हुंब कम किमा या ज्यादा किया, पर मैं पर के पीछे से पूरी लीधिया करते करते मर निया। धीर दोनों भौकों पर मुक्को मेरे पाम धाने वाने उन लोगों से धीखा खाना पदा जिनका मरोना करके मैंने इन निकम्मे लाग में नदने का कटम उक्त निया था। धीखा खाना मेरे लिए कोई सबी बात नहीं थी, पर मैंने धपने पूर्व मनुभगों से हुंख नहीं तीछा। वहीं सिलसिला जारी रहा है। कुछ लोगों ने प्रत्यक्षजीवनधास्त्र के घारे में घपनी प्रतिक्रिया बतायी सो भी माग २ के परिविष्ट १ के रूप से छुप गयी। इतना हो जाने पर प्राय. सब कुछ हो गया। मेरे पास भीर भी बहुत सी सामग्री पड़ी है, पर पता नही उसका कब स्था बन सकेगा?

सोचते मोचते मुफको लगा कि मेरा बही सही मूल्याकन मुफको खुद सपनी कलम में भी कर देना चाहिए। मुफको पण्डित तो हर कोई कहता है, कुछ लोग शायद मुफको पिडान सम्मत्ते होंगे हैं कुछ लोग सोचले होंगे कि में लेखक हूँ, किंव हूँ, बक्ता हूँ, नेता हूँ। मुफको कुशत प्रशासक तो कई मानते दिसते हैं। कई लोग मुफको लौहपुरप तक बताते रहे। पर स्वत में में पण्डित, बिडान, लेखक, कवि, बका, नेता, प्रशासक, लौहपुरप-कुछ भी नहीं है। सीभी सच्ची बात यहाँ हैं।

में प्रपंते प्रापको एक मामूनी घादमी मानता है, ऐसा मामूली कि जिसे तत्वजान का, दक्तन का कुछ भी दम्नेन नही हुमा है, ऐसा मामूनी कि जिसने पाळपुरतको के प्रमाशा बहुत कम पड़ा है, ऐसा मामूनी कि जो अपने हाथ में लिए हुए काम के धलावा किसी दूसरे सम्बन्ध में न कुछ लिख सकता, न बोल सकता, न काब्य रचना कर सकता, ऐसा प्रशासक जो तफसील में कभी नहीं जाता, ऐसा जीहपुरूप कि जो करूसायाब से दिवत होकर चाहे जब भीर हर्ष किसी के सामने से पड़ता है।

मैं प्रपने झावको जब मुक्ते भी मामूली दिखायी देने बाले लोगों के नामने होता हूँ हो वे मुक्तो मेरे मुकाबले मे ज्यादा जानने वाले लयते हूँ। मुक्ति बार बार धरमी प्रत्न-ग्रहा का भान होता रहला है। मुक्तो जय-जरा सी बात भी दूसरे लोगों दे पूंचनी पड़ती है। मैंने पहले भी थोडा बहुत पढ़ा था जनमे से स्रिकाल मैं मूल यया हूँ। मैं ज्यादा कभी पद्मा नहीं, ज्यादा जानने की कीशिता नहीं की। सच पूढ़ा जाए तो ज्यादा पढ़ने मे तथा ज्यादा जानकारी करने में मेरा विकास नहीं है।

बिचार मेरे जरूर चतते रहते हैं कि यह ससार क्या है, कहा से भा गया, कब भा गया, कब तक, किचर धौर कहा तक चता आएगा ? मैं तो धनन्त की कल्पना मात्र से धर्रा जाता हूँ। मैं बचपन से ही पूछता रहा हूँ कि इससे बद्धा बया, इससे आगे क्या ? कहते हैं ऐसे तारे हैं जिनकों प्रोधानी चतने चलते धाज तक पृथ्वी तक नहीं पहुँची है!! ? दुनिया के किन्हीं लोगों को चाद तक पहुँच चाने पर धावचर्य होता है। पर चाद कितना नजरीक और कितना छोटा है पृथ्वी से ?

अप्पु-परमाणु मे असीम बक्ति होती है, ऐसा कहा जाता है। यह जो दिखामी देता है सो सब कुछ निराकार ब्रह्म मे से पैदा हो गया बताया। क्या सबमुब हो गया ? और हो हो गया हो तो केसे ? दूसरों की कही हुई बातें घोड़ी बहुत सुनता हूँ में भी, दूसरों की लिखी हुई मोड़ी बहुत पढ़ता भी हूँ में । पर दूसरों को जो अनुमृति हुई होगी यह मुक्ते तो प्राज तक जरासी भी नही हुई है। स्नासिर दूसरों की कोई भी श्रनुभूति सेसे श्रनुभूति कैसे क्या बन जाए ?

जन्म-जन्मातर की बाते सुनता हूँ में, और भूत-भेत योतियों की भी सुनता हूँ। चम-हरूरों की यौर जादू दोने की बातें भी मैं सुनता हूँ। मुक्ते किसी बात की काट करने का जरा सा भी यिक्तार नहीं है, मैं सम्बन-मण्डन में कभी नहीं पत्रता। मेरा तो इतना ही कहना है कि मैं की कुछ जानता हो नहीं हूँ, कुछ समम्तता ही नहीं हूँ। मुभ्ते तो जो दीखता है सो पीखता है। पर पह पता नहीं कि जो मुभ्ते दीखता है वह सत्य है क्या भीर वह सत्य है तो वह कितना कहा तक सत्य हैं?

कई स्त्रियों को भीर पुल्पों को भी किंक के मारे पागल होकर नाचने देखता हूं तो मैं मारवर्षवित हो जाता हूं। मने दिन जबपुर में श्रीगोबिन्ददेवनी की मूर्ति के मारे एक दुढ़ा स्त्री को मुस्कराते हुए, मृह मचकाते हुए देखा तो मैं देखता ही रह यथा। अगवान का-मगवती का नाम मेरी जवान पर कई बार मा आवात है। पर मैं नही जानता कि मेरे भीतर के प्रताबा भगवान और मगवती कहा है? मेरा यह विश्वास तो है कि कोई न कोई प्रहम्प गिकि है तो सही। पर पना नहीं, यह कैंसे क्या काम रुखी है?

मैं मूर्ति के क्षामने होना हूँ तो कई बार मधने म्राप से ही बात करने लग जाता हूँ, जुद ही तबाल मुखना हूं, जुद ही जबाब दे देता हूं। मैं मचवत् पाठ मीर अप तक भी कभी कभी कर लेता हूं। "म्रार्थना" तो मैं दिन में दो बार करता हूं, पर मैं प्रार्थना में प्रिकृत लोन नहीं हो पाता हूं। मैं कह चुका हूं कि मुफको किसी भी म्रजभ तस्व की कोई अनुभूति नहीं हुई है, तो किर सनुभूति के सिवास माने यन्यस्थ का दूतरा प्रमाण क्या ! मुकको किसी निज स्वयक्ष मुगभित होगी क्या ?

मेरी वोलचाल में, चालडाल में तौर तरीके में महभाव अरूर दिख जाता है। पर मैं मनने मारे महभाव के मुकाबने में मानने भीतर नम्रता, प्रपने मारको तुन्छ समभने की वृत्ति पाता हूं। मैं मानने माप पर छोटी ही चिड़िया के मीर चीटी तक के व्यक्तितव का मानता हूं। पर कीन जाने यह भी मेरी घड़मन्यता ही होगी तो! मातमोह के कारण मुमते ऐंभी गलतिया भी हो यथी हैं जिन्हें में दूसरों को बताने लनू तो मुमतो वडा जोर माने रिक्तन छोटा हुँ में?

मुमको पता है कई लोग मुक्को वडा पासाक मानते है, कोई कोई तो मुक्को बाल्य तक बता देते हैं। पर में अपनी मिनती मूर्जों में करता हूं, सीधी सपाट बात करने बाला, हर किसी को जोटी खरी सुनाने की आदत बाला, मीके वे मोके पिडकर बरम पड़ने बाला, जरा जरा सी बात पर रूठ अपने बाला, चाहे जिसका चटण्ट मरोदा कर लेने बाला, आदमी की पहिचान नहीं कर सकने बाला, पद पद पर हर किसी से सोला खाता रहने बाला, दूसरों की पिनता मोड़ लेने बाला ?

मान तक के अपने जीवन में एक ही बात मुक्ते अपने आप में दिखायी दी है । ग्रीर वह यह कि मैं सच्ची समन श्रीर वेहद आत्मविष्वास के साथ कठोर परिश्रम कर सकता हूं । में प्रपत्ती बात का बहुत पत्तका हूं। मुक्ते तगता रहेता है कि मैं जो कुछ बाहू या वह होकर हो रहेगा, दक्षतें कि वह चाहूना मेरे बूठे के बाहर न हो। मुक्तको फूटे व योथे प्रचार से नफरत है। मैं बहादुर हूं या नहीं हूं, पर स्वामस्वाह बहादुर दिखायी देने का शौक मुक्तको विस्कुल नहीं है।

रे एक बार प्रसत्कार्य में लगा तो मैं जरूर ही फेल हुया हू और सत्कार्य में तो होना पान ही हुमा हू । मैं दिना सोचे समक्षे किसी काम को प्रपने जिम्में से सेता हू । मुक्ते किसी बात की कमी ने बायद ही कभी सताया होगा । कभी कुछ कमी मेरे पान पड़ोस में दिलायों देनी है तो उससे मुक्कित तकसीक नहीं होति, सबी चीड़ी माज्ञा दिलाने के बाद कभी कोई मुक्कित निराम कर देता है तब भी मैं मस्त रहता हू । मुक्कित प्रमण्ड कर देता है तब भी मैं मस्त रहता हू । मुक्कित प्रमण्ड कर कर कर सेता है स्व

में नहीं मानता कि मैंने कभी कोई त्याग किया है। मुक्ते दो जो अच्छा लगा सो मैंने किया, जो तुरा लगा उसे मैंने छोड़ दिया। तब फिर बैसा त्याय? प्रमल में मैं जानता ही मही कि त्याग क्या होता है? अपने काम को खातित में "उकतीफ" का मजा जरूर सेता रहा हूं। मैंने पर बार नही छोड़ा है, बच्चों के सावन-पासन-विश्वरण की उपेक्षा मैंने नहीं की है। में से सामने सच्छे पुत्र का, अच्छे पति का, प्रच्छे पिता का, प्रच्छे मित्र का धौर भेले कार्यकर्ती का सपना चित्र उपराता एडता है।

दूबरो की-लाम कर कार्यकलांध्रों की-सहायदा करने का सेरा स्वभाव रहा है भीर मैं धीवनभर इस काम को करता रहा हूं, किसी से भी कुछ भी प्वजाना चाहे बिना। दूबरों में जातिर में चाहे जितनों जिम्मेदारी अपने उत्तर तेता रहा हूं। एक कार तो मैंने अपने उत्तर हद दर्जों का भारी भरत्य कर्ता हो जाते जिस्सा जिसे साफ करने में मुक्तनों एकी ते चौटी तक का जोर प्राथा ? इस काम में मुक्तकों कभी "जन" मिला नहीं। पर मैं उत्तमें भी प्रक्रिसेस करने के वजाए मुख का सा प्रनुभव करता रहा।

जितना मुभने बना सो मैंने किया है, जितना बनता है सो साज भी करता हूँ।

मेरा सिद्धान "चर्चति चर्चति" रहा है। ज्यादा आखा में कभी करता नहीं, निराम कभी

मैं होता नहीं। भेरे भीवर कई मकार की कान्ति की तहरें बराबर उठनी रही हैं। पर जन सहरों का मुभने सब कुछ बनने बाला नहीं दोलता है। जो कुछ हुया सो मैंने देख निया, जो हो रहा है उमें मैं देख रहा हूं, भविष्य को भे मानता नहीं हूं। बेरे हिनाब से कस कभी आता ही नहीं है।

इस तेख में लिखी हुई या उनसे मिलती बुलती वार्ते खम्बन भी प्रत्यक्षत्रीनमधारम भाग १ मे, भाग २ में, मेरी रचनाचों में या बयी होगी। प्रचीन इस मुल्याकन में कई बातें बोहराने में या गयी होगी? किमी भी पुनराष्ट्रीत को देखकर निकाल देना में समन गरी मानता। पर प्रपन विषय में यह इतना सा और लिख देने से समने "खनतम" को इस प्रकार उड़ेल कर वाहर एख देने से मुक्को खाल्यसतीय हुया है। यह मेरे प्रियंजनों को पण्छां नगना चाहिए। इतिसम् !! -

भाग २

उपभाग २

प्रत्यचजीवनशास्त्र

: ? :

# जीवनवृत्त

(नवम्बर, १६७३ से धगस्त, १६७४ तक)

प्रस्तकानेवनसास्त्र (याग २) १६७६ के प्रारम्भ ये त्रुरा किया वाकर छुपने के लिए प्रेत में ह दिया गया था । पर हुछ, महीनी तक छुराई का काम चालू नहीं हो सका तो उसे तापित मनाकर मेरे शिख्य वन्ध-दिन तक प्रपट्टेंट किया गया । दुवारा भें से में आकर भी सारा मेटर यो ही पढा रहा। न बाने कितनी-कितनी कठिनाइयो के कारण ऐसा हुमा। माखिर मेटर यो ही पढा रहा। न बाने कितनी-कितनी कठिनाइयो के कारण ऐसा हुमा। माखिर मेटर को भेंस में एक बार फिर मंगवाकर उसे किर प्रपट्टेट करने का विचार निया गया। मन्त में निर्णय मह हुमा कि नवम्बन, १६७२ तक ममत, १९७४ तक का हान सबन में तिख दिया आए भीर उसके साथ में मुछ बोड़ी सी प्रतिरक्त समग्री भी निर्मिण्ड के तीर पर दे दी जाए। उसके निर्मय के म्रनुसार मस्तुत तेख तिवा जा

नवन्तर, १९७२ में मैंने सपनी उम्र का ७४ वा साल सकुशल पूरा कर सिया भीर इत ७४वे साल के शेष माल में भी मैं ठीक ठाक निम रहा था। बॉल्टरों की लगायी सभी पावन्दिया ज्यों की त्यों जारी है एवं भौपियों का भी वही कम जारी है। साने पीने की विन्दों। की वी कोई साम बात नहीं है, पर न्यायाम की इस्टि शे पुनने पर और भौतिय

रहा है।

२६६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

पर जो पायन्दी समाजी गयी है वह मुफ्ते बहुत ज्यादा खरारती रही। माम दीड़ का एव 

ग्रागिरिक चोन माने का कोई काम मैं न करूँ यह तो मुक्ते महुत है। पर विना काम किये 
भैं पड़ा ही रहें तो वह मुक्ते वीमार हो जाने का रास्ता लगता है। मुक्ते अपने तेज स्वभाव 
का यफनीम रहता है, वनीकि मैं सम्भान हिंक मेरी यह दिवी मेरे स्वास्थ्य के निए हिन्कारक है। सम्मु । जुद्ध मम्मय पहले मैंने देना कि मेरे पेड़ का दाहिता हिस्सा कुछ फूना
हुग्रा मा है। सर्जन ने देनकर बनावा कि यह इनिया है जिनका। धाँपरेगन करना हीगा!

प्रांगरेमन की हिन्द में पूरी जान करनावी गयी तो यह स्थाद हुगा कि हिन्या से पहले 
ग्रांस्टेट का धाँपरेगन करना पड़ेगा। वायपुर मे ग्रांस्टेट के धाँपरेगन के निए मुक्ते कई पण्टे 
तक बेहीग रखना पड़ेगा थो मेरी स्थित में ठीक नहीं होगा। इसिसए सर्जन धाँर फिजीगियन दोनो की रात्र बनी कि मुक्ते प्रांस्टेट का धाँपरेगन वेतरे में कराना चाहिए। हिन्या 
गा पाँररेगन वाद में होगा। वायपुर की बार पा को भारव करने के घलावा कोई चार्य 
नहीं दिखना है। होनो धाँपरेगन सम्म हो आवश्च इसका मुक्ते पूरा विवसास है! हांसांकि 
वाद में मेरे ग्रारेर की हानत प्राजकता में भी कुछ ज्यादा नायुक हो वारपी।

मेर रहन महन में एक तरह की एकान्तिकता रही है। जब मैं धरने किसी काम में लगा हांता हु परावा किसी पुत्र में ही मस्त होता हूँ तो मुक्कों किसी के मेरे पास होते की जरूरत महमून नहीं होती, बस्कि किसी का मेरे पास साला तक भी मुक्ते कम मुहात है। पर जब कभी मुक्ते घर्केचालम सहसून होने तलना है तब मेरे पास ऐसा कोई स्थाति गाहिए जिसके माण होने ने मेरा मनवहताब होता रहे। जिस्न श्रीक्त से मेरा मनवहताब हो ऐसा ध्यक्ति मुलभ नहीं है, बचीकि मेरे निकट के प्रियजनों की संपन-प्रचन्न कामी में रात दिन नगे रहना पड़ता है धीर जो मुक्ते धपना प्रियजन सा नहीं स्थाता उत्तत्ते मेरा काम नहीं सन्न मन्त्रा

 जीवनवृत्त [ २६७

लिए। वहा पर मुद्ध स्थानीय भाइयों का सहयोग भी मुक्ते धावाजी से मिस जाने की धावा हो गयी। मैंने मुन्दाबन जाकर रहने के जिजार को पत्कक कर लिया तब रतनजी ने बहुत बड़े प्राग्रह के साथ कहा कि धापको बनस्पती को छोड़कर बौर कही रहने के लिए नहीं जाना है। मुक्तकों कोत बहुत बाया पर मुक्तकों सीचना पड़ा कि रतनों ने जिन्दगी भर में कहना माना है तो इस बार मुक्ते को बनका कहना मानना ही चाहिए। इसलिए प्रव विजना एकानतवाम हो सकेगा उठना बनस्पत्ती में ही मैं करू या।

यथायस्य एकान्तवास में रहरूर कुछ माधना जैसी करने की मेरी करपना है। मेरे पान जैसा कई एक दूनरों में देखने को मुन्ने विन्तता है बँचा अक्तिभाव नहीं है। पर प्रपंते में एक सिशं प्रकार की यद्भाकी प्रमुक्ति मुक्ते करूर होती 'हती है। अपनी करपना की साधना में बहुत महायक हो सकती है, ऐसा मैं सीचता रहता है। जबक्षम में मेरे भीतर खवाल पर सवान उठने रहे हैं और मैं प्रवंत स्वस्त हो सम्बद्ध में मेरे प्रवंत में स्वस्त पर सवान उठने हों है और मैं प्रवंत स्वस्त हो स्वस्त में अतिहा खवाल पर सवान उठने रहे हैं और मैं प्रवंत स्वस्त हामच्ये के प्रमुक्त में मेरे भीतर खवाल पर सवान उठने रहे हैं और मैं प्रवंत स्वस्त हों के प्रमुक्त में मेरे भीतर बाल नहीं है में प्रवंत शेवन के जीतोड़ प्रयर्त करना सहता हुं हुं है सम्बद्ध में प्रवंत के बाल नहीं है में प्रवंत शेवन के मेरे कि स्वस्त मेरे स्वस्त महाना हुं प्रवाद हों हों से प्रवंत मेरे प्रवंत करना सहता है है कि एसा हो सकता है, हो बाएगा ! इसके लिए सुन्ने ख्यापन भीर गहत प्रवंत मेरे प्रवंत नहीं प्रवंत करना होगा, कई एक मुन्निकी की उहायता में ' एने सुर्विज मेरे प्रवंत नहीं प्रवंत स्वय्यन करना होगा, कई एक मुन्निकी एक बंद के रूप में प्रवंद करना बाहता है जिसका नाम मेरे 'क्षा हो सीचा है।

हनना पहले हुए मेरे विमाग में यह माफ है कि मुक्ते किसी तरह का प्रकट पा प्रच्छत सम्यास नहीं लेगा है। सम्यास मेरा मार्थ नहीं है। स्रोर में यह भी तो मानना हूं कि मोई कैसा भी मन्याभी बयो न हो दने कमें ने मुक्ति नहीं निज नकतीं। स्रियंक से स्रियंक सोई कैसा भी मन्याभी बयो न हो दने कमें ने मुक्ति नहीं निज नकतीं। स्रियंक संप्रकाल की स्रामिक का स्थाप कर है। स्रीर प्रमानक्ति की स्थिति तो सक्के कर्ममोग में हो ही मन्ती है। मैं सक्चा कर्मभोगी न रह सक्के हो मुक्ते सम्यामी हनता भी मञ्जर नहीं है। एंसी हलता ने में बहुत तक ही मके कत को इच्छा करता हुमा और अपना मनवाहा कर्म करता हुमा हिन्स के प्रति मेरा जो कत्ते व्यव है दने किसावा रह सक्वा है। हाज तक मेरी सम्यत्व रही है मेरे पान स्थाने वाले हर किसी को मदद करते की इच्छा रखने की। सब मैं सक्ते आपको भीनित कर सकता हूँ, सपने निकट के—स्वाक्तर परिवार के—सोयों के लिए सो ही करते का मेरा विचार है। पपने परिवार के प्रति मेरा को कर्चों है क्याका में नवका ही वस्त्र का मेरा विचार है। एक्ते परिवार के प्रति मेरा के कर्चों है वस्त्र का स्था विचार के प्रति मेरा के कर्चों है वस्त्र से से सार्थ के स्वत्र मेरा कर्चों का सार्थ प्रति मेरा के प्रति मेरा के प्रति मेरा कर्चों वस सार्थ एकटम सिकुड कुक है भीर उन्नकी नीया प्रायः करस्थती तक ही रह प्रति मेरा अपने हैं कर से प्रति मेरा कर्चों का सार्थ प्रति मेरा कर्चों का सार्थ प्रति मेरा कर्चों का सार्थ प्रति के प्रति मेरा कर्चों का सार्थ प्रति मेरा कर्चों का सार्थ प्रति मेरा कर्चों का सार्थ कर्चों के प्रति मेरा क्री हम सार्थ है उने मैं सार्थ होना न प्रति मीया सार्थ मान्य हाता में सह हो स्वर्ण होना में सार्थ में स्वर्ण मेरा क्री हम सार्थ है उने मैं सार्थ मेरा मार्य सहार निर्माण स्वरत्व मेरा सार्थ है को मैं सार्थ मेरा मार्य सार्य सार्य सार्य मेरा कर्चों से सार्थ मेरा सार्य सार्य है उने मैं सार्य मेरा कर निर्माण सार्य सार्य सार्य सार्य मार्य है को मैं सार्य मार्य सार्य सार्य सार्य सार्य सार्य है को मेरा सार्य सार्य सार्य सार्य सार्य सार्य है को मेरा सार्य स

दस तामान्य भूमिका के बाद मेरे पास पिछले १० महीनों के विषय में तिसने की सीर्ध किया सामग्री महीं है। परिवार से प्रपने दोनों पोत्रों भंगारी (निदार्भ) धोर धापुनी (धापुनीप) धोर धोत्रों मुनिवी (नुहािनों) के नम्बन्य के विषय में मेरी विरोध दिस्त्रपत्ती (धापुनीप) धोर धोत्रों मुनिवी (नुहािनों) के नम्बन्य के विषय में मेरी विरोध दिस्त्रपत्ती रही है। तीनों बच्चों में के निदार्थ का विषय मुत्ता ते ही पत्ता है तिससे मेरा पूरा तामा पत है। उस विवाह के धवनर पर में धप्ते पूर्व तीन बोर में साथ पित के द्वारा गया नक्ता था कि के द्वारा में पान के देश प्राचीप हुंगा। कामग्रा भीत धार्मे के दशा प्रधान कर जाएमा। इस्त्रे, तस्त्रों के वह सन्त्रीय हुंगा। कामग्र भीत धार्मे के एक बरा मी 'पानि' की एक वा भी कर बाली। बहु "पान्धी" भी "कामग्री" के ताय-चाध पत्र बाएणी। मुहािनों की सनाई मुरेस के हो सभी है धीर उनकर विवाह मक्ता काति हुंगा के साएन। सामु की सामग्री के साम के सामि के साम के सामि काति के साम के सामि काति होने में कुछ देर बतानी दिखती है, क्षांकि आपूर्गी समाई के सिर्ध धानी पूर्ण के धान माई ते होने में कुछ देर बतानी दिखती है, क्षांकि आपूर्णी समाई के सिर्ध धानी पुर्णी की सामग्री के सिर्ध धानी सामित्रों की समाई ते सामि होने में कुछ देर बताही हिता है। सामुत्री का विवाह भने ही देर ते ही, पर समाई बन्ध दी तथा है। बामुत्री का विवाह भने ही देर ते ही, पर समाई बन्ध दी तथा है। बामुत्री का विवाह भने ही वेप हो। वामुत्री का विवाह भने ही देर ते ही, पर समाई बन्ध ही विवाह मने ही वाप सामिष्ट हो। वामुत्री का विवाह मने ही हो दिसे परतीय हो। वा

Y५-४६ मानो में मेरा पतका कार्य हो जीवनकूटीर व वनस्थली विद्यापीठ में ही ग्हा है। बनस्वली विद्यापीठ की वित्तीय स्थिति की ठीक बनाये रखने का ग्रांखिरी जिम्मा नरा अपना महूर किया हमा जिम्मा है। उस जिम्मे को निभाव की पूरी कोशिश हैने की है, वानकर रहनजी को मदद मे 1 हमारी वह कोविज जारी है जारी रहेगी ! हमारी कोशिश रान्दी कामबाब होगी इनका मुसको पुरा विश्वास है। भनिष्य में वनस्थली वित्तीय ६ष्टि से स्वावसवी हो जाए भीन बनी रहे, इनकी योजना कार्यान्वित की जा रही है। वित्तीय हिंग्ड ते या किसी ग्रम्य इंप्टि में भी वनस्वनी में किसी बाहरी सत्ता का बेजा दवन हो, यह हम वनस्थली दासी को दिती भी हालत में सदूर वही है। वेबा इखल देने की जी कोर्सिगें पिछले दिनो हुई वे विकार हो चुकी हैं। बावे ऐनी कोई कोश्विन होगी तो वह भी स्रवस्त ही विफल होगी, इसमें कोई अक्रमुता नहीं है । वनस्वती के हायर सैकेण्डरी स्टूल को मॉटो-नामी मिली है उससे वनस्वती की पबश्खी शिक्षा को मर्वागीसाता की तरफ ले जाने में हुछ न कुछ महायना मिलने की बाधा है। ब्रहनव नहीं है वनस्वती के कवित्रों को भी बागे चलकर आँटोनामी मिल जाए । ऐसा हो जाएमा तो वनस्थली की करीव करीव विविधीन सय की सी स्थिति हो बाएगी। यह सब कुछ हो मा न ही, बनस्थकी को प्रथनी पवसुबी शिक्षा को नीने से लंकर ज्यर तक विश्व हद तक सनव हो उस हद तक सागू रखना ही है। वनस्थली में आदतन खादी पहिनना, सावकानीन प्रावना में नियमित रूप ने उपस्थित होना, ब्रमुक-ब्रमुक मर्थादाब्रो हा पालन करना यह सब कुछ निजता रहे सो प्रवतन भी किये गये हैं ग्रीर विये जाते रहेंगे । वनस्थली में कार्यवर्ताओं ग्रीर छात्राओं की सल्या पर एक सीमा तक पहुँचते ही रोक नमा देनी होगी। वनस्थली कैम्पस की जनसहमा के लिए पर्याप्त स्थान . सुलम हो इसकी कोश्वित्र की जाती रही है, की जाती रहेनी । वनस्वती में कुछ नमी परियोज-नाए भी जरूर धमल में बाबाएं भी, बचा हॉस्पिटन, समामदिर, होम सायन्स कॉनेज, शिल्प मदिर, बी॰ एव॰ (फीजिकल) बादि। वमं, नीति, दर्शन के खम्मपन बादि को हिंद से जीवनवृत्त [ २६६

वेटिबिद्यालय के सलाबा उद्योधन मिटर की स्थापना की जा जुकी है। ग्रीर नया काम म्यूजियम के निर्माण का भी हाथ में लिया गया है। एक नयी थीर वडी बात है वनस्थलों में एन भी को के एमर्राबय की स्थापना होने की, जिसका काम चालू हो गया है। ग्रीर जिसका प्रार्थिक उद्यादन महीने दो महीने में हो जाएगा। लड़कियों के लिये एमर्रावय का होना एक समृत्यूत्व थीर खडितीय बात होगी। नये जमाने में सडकी को उसके द्वारा हो सकने बाने कि में काम से विद्यात नहीं रखना चाहिए, ऐमा मेरा मानना है। वनस्थती विद्यापिठ के प्रतादा मेरे जम्म स्थान जोवनर में एक छोटा सा मानुमन्दिर विद्यालय चल रहा है जिसमें ग्रीड महिलाण भीर छोट बच्चे काफी साम उन्हों है।

बनस्थली विद्यापीठ और मालुमन्दिर के ब्रह्मावा मेरे पाम ब्रपना ब्रागीकृत काम कोई नहीं है। एक बार बन्द किये गुंध दैनिक पत्र के काम को दैनिक या साप्ताहिक रूप मे भी पुनर्जीवित करना होगा तो उसमें समय लगेगा । प्रिटिंग प्रेस की स्थापना भी जरुदी से नहीं हो संकेगी। इस जमाने में स्वतंत्र नीति के बनुसार चलाने की दृष्टि से यह सारा काम एकदम जोखिम भरा हो गया है, इसलिए जल्दबाजी मे कुछ नहीं करना है। श्री गोकुलभाई भट्ट द्वारा सचालित गराबबदी ब्रादोलन में मेरी दिलचस्पी है, पर उस काम में में मिलय भाग नहीं ने सकता। साथ ही मुक्तको मत्ताधारियों की नीयत का भरीमा विल्कुल नहीं है, क्यों कि वे नो प्राय सारे देश में जगह जगह शराव के प्रचार को बढाने की कोशिश में लगे हुए मालूम होते हैं। जयपुर में हाईकोर्टकी बेच पून स्थापित होनी चाहिए, यह मेरी पक्ती राय है और कुछ लोगों की तरफ से इस सवाल को लेकर राजस्थान के विभाजन का ओ दर दिलाया जा रहा है वह सबंधा निकम्मी बात है, ऐसा मेरा सोचना है। इन्दौर के थी रामेश्वरदयाल नोतला ने एक सहमति सच वनाने का प्रयत्न किया था उसका पता नही क्या हुन्ना, पर मैने तभी कह दिया और लिख दिया था कि उससे कूछ होने जाने वाला नहीं है। दो एक पूराने साथियों ने एक नयी सस्था बनाने के मिलिन में मेरी राम ली थी। जो काम मैंने प्रयती स्वाधीन ग्राम-नगर-सगठन की योजना के द्वारा करना गुरू किया था उसी लाइन पर वह काम होता तो कैसे भी करके मैं उसमे थोड़ा वहत हिस्मा लेता। बाकी ऊपर ऊपर में केवल टहनी पत्तों का मा कोई काम हो तो उससे मेरी दिलचस्पी नहीं हो सकती, खासकर जब कार्यक्रम के मुख्य प्रवर्तक के वास्तविक उद्देश्य का ही सही सही पता न हो। यहा पर मुक्तको एक बात जरूर कहनी चाहिए। बहु यह है कि मै बीमार न होता धीर प्राप्त में, नगर में वान्तिकारी धाघार पर धाना काम जारी रख सकता तब भी क्रान्ति-कारी स्थित शायद ही पैदा होती, क्योंकि क न्ति ला सकने वाला ब्रम्रशी जनसमुदाय दूसरा हीं होता है। ग्रर्थात् सामान्य ग्रामवानी ग्रथवा नगरवासी भी ग्रपने वलवूने पर ही कान्ति के मार्ग पर ग्रम्रसर नहीं हो सकते । उनको आवे होकर मार्ग दिखाने वाला और संगठित करने वाले कोई दसरे आंशीले यवक लोग ही हो सकते है।

दनस्थली विद्यापीठ तक से लेकर ऊपर यिनाये सब कामो को मैं मामूली समग्रता है। ब्रसली काम सो मेरी राज मे देश का, समाज का नक्शा बदलने का है। सर्वेदिय की २७० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

विचारवारा मुक्त बच्छी नगती रही है। मूरान, सामदान के काम को भी में सच्छा समभरां
रहा हैं। परन्तु मुक्तको यह महसून होता रहा है कि इन कामों को मुपारवादी न होकर
कारिकारी होना चाहिए। मुक्ते वैचा न होता हुंचा दिखायी देने तथा तो मैं निरास होने
सा गया। परन्तु हान ही में मर्बोदय बानों के काम की दिखा में वो मीड धामा हुआ
दिलायों देने सगा है उसने मुक्तकों फिर में साझा होने सभी है। सहिता पर साधारित पार्टी
रिहत जनतन की करणना तो मुक्ते मुन्दर लगती है. पर जहाँ तक मैं सोचता हूँ उस करणना
को ज्यावहारिक रूप देश कभी सभव नहीं होता। साच ही मुक्तकों नहीं लगता है कि देश की
संतान सत्ताधारी पार्टी को जनह कोई दूपरी एक पार्टी या कई एक पार्टियों में बनी हुई
एक सपुक्त पार्टी के हाथ में सत्ता पा जाए तो कोई बड़ा भारी परिवर्तन पण्टाई की दिशा
में हो जाएगा। सहिता नो जेर बहुन वड़ी चीज है, पर स्नान्तिमय रीति से कोई काम है
नो बहु मुक्तकों बहुन प्रच्छा नये। हानार्कि मन्त तक सान्तिमय काम का होना भी मुक्तकों
सहस्रक लेना नगन स्वा है। केती भी कान्ति हिल्ली भी वरिये से हो, पर सर्व साधारण
जनता की भनाई क के जीवनमूचनों को प्रमाय विज्ञा मही हो सहती। जीवनमूचन बहुन
का विज्ञान सबने ज्यादा टेडा है।

स्वभावत देश और समाज की वर्तमान दुरवस्था के विषय में मेरा व्याकुलतामय चिन्तन चलता रहना हे तब में सोचता है कि माजरूल जिनके हाथ में सत्ता है वे हर प्रकार के निकृष्ट हथकड़ों को काम में से रहे हो तो इसरे तीग उनसे कैसे बाज ग्राएगे ? जो लोग भ्रष्टाचार के प्रवर्तक एव पुरस्कर्ता है उनमे भ्रष्टाचार कैमे मिटेवा ? जिनकी सत्ता काले धन पर ग्राधारित है वे किस प्रकार देज में से काले धन का लोग कर सकते है ? जो लोग नोट द्वाप द्वापकर जैसे तैमे काम चनाना चाहते हैं वे किम तरह से मुद्रास्फीति को रोक सकेंगे ? जिन लोगो ने 'पराये' और दूपित धन पर अपना रहन सहन का ठाट बना रखा है और जिन्होंने एद ग्रनाप शनाप खर्च करने का अपना सामर्थ्य और तरीका बना रखा है वे नुद सादनी ग्रीर किफायत ग्रपनाये बिना कीमतो का नियन्त्रण कैसे कर सकते है ? जो लोग नाना प्रकार के वेकार नारे जारी करने में व्यस्त रहते हैं वे क्लिस तरह से भावश्यक मम्पत्ति के उत्पादन में देश की सम्पूर्ण शक्ति लगा सकते है ? एक न एक राजनीतिक हेतु से हर किसी के दबाव में बा जाना ही जिनको अपने अस्तिस्व को बनाये रखने के लिए अनिवार्य मातून होता है वे किस प्रकार निर्भय होकर कोई निष्पक्ष व सही फैसला कर सकते हैं ? येन केन प्रकारेण मत्ता हथिया लेना और सत्ता हाथ में या जाने के बाद कैसे भी करके उसके चिपके रहना जिनका परम धर्म दिखता है जनका देशहिन के नाम पर किया गया कौन सी काम सचमुच देशहित का हो सकता है ? अध्टाचार के विरुद्ध बीडा उठाने वाली को सत्ता-धारी पू छते हैं - आप अप्टाधारियों के, काला बाजारियों के, अमास्रोरों के खिलाफ मीर्ची वयो नहीं लगाते हैं, इसका जवाब यह होना चाहिए कि हम चोर को मारने की अपेक्षा चोर की मा को मार देना पहले नवर अरूरी समक्ष्ते है। सत्ताधारी यह भी बार बार कहते है कि कोई पुस्ता मामला सामने लाया जाए तो वे उसकी जाच करवाएं और किसी का दोप प्रमाणित हो जाए तो उनके विलाफ कार्रवाई की जाए । आज तक जो पुस्ता मामले पेश किये गये उनको लेकर किसके जिलाफ क्या कारगर कार्यवाही की गयी ? समेरिका में तो राष्ट्रपति को निकास बाहर कर दिया गया । ग्रपने देख में ऊ चे से ऊ चे पदी पर विराजमान हो रहे लोगों के जिलाफ न जाने किननी वातें है, पर कोई चू तक कर दे तो उसे मार डाला जाए। न जाने कितने "बाटर मेट' हिन्दस्तान में निकल सकते है। विधानसभा की एक सीट के युनाय मे ४० लाख सर्च हो जाने के ममाधार में घरपुक्ति हो सकती है, और मीक्र-मभा की एक मीट के चुनाव में ५० लाल लर्ज हो जान की खबर भी भने ही पूरी सही न हो, और एक ही राज्य की विधानसभा के चुनावों में ४०-६० करांड वर्च हो जाने की धान भी भले ही वटा चडाकर कही हुई हो, पर यह तो कोई ब्रधा भी देख सकता है कि चुनावो में जो असीमित धन लवं होता है वह अधिकतर चोर बाजार वालों से मिलने वाला धन है। एमें चुनाबों के परिस्तामस्वरूप बने हुए नज को जनतज कैसे माना जा सकता है। इस नारकीय धरो में मुमकिन है सभी पार्टिया किसी हद तक भागीदार हो पर श्रमल जिस्सा तो सत्ताधारी पार्टीका ही माना जाएगा। जननत्र की दुराई देन बारे यह भूल जाते है कि वास्तव में अनतत्र है नहा ? कारों घन के बन पर और मत्ता के बल प्रयोग में कम या बगदा भी सफल होने वाने चनावों के परिस्तामस्वरूप स्था सच्चा जनतव स्थापित हो सकता है ? सत्ताबारी कहते हैं - अमुक लांग देश में अव्यवस्था और ब्रशांति फैलाना चाहते हैं। इसका जवाब यह होना चाहिए कि व्यवस्था और शांति है कहा जिसे भग करने का इत्जाम हम पर लगा रहे हो ? सच नो यह है कि कोई भी कान्ति ग्रन्थवस्था ग्रीर मराजकता में से ही पैदा हो सकती है। जजर हई इमारत के द्वट बाने के दाद ही नयी इमारत बनाने का काम मुख् हो सकता है। और क्रान्ति के दाद ही मच्ची व्यवस्था कायम हो सकती है। क्रमर-क्रमर में दिलायों देने वाली व्यवस्था जिननी ती है उतनी मी भी भ्राज हते के जोर पर स्रावादित है। तो फिर उसे सजलारी से इडे के लोग ने ही तोड देना पड़े तो इससे ग्रस्ता-भाविक बात क्या है ? और ब्रास्तिर यह तो धर्म-ग्रधमं ती, पुण्य-पाप की, सत्य -प्रमन्य को, न्याय — प्रन्याय को, सूर--- असूर की सनातन लडाई है विसम एक बार एक की जीत होती है और दूसरे की हार, फिर दूसरे की जीत होती है और पहने की हार। यह किया प्रतिकिया प्रवादिकान से चली ग्रामी है भीर भ्रमन्तवाल तक चलती ग्हेगी। पर जी मत्य का, त्याय का पक्षपाती है उसे तो प्रसत्य के, ग्रन्याय के विरुद्ध नडवा ही पढेगा, और राइते लडते उसका भर जाने का नवर आ वाएगा तो उने मर भी वाना होगा। सुनते है प्रान्त मे जीत सत्य की ही होती है। भारत के मोटो ~ सत्यमेव जयते ~ का कुछ भी मर्प होगा तो भ्रन्त में बत्य की जीत होगी। जो हो, मैं खुद तो उसी प्रलय की बाट बाज भी देख नहां हूँ जिसको कल्पना में लगभग पिछली बाधी शनाब्दी से करना रहा हूं। मेरा विरवान है कि मेरी कल्पना के प्रसव के लिए कोई म्रवतार एक दिन धरनी पर म्रवस्य उतरेगा।

स्व नारे सदर्भ में में मुपने बारे में क्या कहूं ? में नो कभी नो प्रखवारी या हूमरी तरह का नेना नहीं चा। मान तो में विक्तं एक मामूची कार्यकर्मी के बच्चा अपने मानुकों डिप्न नहीं मानता हूँ। फिर भी में शीमार हृष्या था। उपने चहुने मेंने मानुद में सूर जाने का, जबनी पाप में प्रतेण करने को बीजा उद्धारा या। पर सन समुद्र में या बात में कूर विकास ही मेरे सरीर की स्थिति एंटी हो। गयी है कि ज्यादा ठेज चक्ते में, कुछ और-और से सोक्ने २७२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

में भीर योडी देर के लिए सीचे सडे रहने तक में मुक्ते बोखिम दिसायी देती है। तब में कंसे क्या करू ? मीनूदा हालत में तो में देश में यदि कान्ति लाने बाला कोई काम हो रहा होया तो उसकी सफलता की कामना कर सकता हूँ। धौर प्रपने अगोकूत काम को करता हुआ मुक्ति बने उननी साधना कर सकता हूँ सो प्रपने लिए नहीं, बेल्कि देश के व समाज के लिए। में मानता हूँ कि सच्ची साधना का भी क्यन्ति के कार्य में अच्छा गोगदान हो सकता है।

बीमारी के बाद से मैं भापए। तो दे ही नहीं सकता था, कुछ लेख मैंने यदा कवा जरुर तिल दिये थे। उनमें से कुछ को मैं परिवास्ट के रूप से इन्ही पुरूषों में प्रस्था दे रहा हू। लेखों के साथ प्रपत्ती कुछ रचनाओं को दे देने का भी मेरा विचार है। मेरी आगिरणों में से धोंडे बहुत प्राम भी दे हुया। मेरे पत्र व्यवहार भे से भी कुछ पत्रों को उद्धरित कर देने का मेरा प्यान है।

प्रतिरिक्त सामग्री सहित इस लेख के जुड़ जाने से मैं घपने प्रत्यक्षजीवनवाहन के दूसरे भाग को प्रमृद्धेट समभ्र लूगा। प्रत्यक्षजीवनवाहन के दोनो भागो में नवम्बर, १०६६ से लेकर प्रमृद्ध, १९७४ तक के प्राय, ७५ साली का इतिवृत्त या जाएगा।

## पुनश्च:---

जरिनिखित सिस्त देने के कुछ दिन बाद मेरे एक बड़े साथी ने मुफ्तको बताया कि
"यरने एक नवदीक के बन्धु ने समने एक स्वर्गीय बड़े साथी की जीवनी. निजी हैं। उसमें
सापने व मेरे सम्बन्ध में जो बातें तथ्य दे परे तथा विश्वरीत लिखने ये भा गयी है उनके बारें
में मैं ऐसक माई को सही स्वित निखकर जेवना चाहता हैं।" मैंने कह दिया कि "मैं तो
कभी ऐसे बाद-विवाद में पटता नहीं हैं, बाप लिखना चाहते हैं तो जरूर लिखें"। मैंने भपना
हनना वा मनोभाव और प्रकट कर दिया कि "लेखक भाई के सामने हमारे सम्बन्ध में कोई
बात भी तो उसके बारे में वे हम से भी पूछ लेते तो उनको बीर धावस्थक जानकारी भी हैं।
आती। उन्होंने ऐसा नहीं हिन्या तो उनकी लखी।"

में यह कई स्थानो पर कई बार प्रकट कर चुका हूँ कि जिखे 'राजनीति' बोतते हैं उसमें मेरी किसी भी समय दिली दिलचस्थी नहीं रही, मैंने उक्त राजनीति को प्रका पेशा कभी नहीं बताया। मैंने तो उक्त क्षेत्र में जितना काम मेरे हिस्से में साथा उनना एक राजनात्मक कार्यकर्ता की हैसियत से पूरा करके छुट्टी ले ली। स्वतुत्वता की लडाई के सम्बन्ध में भी प्रपने कुछ स्वतंत्र विचार रखता हैं। जिलाका कुछ खुश्च में नीचे प्रकट करता हैं।

पिछले सालों में स्वतनता "नेनानियों" को ताम्रपन और "पेरवान" देने की चर्चा धीर कार्यवाही चली तब मुक्ति कुछ बाइयों ने मेरी राय जानती चाही तो मेंने साफ कह दिया कि नुमको यह चचा विरुक्त पसन्द नही है, मैं इसे जिन सोगों ने देश के लिए स्वेच्छा से बीवनवृत्त [ २७३

कुर्योगी की थी उनको निराने वाना काम सममा हूँ। धौर फाखिर धपनी शान रखने वान किसी भी स्ततः सम्मानित राष्ट्रधेवक को ताम्रफत के या किसी भी दूसरे बरिये में 'सम्मानित' करने का अधिकार किसको हो सकता है ? मुके जन्नजा है कि ''नाम्रफत'' भीर ''एनन्न'' की चार ने पर कर प्राचित्र का प्राचित्र के भीर का साथ के बात के रूप में दिखा दिवा है भीर कुछ होने में लेगी की उनाई करने का प्रवचर रे दिखा है । बहु होने पूरे सीयों की उनाई करने का प्रवचर रे दिखा है । बहु हाल मुक्ति यो मेरे किसी प्रियमन को कोई ऐसा कुछ देना चाहे तो में खुद तो हाजिब भी मजूर नहीं करू और सम्बन्धित प्रियमन को भीर साम् हुत देना चाहे तो में खुद तो हाजिब भी मजूर नहीं कर और सम्बन्धित प्रियमन को भीर से छी. उन्हों के भीर के लेगी की प्रवचन को भीर साम् हुत है के साम हुत है साम हुत हुत है साम हुत है है साम हुत है है साम हुत है साम हुत है साम हुत है है साम हुत है साम हुत है साम हुत है है साम हुत है है साम

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

पड़ा या। जयपुर प्रजामण्डल के काम मे हम लोग बहादुर वनने धर्यात् बहादुर दिसायी देने के लिए वेकार फताड़े में नहीं पढ़े तो मौका आगे पर हम सब सामियों ने मिलकर समय-समय पर वह मजबूती भी दिखादी जिसके आगे सत्ताधारियों को मुक्ता पढ़ा। उत्तेषत्तीय है कि जयपुर प्रजामण्डल ने याधीजों के मार्गदर्वन से नामरिक प्रविकारों के लिए सफल सपर्य करके राजपूताना की गियासतों से समसी का किया था। और बहु नी याद रखने की बता है कि पप्ते सविधान में से "महाराजा की खुनखाया" अब्द जयपुर प्रजामण्डल ने ही प्रांते होकर निकाला था।

१६४२ के फ्रान्दोलन के सिलसिले मे जयपुर प्रजामण्डल ने क्या क्या किया था उमका हाल मै प्रदनी आत्मकथा "प्रत्यक्षजीवनशास्त्र" म छावा चुका हूँ। उक्त सिलसिले की खास बात यह है कि मेरे कुछ "तेज तर्रार" (7) माइयो के सुफारों के अनुनार ही प्रजा-मण्डल ने जयपुर महाराजा के प्रतिनिधि प्राइमिमिनिस्टर से समभौता किया था और उनमें से ही एक के मुक्तमे यह कहने पर कि हम तो सिर्फ यह चाहते हैं कि आप गिरफ्तार हो जाए, मैंने जयपुर के प्राइमिमिनिस्टर को अपना १६-६-७४ का तबडा पत्र लिखा था जिसके सदमें मे प्राइमिमिनिस्टर ने हमको बातचीत करने के लिए बुलाया था। उक्त बातचीत करने का पता नहीं क्या नतीजा निकलता। पर बीच में ही कुछ साथियों ने प्रजामण्डल से सलग होकर महाराजा मे लड़ने का ऐलान कर दिया। फलत. प्रजामण्डल ग्रीर राज का समभौता कायम रह गया जिसका दोनो तरफ से ठीक ठाक पालन करने की कोशिश की गयी। १६४२ के आन्दोलन के सिलसिले में देशी राज्यों में कैसे क्या होना चाहिए, इस सम्बन्ध में बम्बई में नुद्ध भी निर्णय नहीं हुन्ना था। गार्धाजी को गिरफ्तार करके ले गये उससे पहले से भौर उस समय भी में उनके पास ही मौजूद था। जब यादीजी जेल से बाहर आरो तब मिने जनको अयपुर प्रजामण्डल के काम की रिपोर्ट सुनादी ग्रोर उन्होंने प्रजामण्डल में जी को नुख किया उसको ठीक स्रोर मेरे कुछ साथियों ने जो कुछ किया उसे धनु चित बताया। बाद में पडितजी (जवाहरसालजी) का समर्थन भी प्रजामण्डल को मिल गया। जयपुर राज्य के प्राह्मिनिस्टर से मरा जो पत्र व्यवहार हुया उसका महत्वपूर्ण ग्रंश प्रत्यक्षजीवनशास्त्र भाग १में छप चुका है। उसके ब्रलावा प्राइमिमिनस्टर ने किसको क्या लिखा प्रथम प्राइमें मिनिस्टर की किसने क्या लिखा सो मेरी जानकारी में नहीं है। प्राइम मिनिस्टर के भनावा मेरी बातचीत उनके या मेरे किसी भी मित्र से कभी नही हुई। दिल्ली से पोलिटिकल सेकेंटरी महाराजा और प्राइममिनिस्टर पर प्रजामण्डल के सिलसिले में दबाव डालने के लिए आये, इतना मुक्तको प्राइमिनिस्टर से मालूम हो गया था । पर महाराजा घोर प्राइम-मिनिस्टर ने पोलिटिकल क्षेत्रेटरी को क्या कहकर लोटा दिया होगा सो मुफ्ते पता नहीं हैं। कम से कम प्राइमिनिस्टर ने या किसी ने भी भुकते तो कभी कुछ कहा नहीं। जब देश भर में ब्रान्दोत्तन ठण्डा पड़ गया तो जयपुर में भी वही हुबा। तब फिर प्रजामण्डल को पहुने की तरह से मोर्चा लगावे रहने की वरूरत नहीं रही। उस समय प्राइम मिनिस्टर से जो चर्चा आदि हुई सक्षमें न केवल साली बल्कि प्रेरक भी एक प्रवासी राजस्थानी मार्ड कासतीर से थे। दु ॥ है कि उन साथी का २-२ रै साल हुए स्वर्गवास हो गया। प्रमुक जीवनवृत्त [ २७४

रियासत को या उसके किसी हिस्से को राजस्थान के ग्रलावा किसी दूसरे राज्य में मिलाने के बावत कब किमने किससे क्या "सौदा" कर लिया यह भूभे पता नही है। हर सुरत में यह "सौदे" वाली कररना परने सिरे की भठी करपना है। मैंने सिरोही के सम्बन्ध में सरदार पटेल को उस समय जो तार दिये थे वे और जवाद में सरदार का जो तार धाया था वह सभी कल प्रत्यक्षजीवनशास्त्र में ज्यों का त्यों छपा है। इतना ग्रीर स्पष्ट कर देना ग्रावश्यक है कि मैंने कभी भी सरदार पटेल से या किसी दूसरे से भी नहीं कहा कि राजस्थान की राजधानी जयपूर में होनी चाहिए। माथ में यह भी कि एक स्वर्गीय वडे साथी के दवाब डालने पर भी यह यल करना मैंने मजुर नही किया कि जयपुर को न बनाकर किसी प्रत्य नगर को राजधानी बनाय। जाए। जाहिर है कि दोनों ही प्रकार के बस्त करना मेरी मर्यादा के दाहर या । राजप्रमुख जयपुर महाराजा को बनाया जाए, इस तजवीज पर राजस्थान मे वडे माने जाने वाले हम चारो । मेरे खरावा नवंश्री माणिश्यनातजी वर्मा, गोकनभाई भट धीर जयनारावणजी व्यास) ने स्टेटस मिनिस्टी में हस्ताक्षर किये थे। ग्रीर मफको राजस्थान का प्रथम मह्यमत्री बनना है, यह बात सरदार ने मेरे उक्त तीनों बढ़ों की राय लेने के बाद जनकी मौजदगी में मुफले कही थी। सरदार ने मेरे बड़े साधियों को उसी समय यह चेता-बनी भी शो की कि साप लोगों की राय से यह तय हमा है, इस प्रामले में सारे चलकर क्सगडानही करना है।

जब वे मद बातें निन्दा थी तब भी मैंने बाद विवाद में पडना ठीक नहीं समक्षा था तो मब इस समय जब कि सब कुछ पुराना पड चुला है किसी तरह के निरफ्क वितण्डाबाद में समय डियाडना मेरी राय में सर्वया धनावस्थक व धनुविद्य होने के प्रमाया गृणिक्या भी है। फिर भी एक वड़े नाथी ने मेरा ध्यान किसी सम्माननीय बच्च की लेखनी से कुछ जिला गया बताकर उसकी तरफ मेरा ध्यान दिनाया नी मैंने उस सम्बन्ध में तथा एकाध दूसरे साथी की और से समय-समय पर वो कुछ होता रहा है उसके सम्बन्ध में भी मैंने इतना मा प्रमुने उपरित्तित वीवनकृत सम्बन्धी निवन्ध में जोड़ दिया है। बाकी तो कि अच्छा या बुरा, लग्न या लोटा, सच्चा या फूटा कहने निलने वाले सब भाइयों की बन्दना करता हैं। े २ :

# परिशिष्ट

# (क) पत्र व्यवहार

# [ग्र] श्रीमती इन्दिरागांधी

(किसी विचित्र समीय से पिछले दिनो इन्द्र बहिन (श्रीमती इन्दिरा गांधी) से मेरा मिलना होने के बाद कुछ पत्र व्यवहार हो गया सो मैं नीचे दे रहा हैं। मैंने अस्तिम पत्र में इन्द्र वहिन को लिख दिया था कि इस पत्र का उत्तर आप न भेजें। क्योंकि में यह महसूस करने लगा था कि इस तरह खाली पत्र व्यवहार में से कुछ निकलने वाला नही है। मैंने यपनी बात कहदी, इन्दु वहिन ने अपनी बात कहदी, किस्मा खत्म हुआ। बीमारी की जड़ तक जामा जाए तब तो कोई मतसव निकले । वीमारी की जड़ है उस अप्टाचार में जिसका ज्यादा से ज्यादा जिम्मा सत्ताधारी पार्टी का है। उस वीमारी के ग्रंग ही दूसरी बीमारिया है-सपिस के उत्पादन को कमी, मुद्रास्फीति, महगाई, अमाखोरी, काला बाजारी, मिलावट ग्रादि । शासन में बैठने वाले लोग इस के घले हुए हो तो सब कुछ ठीक हो जाए । पर बे जब तक सत्ता से चिपके रहना अरूरी मानते हैं नव तक उनका दब के घुले हुए बन जाना सभव नहीं है। विचारधाराओं के चक्कर में पढ़े विना और अधिक से प्रधिक प्रपने ही साधनों के द्वारा वानी विदेशी सहायता के दिना ही सम्पत्ति का उत्पादन वढ़ाया जाए, इस वात की पर्वाह छोड़ दी जाए कि राजसत्ता अपने हाथ में रहती है या नहीं रहती है, तभी देश की वीमारियों का इलाज हो सकता है। ऐसा नहीं होगा तो फिर देश में आन्तिमय या भ्रशान्तिमय कैसी भी कान्ति होकर रहेगी जिसके फलस्वरूप एक बार तो सबको रोटी, कपड़ा, निवास, इलाज, शिक्षा सुनभ होकर शान्ति स्थापित हो आएगी ।)

(8)

#### From Sm. Indira Gandhi to Hiralal Shastri

#### 19-4-1974

This is just to acknowledge your letter of the 17th. You had made this point in our meeting also. Please let me have your suggestions.

(२)

#### From Hiralal Shastri to Sm Indira Gandhi

#### 3-5-74

Herewith is a note which may be taken as a sort of amplification of the points indicated in my letter of April 23 (copy enclosed).

It was with a great deal of hesitation that I started talking to you like this. For I know I am in no position to be effective in any big way and what use it may be putting forward suggestions which I myself can do little to implement

Even so, the "strange dream" prompted me to send you my letter of March 29 to which your quick reply of April 3 came to me as a beckoning call. Then, our meeting took place which was followed by your asking for my "suggestions." Thus encouraged, I have sentured to let you know how I, along with a number of sincere worker friends, feel and think about the situation in the country.

I will be fully compensated even if any single item out of what I wave said appeals to you. In the existing situation and in the situation which seems to me to be inexorably following, I wish the great Indian nation (of which you are the top-most leader) all very well.

For myself, I may say, I have no exaggerated idea of my own capacity to be helpful, but I will be prepared to do what little I possibly acn, if you so desire. I will be in the Capital at 15, South Avenue for three four weeks from May 6 onwards: telephone number 371664.

पत्यक्षञ्जीबनज्ञास्त्र

### Extract Copy from a previous letter from Hiralal Shastri to Sm. Indira Gandhi

### 23-4-74

As regards the suggestions you have asked for, I would, firstly, like to say that we must have m faithful cadre in sufficient strength zealously devoted to the implementation of our policies and programmes.

Secondly, we must place the greatest emphasis on preferably decentralised production in the fields of agriculture and industry and we must do with the minimum of foreign aid. Increased production will cure many of our ills.

Thirdly, it is most essential that we adopt practical and visible measures of austerity from the top downwards: from E distance it seems to me that China can perhaps serve as a good example to follow in this particular matter.

Fourthly, you must make up your mind to put down corruption in high places with a heavy hand; we must start from the top. We can not afford to be complacent in this matter by saying that this is so all the world over.

Finally, I venture to suggest that you, being the supreme leader, should make it possible to consult other leaders of thought and public opinion on a national basis, i.e. cutting across party lines, notably Vinobait

### Note on the situation in the country

T

The situation in the country is most critical and not a single sign of improvement is visible at the moment. I am sure what is said herein does not represent an alarmist view and it is only what is being almost universally seen and realised. The people in general seem to have lost faith in the present policical system. We talk of democracy and democratic socialism, but in the prevailing situation these are, to be [quite frank, nothing more than empty words. What is on everybody's lips is that the elections which need crores and crores of rupees to be spent and means, fair and foul, to be used can never lead to real democracy. And we all know that our existing system of election is the root cause of political corruption which, in turn, is the cause of all other forms of corruption. The attempt to win an election by any means can only be a bid for survival. And the lot of people whose first anxiety is to survive at any

पत्र व्यवहार [ २७६

cost can hardly deal with the present situation in a revolutionary manner. Ether the common man enjoys complete freedom or dictatorship, pure and simple, will be his lot. Democracy presupposes two parties of more or less equal strength which have their own distinct programmes. One party rule must ultimately result in dictatorship which, again is bound to be preceded by revolt and anarchy. One way to deal with the existing situation may be to find a sort of national consensus for the solution of the nation's problems. A national consensus would mean sacrifice on the part of the political parties. If that sacrifice ill not forthcoming, than for aught I know it violent revolution will shake and overwhelm the nation

### II.

In the economic sphere production of the necessaries of life must be the primary aim and the said necessaries of life must be made easily available to all classes of the people on easy and equal terms. On the other hand, there must be firm restriction on the production of all other nonessentials including luxury and demonstrative goods which may be permitted to be produced only for export purposes. We must certainly be able to do without or with the minimum foreign aid. The nation's energy must primarily he utilised for the production of what the people at large barely need and strict measures of austerity from the top downwards must be taken leaving no room, for display or estentation I think it is a good sign that authority seems to have recently begun to adopt a pragmatic approach in the economic field. Vinobau's reported suggestion for the realisation of land revenue in kind deserves careful consideration. Thought must be given to such small scale and decentratised production as may result in giving large scale employment to the people. While doing so we must take serious note of the wide-spread student and youth unrest which We can ignore or misinterpret only at grave risk to the peaceful existence of the nation. The role of created money, that is, deficit financing must be minimised and no manipulation of figures, as is suspected by many, should be attempted to make deficit financing appear to be less than what it actually is. Our investment should be mainly determined by our real savings. Non productive expenditure must be brought down to the barest minimum. Whatever the economic programme, a huge cadre of devoted workers will be the first must. The party people in whose integrity the masses have no faith cannot be trusted for its implementation of any programme. Quick revolutionary steps will have to be taken to avert the impending catastrophic revolution which not most of us would be prepared to welcome,

(\$)

#### From Sm. Indira Gandhi to Hiralal Shastri

8-5-74

I have your letter of the 3rd May

I agree with you about the necessity of having a good and trained cadre of workers. But this is not easy to do. Perhaps we could activise and extend the scope of our Seva Dal. Normally the Sarwodaya people could have played an important part in developmental work. Unfortunately they have regarded the misches as a species apart and have not wanted to cooperate with the Government.

We are doing everything possible to increase production and have succeeded in a number of cases. We are also laying stress on small scale and on village industries although I do admit that more can and should be done in this direction. However somehow people, except in the Punjab, always seem less interested in small scale industries.

In China they have killed off or allowed to die hundreds of peoplethey have no opposition to publicize starvation deaths or other extreme methods. I have visited China I am not prepared to accept the euphoric versions now appearing in the Western Press The question is whether we want that type of authoritarian rule in our country.

I agree with the desirability of having simplicity and even austerity. We are making an effort-but today we hid that people who speak against corruption are not prepared to speak against the ostentation and the corruption of Big Business people. Is that honest?

I am in contact with Vinobaji. I have had meetings with him and people from his Ashram come from time to time.

Vinobaji has given some suggestions which we are trying to follow up I have also been attending conferences to which Vinobaji has invited me. (8)

### From Hiralal Shastri to Sm. Indira Gandhi

## 24-5-74

I am grateful to you for your letter of May 8 which has been brought here by a special messenger from Banasthali where it was delivered by post only a couple of days ago.

I must make it clear at once that in referring to China I only intended to say that she might serve us as an example in austerity. In my view, there is no question of our wanting any authoritari on rule either of the Chinese or the Russian or of any other type. For myself, I stand for the self sufficiency and self reliance primarily of our villages which would naturally result from self-rule and self-disappine. The speciable of corrupt power politics at higher levels deeply penetrating down into the villages can only be most distressing for one like me who has lived in a tiny village for the last 45 years and more. To my mind, the first and foremost question for us, therefore, is how to root out the political corruption which is eating into the vitals of the nation. Corruption in all other spheres will vanish automatically, if it is banished from the political sphere. In the matter of austerity also, the -example has to be set by the politicals from whom big business and all the rest receive inspiration and encouragement.

Another question of questions before us is how to produce the necessary goods (specially food) to the maximum extent and their equitable distribution with the least possible control. No ideology, left or right, can be allowed to stand in the way of production and distribution to which the nations entire collective energy must be devoted. I for one, do not believe that the Indian masses are prepared for any leftist slogans, nor can the common man any longer tolerate unbriddled hoarding, black marketing and profiteering which, he knows to his cost, is encouraged by corruption in the country's political life.

२=२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

I can see that it is not at all easy, in fact it is most difficult, rather it is well nigh impossible to create a cadre of trained and devoted workers in sufficient strength unless the 'whole pattern of our public life is made to undergo a fundamental change. An atmosphere in which everybody would seem to be not only seeking but also chinging to power can not be conducive to the creation of a cadre of honest and selfiess workers. As for the Sarvodaya workers we all know that they have their own way of functioning under the guidance of Vinobaji and also they are too few to make a serious impact on the millions of our population particularly in the prevalent climare. Further it seems to me that Sarvodaya workers can co-operate with an external authority only on mutually agreed terms.

Your ready response to what I said in my earlier letters has encouped me to open out my heart like this toy ou. May I add that I have some idea of your difficulty—you appear to me being pushed between left and right. Moreover, there are pulls and pulls of the politics of opportunism and expediency which make your postition extremely difficult. Just as there are vested interest on the right, so the left is also not without its own interests which are more or less of an imaginary nature in the eyes of detached observers. And no one can deny that our congress has always been full of all sorts of people with different ideologies and with no ideology at all.

The real question ultimately, is what exactly to do and where and how to begin in our given conditions. Defact financing, inflation, sky-bigh prices, national production far below capacity, un-employment, student unrest and above all, the lack of true patriotism and the will to work hard for the nation are all signs and also causes of our chronic disease which is now growing more and more acute calling for immediate and couraseous treatment.

Beyond these general observations I dare not make detailed suggestions here and now for the simple reason that I am hardy in a position to help implement them.

Ratanji intends to ask you to inagura'e the N. C. C. air-wing at Banasthali which may be some time in August next. then and even before that I can, if desired, give you some practical suggestions for what they may be worth

Meanwhile, please arrange acknowledgement of this letter at the address given above, for I am likely to be here for three weeks more in connection with my Banasthali mission.

(x)

#### From Sm. Indira Gandhi to Hiralal Shastri

11-6-74

I have received your letter of the 8th June I had also received your earlier letter which came a few days before I was leaving Delhi.

I can assure you that I am not being pushed either to the left or to the light. But the circumstances in which we have to function in today's world are far more complex than at any other time in the world's history and this is not so merely in India but in practically every country of the world. By chance only this morning some one has sent me an extract from an editorial in the London Economist about conditions in Britain which you may be interested to see.

### Extract from an article in the Economist (London) of June, 1, 1974 attached with Sm. Indira Gandhi's letter of 11th June, 1974 to Hiralel Shastri

Inflation, unemployment, corruption and civil disorder are on the point of becoming part and parcel of everyday life. It almost seems as if each generation must reach the point of facing personal disaster before it works out its appropriate standards and values. When no threat comes from outside the British lend to create their own from within, which is thereby all the more lethal.

The highly publicised corruption of a few people in public office in Britain is another symptom of social decay, although corruption of this kind is neither extensive nor growing visibly in Britain. The real threat is from the corruption of values by people in public office who appeal to the greed and envy of sectional interest groups, whether minorities. Labour leaders do this when they encourage workers to believe that they have the right to security of employment and ever-rising living standards, argardless of any obligation to ensure the production on which the living standards of the community depend.

(\$)

### From Hiralal Shastri to Sm. Indira Gandhi

14-6-74

I am happy to have your letter of June 11.

I know the situation all over the world including our own country is extremely complex and so I admire the boldness and courage with which you are facing our problems.

Even so, I have a feeling that something far more drastic-may I say revolutionary in a sense-needs to be done.

You will perhaps agree that the fact that the situation in some other countries also is equally bad can offer us only poor consolution. Any way, we have to face and fight with our own problems and solve them as best as we can

You need not reply to this letter We may get an opportunity of talking over things when we meet again at your convenience.

Meanwhile, with my best wishes.

(e)

इंदु बहिन का चि॰ सिदायें के विवाह के सन्वत्य में जो ५-६-७४ का पत्र मामा उसमें उनकी खुद की कमम से लिखी हुई ग्रह लाइन भागों भी ३

"P S Your letter of the 14th has just come "

# [ग्रा] श्री सीतारामजी सेकसरिया

कामकाज के सिलांसिले में हचा है। उस पत्र व्यवहार को इस समय छापने का कोई ग्रयं नहीं है। बाकी जो मेरे पास दूसरे पत्र खाते गये उनमें ज्यादा पत्र मेरे पास स्नेही सीता-रामजी से सबस्थित हैं। उनमें भी वनस्थली की ही कुछ न कुछ बात या गयी है। जो हो,

(पिछले महीनों में मेरा जितना पत्र व्यवहार हुआ है वह प्राय सारा वनस्थली के

उन पत्रों में से बहुत शोड़े से पत्र नीचे दिये जाते हैं)

(१)

# हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री सीताराम सेकसरिया के नाम

₹७-११-७३

ग्रापका ११-११-७३ का पत्र मिला। भागीरथंदी का पत्र परसो भिल गया था जिसका उत्तर मैंने कल भेज टिया।

हुनिया की, देश की हालत जो है सो ही है श्रीर जैसी वननी होगी वैसी ही बनती जाएगी। उसी में हम रह रहे हैं, उसी में रहते रहना होगा। उस हातत के सितिश्ति में सपने करने का मा सपने में हो मकने का कुछ लगता नहीं है। इसिए देखते रहना चाहिए, जो ब्यावहारिक स्नमर सपने ऊपर पडने वाला होगा उसे पुणतते रहना होगा। मेरा स्वमाव स्त तरह की चिन्ता करने का नहीं है। आप भी बिन्ता न करने की कौता करने को नौता करने का नहीं है। अपने को नौराम है है जम के बारे में अपनी नारसन्दर्ग आपस में बात करने मम्य जाहिए करने । भीर क्या करने बाते हैं हम लोग ? देश में किसी दिव वंडी मारी उपल पुपल जरूर हो सकती है। सपने सामने वैसी स्थित शाएगी तो उसे भी देख लेंगे।

बनस्पनी के बारे में खास बात यह है कि मेरे धवस्त हो जाने से पहिले से धयस्त रानानी को ज्यादा दोडवूग करनी पड रही है और क्याम पर भी ज्यादा बोका धाया हुआ है। प्रपने को सलोच इस बान का है कि ये लोग सूची सूची वह कुछ फेल रहे हैं। इस मामने में बनस्पती का माध्य बहुन जोरावर है। मैं निरस्तर ध्यान में रहता हूँ, लिखता रहता हूँ म सुन्ताब देता रहता हूँ। वो बन्ति है वह भावना में है धौर भावना अपनी बहुत पक्की और बहुत अबल है।

माप उन तीनो वातो पर जैले भी हो वैने प्रमल कर डालिए। जैला चाहते हैं बैला का बैला न हो सके तो जैना हो सके वैले का ही खुषी के साथ महूर करलें। पर किसी भी हानत में फ्लेंग्ले. गका करते न रहे।

बनस्पती समाचार के सिए कभी कभी में सिख देता हूँ, भीता मेरे वां में होता है बैना। पर प्राप निश्चित्त रहे कि मेरे पाग चित्ता जैसी चीत्र की जगह नहीं है। विचार चलते रहते हैं, सो प्रापा और विख्वास से मेरे हुए होते हैं।

समाचार भेजते रहिए।

# श्री सोताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

### 78-89-03

साएका १७-११ का पत्र नर की साम को मिला। धात्रकम पत्र विगते में समय हा हुस हिसास नही रहता। इने पूजी एस बान की होनी चाहिए कि चाहे जैसे ही मिल हो तो तो हैं । धात्रकल विजयों को गड़वड़ी भी बहुत गहुती है, एक धात्मी ने कहा कि विजयों माहें वस बत्ती आठी है दससे बहुत धमुविया होगी है तो किसी ने कहा विजयी धा जाती है भीर सुविधा हो जाती है दसकी नुष्टी सानी। जो बहुत कर कार्मी में देश हुई है और हो गही है उगमें चाहे जब बाहे जो हो सकता है। इसिवए मानम की यह तीयारी होनी कारिए कि जो कुछ होसा उससे हम सफ्ती मुक्यि करके नदीय मानेंगे। धानो का तीत भीर माटी का दिया सई हो बाढ़ी से काम पत्रांदे वालों को शायद धनुविधा गही होगी।

हुने याद शाया कि नसनऊ काहेश से में टब्द शी के साथ नहा के हरिजन साथम में टहरा था। गत में रोशनी की जरूरत हुई। टडन बाने कहा किम प्रकार की रोशनी मन्द्र करते हो। मैंने कहा ओशी आप मदद करें। तो उन्होंने मादी का बशा जा दिया और तेत ताती की व्यवस्था करते। एनका प्रकार काम ने नहीं गहा था एक सुद्त से इसकी भुशा किया जा पट टडन की के ताथ उसका आप्रकार करता। यह टडन की के नाथ उसका आप्रकार करता। यह उसका में मही पर हमाने में साथ उसका आप्रकार काम जा वस करता था।

श्रीपके मानन की निवार्धों ने लेगा थोडा परिचय को मानना चाहिए। मैं बोच रहा है अरिके मानत से कुछ मजब ने एक परिवर्णनमा था रहा है। कभी कभी साथ पह दिया करते हैं कि 'से भीतर चवा बात बोर बाहर नहीं निकर्ण । बचने कार्य मा निवास मुक्ते भी कहना है कराना है बड़ कहता कराता रहे।" यह पूरी वात नहीं है थीर पूरी हो में; नहीं नक्ष्मी । यह तो आग ही जानते हैं कि वह कपा है किता है और किन प्रकार का है सकता है या होगा। यह विचार ही है, बहुत वाले ऐसी है जो हम बोचने रहते है। यह एक मानन किया है। यह नवार ही में दो निवार रहा है हमका न तो कोई विवार कमें है, न

न्तरभागि के काम जा बीम्ड रतनंत्री क्षत्र वानने सारे मरिवार वर ही विदेश कर हे है। मब प्रापक बाहर न जा सकने के कारण यह मिर्चाद वन नशी है। प्रापके मानन पर नमस्पती का बोम्ड दो है ही भीर नह होना क्षत्रभागिक भी है। ऐना कार्र गयी या व्यक्ति नहीं वो आपको इस बोम्ड से युक्ति है बके। २८६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

गुस्देव के मानत पर विस्थारती का बहुत वीक रहता था। वे कई बार कहा भी करते थे कि विस्थारती की विम्मेबारी नेने बाला कोई मिलता ही नहीं। मिने गायद आपको पहते भी तिखा है कि गायोजों ने जनते कहा था कि विस्थारारी को निर्माण पहते भी तिखा है कि गायोजों ने जनते कहा था कि विस्थाराती चलती रहेगी यह और उन्होंने जनते कहा भी। वाषीओं ने जनते कहा था कि विस्थाराती चलती रहेगी यह साथ मानते। आज विस्थाराती चहुने से अधिक बढ़ी ही गयी है। उसने विस्थियात्य का रूप मानते। असने त्यां है पर पुष्टेव की विस्थाराती थी उसने दर्शन करके जो विचार भाव पन में बाते ये वे इस रूप से नहीं बाते। एक व्यक्ति विशेष की एक गायित होती है। उसने अधिक स्थापता होती है। उसने अधिक स्थापता होती है। उसने स्थापता होती है। वह सब में की हो सस्ती है। वर्ष का मानते होती है। वह सब में की हो सस्ती है। वर्ष का प्रमासती का बसाया हुआ वेड़ा जजहजा नहीं, उसने लगाया हुआ वृक्ष नष्ट नहीं होता। वह ससा सदा प्रपोप मुस से रत संकट बीता है, वस्तव साम करती रहेगी।

माज को कठिनाइयों है उनके लिए धाप को कर रहे हैं उसमें ही उनका हत निकलने बाता है। बनस्वली का भाष्य और उसका काम धपने बाप में ईबबर का काम है भीर कुछ ने कुछ प्रच्छा होने बाला ही है उनको हम सोग नहीं जानते।

मुक्ते बापने जो तीन बाते करने के लिए कहा या उसका मुक्ते पूरा ख्याल है।

नरस्थली समाधार की उडीक रहती है। उससे बहुत सी बावें मालूम हो जाती हैं भग झापका लिक्षा पढ़ने पर आपके मानस की किनाओं का भी कुछ पता चल जाता है। यह खुर ही उपयोगी पिषका है। इसे बराबर प्रकाशित करना और समय से करते रहना चाहिए!

रवनकी प्रच्छी होंगी। घपने शरीर का बोक तो है ही, बर प्रसती बोक तो प्राप्क साथ को निमाने का है, चाहे नह वनस्थती का, चाहे किसी प्रकार का हो उन्होंने सवा प्राप्के विचारों के, मन के और कामों के बोक को ढोया है और बहादुरों के साथ, हिम्मत के साथ, पुढिमानों के और जिम्मेबारी के शय ढोया है और ढोती रहेती, इसमे जरा भी शका नहीं है। निसी वडे प्राप्तमी की पत्नी बनना क्या कोई सामान्य काम है? क्या वह किसी प्रकार की मुक्त नुविधा को मान कर मकती है? उनको तो पिसते रहना है भीर बहु उस पिसते रहने में ही सुसमाने तो चले, नहीं तो क्रस्ट ही क्रस्ट है।

सबको प्यार प्रकाम नहें। घर के लोगों का समाचार जानने और पूछने का तो समय ही नहीं रहता और ही धौर बातों से छुट्टी नहीं मिलती। सब घच्छे होंगे। वनस्पती का वाधिकोत्सव बहुन प्रच्छी तरह सफल हो गया होगा। बाई का हाल चाल तो जैता चल रहा है चनतां होगा। उनकी सेवा धाप लोगों हारत होती है इसलिए जीती है। भाई भागिरपत्रों पहलें से प्रचेह्न वह वहां जा सकता है कि धव वे पहले की स्थिति में करींथे करीज़ हो गये हैं। (5)

## हीरालास शास्त्री का पत्र श्री सीताराम सेकसरिया के नाम

8-87-63

पापका २४-११-७३ का पत्र कन मिला ।

सावरूम प्रव्यवस्था कुम्बरस्था का जास स्वरूपा है, विद्वान्दरीनता का नाम मिद्रान्त विमा है, सस्त्य का नाम स्वर है, जोजुषता का नाम न्याग है, रसर्विष्टता का बाम सेवा है स्वर्याद। स्वर्मिष्ट प्रपने को हिस्सा टरह को बिन्दा नहीं करनी चाहिए। देखते जाना, चने मैं मच्चा काम करते जाना, हिसी बदवार की मतीबा क्यान।

साई का हाल है जो है हो। और सब बांग मंत्र से है-सिडार्स, मुहानिनी, जागुनोप प्रपत्त काम तुरू कर रहे हैं। वाधिकोत्सव बहुत सच्छा हो गया। त्यारा धर्माधिकारी २३ की हा गर्य थे, २६ तो ग्रंस | विवस्ता कारकारी समाचार से पढ़ना। (8)

# श्री सीताराम सेकसरिया का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

8-83-93

प्रापका १-१२ का पत्र मिला । धाएने जो धान की व्यवस्था के नारे में निला है 
गृह बिल्कुक ठीक है। ऐमा लगता है कि फिलहान तो ऐमी ही व्यवस्था चलती रहेगी धीर 
एमी को प्राप्तर बनाकर जो लोग प्रपने स्वार्थ तिद्ध कर रहे हैं वे करते रहेंगे। यह कहा को 
तकता है कि कुए में मान पढ़ गयी है। सभी धागल हो जाए, स्वार्थों हो जाए तो फिर क्या 
कहा जाए। जब कामदेव बितयी के धानने वस्त करने यया तो उनने इस तरह की 
नियति की चना की थी कि जड चतन सभी काम के दस होकर कामदासना में लिप्त हो 
गये। उस समय का एक सोस्टा मुलबीदास्त्री का लिख रहा है—

परी न काहूं धीर, सबके मन मनसिंही हरे। जे राखे रचबीर, ते उबरतींह काम सं?

पह महा जा सरुना है कि बाज इस समय भी नव प्रलोधनों, नव भ्रष्टावारों तथा श्रीर सनेक प्रकार की ग्रनितकता से बही जबर सकता है जे राखे रचुबीर । जिसको भगवान ने बचाया वे ही बचे ।

प्रपत्ता सब ठीक ठीक चल रहा है प्रीर इंक्यर कुपा से चलता रहेगा । प्रापके तो एक विरोध भार भी है। आज बहुत सकट बोर कप्ट के समय भी महती ने रह मकते हैं। इस नार प्रापने अवकी बार वनस्वाली की अपनी कमाई चौर लड़कियों से होने वाली प्राप्त नती पर हो जोर दिया है यही मबंदे अच्छी है, स्वायनम्बन की । इसमें कितना मुधार किया जा सकता है कि भारत सरकार, राजस्थान सरकार चौर प्रम्य राज्यों से भी सहायता सिलती है तो भी मिलती रहें। पर बहु भी यनस्थाली के स्वरूप के अमुकून मिल तो हो ठीक है। भारते में तो किसी प्रकार की पिष्ट खुडाना ही है। किसी से सहायता लेना या मानना मुक्ते बहुन दिनों से प्रस्तर रहा है। खासकर चवते बनी लोग देश के राजनीति वालों से यानी मन्त्रियों से प्रधिकारियों से सम्बन्ध चोड़ने लगे तथा उनको ग्रीर ग्रंपने को भ्रष्ट करने में यहादुरी जातों लगे।

वनस्पती का विद्यारा बुतन्द है इसने क्या शक है, बहु बहा हो बुतन्द रहने वाला है। सच्छी याती का, अच्छे कामों का परिस्ताम कभी बुदा नहीं हो सकता। प्राप्ते भी यह लिखा है कि वनस्पती अपने को किसी को समलानी नहीं है। यह ठीक है। गुस्देव की रिवर्शित दूसरी भी। उनकी विक्व भारती की अपने वनस्पती की वितनी स्मार्टि है उससे कम नहीं भी। पुर उनके पास सपने कहें जाने बाले सिर्फ रावीशाबू वे जिनमें दम नहीं था। यह एक बार बात करते हुए मुक्टेब ने अपने मुद्द से मुखे कहा था। आपके थाश रुजनी है स्थाम है, मुखीला है, सह है, प्रोफेसर सहन्य है और की कई लोग है बेचारे गुक्टेन तो नाचार में 1 में बानता है उनके मुक की स्थाया की।

पारका स्वाम्प्य कीक रहना चाहिल् । बाहर नहीं वा सकते तो बचा ? बैठे बैठे आप यो करते हैं, कर सकते हैं, उनना भावद दूसरे लोग बाहर जा बाकर भी नहीं कर सकते ! बाहर जाकर चन्दा करने वाल भी आपने ही बन और अंश्ला तेकर या सकते है, काम कर पत्ती है ।

### (±)

श्रो सीताराम सेकसरिया का पत्र हीशलात शास्त्री के नाम

24-87-58

भापका १६-१२ का पत्र कल मिला ।

दग में जिस तरह को स्थित वननी वा रही है उनमें सबका कर वह रहा है। जो भीग बची बड़ी सामाजों को नेकर बैठे हैं उनके सामने बची जगी समस्त्राप पैदा हो रही है। मनस्मानी भी एक बड़ी मन्दा है। उसके सामने तो स्थापक कठिनाई खुटी ही रही है, पर महागाद के कारता बड़ कठिजाई और बड़ी ही है।

भागे, बनहे, रहने भादि पर यो उपर्व बादा वा उनमं करको दूबि करनी पहेंची तथा मिकिनामो विश्वको तथा क्रम्य समेवारिको का नेगन की बदाता परेवा । बनलभंग हो बहुत बग्नी है। यहा तो केन्द्री काम करने वाने लोग है। बदना बदट बदवा है वतरा बनुत पा क्रियम संस्कार दे देखी है तब भी बदन हिस्स का दो देगा पड़ता है यह भी बड़ गया है। बनस्की कर मासिक मासान है, मी बाग बसको बाकि होगा है।

मीमित प्राप्तकी बाले सीगों का कर वह रहा है बीर उनते प्रभाव का बनु वह है हिं हैं, प्रभाव का बीवन स्वीकार बस्ता पर दक्त है नौहरते केला नोगां का महीन का वीनपा हमना काकी कर का होता है। एक तो यह निर्मान है। एक तह है कि नोगों के पांच इतने अधिक स्वेच था परे है कि स्वाने के निम् बाहु पर्वे है । वह विवक्त सरद है कि वे रूपों को कहा पर्ये। स्पांचे के दीही साने म एक वी। हमार के विव मायद ती हिपाबर रखें तो पढ़दे जाने का बर, जिसमें हम्में की एम और प्राप्त के नियं मायद ती गागा परे या माय तरह के काळ काने वह । वह दिन है कि यतन तरह ने एसे पांचे है पीर राजन नहने ही को की हो जह है। विदेशों से यह वारों के वो वार्ष है, करोड़ा गई। सरों स्वार्थ रिव्ही दिनों में बिहंत वार्ष है। खुता देशाई हो प्याहे। यह गबा साते हैं २६२ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

थ्रीर करते हैं। इन्दिराजी के राज्य में जिस प्रकार व्यापारियों के पास रुपये प्रामे जायद एहिंग कभी नहीं यादे होंगे । सहमार्द बबते का लाभ व्यापारियों को मूच मित्रा है। फिर भारत का बहुत तरह का माल बिदेस बहुत जोर से जा रहा है। वह बहा सत्ता है। गरीयों हारों के जारे ने समीरी के बढ़ने का अच्छा मौका दिया है। देश मे शराब, व्यन्तिनार, चोरी थ्रीर नाना तरह के व्यम्त तथा ऐमाली सूच बढ़ रही है। श्वरा होना, कसे होगा, यह सोचा नता जा रहा है, ये चीजे शहरों में पूच बढ़ रही है। क्या होगा, कसे होगा, यह सोचा नहीं जा सकता न सोचना ही सायद ठीक है। किन बातों में प्रथना बस नहीं उनकी विस्ता करके भी क्या करना? प्राप तो एक प्रकार से जो काम करने का है जो किया जा सकता है उत पर ही विचार करते है। शायद साथ कई दिनों तक प्रयदार तक नहीं पढ़ते ।

धपने परिवार के मत्र लोग धपने धपने डय से काम से लगे हुए हैं यह बहुत प्रच्या है। स्थाम, सुनीता, गकु तो बनस्वती के ही ही गये। बनस्वती के लिए एक प्रकार से प्रपने घर मे ऐसे लीग नैयार होते जा रहे हैं कि वे हर हानत में बनस्वती को सम्माने रहेगें। बनस्वती तक्तीफ धाराम जो भी हो, पर वह प्रपने धापसे वड़ी चीज बन गयी है, बनती जा रही है तो वह धपनी रक्षा भी कर ही मकेवी। इतनी वड़ी सस्या है। यह क्या कर महत्व की बात है।

रतनकी बाहर से धा गयी होगी, श्याम अबपुर धौर दिल्ली का काम अबधी तरह कर मकेना यह तो एक प्रकार से साबित होना जा ही रहा है।

(£)

# हीरालाल शास्त्री का पत्र श्री सीताराम जी सेकसरिया के नाम

### ₹१-१२-७३

दुनिया की धीर देश की हानन की जैसे मैं विशेष किरता नहीं करता है वैसे ही मेरा धापने कहना है कि धाप भी उनकी किरता न किया करें। उक्का धनर अपनी सस्था पर धा मर पर जिस हद तक पडना होगा पढ जायगा धीर उत्ते धपने को जैसे तैस सम्भावनार होगा। मर पर जिस हद तक पडना होगा पढ जायगा धीर उत्ते धपने के भी है जाएगा। अपने अपर सस्थामों की कहाता रहता हूँ जो गाव के साथ होगा अपने साथ भी हो जाएगा। अपने अपर सस्थामों की क्यादा जिम्मेदारों है तो हैं—उन्ते भी जैसे होगा ममभास लेंगे। नहीं सम्भलेंगी, कम समलेंगी वा वह भी देशा जाएगा। बेकार की विन्ता करने का ससर घपनी शिंत की धराने को होता है। किया मनूर्य की विद्या में भी ज्यादा जलाने वाली होती है सी है क्यान होता है। किया कुन के बिद्या ने भी क्यादा जलाने वाली होती है सी है स्थान कर को वनस्थाने के लिए कम समय जमाना पढ़े। पर मजदूरी हो जती है कर दार । दूबरा धादमी युवकर जैसे करने वालों अपने पास है नहीं। चन्दे के लिए बाहर जा मकने वाली ससल में प्रकेशी रतनजी ही है। मुक्तो तौर पूप करने की दुवाजत न अंतररों की है, धीर न रतनशी धादि की। मुक्ते जुद को दर नहीं स्पता है, पर रतनजी के बर को मैं की निकाल ? ऐसी हालत में उनकी गाजियनियम मैंने मन्द्रर कर रखी है।

### कुछ अन्य पत्र

उपर दिये पर्य पत्रों के शलावा मैं पाच विशेष पत्र नीचे दे रहा है।

- मेरे प्रिय शिष्य डॉ॰ क्रव्हैयालाल सह्न का पत्र जो एक दिन सनातक मेरे पास पा गगा था।
- चादा चर्माधिकारी को लिखा गया भेरा एक पत्र । दादा धर्माधिकारी वनस्यली क १६७३ के बाधिकोत्मव के छवमर पर मुख्य खिलिय बनकर आये थे ।
- वॉ॰ प्रफुल्सक्ट पोप का एक पत्र । प्रपुत्रक बाबू वनस्थनी के १६७२ के बाधिको-राव के बृक्य प्रतिथि थे । उनका विवार वनस्थती के भ्राकर रहते का होते लगा था, पर सन्त वे उन्होंने उस विवार को छोड रिया ।
- दादा धर्माधिकारी का पत्र जिससे उन्होंने सस्कृति स्वीर सम्यता की परिभाषा करते का यस्त किया है।
- शका माहेत कालेनकर का वज जिसमें उन्होंने मस्कृति और मस्यदा की स्वाच्या करने के बाद मृत्यु के यियद में प्रयंन विश्वार प्रकट किये हैं। मैंने नाका माहेद को निका या कि साथकों प्रस्तु की प्रतीक्षा करने की क्या प्रावस्थकता है? मेना मानना है कि मृत्यु की ककाना करना ठीक नहीं है, उसे प्राना होगा तब यह प्रयंने प्राप पा प्रापती.

(8)

# डॉ॰ कन्हेवालाल सहल का पत्र हीरालाल शास्त्रों के नाम

### 20- 19-25

प्राच चानमा १० वर्ष पहुने की स्मृति तात्रा हो रही है, जब वर्ष १९२६ वे राज-रचार द्वारास्तर में मैंन रहता मुक्त हिला गा। सह नर्ष धारको खरखप्रमा में रहन्न जाने, कितनी नार्वे धारफो तीक्षी धीर कितनी बांध उस नशावरण है सीधी जो आरने निर्मित्त कर रिवा सा ? यह झाज कोन विकासस करेगा कि नवी कहा का यह खात्र उस जमाने में Young India असवा Hanyan का प्रत्येक नेश्व करे बनीधोग से पद्म करता या और जो सर्पे भी के नवे सकद साते से, उन्हें कोझ में देन्दर कर सहने सब्देश संस्तर की वृद्धि किया करता था। ऐसा ही एक सब्द है Conundum जो मैं गर १६ सा २० में दीन राग या।

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

स्रापका सच्छा पुस्तकालय या, उताबे न जाने कितनी पुस्तकें मैंने पढ़ी होगी। जो हस्त-लिखित पित्रका हम लोग निकाला करते थे, सम्भवतः उस्ती के सस्कारों के कारण प्राव में पिछ्ले रे रे वर्षों से 'मारू-मारतीं' जेंसी श्रीम-पित्रका सम्मादित कर रहा हूँ। मेंने स्वम हो स्व १९४२ में रसे प्रकाणित करना गुरु किया था और खाज यह पित्रका तीननगाड, इधिया स्वाप्तिम लाइबें रो, सन्दन तथा Indiana University खादि सनेक स्थानों में जाती है पीर देश-विदेश में हते साम्यता प्रान्त है। जहां तक मुक्ते बाद है, प्राय एक बार लिखकर काट छाट नहीं करते थे। मैंने स्वपनी स सुनियों ने लगभग सठारह हजार पृष्ठ लिखे होंग औ सुद्रित कम ने लगभग ६ हजार होंगे। उनकी कोई भक्त भी साज करें तो बड़ा दुष्कर कार्य होगा उनके लिए। हुछ विशिष्ट लेखों को यदि छोड़ दें नो भी वे सब मैंने एक ही बार

हिन्दी तो भ्रापसे केवल १०वी कक्षा तक ही पढ़ी थी-मपने मंग्रेजी भ्रोर सन्कृत के ग्राजित झान के वल पर में हिन्दी-सन्कृत का ग्राम्यक्ष भीर शोफेसर वन गया। इस्टर भीर बी० ए० में मैंने हिन्दी विषय ही नहीं लिया था। वर्षों तक मे रोज लिखता था जिसका नतीजा भ्राज सामने, है साधना कट्ट कर होती होगी किन्तु उसका फल किउना मधुर होता है।

प्रात काल चार वजे निवम से छात्रास्त्य के छात्रों को वणाया करता था, प्रात: काल जल्दी उठने की वह धादत साज भी बनी है। बनीन पर सोना, दीक्ट के प्रकास में पढ़ना और सेजाड़े के एत्सरे के नुक्कड़ पर स्थित नन से पानी लाना थात्र भी कितना मुखद लगता है भेर गर्वपूर्वक जनका स्मरण करता हूँ। कालिदाम ने रचुवस में लिखा है कि राम ने अपने महलों में दडक बन के चित्र लगाये थे क्योंकि "आप्तालि दु खान्यदि दडकेषु सचिरयमानानि मुलाग्यपुत्रन"

पारीक पाठमाला में कोई भी परीक्षा शायद ऐसी न रही होसी जिसमें मैंने प्रथम स्थान प्राप्त न किया हो। प्रश्नें जी और सस्कृत में तो आगे चल कर भी प्राय. सदा ही प्रथम आता रहा और सन् १६३२ की बी॰ ए॰ की परीक्षा में मेरा ही स्थान सर्वप्रथम रहा या। विभागी में आकर पाढ़ेजों के स्थान पर ट्रस्ट के सर्वोच्च पद पर पहुँच पद्मा और उतके लिए भी मैंने कोई प्रयास नहीं किया। मोचता हुँ कि राजस्थान खाबालय में धापका सरक्षण और स्नेह न मिला होता तो मेरा भावी जीवन न जाने क्या स्थ से लेता। धाज बड़ी श्रद्धापूर्वक प्राप्त स्थापका सरस्य करता है।

(7)

### हीरालाल शास्त्री का पत्र दादा धर्माधिकारी के नाम

### २५-१-७४

स्रापका २१-१-७४ का पत्र मिला जिससे लगता है कि मेरे १-१२-७३ और ६-१२-७३ के पत्र स्रापको मिल जुके हैं। चि० तारा को प्रह्लाव का १६-१-७४ का पत्र पता नहीं मिला होगा या नहीं। बड़े होटो को मिर पर विठा सकते हैं। तब आपसे क्या कहा जाए ?

कई कारएों से वनस्पती के झानाभी उत्सव के लिए मुकको अब्युदानी ही ठीक जबते हैं। पर उत्सव नवम्बर के पहले दूबरे मप्ताहों में रखना सम्भव नहीं होगा, (३ नवबर को दोनावलों जो है। २५ नवम्बर ते ५ दिखमबर तक किन्ही दिनो में उत्पाद करना होगा। में सम्युदाबों को लिख रहा हूं और सिख रहा हूं भीरेन दा को भी। पर उनके इसर मा मकते का मरीसा मुककी नहीं होता है मुक्यवचा उनके स्वास्य के कारए।

महारेबी बहिन का धाना बहुत अच्छा रह सकता है, पर वे धाने का वादा करले तव भी उनका भरोसा होना मूश्किल है।

प्रस्यक्षत्रीवनशास्त्र के बारे में खापने निखा उसे में बिरोधार्य करता हैं, स्पोकि प्राप मुक्तकी प्रसप्त करने के लिए कुछ नहीं लिख सकते। जीवनवृत्त के खलावा मेरी देटी फूटी रखनाओं में से कुछ रचनाए धायको सब्छी स्य सकती हैं, सो पवास के करीव ? मेरे लिखे हुए किन्ही लाम कर संभी जो के पत्रो पर भी निगाह डाम लीजिए, मौका सिलने पर।

चनस्पती के बारे में ग्रापंत्र लिखा उसे में स्वीकारता हूँ। कठिनाई यही है कि मुक्त विचार को प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने में जो जोशिय हूँ उसमें रतनजी ग्रीर में दौनों हरते हूं। पगानी वेटियों के हम माजियन बने हुए हैन ? बनस्पती में छोटा सा शाध्यम चलता होना तो बाल बुमरी होती।

सस्कृति भीर सम्पता की परिभाषाएं ग्राप जब लिख सकें लिखदे ।

चि विमला को मैं बाबू के बते पर लिख रहा हैं। पर मुफको लगता है कि वह मेरे बन की बायद ही हो तके। चि बारा से तो मेरी चुट्टी ही चुकी है। वह चाहे तो सुनह का पैगाम नेज तकती है। चि इन्दु टिकेकर का क्या जिक बावने मुफ्ते किया वा ?

श्रीर तो ठीकटाक निम रहा है। स्वतंत्री बच्चे थीर पर निकानो बाली है। गैने उनके साथ जाने का साबह किया उसे उन्होंने जीने तेंबे गान विधा है। मैं सोचता है मेरे निकते बिता काम नहीं चलेता। स्थिति विकट से विकटतर विकटनम हो रही है। मैं कहता रहता हूं भीर सामद सापकों भी निख जुका हूँ कि बात्सविच्यास हो मेरा, बनस्यली का एक मात्र सहारा है।

### (**₹**)

#### Dr. P. C. Ghosh's letter to Hiralal Shastri

3-4-74

I ought to have written to you earlier. Sadhana was repeatedly saying "write to Apaji". I must apologise to you. I was thinking of going to Banasthah, but in view of the situation prevailing in W. Bengal now I can not now think of going elsewhere when people are suffering so much I must also share in their suffering. But I can only be a silent spectator of the tragic drama I only pray to God. Sadhana loves Banasthah. But she also does not think of leaving Bengal at this time. Morever, her place of work is really Bengal Sadhana has been appointed Secretary, Gandhi Memorral Museum at Barrackpore She is to join on July I Before joining she is even thinking of going to Banasthah once for month or so, what would be your advice in this beha.f.

### (8)

## दादा धर्माधिकारी का पत्र हीरालाल शास्त्री के नाम

85-5-08

१४-६ का कृपा पत्र कल ही मिला। प्राप बीच-बीच से मुक्ते याद कर लेते हैं मेरे लिए यह परम मद्भाष्य और ज्ञानन्द का विषय है। ईश्वर से प्रायंना है कि इसी प्रकार केनेह-कृपामाजम बना रहू।

मैने ब्रॉस्टर का ब्रॉपरेशन नहीं कराया। होनियोपेबिक, बायुवॅदिक, ऐसोपेबिक, प्राकु-तिक सभी तरह के उपचार कराना रहता हूं। ब्रव तक तो व्याधि काबू में है। बस्ध में भी ध्याममाल भगवती नामक एक सभ्यन है। कई वर्षों तक वर्षनी में क्याबार के लिए रहें। प्रव निवृत जीवन है। उन्होंन पुक्ते अर्थनी की कुछ गोनिया दी। बहुत साम हुमा। नागपुर के स्थान पर सापरी एक साव है। वहा एक तहरस सम्यासी ने एक 'इस्टोठेशू र प्रॉफ नाइफट्रायं नाम की सत्या खोली है। 'इलेक्ट्रोन्स' धीर 'प्रोटोन्स' की तरह 'वाइफट्रोम'। वे दु साध्य रोगी पर यत्रोपचार करते हैं। जाने से पहले किसी योध्य डॉक्टर से निदान कराना होता है। उपचार के बाद फिर डॉक्टर की दिखाना होता है। मैं वहां तारीख २१ १ से स-६ तक ब्रीर १६-६ से २३-६ तक उपचार के लिए रहा। लेकिन प्रांस्टर प्रिन्ध सिकुडी नही। प्रभी तो होस्योपेबिक और वह अर्थन दस्ता सेता हूं। बीचेबीच सर्थन की सता हे जेता हूं। अर्थारेशन के बिना चारा ही नहीं रहेगा तो करा लूंगा। प्राप तो 'तुरत बान महापूर्य नाले जो ठढ़रें र ऑपरेशन करके रोज मुक्त हो आएगे। पत्र ब्यवहार २६७

मेरी समक्ष में सम्भता जीवन की वह परिएति है जिसमें दूसरे जीवों के जीवन भे बापा पहुँचाये बिना व्यक्ति या व्यक्तिसमूह अपने सुख और समुद्धि के साथनी तथा उपकरएतीं का सार्यिक्तर, समोजन तथा प्राप्ति सम्बन्ध प्रवालों के और दूसरों के सहयोग से करता है। इसी जीवन पद्धित के स्वीकार और विकास को मैं सम्यता कहा गा।

सस्कृति उन विशिष्ट सस्कारों, धाचारपमों तथा उत्सवो धौर विधियों का नाम है दिसमें ब्यक्ति या व्यक्तिसमूह की दूसरों की मुजन्मुविया के प्रति झास्या एवं झादर व्यक्त होता है। ऐसी परम्पराधों बीर उत्कारों को मैं सत्कृति कहूगा। इसमें पड़ीसी धर्म की प्रधानता है। उसी इंटिंग साहित्य कवा धौर सामाजिक रीति रिवावों का विकास होता है—पारस्परिकता की भूमिका थे।

प्रापने जो सकेत किया है उसमें भीर मैंने जो खिला है उममें, बहुत ग्रन्तर नहीं है। मैंने भी कोई बैकानिक तर्केषुद्ध परिभाषा नहीं को है। केवल इचित मात्र है।

बि॰ तारा करीब एक महीना कर्नाटक वाजा कर रही थी। उसे तारीख ६-६ को स्वासक पूना जाना पड़ा। उसके पिताजी का ८-६ को स्विरोजन हुसा। पेट की सानी का केसर है। बि॰ इन्दु टिकेबर केस्स में मुख्यकरजनर होती हुई उत्तरकाशी पहुँची है। स्नास्त ११ के बाद मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश राजस्थान, हरियाए। और पजाब की याजा करों।। राजस्यान में वनस्थनी को याजा प्रवस्य करने के लिए मैंने उसे मिखा है। पि॰ विसल नॉर्व में है। बहा से स्मेरिका जाएगी।

भी २५-७ से यही हूं। मितन्यर के धन्त तक यही। कृषया प्राप प्रपने प्रापरान के समाचार प्रवस्य निलायें। "तस्य की खोत्र" और 'प्रत्यक्षवीवनवास्त्र' दूसरा भाग की उत्सुकता ने प्रमोक्षा रहेगी तथा 'प्रपनी कहानी, प्रपनी ब्वानी' की विशेष ।

मौ॰ रतनजी को सादर नमस्कार । ज्ञेप परिवार को आजीर्वाट ।

(2)

काका साहेब कालेलकर का पत्र होरालाल शास्त्री के नाम

30-2-08

आपका ता० १४- द का कार्ड मेरे हाथ मे है।

'सस्कृति' के लिये culture सब्द काम में ब्राठा है। 'तस्यता' के लिये civilization। 'सस्कृति' में मुख्यतया नैतिक, भावनारुक धीर रसिकतारुमक धारयें का खयाल ब्राता है। 'संस्कृति' में standard of culture मुख्य होता है। नैतिक ब्रादर्श जितना हतम किया हो, वही है culture । उसके पोद्धे जो moral standard रास्ट्रमान्य प्रयवा ममाजमान्य होगा, वह होगा उमका intellectual माग भयवा philosophical भाग । माय-साथ metaphysical धीर aesthetic दोनों के जो मान्य ग्रावर्ज हो-वही है सस्कृति ।

सम्पता में सस्कृति का इन्कार नहीं है। लेकिन विज्ञान और कला के द्वारा रहन-सहन की जो सहूनियतें और सस्कृतिता स्वीकृत होती है उसी को सम्पता कहते हैं। सस्कृति में standard का महत्व है, और सम्प्रता में जीवन की सफलता success in life का विचान प्रिक है। सम्कृति और सम्प्रता—दोनों संसमात्र का खवाल है ही। लेकिन सस्कृति में व्यक्तिगत दस्कृति का स्वाल प्रिविक है।

'प्रत्यक्षजीवनशास्त्र' का दूसरा भाग मिलेगा तव पडू गा । रतनजी की पुस्तक मिलेगी नव देखु गा ।

'सत्य की खोज' महत्व की चीज होगी।

में मृत्यु को सकट रूप नहीं देखता। , बाज्य के झन्त मे पूर्ण विरास आता है, वैता ही मृत्यु है। एक कडिका (वैरेबाक) पूर्ण करते हैं, दूमरी कडिका की तैयारी के जिए। वैता ही हुन्यु है। मृत्यु इसी अरण सा जाए तो उबके नियं तैयार हूं। भीर तो बस्त तक उत्ति राह देखनी पढ़े तो भी तैयार हूं। मृत्यु उस्ता, या बस्ती लाना, दोनो का उस्ताह मुभ में नहीं है। मैं तो मृत्यु को ईक्वर की एक सुन्दर, कव्यायुकारी देन मानता हूं। जीवन और मृत्यु का ईक्वर की एक सुन्दर, कव्यायुकारी देन मानता हूं। जीवन और मृत्यु का जिनन एकच रहना चाहिए।

ग्राजकल बहुत सी बाते भूल जाता हु, यह भी ईश्वर की देन है।

# (ख) पद्यरचना

१० महीनों के अर्से में में बहुत बोड़े पद्यों की रचना कर सका। उनमें से कुछ पद्य नीचे दिये जा रहे हैं।

चिरतत

( ? )

दिखता नहि बीज अदृश्य वना, रज भी दिखतान अहश्य वना। यह मानव का तन खुव वना, पशुकातन भी यह खब दना। इसमें कितने कल ओ पुरजे, फिट है यह यंत्र विचित्र बना। यह मानव का दिल अद्भुत है, अति अद्भुनशक्ति दिमाग् वना ॥

( ? )

कव सूरज तारक चाद बने, इनकी गिनती न असंख्य वने। नजदीक वने कुछ दूर बने, फिर मेप नुदूर अनन्त वने। चलते कितने स्थिर हैं कितने, चलते वह भी स्थिर से हि वने। किसने रचना करदी इनकी. अथवा अपने सव आप वने ॥ संकल्प (३)

हम जिन्तन वारीह बार करे, हम केवल मन्यन माहि रमें। हमको निह दूसरि बात रुचे, हम एकहि कारज माहि रमें। यह मुक्किल है वह मुक्किल है, इस मुक्किल से कुछ नाहि दरे। हम जूक्ष रहे रण बेत देटे, हम जीत हुए बिन नाहि टरे।

दो की एक रूपता

(8)

हमरा जुहि रूप वही तुमरा, तुमरा जुहि रूप वही हमरा। हमरा जुहि काम वही तुमरा, तुमरा जुहि काम वही हमरा। हम काम करे तुम काम करो, नहिं मानत हे तुमरा हमरा। वस काम वसे यहि चाहत है, विन भेद किये तमरा हमरा।

ग्रर्थनारी, ग्रदंनर

( x )

नारी नही केवल शुद्ध नारी, मिला हुआ है नरतस्व थोड़ा। विशुद्ध कोई नर भी नहीं है, स्त्रीतस्व भी है नर मांहि थोड़ा।

( ६ )

(रतनबो को दिस्ता स्टेशन पर चनता देखकर) रतनजी तन भार सिये चर्ली, कमर से टुक वो शुकती चर्ली। भर गया दम तो रकती चर्ली, तदिप वो सवला चनती चर्ली। ( 0 )

#### कामग

विवाह के घनगर पर गाये जाने वाले कामणा गीत का सन्नोधित रूप : इसमें पति-पत्नी की प्रार्थ्य एकरूपता का विक्षण है । वना हो जाज्यो हम्यार, कामण आज करू ली ।।

> था पर जाद करू नीर यां पर टोणों करू ली वना रीज्यो खन्वरदार, कामण आज कर्हली ॥ १ ॥ वनी महे भी छा तैयार, कामण बार करोजी ।। म्हां पर जादू-करोजी र म्हा पर टोणों करोजी वनी ठाडा खब्बरदार, कामण बार करोजी।। २।। वना हो जाज्यो हश्यार कामण आज करूं ली।। धाने बस में करू ली र शाने ताबै कर्रली बना बेगा हो तैयार, कामण बार करू ली।। ३।। वनी कद का महे तैयार, कामण क्यों न करोजी।। जाणै वस मे करोला क जाणै वस मे होओला बनी समझो सोच विचार, कामण फैर करोजी 11 ४ 11 थना हो जाओ हश्यार, ऐस्यो ब्याल करूं नी ॥ सारा घरकां ने रूसार सारी दुनिया ने विसार रेस्या महारी ही थे लार, देखो ख्याल करूं ली ॥ ५ ॥ वनी होजाओं तैयार, कामण म्हे भी करांजी ॥ वनी घर कां ने हरसार वनी दुनिया ने अपणार करस्या मिलजूल कर ब्योवार, कामण म्हे भी करांजी ॥६॥

वना घणा ये दृश्यार, कामण ये ही कर्योजी ॥

मैं दासी जर थे उमराव

जदभी दिल मिलवारो च्याव

म्हारा जोडी रा भरतार, कामण ये ही कर्योजी ॥ ७॥

वनी बराबरी रो प्यार, कामण काई करांजी। ना कोई दासी ना सिरदार नर-नारी दोन्यूं इकसार योही विना भेदरो प्यार, कामण काई करांजी॥ ५ ॥

वना जबरो छैं यो प्यार, कामण हो ही गयोजी ॥ भल हो न्यारा-न्यारा रूप या मैं आतम एक अनूप वना मिल्यो जुल्यो सहप, कामण हो हो गयोजी ॥ ६॥

वनी दो नींह एक ही रूप,शामित कामण भी हुयो ॥

एक आतमा एक सरीर

न्यारो कुछ नींह सब कुछ सीर अरधानारीसर तसबीर, कामण सीरको हुयो।।१०।।

(=)

#### गाली

इस्में कीमने जियाने पर सरकार द्वारा समायी बन्दिसीं की खिल्ली उड़ाई गयी है।

जाओ जाओ जी जनेत्यो,
कीरा बाज जायोगा।
राजरा कानून करड़ा,
नितरीजीगा निकले खरड़ा।
ठेंडो मीठो म्हारे पीयो,
जीमण घरां करीसा।

भाग दौड कर घरां जाओ,

मिल जावें सो वेगा पाओ।

नयी विन्दस लागगी तो,

तारा गिणता रैवोला।।

म्है भी कान जनेती वर्णस्यां,

यां सिरका ही कोरा रहस्यां,

यां वीती सो म्हा मैं वीत्या,

राजी थे हो जाओला।।

(3)

#### मेरी घृष्टता

दामोदर मिथ कृत वासी-भूपस के गीतिका बस्ते छुत्व के भीचे लिखे उदाहरस के कुछ प्रश्न मुभे १८१६ से लेकर पिछले महीने मर पहले तक खटकते रहे :—

> अलभीशवाबकपाकशासन वारिजासनसेवया गिमतं जनुर्जनकारमजापतिरध्यदेव्यत नो मया करुणापयोनिधिरेक एवं सरोजपत्रविलोचन: सं परं करिय्यति दृ खमोपमधेप बुर्गेसिमोचन ।

ईश (महेश) घोर वारिजासन (ब्रह्मा) के साथ पावक (धनि) घोर पाकजामन (११द) को लगाना बहुत उपयुक्त नहीं है। वैते ही ब्रह्मा घोर महेश के साथ विष्णु फाना चाहिए। उसके बजाए जनकारमजापति (एग) धाया सो भो कम उपयुक्त है। "मया" कहने से खुद को ही उपानम देना हो बाता है। इसलिए मैंने "नो मया" की जगह "नत्वया" कर दिया। पाख की उपमा कमन से दी बाती है, न कि कमन के पत्ते से। दुर्गति शब्द मशुम सा सगता है, उससे सकट प्रब्य बच्छा है।

इसनिए मैंने उपर्युं क श्लोक को इस प्रकार वदन दिया-

उसभीश्वरस्य वितामहस्य च भक्ति समुतसेवया गमितं जनु कमसात्मयपतिरब्ध सेव्यत न स्थया करणापयो निधिरेक एव सरोजपुण्य विनोचनः स परं करिप्यति दुःख मोप्यक्षेप संकट मोचनः

ऐसी घृष्टता मैं करता ही रहा हूं।

# (ग) लेख

वैसे हो १० महोनों के अर्से में लेख भी बहुत थोड़े ही लिखने में प्रापे। उनमें से कुछ लेख भी यहां प्रस्तुत हैं।

(8)

## स्त्री बनाम पुरुष ?

प्रकृति ने स्त्री धीर पुरुष के बशीर धीर ध्यक्तित्व को घलन-घलन बनाया है। योगी कुछ बातों में ममान है तब भी कई एक वातों में सर्वया भिन्न हैं। में स्त्री धीर पुरुष दोनी की एक दूसरे के पूरक देखता रहा हूँ। धर्मनारीस्वर की कल्पना मुफ्को बहुत सुन्दर समग्री रही है।

कत यहां वनस्वती में काका साहेव कालेतकर ने जो कुछ कहा है सो मेरी समफ में विस्कृत नहीं प्राप्ता है। प्रपने यहां भारत में कानून ने स्त्री धोर पुरुष दोनों के बरावर का अधिकार प्राप्त है। स्त्री में योग्यता हो तो उसे नेनृत्व करने से कीन रोकता है, कीन रोक सकता है?

काका साहेब ने कहा—माब तक पुरुष ने नेतृत्व किया, अव स्त्री की पुरुष से नेतृत्व छोनकर म्रपने द्वाप भे के सेवा चाहिए। में छोचना हूस्त्री म्रपने स्वभाव मीर सामध्ये के मृतुसार काम करती सामी है। उसके पान माता जनने का सबसे चड़ा मीर सबसे ज्यादा पवित्र प्रिपिकार है। वह स्रिपकार क्या स्त्री से पुरुष के पास जा सकता है? काका साहेद ने कुछ विचित्र सी बार्ते कही जिनके कारण हो के हाथ ने नेतृहद जाना चाहिए। एक तो पुरुष से ईप्या बहुत होती है। दूसरे, पुरुष युद्ध प्रेमी होडा है। तीसरे, पुरुष बोपए करता है।

ईंप्यों स्त्री में मधिक होती है या पुरूष ये ? भारत ये जिस स्त्री के पास प्राज नेतृत्व है वह ईंप्यांतु नहीं है क्या ? उन्होंने हाल में ही भारत में एक वैसा युद्ध करके दिखता दिया जैसा उनके पिता (पुरूष) नहीं दिखा सके थे। भौर घोषण करना तो मुभकी स्त्री का स्वनाव हो पालुम होना है।

इस गरे जमाने में भी कोई क्षी भी लड़की धरने से हुमरे नवर पड़ने वाले लड़के से विवाह करना पसन्द नहीं करेगी। विवाह के समय बर बच्चू में भले ही कहना होगा — दू मेरे पीछे-पीछे चल। पर हम सब लोग बचुयों के पीछे-पीछे चलने वासे बहुत से बरों की जानते हैं।

स्वी सस्तान को जन्म देने बाली धौर उसका गालन-पोपश करने वानी माता है। इसपन पित के लिए भी हुछ काम माता के जंसा करनी है। माजकल बहुत सी दिश्या घर के बाहर के काम भी करने लगी है। ऐसी स्वियों के घर के कामी में भी उनके पितियों को हाथ बटना चाहिए।

स्मी के दिना पुरुष का काम नहीं चलता, पुरुष के दिना स्वी का काम नहीं चल सकता। कोई नवका या लक्ष्मी विवाह न करना। चाहें तो उनको कीन मजबूर कर सकता है। बाकी माधारतावारा तो अच्छी, बात बही है कि स्त्री मीर पुरुष विवाह मूत्र में वर्षे श्रीर श्रवनी योषवा के सनुमार स्वाने अपने हित्ते का काम करें।

(2)

## सालगिरह विचार तरंग

१५ नवस्बर को मेंगे सालियिरह है। ७४ साल पूरे होकर ७५ वे मे प्रवेश होगा। प्राज से ५२ साल पहले मेरे एक साली राजकर्मकारी ने प्रण्यी बुद को सालियरह के मौके पर कहा या कि कितनी मूलंगा ने बात है कि जानियरह के खुषों का दिन माना जाता है। उनकी राम से सालियरह के दिन बन बात का रज होना चाहिए कि उन्न में से एक साल कम हा गया। भेरे सोचने के अनुसार नज बात यह है कि घनादि और प्रमत्त काल के म्रायने अंगाविरयों के की मुमार नज बात यह है कि घनादि और प्रमत्त काल के म्रायने की सी प्रसुद काल के में कोई विनदी नहीं हो सकती तो किसी एक प्रावनों की संवास मान की उन्न में क्या गिनती हो सकती है और उसकी उन्न के किसी एक साल के पटने या बढ़ने की तो बात ही क्या की बाए ? रेलवाधी में सकर करते हुए जब एक बड़ा स्टेशन आता है तो हुछ सवीप होता है कि चनी इतना रास्ता तो कर यथा और आने मब इतना और बाती है।

**२**०६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

में प्रतरत की कल्पना करते करते हैरान हो आता हूँ। जो कुछ दिखायो देता है उनके खादा न दिखायों देते बासा बहुत ज्यादा है। न काल की सीमा, न देश की सीमा। कहने हैं महश्य में से ही हश्य पेदा होता है। मुक्ते लगता है कि किसी दिन मीतिक विद्यान ते साथा को सिद्ध कर देगा। इतना तो साज मी है ही है कि ज्यां-ज्यो वस्तु छोटो होते। जानी है त्यों त्यों उसकी मित्त कदी जाती है, यहा नक कि घटल्थ प्रतु-परमाणु की बटी भारी बक्ति मानी जानी है। सुरुम से सुरुभतर, मुदमतर से सुदमत्य, ऐसे चनते चनते सदस्यता था जाती है और सट्ट्य में खिक हो सिप्त हो जानो है। इस प्रकार मुस्मानिम्हम प्रदश्य का यानाम क्य साथक होता होगा क्या? ग्रीर प्रदृश्य में भ्रासम ने जुलेट चनने नमें से रहुम को घोत बढ़ते बढ़ते समुद्र, यहाड़ ग्रादि के निर्माण तक नहीं पहुँच मकते करा?

जो हो, इन हवाई उडानो में नथा बडा मननव रखा है ? मेरे लिए मतनव को बात यह है कि मैं कैंसे ही पैदा हो गया, पैदा हुआ तब से मुखे साथ था रहा है धीर मैं निन्दा हैं। जिन्दा हैं में जुके हुख न कुछ करना पड़ता है। तब में सोचता हूं कि जो हुछ में कर कर कहा हो बोन न कर ? इस धाधार पर मनकमें में स्वे रहना मंदा घम हो लात हैं। तो सहसे मेरे अपनान में आ प्या बही मेरा स्वध्में है। स्वध्में में सोनति ही "मिर जाना" अच्छा है, सोने कर पड़ियमं को "भयावह" बताया है। मेरे स्वध्में की ही अपना स्वध्में मानने बाने मानवमाँ है। मिल जाने पर तो उनसे मुक्तकों कुछ न कुछ अपेका होने सतादी है। किती न भी अपेका एको की वृत्ति से प्रपन्न धापको बचाते हुए स्वध्में में सोन रहना पढ़ी प्रयास मेरे करने का है इन सब्दों के साथ में धाव के दिन वनस्पती परिवान करता हुं। है

(3)

#### भारत की नारी

भारत के वैदिककान में धर्षान् प्राचीनकाल के प्रथम चरए। में नारों का स्थान सहंत के बा था। नर के मुनावते में नारी किसी प्रकार से नीची या कम नहीं थी। राद में रामायए कान में अर्थान् प्राचीन काल के डितीय चरए। में नारी कि स्थित में कनी प्रमान पुरुष हुए। यौर पौरािक काल प्रयों प्राचीनकाल के तुतीय चरए। में तो बहुत कना कमी या पारी। मध्यपुत में चहुँच कर तो नारी की स्थित बहुत ज्यादा विनाद गयी। फिर प्रभेजों के जमान में समान-मुचारकों के अयल से मारतीय नारी की स्थिति में सुपार होने लगा। भीर स्वाधीनता के बाद तो नर थीर नारी की स्थिति में कानून की निगाह में कोई विशेष मन्तर रहा ही नहीं। नारी के लिए कोई मेचा क्षेत्र वाजित नहीं रहा। एन न्यी०सी० तक में युक्त के साय-साथ पुत्रतिया। या वाजिन की भी जिमे सेना झेत का पूर्वस्थ माना ना सकता है।

जब हुम भारत की नारी की बात करते हैं तो हुमें माफ-माफ समफ लेना चाहिए कि मारत की कीनसी नारी हमारे दिनाम में है। भारत की पीन सावादी माने हैं और कारती सावादी जन करवी स्नीर सहतों तक मं भी है जिनकी हैचियत वाखी से बहुत निम्न नहीं है। विदेश माने की बहुत निम्न नहीं है। विदेश सावादी माने कर मित्र नहीं है। वेती मारे सावादी के स्वित करने भीर जहरों में बबने वाली नारी के प्रियक्त स्वाच के लिए लाज कस की तिशा वेकार मं भी ज्वादा है। नव फिर बहुत बोबी, ममबत. दो बार प्रतिशत, मारी सहवाद बदती है जिसका विश्व हमारे दिमान में उमरता रहता है, सिक्ता (कुविसा ?) मुधार (सिमात ?), साजादी (उच्च पत्रता ?) मादि की हिन्द से। हमें यह भी नहीं भूतना बाहिए कि सम्मय परों की नारियों के सिए मीज और के समावा कोई बस्बी ही समात तक का भी काम नहीं है।

प्रिक्ता वारी समाज को नर के माथ-छाय घर के वाहर सी काम करना पदना है। प्रमुक प्रश को काम करने को जरूरता हो नहीं होंकी और प्रमुक प्रश के सामने घर के वाहर कोंग्र करने जायक काम नहीं होता। मतलब यह है कि माब और करने सादि में बमने वाले नारों समाज के सलावा कुछ माब और हैं जो कुछ हो औक से भीर ज्यावातर मजदूरों के घर के बाहर का काम करता है। क्षा प्रकार नारी पर नर की मसेका काम करता है। क्षा प्रकार नारी पर नर की मसेका काम करता है। क्षा वनना अपने प्राप्त बहुत बड़ा काम है, बच्चों के पालन-पोपए। का काम भी कुछ कम नहीं है। दलोई का और घर को समालने का काम भी कम नहीं है। चौर कम सब बातों के अन्यवा नार्रा को आप नर की भारित पर के वाहर भी काम करना पड़ता है। चौर कम सब बातों के अन्यवा नार्रा के साथ एक प्रकार से सवा

स्व ियति का क्या इताल हो ै माना वनने का काम प्रकृति ने नारी के सुपूर्व कर दिया सी उनका पातीबार नर को बनाने की करणा गई हो आ दकती। बच्चों के मान्य प्रयादा नहीं करणा है सी प्रमुक उम्र उन उनको माना कं नरकारण में ही राजना होगा। इसिनए नारी को पर के बाहर कम करना हो तो बहु न्यार में उनकी प्रमुक उन्न के बाद ही हा चकता है, होना चाहिए। आरत में कानून की बोर के नारी के मार्ग में कोई ककावट नहीं है। नेनर दोन की पानची का हट जाना भी मुम्को प्रवान नहीं क्या है। रनरायन नेते छोटे देम में ही नहीं बल्कि रूस जैते हट जाना भी मुम्को प्रवान नहीं क्या है। रनरायन नेते छोटे देम में ही नहीं बल्कि रस्त वेंदी वेंदी में भी ऐसी की दिया मार्ग पर है। है। मेरी गुद के पारी के नारी के नित्र नेता का द्वार भी सोजा देना चाहिए। माराज पर है। है। नारी को आर से मेरी मुद के पर के न्याकीवा क्या कर ही है। नारी को आर से मेर के न्याकीवा क्या के सालाफ भणाव नरने के बोर्क अरूत नहीं है।

माज के समीनजुन में शारीरिक श्रीक्त की उतनी नकरत नहीं रह दयी है। फिर भी कई काम ऐने साफ दिखायी देते हैं वो नारी के बस के नहीं याने वा सकते। नारी का सहज स्वभाव भी नर से मित्र है। बहुरहास नारी नर नहीं बन मकती न उसे नर की वरा-वरी या उससे स्पर्धा करने की कल्पना ही करना चाहिए। नर के बरावर प्रधिकार वानी ३०६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

स्वाधीन भागे को निर्मय और स्वरक्षित होना चाहिए। उसे दब्बू बही तो निसंग्व भी नहीं होना चाहिए। पर मारी में एक प्रकार की कमबोरी तो है, पर के सामने दब जाने की। ऐसी हात्त्व में नारी के जीन की रक्षा करना बक्ती मानूम होता हो तो उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करना भी कनिवार्य होगा, खासवीर से समाव के निटल्स और सम्ब कहमाने बांवे भाग में और यह भी नारी की कुमारीसवस्था में। सवामों के इस सवाल का जवाब है साव-धानी, नर्यादशावत ।

(8)

# विरोधामास, घुष्टता

किसी दिन सेने गाया ---

न काम भेग भगवान का है, चिन्ता मुझे वर्षो भगवान को हो ॥ संकोच वर्षो हो मुझको जरा भी, संकोच हो सो भगवान को हो ॥

बाद में मेरी जवान से निकल गया --

किमु आस करे इससे उससे, हम आस करे न विसंधर से।।

इन दोनो यातो का मेल नही खाता है। एक तरक दो प्रयत्ने काम को समयान का काम बताकर निरिचत होना चाहा, इससे थोर यह घहनार प्रकट हो स्या कि हम इससे सससे पानी किमी मामूली से तो साखा रखे ही क्या हम तो स्वय विश्वभर तक से प्राणा नहीं रखते।

प्रभी बार पात्र दिन हुए होने, मैं धपने यहा के स्थानीय कार्यकर्तामी से बातें कर रहा था तो मेरे भीतर खिती हुई प्रध्यता बाहर निकल पढ़ी। मैंने कहा, "बानते हो, माजकत की धोर कठिनाइमी के बोच में निश्चित मस्त कैसे दिसायी देता हूं? मेरे स्वाल का उत्तर मेने ही दे बाता। मैंने बताया कि घेरे पास दो "नोकर" हैं, बड़े ही बकादार, महनती मौर मृत्त के नौकर ? इन दोनो को मुक्त को नौकर ? इन दोनो को मुक्त को नौकर ? इन दोनो को मुक्त को बिना ही, दौड़-दौड़ कर भए काम करते रहते हैं। मौर के मिल के स्वाह का कोई काम नहीं है। ऐसे एक मे करते हैं। ऐसे एक महो, दौ-दो नौकरों के होते हुए भवा मुक्तको बिना करने की क्या वस्त्य पढ़ी है। ऐसे एक नहीं, दौ-दो नौकरों के होते हुए भवा मुक्तको बिना करने की क्या वस्त्य पढ़ी है।

वे दोनो नौकर कीन हैं ? उनके नाम बबा हैं ? में अपनी ऋडशाही बोली मैं बोल रहा था। एक को नाव कुँ "भगवानो 'और दूसरा को नाव कुँ 'भाषीती'' अर्थात एक भगवान और दूसरी भगवती। क्या यह डोडना को हद नहीं हो गयी।

रतनत्री ने कहा कि यह सर्वया अनुचित है, एकदम मवत है। भगवान ब्रीर भगवती को "नोकर" समफना और ऐमे मुहफट वरीके से नौकर बना भी देना। उसी समय किसी एक दूसरे ने यह कहा कि भगवती-भगवान अपने अको के बगीधून तो होते ही हैं न ? इस पर से रननजी बोली-"आप अक्त कब से हुए ?"

पता मही ऐसी स्थिति मे मैं क्या करू ? मुक्ते एक बात अवानक सूमी ग्रीर मैंने सस बात को तपाक से दूसरों के सामने प्रकट कर दी और साब दसे सिख भी डाला । मैं भीतर-भीवर ही कुछ-कुछ तिकुकता तो हूँ, वाकी मेरे मन मे में यह बात निकलता मही काहती कि भगवती भीर भगवान दोनों हो मेरे कान के लिए रात-दिन हाजिर रहते हैं, तभी तो यह सब कुछ हो रहा हैं। एक बार मैंने यह भी कहा चा कि मालिक नौकर होता है और नीकर मालिक । जो कुछ हो, "अब तो बात सैन यदी, जाती सब कीई।" है भगवती! है भगवान!! मैंने तो प्रवर्ग कह हालों, मुम्हारी दुस जानी!!

## (x)

#### सपनी कठिनाइयां, झपना श्रात्मविश्वास

बपनी मूल कठिनाई मुक ने धाज तक वित्तीय रही है। वित्तीय कठिनाई में से पैदा होकर सच्छे भीर काफी मकान न होने की कठिनाई किसी न किसी रूप में प्रपने यहा बनी हुई है। मुक के मकान सभाव में बने थे, बाद में रूपये की कभी रहते हुए वनते रहे हैं। इदी मु सकार अन्य साधन भी जुटते रहे हैं। कई एक साधनों की तो प्रपने पास समयानुसार कभी भी कभी नहीं रही, कुछ साधनों की कभी धाज तक बनी हुई है। पिछले मानों में प्रपनी वित्तीम कठिनाई वड़नी ही रही बीर वह बर्तभान में तो बहुत ही ज्यादा वही हुई है। पदाने वित्तीय कठिनाई का सबसे बड़ा बिम्मा राजस्वान सरकार का है जी पपने प्रमुतानों में समावार साधों की कटीनी करती रही है। जो हो, वित्तीय कठिनाई का हम प्रपन जैते तीवे कर ही में।

मपनी दूसरी बड़ी नहिनाई देज की बराबर विगडती जा रही धार्यिक स्थित कं कारण है। देज की प्राधिक स्थिति का बद्धर धपने बहा भी रहुँचा है निगकी स्थाने को प्राज तक तो भीरें बड़ी पर्योह नहीं हुई, परनु घद बनता है कि उम कहिनाई ने धपने की हिलाता गुरू कर दिया है। बाजाद से जनस्त का सामान धन्नम तो मिनता ही नहीं है, जो मिनता है बहु बहुत खराब, मिलाबट का मिनता है धीर वह बेहद महुना भी होता जा रहा है। ३१० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

बनस्थली में हुजारों व्यक्तियों के लिए व्यवस्था करना कितना कठिन है, यह कल्पना हर किसी को कपा देने वाली है। अपने को आमदनी बढानी होगी और खात्राओं के यहा से भी ज्यादा रुपया मगराना पढेगा। और कई एक आवश्यक वस्तुष्ठी में स्वावलवी वनने के अपने प्रयत्नी की गति को भी बढ़ाना होगा।

सपनी तीमरी बडी कठिनाई उपयुक्त मानव सामग्री की कमी में से पैदा होती है। सपने कार्यकर्तायों को, खानायों को बाहर की धवाछतीय हवा के ससर के बचाये रक्ता वास्पत्ती के लिए भी कभी न कभी बहुत अवादा मुस्कित हो चकता है। मैं पिछंता एक महीना प्रपने यहा के जनसमुदाय से सीधा सर्फ साथने में तथा चुका हूं। जो कुछ मैंने देखा, मुना, उतसे मुभको कुन मिनाकर स्त्रीय हुमा है। मुफको सामा है, विकास है कि सपन प्रपने को बाहर की दूषित हवा से बचाये रखते में भागे भी भावस्थक सफतता प्राप्त करते रहेगे। इस सम्बन्ध की कठिनाई देखा में देखाईक की, भावना की भीर प्रपने यहा परिवार मांवन की कमी में से पैदा होती है। दुख का विषय है कि देख में सर्वत्र स्वार्थ, धनकपट, चोरी का दौर-दौरा है और देण में ही सपन में रहते हैं।

अपनी चीची कठिनाई का मूल देल को चालू विकामस्वाची में लोजा जा सकता है। देश की भी मी मेंसी स्थित है उसी मंत्र अपन यहा की मातववातित का पोपण हुमा है मीर जो भी जैसी मंत्र विकास हाणांनी प्रचलित है उसी मंत्र अपिकतर प्रचलानी निकास हुमा है भीर जो भी जैसी मंत्र विकास हमा देश किया के पूर्ण क्य की वो कल्पना कर रसी है उसे पूर्ण क्या है। अपन ने सपने बहा सिक्षा के पूर्ण क्य की वो कल्पना कर रसी है उसे पूर्णतया सिद्ध कर सक्ना अपने वस जी बात नहीं है। तथापि जी ती हकर की सिक्ष करते रहना सपना काम है। सनीय की बात है कि राजस्थान में सर्वप्रयम अपने उच्च साध्यमिक विचालय को स्थायत्ता मिर्गन जा रही है विचसे सपन कुछ न कुछ लाभ नो उड़ा है। समें भी भी प्रवस्थ निस्त बालगी।

मी पिछ्ले महीने के अपने सवर्क—कार्यक्रम के दौरान वनस्थती परिवार के छोटे वर्के सभी व्यक्तियों ने कहा है कि अपन सवको वनस्थनी के आस्या की धर्यात् अपने आस्तिष्यवास की और अपनी निर्मयना की, उसके दिन की वर्षात् उसके प्यार और परिवारमावना की, उसके दिन की वर्षात् उसके प्यार और परिवारमावना की, उसके दिना की धर्मात् पपने यहां के स्वीहन विचारों की, उसके अरीर को प्रमांत उसको स्वूल रचना की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। वनस्वती के अरीर का परिचय कार्यविवर ए, अर्की, गाइट आदि से हो सकता है। बाकी आस्मा, दिन, दिमाय का परिचय भी मै देता पूर्ण । वसवाय इनना ही है कि अपने में से विन्ती को भी किसी भी हालत में किसी भी अर्कार का सदेह, मध्य व सत्वाया करे श्रीर अपन सब प्यनास्थक हिन्द अपनारुर बात और व्यवहार विन्ता करें। तथाला ।

#### (६)

# वनस्थली वनस्थली ही है !

मेरे चार हभते वनस्थती परिवार से यहिकविषु परिचय बढाने में सम चुके थे। फिर दो हरते सम गये भ्रपने यहा की मानव जािक की लोज में। आयिर के तीन हस्ती में जब मुफते एक दूसरों ही यून में सम जाना पढ़ा तो मुफते दूसरा कोई काम नहीं बन पड़ा। निर्फ़ एक तेंस्न "शावयान!" ग्रीपंक से वनस्थती समाचार के १६ जनवरी के मक के लिए मकर सम्म्रति के दिन मैं निल्ल सका धीर यह दूसरा जेव माज बसन्त पचमी के दिन। १ फरसरी के प्रक के लिए लिखने जा रहा हूं। माज से लेकर ज्यादा से ज्यादा एक हरता मैं बनस्थती धीर जबपुर में रह सकूना। फिर में चन यह गा धपनी उसी पुरानी शैड-पुत्र के तिए विसके फलस्वरूप थानू समन में मेंग वनस्थती ये बहुन कम रहता ही सतेगा।

बात यह है कि बनस्थानों बनस्थानी ही है वो अपन भी षपन ही है। सब तो यह है कि प्रपन बनस्थानों है और बनस्थानों अपन हैं। दूसरों के बनायं पाठपक्षम अपने को जाने पनते हैं और बनस्थानों अपन हैं। दूसरों के बनायं पाठपक्षम अपने को जाने पनते हैं और देक को प्रविन्त निकाशवारा में हो पपन भी बहे चल्ले का रहे हैं। अपने मुलत अपने मालिक अपने खुद ही हैं। खुक में लेकर आधिर तक अपने अपर ही प्रपना जिम्मा है, अपना दारोमदार अपने अपर ही हैं। अपने निव् अब-स्वनादि तपा अपने सभी साधन जुटाने का और जनका जययोग सबुदायेग करने का अबिकार भी अपना ही है। अपन जाता का, मरकार का, अपनी बच्चियों को जन्म देंगे वाले सरकार्की का सहारा स्वीकारते हैं। पर अपने बाद रखें कि ठेका अपना ही है, तमाम नफे-पुक्तान के मालिक अपने डी हैं।

हम विचित्र स्थिति मे मुक्त व्यक्ति की "दुर्गत" होती रही है जिसमे बचत मेरी होतीगर होती रही कि बेरा "दुर्गत" में मे मजा हो। के स्वभाव बन तथा है। मैंने नोचा था कि मैं बाहर नही जाक गा, यहा बनस्थनी ये पड़े-पड़े मुक्तेने जो कुछ बनेता सो ही मैं करता रहेगा। पर धाज मुक्ते घरना यह निचार बरनाग एक रहा है। मैं कई बार बता चुका है कि प्रयोग पास प्रधासन विज्ञाग में बक्ति बहुन कम है। यह स्थिति मुक्ते को में से पड़ा मही रहाने दे सकती। मेरे घरीर की जी हानत हो गयी है उसी को पक्की मानदे हुए मुक्ते तो जुक्तन ही पड़ाग ही पड़ाग ही उसी को पक्की चार के जा साम की क्यां कि कर में करने यह उपलब्ध है। मैं सीचता है हम भोडी हुई जान की बचाने की ज्यादा फिक वर्षों करनी व्यहिए?

माधन जुटाने के अलावा मुक्को चिन्ता है वनस्थली में उन स्थिति को बनाये रखने की जिसकी बातिर ही साधान जुटाना मेरा चर्च बना हुया है। वह स्थिति क्या है ? एक तो परामी बेटियों के गाजियन बनने ने उनकी मुरक्षा व शील रक्षा को आ भारी और लाजुक विम्मा धपने ज्वर घाया हुया है उसे मबबूती ने, ईमान से निमाले बाना है। किसी भी प्रकार की स्वत्वका के फेर में पड़कर हुन बैटियों के मामले में चरा भी जीजिय भी नहीं उद्धा सकते। दुखरे, बनस्थली गुफ्कुल है बहा धन्तेवासिनियां रहती हैं जिनके लिए यह स्थान

प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र

स्कूल या कॉलेजमात्र नहीं है, बल्कि जिनका यह खपनाया हुया "घर" है जहा से उनको अपने जन्म के घर जाने देने के लिए गर्मी की छुट्टियो को अपन ने समक्रीते के तौर पर मजूर कर रखा है।

तीसरी वही बात लादी की है। खादी जितनी छोड़ सकते ये उतनी अपन ने छोड़ दी है, परिवारों को छुट दंकर । बाकी कार्यकर्ताओं और खुआयों को बनस्यली में रहते हुए किसी प्रकार की छुट देना अपने लिए समय नहीं हो सकता, हितकर नहीं हो मकता। और जुख नहीं तो अपने को प्रपने यहा की मादगी को तो हर सूरत ये खादी के जरिये भी कायम रखता ही है न ? अजूर के पेड पर चड़ा हुआ व्यक्ति किसी प्रकार नीचे की तरफ फिसल जाए तो बह ठेठ जमीन पर आंकर देखा। हाल में प्रपने तिवारीजी एक प्रसिद्ध शिक्षा-मध्यान में गंग्रे पं। उनसे पुछिए वे बहा पर क्या-क्या देखकर आगे हैं? जादी के साथ-साम अपने यहा की बात-अन की जो स्वच्छता है, उसे भी अपने को कायम रखता है।

स्रपते यहीं की णिक्षक— जिलिका मण्डली प्रणासन प्रवस्त में योगदान दे, ऐसी मेरी कहपना नहीं है। मैं ऐसी कहपना कहां तो वह सर्वश्वा निर्चेक निद्ध हो जाने वाली है। जो मिक्षा के प्रमानो पर विराजगान है जनका साधन जुटाना जनका साधनों के विसियोग के क्षेत्रकर में पड़ना "स्वप्रमा" न होकर "पर्यमा" हो सकता है। कोई भाई या विहन घनो-पाजन के योग्य प्रपत्नी प्रनिमा समम्त्रेत हो तो जनको धपने जिला के काम के प्रायद साहकर हो उस प्रस्यन किंतन करना में जुट जाना पड़े। जब मैं शिक्षा को बात करता हूँ तो मेरा मतलब प्रयन्ती पचपुणी गिक्षा से है, केवल पुरन्तिय पिक्षा ने नहीं। मेरा विश्वकों के लिए कुछ-कुछ मतलब शिक्षा विभाग में उनके पीर ववर्षी निक्षी जर वनने से हैं।

में यह कहना चाह रहा हूं कि प्रत्येक शिक्षक — विशिक्ष को घपने नियमित काम के ध्रवाद्या पपपुत्ती सिक्षा के किसी न किसी दूसने काम के लिए भी यात्राति कुछ न कुछ समय देने ही धपनी वृत्ति बनाना ही चाहिए। किमी को भी यह नहीं मान केना चाहिए। कि कुछ पीरियह पक्ष दिया, कुछ सनय पढ़ाने की तैयारी करने में लगा दिया भीर फिर छुट्टी। घपनी-धपनी क्षित्र के बहुआ दिया भीर फिर छुट्टी। घपनी-धपनी क्षित्र के बहुआ एक न एक दूसरा कान भी और कुछ नहीं तो तकरीं है के तौर पर ही किया जा सकता है यबांद्र योद्या "डाइववंन" भी तो चाहिए न ? मेरी करणा के प्रमुक्तर प्रावस्थक जोड़—तोड़ विद्या निया जाए तो काम भी हो जाए, मन बहुनाव मे हो आए-प्राम के बाम गुटलों के दाम। प्रारा खिक्त हो तो ऐसी योजना सफल ही सकती है।

साधन जुटाना मुख्यनया रतनजी का और मेरा काम है। साधयों का विनियोग करना विद्यापीट-सिच्चालय और प्रशासन विभाग का काम है। उपसब्ध साधनों से जैसे-तेसे प्रपना गुजर इस कठिन गमय ये कर जेना बाकी मव माई बहिनो का फर्ज है। 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरत समिद्धि लभते नर<sup>7</sup>। वनम्थली वनस्थली ही है, अपन प्रपन ही हैं। इसका अर्थ क्या है ? प्रपन सब प्रपने मालिक हैं तो प्रपन सभी घपने नौकर भी है। दूसरों से प्रपन भदद मागते हैं, पर खालिरी जिम्मा तो धपना ही है न ? प्रपन कम ही साधन जुटा पाए तो प्रपन किस दूसरे को कहने जाए ? ज्यादा ते ज्यादा जाने की कीतिश करना धीर जो जितना मिसे जसे बाट चूटकर खाना-यह यपना परम सिद्धान्त है~जिस पर धपन चनते भाषे हैं।

मैंन पचनुश्री शिक्षा के किसी भी प्रय में घपना चौड़ा बहुत प्रतिरिक्त ममय देना पाहने वालों के नाम बाहे थे। मेरे पास बीसक माई-बहिनों के नाम आग मये थे। फिर दीच में ही मुफ्कों हुसरे काम में तम जाना पड़ा मानियजान मर्पिद की सवा सी से ज्यादा प्राम्नानों ने भी प्रपने नाम दिये थे, किताबी पदाई के बलावा दुसरे कामों को क्यें की प्रपनी इच्छा बताते हुए। मैं बाहर जाने से पहले सम्बन्धित व्यक्तियों से बात करके मौजना भी कररेजा बनाने की कोशिया करूंगा। किर उसे सम्बन्धित आपायों मादि के सामने रखुंगा। इस प्रचार से कुछ थोड़ा यहुत भी नवीजा इस सेवन के लिए निकत सकेगा ती फिनहाल मेरा सतीय हो जाएगा। बाको प्रपत्ते सेवन में तो प्रपत्ते को ऐसी मौजना को पूर्ण रूप देना ही है।

#### (৬)

#### मेरा कार्यक्रम

पिछ्ने महीनो वे दौरे की भाग दौड ने, गर्मी के बीसम मे मेरे हिस्से मे आयी हुई बेकारी ने, छोटे मोटे फर्क्टो ने, छारीर की कमजीरी ने, धप्ने कर्जव्यपालन को विवेष चिता मुफ्ते प्रकार क्या है। में महमून करता है कि मुफ्ते प्रपत्ने एवं के लिए एकाल एक सार्गित का स्थान कोजना चाहिए और एक बार उसे ही घपना हैक्सबार्टर मुक्ते बता लेता बाहिए। ऐसे हैक्कार्टर पर रहता हुमा में रूपमे की स्तीव मे यह तक नाया करू या, धौर जरूरत एक्ते पर बतम्बली आया करू या। विद्येन चाट की धूर्ति का मारी काम तमाम मुक्तिका के बाब वह मुही मे प्रति नया है। वका ज्यादा मे ज्यादा सारिकार से पर वस्ते पूर्त हो जाने की आधा और समावना है। उक्त काम में ती॰ रननजी की पूर्त पदद मुक्ते मिलेगी, कुछ मदद स्थाय व मुसाकर से पिलेगी, और कुछ मदद पिलेपी प्रहाद व बीरेन्द्र से मी। पुख गहीनों में निर्माण के काम में रोकड की टाए की आजना हो सकती है, पर ऐसा न हो दकके लिए पूर्त से पूरी कोविया की आएगी।

बनस्पत्ती का धवक्ष्यजावी विकास सेने दिल में बसा है। पर उसकी मुफको विजय चिन्ता नहीं है। किंदने ताबनों का जुष्पाइ होना जाएगा वैचे-बेंग हॉस्निटल, हो सिल्टिक्तिक, होस्सायस्य कविंज, बी॰ एड॰ (फीकिक्ल), साम प्रवत प्राप्ति के काम होते जाएंगे। वें सब काम ३, ४, ४ सालों में पूरे हो जाने चाहिए। उद्वीधन मन्दिर का काम चालू हो

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

गया है। उसमें धर्म नीति तथा दर्जन का सम्बयन-सम्पापन थानू करना होगा। उस्ताह के साथ बालू हुए प्राकृतिक चिकित्सासय के काम को सपने यहा परिसर में लोकस्थि बनाना होगा। म्युवियम का काम प्रृष्ट करना होगा। स्मत्वत केसिस्ट्रों में रिसर्च का काम भी गृष्ट करने लायक माना आपणा। और भी एकास काम हो सकता है। पर ये सब काम सर्चे की निगाह से बहुत भारी नहीं पड़ने और सपने को इन्हें सपनी जैसी वाल बनेगी उसके प्रमुखार करने जाता चाहिए। शपने यहा बनस्वती में बितनी सी निष्ठावार्कि है वह इन सब कोमी के लिए प्रमुखा विरुष्ट होगी में साम प्रमुखा है।

मेरी प्रवृत्तिस्थित के समय के लिए कुछ बातों के विषय में मेरा कुछ विन्तायुक्त विचार चलता है। एक हो यह कि खपने यहा छात्राओं की सच्या ज्यादा बढ़े या कम बढ़े, उनके तिए पांच भरने को ठोर हो होगी हो चाहिए। साथ हो कई एक कार्यकर्ता माई-विहान के कार्यों तक्तिक में रहाण पड़ता है हो उनकी उक्तीफ उक्त्यों छे कम न हो माने तो बढ़नी तो नहीं चाहिए। घोड़ी बात करने वे किसी हद उक्त मेरा इत्यानान हो गया है कि नियस के मामने में अपन तक्तीफ को भन्ते ही चात्रू सेशन में कम न कर सके पर बढ़ने तो नहीं येंग। दूसरी बात है अपन यहाँ छात्राओं की कुल सच्या की जिसे मिछले संगत की १७०१ से पीड़ी बहुत जरूर बढ़ने देना चाहिए। व्यक्ति मेरी राय में अपने विकासभीन संस्थान मे अपने विकासभीन संस्थान में अपने विकासभीन संस्थान में अपने विकासभीन संस्थान में अपने किया गया है, हालांकि विकासिया संस्थान में प्रिक्त का प्राया कर सम्स्या कर पटना प्रतृत्वित होगा। वहरूहाल इस सन्वय्य में भी मुफको प्रायवन किया गया है, हालांकि विकासियान यह पिहासों के परिएगाम निकलने का घर्मों कोई टिक्शना न होने से अन्याय करना मुण्कित है।

तीसरी बात है इथ्ये पैसे की कभी के कारए। चानू काम मे विशेष क्कावट न धाने देने की। इस मन्यस्थ मे मैंने जिनना हिवाब लगाकर देखा है उस पर से मुफ्तो पूरा भरोसा है कि कोई लाग कमनीक होने की नोवत नहीं साएगी। धावर्तक वजट में पाटा तो ही ही रहने दिया जाएगा। चौधी बात है पुरतकीय विक्षा के कुछ होने के साथ-माथ मौचे से उपर तक को सभी कक्षांकों में पचमुखी निद्या के बाकी चारों सभी की शिक्षा को चानू करने की भ्रानवार्य आवश्यकता की। यह कांग महाविद्यालयों से भ्रयत्य कठित माना जाता रहा है। पर विद्यानी वार वो थोडा सा मत्य किया गया था उसमें जो सफलता मिलने की रिपोर्ट मेरें सामने पैण हुई उससे मुक्तो भरोमा होता है उस सेक्षन में इस काम के सफल हो जाने का। पाचकी बात है साल भर के ३६५ दिनो में ज्यादा से ज्यादा दिनों में भ्रयने का। ने सामने पेण हुई उससे मुक्त की विश्वके लिए धावश्यक उपाय प्यागाव्य प्रमण में साने होंगे होंगे।

जगरोक पानो बातों में से मुक्का यह धार्षियी नात सबसे ज्यादा मुक्कित लग्दी है। देश की खिसएमस्वामों में खुट्टियों को बेहद चाट पडी हुई दिखाबी देती है। प्रयत्त ननस्पती बातों को उक्त बाट पर बिजय पाने बाले बनना चाहिए। दूसरी सस्यायों के मुन्तपत्ते में प्रपत्ते बाद काम को वे ज्यादा है। प्रपने काम के प्रति प्रपत कार्यकर्ती भाई बहितों को जितनी निष्टा होंगी उतनी ही सफलता प्रपत्ते को दश कटिन काम में मिलती 'जाएगी। वनस्पनी विचापीठ को खडा रखने धीर इसे स्वस्थ धनस्था मे चलाते रहने के लिए जो जान पर खेलने की निष्ठा चाहिए उस निष्ठा की बात में प्रभी नहीं कर रहा हूं। यन्ते नाम कुछ साधन निष्यत जैसे है तो कुछ नामन सर्वचा अनिष्यत । प्रनिष्यत साधनों को आवश्यकतानुवार निष्यत जनने की झति थयने बास काफी नहीं। पर उपलब्ध साधनों का सहुपयोग करने की जिल को प्रपे पास होनी ही चाहिए। इस सम्बन्ध में स्वयंद सिस्ते पर में कभी बाद से विवेष लिखू गा।

#### (=)

## परिवर्तित कार्यक्रम के प्रकाश में.

#### परिवर्तित कायंत्रम

"समाजार" के पिछले (१६-७-७४ के) सक सं सैने एकान्ववास करने का सपना स्विचार प्रकट किया था। उसके अनुसार में रतनवी सहित जुन्दावन हो साथा। वहाँ पर मेरे रहने के सायक दो एक स्थान प्रसन्द कर विश्वे गये और भेरे सिए स्वानीय मददानार सोजने का जिम्मा वो तीन पुराने परिचितों को दे दिया गया। मेरा मन उचर जाकर रहने की तैयारी में सीन होने कन गया। वर एक दिन स्वचनक ही रतनवीं ने मुम्में कह दिया कि सायको बनस्थती छोड़कर किसी भी हालत में अन्यत्र रहने के लिए नहीं जाने दिया जाएगा। रतनवीं ने जिम्दगी भर सेरा कहा किया है वो सैने सोचा कि इस बार रतनवीं का कहा मुम्में करना चाहिए। इस प्रकार मुमें स्थान परिषदीन का स्वत्र । विचार अरण् भर में छोड़ देना वडा। सब मैं वनस्थती में ही यभावन्य एकांन्यास करना चाड़ गा, साधना के लिए और "सत्य की कोज" नामक इब की रचना के लिए। उक्त परिवर्तन के कुछ समय बाद ही बॉक्टरों ने मुक्से कहा कि प्रापका हनिया का ऑपरेशन करना होगा और उससे पहले ऑम्टेट का ऑपरेशन भी अ ऑस्टेट का बॉरोशन बब्ध माना जाता है सो डॉक्टरों ने उसे बेनोर से कराने की राय दी है। बाद में हनिया का झंपरोगन जयपुर से हो पाएगा। अचानक पैदा हुई इस नयी स्विति से प्रियवनों के चिन्दा होना स्वामाविक है। मेरी बवत हतरी हो है कि मुन्ते बाद की विवाद ने हिया वही। इसा करवी।

#### वनस्यली का जिम्मा

बनस्थली के सम्बन्ध में मुन्ते सधिक ने प्रधिक विचार प्राता है तो यह एक ही कि प्रभी देस प्रगीवृत्त काम को जिन तरह ने में पहले करता था उसी तरह ने करते रहने की रियति में अब खन्ने आपको में नहीं था रहा हूं। वनरबातों में मेरा एक खास जिम्मा रूपरे पैने को है ग्रीर उसके प्रवाश में प्रभाव जिस्मा मानता हूं यह रेखते रहने का कि धाउकत के बहुत जराब कमाने में भी वनस्थती का काम जिस चाइन पर चाहिए उसी साइन पर चल रहा है न ? रूपमें की सीज में में खुद दौड़ पूज नहीं कर सकता तो प्रश्न रतनों का बाहर जाना भी न सभव होगा, न उचित । दुमरे, श्याम तो प्रभावी मर्यादा में दूसरे कामो के साथ रुपये का काम भी करता ही है, मुखाकर भी यथाजवय अपना समय वनस्यती कें काम में तमाता है। कुछ काम प्रह्माद और वीरेन्द्र की पाती में आता रहता है। इनके प्रसादा सिदायें प्रोर प्रामुखीय को भी एक बार तो इस काम में जीतना परेगा। मुफी खुद को बाहर जाना ही परेशा तो में रतनवी की साथ लेकर यदा कदा चला जाया करू गा। बाकी ती सारा काम मुखे पत्र व्यवहार के वरिये से ही करना परेगा। मन समृह के साथ ही वनस्यती के काम को ठीक लाइन पर रखने में, और सपने पत्रमुखी गिछा प्रादि के कापका में की से खाने में भी में सपना योगदान देना रहू मा। इसके प्रसादा बनस्यती विकास को उद्योगोग्यस बनाने की बड़ी समन मुक्ती है।

#### दिल का दर्व

प्राज में प्रपत्नी एक धोर वात भी कहना चाहता हूं । मेरे दिल में देश की विगवती हुँ हालत के लिए बडा दर्द है। देन की कितनी भी खराव हालत होतों तो उसमें भी में बेफिल रह नकता था, अगर मेरी स्थित उस हालत को ठीक करने के प्रयत्नों में प्रपत्नी तांकत लगाने की होतों तो। वनस्थानी के काम को करते हुए मैंने कई बार नोचा और एक है प्रधिक बार एक न एक नया कार्यक्रम हाथ में लिया। पिछली बार एते तो नैने अपने 'स्वाधीन प्राप्त-नगर-सगठन'' के कार्यक्रम को कुछ और घोर से जुक किया था। पर उसमें सबोंपरि विका गेरे दिल के दौरे ने उपित्यक्त कर दिया जिसमें मेरे नारे विचार घरे ही रह गये। बाद में मुक्को अथादा गहराई से सोचने का मौका निका तो मेरी सनफ से प्राप्त काता कि न केवल सामान्य सामवासी अधि सुद आने हो कर लगा कि न केवल सामान्य सामवासी बल्क सामान्य नयरवासी भी खुद आने होतर लगे होते के काम के तिहा हो हो कर लगे हो पह लेता के तिथा हो हो कर लगे हो पह लेता के तिथा विद्या हो हो कर लगे हो तिया हो हो कर लगे हो तिया हो हो हो के से सम्पूर्ण अव्यवस्था में से हा स्वयवस्था में से सम्पूर्ण अव्यवस्था है क्यो न हो जाए। मेरा विवास है कि उस अव्यवस्था में से मेरा मेरा विवास है कि उस अव्यवस्था में से में मेरे स्वयं के इस काम में सिक्ष होकर लग पाता।

# (घ) मेरी खायरियों से

# मै ग्रपनी डायरियों में से कुछ ग्र श यहां पर दे रहा है ।

#### वनस्थली, २२ तवश्वर, १९७३

कार्यसमित बीर निजासमिति की मीटिंग हुई। मैंदे दोनों मे ही थोडा थोडा कहा।

तनीजा ऐसा निकरना हुया दिखायी दिया कि एक कमेंदी तो नियमों को दिखाँ को देखें, उनके प्रमुखार काम करने के तरीको पर विचार करे और नियम-पानन किम तरह के कराजा जाए इम पर विचार करे। मही कमेदी सेवन के बीच में पुरदी करने न करने के बारे में, जारी के बारे में विचार करे-कार्य करोड़ों में, अधिक के कीच में महत्त्व करोने न कराने के बारे में, जारी के बारे में विचार करे कोच कोची प्रावकत जो कंटिजाइस सामने वाती है, नाथमों पादि की कमी के कारएग उनके मदद्य में विचार करे कीन कीन से साधन चाहिए, किनने रूपने व्यक्त की कोच के कार के तकार करे काम को कितना विभाग कर की कोच में में ने कीच से में विचार करना है, उनके निय रूपने कोच मों मोरे एक तीसरी कमेटी भी बने वो बडी योजना वनार्य का काम करे-काम का कितना विभागर करना है, उनके निय रूपने मान, आदमी आदि जुटाने के बारे में नया प्रया किया जाए इस्थादि । मैंने कार्यकर्तांथी का याद्धान किया कि खार मोगों में में कुछ तो ऐसे सामने प्राने वार्य मानिएस करना है। क्यारे पैसे सामने को तैयार हों। क्यारे पैसे सामने की स्वार को की अपनी पूरी बरिज काम में मानार्य को तैयार हों। क्यारे पैसे सामन मानार्य को सिवार के बारों का काम तो प्रयुत्त तरह से करें, दो पार पीरियड व्दान के समझा भी प्रिक्षा के बारों कानों में दिल्या लिया नरें।

#### वनस्थली १० दिसम्बर, १६७३

नात को वाई की तब्बिस्त बहुत सराब हो गयी बढायी। रजनजी को जिलक चौक में बुलाता पड़ा। रतनजी का प्लस्त दाली देखकर मुझे कह हो मया था—मैंने तितक चौके जाता भी बाहा था, पर मया नही। बाई की ख़ती से बदे बोर का दर्द हो गया था-एकटम चीको पितनाने जेंग्रा। एक दवा देने से राहत मिली। ऑस्टर साहब ने हैं पेबसन पी लगाता । प्रयाम का खवाल है कि हॉर्ट घटैक तो नही है। पर घरोता नही हॉर्ट घटैक भी प्रवानक हो जाए। इसका एक प्रसर तो यह होगा कि रतनबी का तरकाल बाहर जाना नहीं होगा। इनका उपाध भी नया है? में खुद वाई के कमरे में जाकर देवा-उनको खुत करते कि निगाह ने कई वाले उनको मुनायी-तालावा को ठीक करवाना है सी-भैंचाजी, मुनियी, प्राणुजी के काम पर लाने की वात, भीहन-मुमाकर के काम के तय करने की बात, भीयाजी का दिवाह में मुन्द की सगाई की, बागा के विवाह की मुन्द की सगाई की, वसत की बगाई की, वसत की बगाई की भी। यह सब कुछ मैंने घपनी तरक से बाई को मुना दिया। मैंने वाई के बिट बताये प्रक्त भीर हुपरे नवर पर रतनजी-मुशीसा तीसरे नवर मुक्तो। वाई ने सक्वत नवर का दिवा मुक्तो वताया।

#### बनस्यली, २ जनवरी, १६७४

सायकालीन प्रार्थना में गया। जहां तक मैंने देशा आनिवर्तान महाविद्यालय की एक भी लड़की प्रार्थना में नहीं प्रायी । जिला महाविद्यालय की सुप्रत हैं हु कुछ प्रायी हों । कार्यकर्ता भी बहुत कम दिलागी दिये । यह रस्य मुक्को बहुत चुरा ना। विश्वनीडम् में गया कुछ तहकिया खुट्टी पर गयो हैं । कुछ तायद यूगने को गयी हैं, कुछ त्यात कर रहीं बतायी । प्रार्थना ने किसी एक के भी जाने को खबर नहीं मिली । मैं चारपाई विद्यालय पोक में बैठ गया। ५-० लड़किया छायो, उनते बातें करने तय बया। सस्कृत के कुछ मोक सुना दिये । एक पेरा स्त्रोक भी। गोठ के दिन के पीतो को कुरिवमूर्ण यताया मैंने पर धर्माया होक थी । मैने वातो ही बातों में यह कह गया कि मैं पोन नहीं चलने दुगा। पोल एक साली कटकी या छाड़िकरों से कुछ बनने वाला नहीं है । मैं पालायत्वन में भी गया। लड़ियों को भोजन करते देला। कई एक वगह तीन-तीन चार-चार सर्वृक्तिय प्राप्तिम भोजन कर रही थी। मैने धलस बाली में एक प्राप्त के तिया लड़ियों के कहने पर भी मैन जयादा कुछ मही लिया। खादी का तो पता ही नहीं चलता । एक लड़की मिलिया ने स्वार्य कर दिश्व में से प्रस्ता से पर स्वर्णन या साम में मैं ने पता साम के तिया ना हिया । स्वर्णन प्राप्ति के हिया में से प्रयादा कुछ मही लिया। बादी का तो पता ही नहीं चलता । एक लड़की मिलिया ने कही से कही स्वर्ण के हिया ने स्वर्णन स्वर्ण में से प्रसाद के तिया ना साम है ।

#### दिल्ली, १७ फरवरी, १९७४

साज की बहुत खास बाव "" की है। उमने बहुत उत्साह दिखाया धीर ऐसा समता है कि उनके द्वारा बड़ो बच्ची महामता मिस सकती है। उनको मेने बताना कि रैक् स्वार जै वनस्पनी दवी हुई है। ६ लाख का तो ऐडक्सस्टेम्ट हो जाएगा था उत्तका बड़ा दिस्सा किलो में कुक जाएगा। ६ लाख चानू चन्ने के घाटे के है जिनको छोटे बंद से चुकाना है। ६ लाख मकानो के लिए उचार निये हुए बुकाने हैं सो बड़े चंदे से बुकामेगे। नदन ने "" से बात की है। उसे मरोसा है कि "" के बहन बनस्पनी को बटी रक्तम मिस जाएगी। "" को बह बनस्पनी भी से चाएगा। एक दो दिन भें दुवारा बात करके मुक्ताने वताएगा। "" में भी उसे मच्ची माला है। उससे उत्कास ६-७ मार्च की स्वनेर में मिनना होगा। तब मेरी डायरियों से [ ३१६

नोट---इसमे प्रकट की गयी घाशा ग्ली भर भी पूरी नहीं हुई है। नाम जिनके भी ये उन सबको छोड़ देना ठीक समभा है।

#### बनस्यली, २७ ग्रहेल, १९७४

बी॰ एड॰ मे सेट्रनाइण्ड ऐडिमिशन के सवात का बडा क्य ही जाता दिखता है। ग्रींड साइत का इन मजबूती का नहीं बताया। उनके मन से कमज़ीरी लगती है। ऐडिमिशस के मामले में रतनजी को मुख्यमंत्री से बात करनी चाहिए। कोर्ट की कार्गबाही भी बल्दी से जस्दी करनी होगी। शिक्षा महाविचालय के स्टाष्ट से बाते हुई उसका सार प्रीकेमर साइत में बताया। प्रामतीर से लोगों की मन स्थिति ठींक है। धपने को इस मामले में युनिविसिटी से किसी भी हास्त में दवना नहीं है। परिखास जो होगा सो हो जाएगा।

#### जयपुर से वनस्थली, २६ अप्रेल, १६७४

#### दिल्ली, २८ मई, १६७४

प्रथने काम की स्थिति ऐसी बनगयी है कि कुछ ज्यादा सोचते नहीं बनता। पर्शागढ़ से कुछ साक्षा नहीं है उत्तरकी को, न प्राच्या है उनकी परिवासता में। पूरा दारोमदार """
रहें। उनसे रतनवी का दी बार मिलना हो गया। पर घनछी तरह से बात एक बार भी
नहीं हो पायों। """ का कर दिस्ती धाना होगा तब उत्तमें में बात करूं गा, उसमें बहुँ में
कि प्राप्ते नाम १। साल रूपमा नित्सा हुमा है। उसमें से साखेक रूपमा एक हुमते पर में
कहीं से भी कराकर दी। धमन है मेरी बात का उन पर ससर हो जाए थीर वे बुद्ध न कुछ
करादे करादी से """ है ""वर्ष मार साजकर नवों गये। बहा से दे अता को जयपुर
प्राप्ते उत्त उनको पकड़ा जाएगा और मेरी बात उनते हो जाए तह ठीक है। मामा तो
है जि "के हारा ठीक ठाक काम हो जाए। "खायद कुछ न कुछ करादे। समन है" जाभी
हिताने की आहा। धामें पीछ वो धायद कराने का साधार नहीं है बाधा माने जस्ती रुपमें
हिताने की आहा। धामें पीछ वो धायद कराने का साधार नहीं है आहा माने जस्ती

## वनस्थलो, १६ जून, १६७४

धाज ज्यादानर विचार वृन्दावन निवास के बारे में चनते रहे। एक पत्र तो मालानीओं को लिखा, दूसरा जयदमालओं डालमिया को, तीमरा सीनाराम जयपुरिया को। । दुस्दादम में कीन सा स्थान ठीक रह मकता है। धयवा वृन्दावन के धलावा कोई गांव हो । सकता है क्या? एक तो उस जनह टेलीफोन हो। वहा से जयपुर-दिल्ली धाना जाना ज्यादा पृदेश्य न हो। उपर सामूली तागे, इनके सवारी से काम चन जाना चाहिए। जुली हुई जगह हो। एकान्य में भी हो। मेरे लाच एक तो मामूली सहायक हो, भल ही !!! " जैसा ही हो सकता है। एक पी० ए० जैसा हो जो लिखा पढ़ी करता रह। मैं एक विशेष प्रथ की एकता करना चाहना है। ध्रम्यवन करके वह मुफको पढ़कर सुना दिया करे। कम में कम हिस्सी का टाइप जानने वाला होना चाहिए। रतनओं साथ ही तब तो कहना ही क्या? हनके प्रलावा कोई एक सेवाभावी बहिन हो जो भोजन भी ननार धीर मेरी दवादाक की देखाल सी करों। रतनती मेरे एक हो जो भोजन भर वह बीर कर वर्षे।

#### जयपुर से बनस्यली, ६ जुलाई, १६७४

डॉ समसी के यहा सुमाकर ग्रीर रतनवी भी मेरे साथ गये। साज उन्होंने च्लड मैगर भी निया-मदा की भाति देलमान करके बताया कि विल्कुन ठीक है। कमजोरी लगती है तो गर्मी के कारए। होगी। १४६ ब्लड मुगर ग्रागी है तो नॉमंल के भीतर है। १५० ते ज्यादा न होनी चाहिए। बजन ७४ किसो बना है तो ठीक है। नेमिक्स प्रापी मे ज्यादा न ते को को को कि की किसी की की किसी की की की की की की लिए एक पीने की दवा निस्तदी। रतनवी को मन्तोप हुग्रा इस मबसे। ब्लड गुगर को १४६ ने मीचे लागा जकरी माल्य दोता है।

#### वनस्यली, १३ जुलाई, १६७४

विनीवाकी ने सर्वेदिय वानो को इताजन दे दी है कि यो सत्य, प्रहिंसा भीर धारम सम्म का पानन करते हुए जनप्रकामजी के धारवीतन से भाय केना चाहे वे ते सकते हैं। वो भूरान, यामसान का काफ करना चाहे वे यह काम कर सम्मे हैं। शिक्षदाय ग्रीर उनके १६ माधियों ने त्यागपत्र दे दिये वे यो वाधित ने निये । इस प्रकार सर्वेदिय सथ के दुकडे होते होते यय गये। अब देखना है कि जयप्रकाशकों के धारदीनन का कब क्या नतीबा ग्रांता है। वे बात नी एक माल से कान्ति हो जाने की करते है। देखा बाएगा।

#### वनस्यली, ३ ग्रगस्त, १९७४

एक दृद्ध सिख बाये । प्रह्माद ने कहलवाया था इनलिये मैं उनसे मिल लिया । उन्होंने मुनको देखते ही ब्राझीबांद टे दिया । बाद में प्रह्माद ने उनके बारे में कई वार्ते वतायी जिससे लगा कि सन्त पहुँचे हुए होने चाहिए । वे बनस्थली फिर खाएसे । तब दे दिन टहरेंगे। उन्होंने अपनी उम्र ७१.८० साल बतायी और १२० माल तक जीने की बात कही। गुम्मते कहा कि तुम बहुत नाल रहोंगे। मैने कह दिया कि मुक्ते १२० साल तक जीने की जरूरत नहीं है। बोले नुक्को बहुत काम करना है। गुम्हारे सब काम सफन होंगे।

वनस्थली, २४ ग्रगस्त, १६७४

मुधाकर कल दिये हुए ब्लाइ की रिपोर्ट लाया। डॉ जी सी शर्मा ने बताया कि इलड की रिपोर्ट ठीक आयी है। उन्होंने अपना एक बहुम निकालने के लिए बलड का यह सिवाय टेस्ट कराया मालम होता है । जी. मी ने राय दी है कि ऑपरेशन वैलोर में कराना चाहिए । जयपुर मे प्रॉपरेशन हो अकता है, पर यहा पर कई घण्टो तक बेहोश रखना पडेगा जिसमें हाँटें पेशेट होने के कारण जोखिय है । आप लोग चाहेंग नी मैं आंगरेशन कर दूगा । पर मेरी राय वैलोर के पक्ष मे है। इसलिए कि वहा पर ऐसे साधन है जिसमें विना चीर फाड के ही प्रॉस्टैट के बड़े हए हिस्से को रफा दफा किया जा सकता है। वहा पर ट्रॉस्पिटल में तीन-चार दिन से ज्यादा नहीं रखेंगे। फिर कार से यदास जा सकते है। श्रीर सदास स हवाई बहाज के द्वारा दिल्ली-जयपुर आ जाए । इस प्रस्ताव में मुझकर को चिन्ता हुई ग्रीर रतमजी तो घवडा ही गयी । पर मेरे यह अस्ताव नूरन्त बच गया और फौरन फैमला हो गया बेलोर के पक्ष में । डॉ. जी सी मर्मा बेलोर के डॉक्टरों की लिख देंगे । जनप्रकाशजी का ग्रॉपरेंगन वही हुआ है भी मैंने सिद्धशन से कह दिया है कि उनसे बात करके परे समा-चार मुभको बनस्थलो के पते पर तुरन्त भेजदे। दादा धर्माधिकारी ने लिखा है कि उनकी प्रस्टिट की व्याधि किसी जर्मन गोली के लेने से काब में है। वे प्रॉपरेशन कराना पढेगा तभी कराएगे। मेरे लिए बादा ने लिखा है कि बाप तो "तरन्त दान महायुत्र" वाले है सो प्रॉपरे-धन करा कर भटपट रोग मुक्त हो जाएंगे।

# (च) विशेष परिशिष्ड

# श्री गोकुलभाई भट्ट का पत्र श्री शंकरसहाय सबसेना के नाम

#### प्रस्तावना

प्रमृत सम्माननीय बन्धु द्वारा खिखित प्रमृत स्वर्गीय सायी की जीवनी के सम्बन्ध में प्रमृत साथी से जो पोड़ा बहुत मुक्ते मालूम हुया था उनका किक में प्रपनी टिप्पणी के साथ प्रमृत पुत्तक केपूष्ठ १३४ में कर कुछा हूँ। किती भी सायी का खासकर किसी स्वर्गीय साथी का-मान केकर सार्वजनिक रूप से कुछ कहना या खिला मुक्ते साथारणतया प्रच्छा नहीं किता है। पर थी गोडुलनाई ने थी करनहायजी सक्वेजना को खिले पर्य प्रमृत पत्र की यो मक्त मेरे पास भेजी है उसे थीर उनके साथ जंगन अदिविधियों को नीचे प्रकाशित करते समय मुक्ते नाम सेकर भी थोड़ा सा खिल देना उक्तरी मानूम होता है।

वन्तनाजी की मैंने सदा धादर की हरिट से देखा है चौर में म.नता हूँ कि वे भी मुन्छों वही या गत्तव घोड़ा बहुत तो जानते ही है। वर्षांजी, ब्यावजी व गोडुलभाई तीनो को ही मैंने सदा धराने से वड़ा माना। वर्षांजों धीर ब्यावजी धव हमारे वीच में नहीं हैं तो उनकी एन में कुछ भी ऐसी वेबी बात प्रकट करना में किसी मी हावत ने ठीक नहीं सम-भ्रता। मेंने अपने धारणे एक पासुनी कार्यकर्ता से क्यादा कभी भी कुछ नहीं माना। मुक्ते 'गता' धरूद से ही चिड़ रही है धीर में सोचता रहता हूँ कि इस घटद ने हम सोनों मे से वहुंगों को नीचे गिराने का काफ फिया है। विश्रेष परिकिट्ट [ ३२३

मुभे इस बात का मन्तीय है कि जो जो काम मेरे हिस्से में झाये उनको मैंने प्रपने प्राएं भोन कर करने की पूरी कीजिय की है, बहुत ज्याव्य जिम्मा करीय करीय प्रकेत उठाते हुए। वयपुर प्रवासण्डल, रावयुतामंत्रका संक्षेत उठाते हुए। वयपुर प्रवासण्डल, रावयुतामंत्रका संक्षेत उठाते हुए। वयपुर प्रवासण्डल, रावयुतामंत्रका कीनिया देशी राज्य लोकपरियद, किर कारित का वयपुर प्रधिपेशन नवकी विद्योग धादि अनिता बम्मेदारी मुभ्क पर रही थी। इसके अलावा कही के भी कोई भी वाथी कार्यकर्ता मेरे वामने आये तो-धीर कई बार तो किसी के कहे मुने दिना असे होकर धी-नेत उर्वक मदद करने की कीश्वास की है। देश प्रजासण्डल का सरवाष्ट्र चल रहा था जब दिनों में अमितो नारामणी देशी वर्मा दो माने प्रवास करने कहे हुआर कपये उनकों में द्वामने प्रयोग के के सरवास करने कहे हुआर कपये उनकों में दिन्य के प्रोटी भीर मभ्जती रिवासनों के धवाया बीकर कहे हुआर कपये उनकों में दिन्य थे। मुद्रोटी भीर मभ्जती रिवासनों के धवाया बीकर कहे हुआर कपये उनकों में दिन्य या प्रोटी भीर मभ्जती रिवासनों के धवाया बीकर को विष्य प्राप्त तो भी मैं वे च्यावाद कर के ने नामनोर पर टक्कर ली थी। उदयपुर धीर बोधपुर रिपासतों में उनमंत्र हुई राजनीतिक पुरिवास को मुलक्त को मुलक्त को भी वेत मुभक्ष हो सका तो बच्च किया था। यम्पीती उदयपुर राजधानी बाले राजस्वान के मुख्यमंत्री वने, इसके लिए पोकुलमाई के प्रसादा में ने भी पीचत तथा विषय हुई साव कही है। पर इन सब प्रसर्ग को अव या वत्य हु से साव कही है। किया ते किया भी का प्राप्त करने हैं। से किया के लिए की भी व्या मतनल है हैं

गोकुलमाई ने मुक्ते राजस्थान का अथम मूद्यमण्डी बनाने के लिए नरदार पटेल से की नहां कि मी भी गृह्य भी नहीं कहा यह मुक्ते मानून है। वर्माबी ने सरवार पटेल से की नहां विद्यास मि होरालाल बाल्यों को सत्ता न सींच वी लाए, यह मुक्ते आव से पहले नहीं मानून या और वनकी ऐसी वानबीत मरदार पटेल से कह हुई होगी इसका पदा नो मुक्ते इस समय भी नहीं है। घोर बमाजीत मरदार पटेल से कह हुई होगा तब भी मुक्ते इस समय भी नहीं है। घोर बमाजीत मरदार वा स्वता ना भ्रक्तिस नहीं है कि मैंन कथा पढ़ित जवाहरलालकी से बमाजी को उदयपुर राजधानी वाने राजस्थात का मुख्यमधी बनाने की विद्यारिक की थी। वर्माबी मुक्ते नाराल हुए सो सायद इसीलिय हुए कि अवपुर का राजधम्मल, जवनुर का मुख्यमधी और वयपुर ही राजधानी-यह स्वतीलय हुए कि अवपुर का राजधम्मल, जवनुर का मुख्यमधी धीर वयपुर ही राजधानी-यह समाज प्रवास हो। या। और इनविस् कि मैंने उनकी निकारिक के धनुमार प्रमुक को मन्धी बनाना उचित्र नहीं सम्बा

िसरोही को राजस्थान में ही रखा जाए, इकके लिए गोकुलभाई ने गुरू में प्रारिष्ठ सक्त जी तोड कोजिश्व नी सो मुक्के धन्छी तरह से बालुम है। मैंने सरदार पटेल को दो तार दिये उनको प्रतितिधिया गोकुलभाई ने सबसेलाबी को निके नमें यपने वण के ताथ सलान की है। जयपुर के तत्कालीन प्राइमामिनिस्टर नर मिर्चा को भैने कब नया सिखा और उन्होंने मुम्काने न्या सिखा मो सो मैं जानवा हूँ। बाकी उन्होंने किसी दूसरे को क्या क्या स्ति ता या कहा प्रवचा किसी दूसरे ने उनको क्या सिखा या कहा उसकी जानकारी ममको विल्कुल नहीं है।

बवर्ष मे वर्माजी ने मुक्तते तथा हरिभाऊजी से कव क्या कहा या पूछा या सो तो इस समय मुक्तको याद नहीं है। पर मैं यह पक्के और पर कह सकता हूं कि राजाग्रों को ३२४ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

ग्रन्टीमेटम की बात यो ही ग्रापम मे चली थी ग्रीर गांधीजो ने या किसी ने भी ऐसा कोई फैमला नहीं किया था। मेरे सामने तो यह भी मवाल ही है कि जब मैं गायीजों के पास ही ठहरा हम्रा बराबर उनके साथ ही बना हम्रा या तो बर्भाजी को गाँघीजी से घलग बात करने का मौका कर कैमे मिल स्था होगा ? और गांघीजी से वान करके निकनने पर हरि-भाऊची और मैं कहा पर और कैसे वाहर मिल गये होंगे। यदि राजायों को प्रत्टीमेटम देने की बहुम चलती तो मैं ऐसे प्रस्ताव का जरूर विरोध करता। बगीकि मैं यह नहीं समभ रहा था कि हम अग्रेजों के खिलाफ लड़ें तो हम राजाओं को साथ लेने के बजाए उससे जबर्दस्ती ग्रागे होकर लडाई क्यो होड़नी चाहिए। सबोग मे जबपुर राज्य में ग्रप्नेजो का तया युद्ध प्रयत्नो नक का विरोध करने के मामले में प्रजामण्डन का महाराजा से समक्तीता हो ही गया। मैंने अपने कुछ साधियों के दबाद को प्रजामण्डल की एकता की खातिर एक हद तक माना ग्रीर जयपूर के प्राइमिमिनिस्टर को ग्रयना १६-१-४२ का पत्र लिख दिया परन्त कछ सायियों ने जरूदवाजी को तो। प्रजामण्डल ने महाराजा से हए समसीते को अपनी तरफ में तोडना उचित नहीं समभा। धीर जहां कहीं पर राजा को ग्रस्टीमेटम दे दिया गया था उमका क्या नतीजा निकला ? कही के भी प्रजासण्डल ने जैसा समर्प किया वैसा ही प्रजा-मण्डल जयपुर में करके पहले ही विजयी हो चुका था। १६४४ में जयपुर प्रजामण्डल ने प्रपेत विरोधी धीर युद्धविरोधी काम में जिल्ला सहयोग पड़ीम के "ब्रिटिश" इलाको की दिया वह हमेशा याद रखने जैसी बात रहेगी।

प्रत में मैं इतना ही कहना चाहना हैं कि हम राजस्थान बाले दिवाबटीयन से, स्थानिनत रागदें प में, शहितक मेदमाब से ऊपर उठे हुए माबित होते तो राजस्थान का बहुत मेला होता। इन सब्दों के साथ बोकुलमाई के उपरोक्त पत्र को में नीचे ज्यों का त्यों खद त करता हैं।

> मारफत भूदान, त्रियोलिया जयपुर–२ (राज०) २३–६–७४

त्रिय भाई श्री शकरसहायजी,

जब मैं प्रापसे वीकानेर में जून (११७४) की ता॰ २६ को मिला था तब आपने मुफे विजोतिया सत्याग्रह का इतिहास, तथा स्व॰ माश्चित्रवतात्वती की जीवनी प्रापकी लिखी गेट की थी। दोनों के लिए मैंने घापका घाभार एक पत्र द्वारा माना या तथा "यशोनाथा माश्चित्रवाल वर्मा" व व के कुछ भ्रमित उल्लेखों की ग्रोर आपका घ्वान ग्राक्यित किया था।

उस मेरे पत्र का उत्तर प्राप्त नहीं होने से ऐसा लगना है कि शायद वह पत्र ग्रापको मिला ही नहीं। आपको पत्र मिलता तो भाप जरूर उत्तर देते। विशेष परिशिष्ट [ ३२४

ऐसी हालत मे मैं मेरी भावता, विचार और स्पष्टीकरण इस पत्र में व्यक्त करता है।

स्रापनं दोनों स्र भेट रूप दिये इनका सामार त्रकट करता हूँ। स्व० वर्माजी की जीवनी पढ़िपर मुफे स्व० माणिक्यलालजी के व नारामणी देवी के करमम, सवर्षमय जीवन का दर्गन हुमा। कर्र वाते मैंने प्रथम बार वाली। बीर स्रापका उनसे किनना पूरान अवव है यह भी इस पुस्तक ने बवाया और इसीलिए स्रापनं साराये भाव से वर्माजी की विश्वित किया है। स्राप्त लेक्स की लेक्सो ऐसे माबोद्गार नहीं निकाल मक्ती थी। ग्रापने उनकी मस्त्रीर उस भाव-प्रेरणा ने लीवी है। पुस्तक से वर्माजी के जीवन के विविध प्रमोक वर्मान प्रथम प्रथम का दर्गन प्रापन एक इनिहासकार की दृष्टिस कराने की वेपटा की है। जो जो सामग्री प्रापकी उपनक्ष हुई वहीं प्रापार सापका होना स्वामार्थिक ही पा। बीर सापने स्व० माणिक्यलालजी को नजदीक मे देवा या, बोखा था, परला या इस्तिल् प्रापकी लगती उसी भारते विश्वास सामार्थन स्व

पर कई ऐनिहासिक घटनायां घटी जिनके जो जो साक्षी घाज मौहूद है उनसे भी ग्राप पूछ लेते नो प्रन्छ। रहना, यह मेरी स्वष्ट राय है। सन् १६४० से मैं न्द्र० इंडिस नुबु नुत्य माशिन्यनानजी को पहुंचानने लगा था। उनकी दिलेरी के गुरापान करने वालों में मैं है। पर उनकी ब्हुज पा गो सखरों बालों वातों का भी में साक्षी खा हैं।

प्रापकी गिली हुई जीवनी पढने के बाद मैंने स्त्र-वशु व्यासत्री के विषय में सपादित ग्रंथ "धुन के धनी" को फिर से देवा, तथा पब्तित हीशालान शास्त्रीत्री की "प्रत्यक्षजीवन-शास्त्र" नामक पाश्मक्या भी (सन् १६७० तक की) धनी देवी पढी। उनमें "यमीगाया माणिवयताल वर्सी" के कुछ बसो के विषय में पूछा तब सास्त्रीजी ने सपनी धारमक्या का हवाला दिया।

१६४२ के "भारत होडों" "करेंक या मरेंगे" का वातावरण त्य्यार करने वाले महासामी के दिव्य भाषण को मुनन के बाद मैं बबई के विख्ला हाउस गया था, महासामी महासामी का प्रया मदे के राज्यों के लिए है वह जावने तथा महासामी हो प्रया मदेव देशी राज्यों के लिए है वह जावने तथा महासामी हायता व्यवस्त में इसितए स्व॰ रामेश्वररदावती विख्ला ने हम लोगों को यही कहा कि कल ह तारील को माप लोग या जाना, तब खब तय होगा। मैं तो दूमरे दिन ही वबई में बडी फार मेरे वीले पारने के निवास स्थान में गिरफार हो यया था। इसितए तारील ह की न महासाभी वाहर में न मन्य नेतागए। पर सामने जनकी जीवनी के पृ० १४० पर उनके शब्द उद्धा कि हैं।

"पाधीओं से चर्चां करने के उपरान्त में जब बाहर आया तो इन्होर के एक मित्र श्री हरिपांज उपाध्याय तथा हीरासासवासओं मुखे बाहर हो मिल गए। मेंने श्री हीरासाल सास्त्री से पूछा "कहिए गाधीजी की सनाह के सबय में आपका क्या विचार है" तो झास्त्रीजी ने उत्तर दिया कि उतकी समक्ष में यह नहीं आता कि खाबिस राजा लोग खंगेंने का साथ ३२६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

कैसे छोड़ देंगे। फिर मैंने इन्दौर के मित्र से पूछा तो उन्होंने भेरे विचार जानने चाहे मैंने उत्तर दिया 'भाई हम तो मेबाडी है हर बार हर हर सहादेव बोलते आए हैं, इस बार भी बोलेंगे।'

स्वर्गस्य वर्माची ने जिन दो नामो का उल्लेख किया उनमे बाज शास्त्रीजी हो मौहद हैं उन्होंने प्रपत्ती धारमरुवा के पू० ७० से छ० दो जो विख्य किया है उसे बाप पड़ोने तव ब्रापको भी स्थित की पूरी जानकारी हो जाएगी। जिस सामग्री को बाप राजस्थान के बीकानेर स्थिन प्रभिन्तसानार में नहीं देख पाये, सम्बद्धाः उमका एक हिस्सा श्री शास्त्रीचो ने प्रपत्ती धारमरुवा से विख्य जिया है। मुखे इस विषय में घौर कुछ कहना नहीं हैं। स्थीति शास्त्रीजी ने मारी स्थित साफ तौर से बतायों है तथा धास्त्रीजी ने प्रपत्ती धारमरुवा के पूठ ७४ पर लिखा है—"जब गायीजी जेल से छुटकर बाये दो मैंने उनको सारा हाल सुनाया। वे बोले तुम (यानो जयपुर प्रवामक्ष्य) ने ठीक किया और कुछ दुवरे सामियों ने यो कुछ किया वह ठीक नहीं था। जो कुछ तुमने जयपुर महारावा से ले लिया उनसे ज्यादा हो साला भी स्था था। 'पड़िन जबाहरलाल नोड़ल पंड एपठ काक से के लिए वयपुर साने बाले से तब प्रकामक्ष्य बार वनस्थानों को छोर ने भी उन्हें तिस्वित किया गया। उनकी कोर से प्रजामक्ष्य को पूरा समर्थन मिला। भाई हरिश्वन्द्रवी ने पिडतजी को एक स्तिय सिखदी कि यह खाजाद मोर्चा धायको मेंट है। पड़ितजी ने स्तिय मुक्तो दे से मीर उसे मैंने धयनी जेव सं रख ली। इस प्रकार प्रापत्ती भारते की सब बाते कमश, भूल में पड़ गयी।''

स्वर्गस्य वर्माजी शास्त्रीजी से नाराज थे उन्ही दिनों की जो बात प्रापंगे जिली वह सही हो सकती है। पर राजपूताना कार्यकर्ता सम्मेलन, वर्म्तप्रास्तीय देशी राज्य लीक-परिषय की राजपूनाना रोजनल कॉमिल जयपुर का कांग्रेस प्रविवेदन, ग्रन्य राज्यों का दौरा वर्गरह कार्यकर्मी से हम चारो आई स्वर्गन्य व्यासजी, स्वर्गस्य क्यांत्री, शास्त्रीजी तथा मैं एक दिनी से निष्ठापूर्वक राजस्थान का एकीकरएए का काम करते रहते थे। कोई मनमुदाय मौजूदा राजस्थान का मित्रमण्डल बनने के पहले नजर नही प्राया। मेरा मानना है कि स्वर्गस्य वर्माजी ने कभी प्रयंगे रोप का जिक्क नहीं किया।

मौदूरा राजस्थान के मित्रमहत का मवाल हमने प्रापस में बैठकर के इस तरह से तय किया या कि हम चारो दिस्ती में सरदार से मिलने यथे उससे पहले देठे ये और पूर्ण एक राज में हमने तय किया था कि हम चारों में से स्वर्गस्य वर्माओं प्रोर में बाहर रहेगें तथा स्वर्गस्य थ्यास्त्रों भीन सारती वी मित्रमण्डल में जाएगे। स्वर्गस्य मरदार के यहां हम गये तब सरदार माहन ने मुके पहले प्रत्यर बुनावा चौर पूछा कि चार लोगों ने बता तर में है। मैंने जवाब दिया कि हमारी निश्चित राख यह है कि स्वर्गस्य वर्माओं और से बाहर रहेंगे, सर्वारस्य वर्माओं प्रोर सार्वी में मित्रमण्डल में जाएगे। उसके बाद सरदार सार्व ने स्वर्गस्य वर्माओं और स्वर्गस्य व्यास्त्रों को प्रत्ये प्रक्रा वुक्ता करके पूछा। व्या पूछी, वर्मा ववाव दिया इसके बार से मुक्ते कुछ मालूम नहीं है, न मुक्ते स्वर्गस्य वर्माओं वा

विशेष परिशिष्ट [ ३२७

व्यासजी ने कहा । पर सरदार साहब ने हम चारो को ग्राधिर में बताया कि मुख्यमन्त्री शास्त्रीजी को बनाया जाए । स्वर्गस्य वर्माजी को उस समय यह भ्रम हुझा कि मैने शास्त्रीजी के बारे में सरदार को कहा। यह अम उनका शायद ग्राधिर तक रहा हो। मेरे लिए तो सरदार स्वगंस्य व्यासजी या शास्त्रीजी किन्ही को वना देते वह मान्य था। स्वगंस्य वर्माजी का मेरे प्रति बहत प्रेम था इसलिए उन्होंने मेरे बारे में कुछ कहा हो यह ही सकता है। ग्रापने उस विषय में लिखा है। सेकिन एक वात मैं यह स्वष्ट कर देना चाहता ह कि राजस्थान में हम चारों से से किमी के भी मन में पद की लालसा नही थी। प्रापने खद ने ही स्वर्गस्य वर्माजी के बारे में लिखा है कि उनको उदयपुर राजस्थान का म स्वमन्त्री बनना पडा। महाराएएकी किसको म स्वमन्त्री बनाना चाहते थे यह बात शायद आपको सासम नहीं है । वे स्वयंस्य वर्माजी को चाहते ही नहीं ये । लेकिन मैने बार-बार महाराणाजी को समभाने की कोशिंग की थी कि म स्यमन्त्री तो वर्माजी ही वर्नेंगे, अन्य कोई नहीं । महाराहा। भी ग्रह गये थे । स्वर्गस्य जवाहरसालजी को मैंने निवेदन कर दिया या कि ग्रगर वर्माजी को म स्थमन्त्री की शपथ महाराखा नहीं दिलवायेंगे तो हम महाराखा की गपथ के समाराह में उपस्थित नहीं रहेंगे। जास्त्रीजी ने भी अलग से जबाहरलालजी को धर्माजी के पक्ष में कहा था। उस पर ने जवाहरलालजी ने महाराखा को बाद में समकाया था। भीर हम लोग देर से समारोह में उपस्थित हुए थे।

सिरोही का प्रका बाते ही बाजू की बात बामने बाती है। धापने बमाँजी की जीवनी में एक बहुत ही गम्भीर उत्तेख किया है जिबसो पढ़कर मुक्ते बहुत हु ज हुता। मुक्ते मातूम नहीं कि स्वर्गस्य वर्माजी ने यह बाव कहा से भुनी या जानी। घापने वर्माजी के सस्मरण को उद्ध किया है (पृष्ट १६८-१७०):

धी वर्गानों ने इस सम्बन्ध में धपने सस्परस्तु में विला है "मरदार पटेल ने मुफे, ध्यावनों, हीराक्षान माश्ती तथा योजुनवारों की बुलाया और कहा कि बीकानेर, जयपुर, जेपपुर, जैपन्तर चारी मिनना पाइते हैं, क्या राध है ? हम चारों ने स्थीकृति दे वो भी ध्याननों, हीरालाल माश्ती तथा योजुनवारों के कले बाने पर मैंने कहा कि हीरालाल साहनी को बत्ता मन दे देना । राजस्थान के कार्यकर्ता इसको पसन्द नहीं करेंगे । सरदार में से विचार पुन लिए योले नहीं । मुके पता नहीं लगा कि आबू को गुजरात को दे देने के सीदे पर, जयपुर राजधानी, वयपुर का राजशमुल और जयपुर का मुख्यमन्त्री बनाना तय हो रहा है !"

"वडा राजस्थान वनने के समय थी गोजुलनाई तथा श्री हीरालाल शास्त्री मेरे पाम प्राए । कहा कि सरबार सिरोही को गुलरात में मिताना चाहते हैं । यदि हम प्राष्ट्र होड दें तो वे तससी कर लेंगे थीर सिरोही छोड़ देंगे । मेंने कहा कि सरीर छोड़ दिया जाग तो नाक कटा लेने मे क्या हुई है। प्राष्ट्र राजस्थान की नाक है, हम नहीं देरों । दोनो उठकर सके नए । गोजुलमाई वस समय सिरोही के मिनिस्टर थे।" (श्री ग्राशिक्यलाल वर्मा के सस्तरपा)

क्रत्यक्षजीवन शास्त्र

इस विषय में कई मलत फह्मिया भेरे बारे में वडा राजस्थान बनने के वाद प्रवाहित की गयी। लेकिन वर्मा माहब के ऊपर के मस्परण पढ़कर गहरा खोन ही रहा है। में पूरी जिम्मेदारी के साथ कह मकता है कि उनका यह सरमरण बेबुनियाद है। उद्यापुर का राजस्थान वनने के माय राजस्थान के हम यह कार्यकर्ती रेल के खाम डिक्टे में (सेनून) में मरवार के समक्ष बैठे थे नव मैंने काश्रेस के प्रष्यक्ष की हैमियत से भी थौर सिरोही के निवासी की हैमियत में भी प्रमन उठाया था कि सिरोही को राजस्थान में श्रेष वती निजा सिराण है तब मरवार ने धणनी साक्षीण मेंनी में जवाब दिया "सिरोही को पूल काफ्री" मेंने मक्षेप में इसका प्रतिवाह किया – मूर्ले केंसे ?

जब मिरोही का विसाजन १६४६ में जाहिर किया गया तस से झाबू की राजस्थान
में मिलाने के मेरे प्रयत्न जारी थे और भगवान की दवा से सिरोही के और आबू रोड़ के
कार्यकर्ताओं के भ्रयक परिश्रम से तथा प्रदेश कांग्रेस कमंदी की चोड़ी बहुत सहायता से
१६४६ में माबू राजस्थान से मिलाों की चोपगणा हुई। चोपता होने के पहने भी भी
मुपादियाजी वर्गरह तो अवस्थान निरासक हो बात कर रहे थे। मुक्के इस नन में प्रभी ज्यादा
मुख नही जिलाना ई लिकिन श्री भारतीओं ने मपनी आरयक्या में सिरोही को राजस्थान में
मिलाने के विषय में जो हो तार दिये थे वे तथा सरदार साहब का उत्तर इस पन्न के साथ
समग्त है।

मिनोही के विभाजन के विरोध में में तरकासीन पालियामेट में बजट के समय Cutmonons दिया करता था। विश्वमें राजस्थान के नव सीगों की गामिन करता था। पि क्षा में पालिया गुजरात के एक मदस्य के हस्ताक्षर भी मैंने करवा सियो। वे मदस्य पालीया के भी देखाने थे। स्वारूप राजस्थान के कामज देखें तब मुम्ने बुताकर कहने साथे कि सभी भी सू प्राच्न को भूल नहीं गया। मैंने नश्चता से पर आयहपूर्वक जत्तर रिचा। आहू की कैसे भूनू, बाबू राजस्थान में रहना चाहिए। स्वर्गस्थ मरसार इस एक बात पर नुभसे माराज ये पर पालस्थान में रहना चाहिए। स्वर्गस्थ मरसार इस एक बात पर नुभसे माराज ये पर पालस्थान में रहना साथे स्वर्ग भी मारी कहते हैं सीर इरजाम लगाते हैं कि में पाल को गुजरात में दिया। यह मेरे विष्य सतीयी भिन्नो का हिप्यार है पर सम्बर्ध मेरे श्री इक में है।

उदपपुर राजस्थान के बोफ क्षेत्रेटरी की बात के बारे में हमारा सबका ही आयह या कि बाहर में आदमी न लावः बाए धमर हमारे वहां ओम्स बादमी है तो । सरदार से इस विषय में जब हम सीम यानी उदबपुर राजस्थान का मित्रवल बौर में मिले तब सरदार ने सम्माने की बहुत कीशिव की थी । उन्होंने बहु भी कहा था कि अनुभवी सलाहकार की उनको सुद की भी अरूरत रहती है। हम हमारे खाबह में बड़े हुए ये इसलिए सरदार ने हमारी बात मान जी। इसने बना साहद का ब्राह्म हुए हो हा स्व विशेष परिशिष्ट [ ३२६

मेंने दो तीन मुद्दों के बारे में ही ध्यान धाकपित करना चाहा। माणिक्यलावजी राजस्थान के नेता थे। उन्होंने कई काम किये। स्वर्गस्थ पिककों के बारे में ग्राविर-प्रापिर में उन्होंने प्रदाने भूत कबूत की थी यह धापने मुक्कों कहा था। यपने बडील वधु वर्गावी ने अदावत्वी देने हुए यह पत्र समाप्त करता हूँ। येरी कोई गवती हो तो बताइनेगा। ग्राप कुछल होंगे।

> ग्रापका बोकुत भाई दौ० भट्ट

पंडित हीरालाल शास्त्री को ब्राह्मकथा "प्रत्यक्षजीवनशास्त्र" से उद्भूत ( पु० ७० से ७२ )

१६४२ के "अर्थे जो भाग्त छोडो" आन्दोलन का समय था पहुँचा। १६४२ की गर्मियों में हम लोग बनस्थली में राजपूताना व मध्यभारत के कार्यकत्तांग्रो का गिविर कर चुके थे, खामकर साने वाले समयं को तैयारी के तौर पर । काग्रेस महासमिति की बैठक के समय देशी राज्यों के कार्यकर्ताओं की बैठक भी ७-६ धनस्त, १६४२ को दबई में हुई थी। किसी ने राजाओं को लिखे जाने के लिये एक पत्र का मसविदा तैयार किया था। उसमे राजाओं को लिखने के लिए लाम बान यह थी कि या तो अर्थ जो से लड़ों या २४ घटों के भीतर हमको यानी प्रजासङ्ख को राज सभला दो । उक्त मसविदे पर विचार होना उससे पहले ही गांधीजी फ्रांदि पकडे जा चुके थे और देशी राज्यों में क्या हो इस विषय में कुछ भी फैनला नहीं हो सका था। उस भमय जिनकी जो समक्त में घापा होगा वही उसने समक्त लिया होगा ऐसा मेरा मानना है। मैंने जबपूर पहुँच कर अपने साथियों से सताह की छीर सुरन्त ही जयपुर प्रजासङल की बर्किन थीर जनरल कमेटियो की बैठके बुलायी जिनमे हिन्दस्तान की बाजादी की राष्ट्रीय मार्ग का पुरा समर्थन किया गया और हिन्दुस्तान के प्रति जो ब्रिटिश रख यह उसकी तथा नेताओं की विरुपतारी को निन्दा की वयी और महाराजा से ज़हदी से ज़रूदी उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए कहा गया । उत्तरदायी शासन के सम्बन्ध में इस ब्राग्नय का उत्तर ब्राया कि महाराज की नीति राजकाज के काम में जनता को शामिल करने नी है। महाराजा को यह लिखने की बात मेरे नहीं जब रही भी कि या तो ग्राय ग्रंगों में लड़ो या २४ घरटो के मीतर प्रवासडल को राज सजला दो। इसके वजाय जयपर प्रजामाडल की ग्रीर से महाराजा की यह कहना तव हमा कि हम लोगों की विटिश विरोधी और यद विरोधी कार्यवाही करनी पडेगी जिसका नतीजा ग्रापके ग्रीर हमारे दीच में लड़ाई ख़िड़ने का बाजायेगा। इस पर में उसी दिन प्राइनमिनिस्टर सर मिर्जा इस्माइल ने मुनेः मिलने को बुलाया और कहा कि महाराजा आप लोगो की ब्रिटिश विरोधी और युद्ध विरोधी कार्यवाही में दलल न दें तब भी ग्राप उनमें लडेंगे क्या ? इस बात पर में प्रजागड़न के कार्यकर्वायों भी खापन में फिर सलाह हुई और उसके यनुनार सर े से वातचीत की गयी विसका नतीजा नीचे क्यानुसार समसीता आयाः

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

१-जयपुर राज्य में बिटिश बिरोधी और युद्ध विरोधी प्रचार के लिये राष्ट्रीय ऋष्ठे के साथ प्रभात केनी व बुलुत निकाले जाएये तो राज्य सरकार की और से कोई बाधा नहीं पट्ट जायी जाएगी।

२-युद्ध के लिये ब्रम्भे जो को जयपुर राज्य की खोर से बागे धन जन की नयी सहा-यता नहीं दो जाएसी ।

३-ब्रिटिन भारत में चल रहे धारोलन में सिक्य भाग लेने वाले कोई भी लोग जयपुर राज्य में आएगे तो उन्हें प्रजामडल की भीर से सब तरह की सहायता दी जायेगी भीर राज्य सरकार उनमें से किसी को भी गिरफ्तार नहीं करेगी।

Y-जयपुर महाराजाकी फ्रोर से जनता को उत्तरदायी जासन देने की हिन्द से कार्यवाही जल्दी में जल्दी जुरू की जाएंगी।

४-महाराजा की ग्रोर से यह सब कुछ होगा तो जयपुर प्रजासङल की ग्रोर से महाराजा के खिनाफ मीथी कार्यवाही नहीं की वाष्णी ।

इसके धनुमार जनपुर में धाँदोलन का काम चानू हुआ, परन्तू प्रजामण्डल के कुछ माथियों को, मैने देखा, गिरफ्तार हुए विना सतीप नहीं हो रहा है। आखिर उन्होंने मुक्त पर वहत दवाव डाला कि जयपर महाराजा के खिलाफ मीची कार्यवाही होनी ही चाहिए। जनकी यह बात मेरी समक्त में नहीं या रही थी तो मैंने सम्बन्धित साथियों को प्रजामण्डल का काम संभानने के लिए कह दिया। परन्त वे उसके लिये तैयार नहीं हुए। ऐसी हालत मे प्रजामण्डल की एकता को कायम रखने की हिन्द से मैंने एक सक्त पत्र महाराजा की अनुप-स्थिति में सर मिर्जा इस्माइल को लिख दिया कि जनता आजादी की लडाई के सिलसिलें में महाराजा के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करने के लिए उतावली हो रही है और उसे मैं नहीं रोक सकता। उस पत्र पर से फिर एक बार सर मिओं ने हम लोगों से बातचीत करनी चाही। बातचीत होना गुरू हथा। पता नही उसका नवा नतीजा धाता। परन्तु उससे पहले ही प्रजामण्डल के कुछ साथियों ने प्रजामण्डल से प्रजय एक धाजाह मोर्ची बनाकर महाराजा के खिलाफ लडाई का ऐलान कर दिया जिससे भर मिर्जा को लिखे गये मेरे उस पन का ग्राधार ही निकल गया और वह वास्तव में प्रभावहीन हो गया। फलस्वरूप प्रजा-मण्डल अपने पूर्व निश्चित दय से ऊपर लिखे समसीते के आधार पर आदोलन में हिस्सा लता रहा भौर दूसरे मित्रो की कार्यवाही उनके ढंग से चली जिससे कुछ लोग गिरफ्तार भी किये गये। जयपुर सरकार और प्रजामण्डल दोनो की ग्रोर ने समभौते का ठीक-टीक पालन हमा । सरकार पर पोलिटिकल डिपार्टमेट का वडा भारी दवाव मामा, यहा तक कि खद पोलिटिकल सेकेटरी सर हेनरी केक जयपूर आए । उस सारे दवाब को महाराजा श्रीर पर पिर्जा किसी भी तरह फैल गये। प्रजामण्डल ने भी ग्रपने हिस्से की कठिनाइनी का हिम्मत के साथ मुकाबला किया ।

विशेष परिशिष्ट [ ३३१

# पंडित हीरालाल शास्त्री की ग्रात्मकथा "प्रत्यक्षजीवनशास्त्र" ( पु० ३३४ ) से

# FROM PANDIT HIRALAL SHASTRI TO SARDAR VALLABHBHAI PATEL

#### Telegram, 9-4-48

Glad to hear Udaipur joining Rajasthan Union This makes Sirchi joining Rajasthan still more inevitable. Besides to us Sirchi mean Gokulbhai more than anything else. Without Gokulbhai we can hardly expect to run Rajasthan. Therefore I very strongly urge that Sirchi should be allowed to join Rajasthan at least for present if no permanent settlement possible just now. But for my pre-occupations here I should have personally come to make this representation to you. I do hope you will fulfil our hopes in this matter. Praying incessantly four your health.

## FROM PANDIT HIRALAL SHASTRI TO SARDAR VALLARHRHAI PATEL

#### Telegram 14-4-48

Reference previous telegram regarding necessity of Sirohi joining Rajasthan. We are greatly disappointed at Sirohi's question not being decided and we see no reason what for one moment it is imagined Sirohi can ever join any group other than Rajasthan. As you know we in Rajputana have full faith in your wise leadership and we have always tried to act according to your guidance but I must submit on this question there is universal strong feeling which I hope you will not ignore. Please, therefore, permit Sirohi join Rajasthan immediately. In any case nothing should be done without satisfying Rajputana workers whose minds are guitated on this point beyond imagination. I consider my duty to inform you of depth of our feelings which together with our respect for you judgement place us in most difficult position. Trust you will kelp us by granting our unanimous request.

# "प्रत्यक्षजीवनशास्त्र" (पृ० ३३८) से

# FROM SARDAR VALLABHBHAI PATEL

#### TO PANDIT HIRALAL SHASTRI

## Telegram 15-4-48

Your telegrams regarding Sirohi. Decision regarding Sirohi has been taken after full consideration and discussion with Prajamandal workers. It is quite clear to me that what Rajasthan wants is not so much Sirohi as Gokulbhai Bhatt. You can have Gokulbhai without Sirohi, Sirohi was in the past linked with Guiarat and it was only by comparatively recent political arrangements that British transferred it to Rajasthan This shortlived political relationship cannot obviously be set against much longer previous connections with Gujarat. If you come here I can explain to you all the circumstances that have led me to come to this decision. I fully appreciate your confidence in me. That should ave convinced you that I would take a decision only for good reasons and not merely out of any personal predilection. I am rather constrained to observe that if you feel Gokulbhai is so indispensable for Rajasthan and feel that you cannot manage without him the future of Rajasthan fills me with some dispair. Dependance on one man hardly augurs well for democracy. I also suggest that before troubling yourself about Sirohi you deal with other States on whom Rajasthan has got more claims.

# ग्रपनी कहानी,

श्रपनी जबानी

## रतनजी और शास्त्रीजी की एकरूपता

वनस्थलों में जब मैंने देखा कि हीरास्त्रातः शास्त्रीओं की धर्मपत्नी श्रीमती रतन बहुन भारतीय ग्रादर्शका जीवनस्थापी स्वीकार पूर्ण हृदय से सरके पति के जीवन में ग्रीर सेवाकार्यमें एक लय हो गयो है तब मैंने हृदय से रतनदेवी का ग्रीभनवन किया।

यनस्थली विद्यापोठको क्रसिक्त भारतीय सस्या बनाने में रसनदेवो का कुछ योग क्रिथिकही है ग्रीर उन्हों के व्यक्तित्व के कारण यह विद्यापीठ इस तरह का विकास कर सका है।

- काका कालेलकर

रतनजी जब से प्रिय सा बनी।

तबहि में हम भी प्रिय सा बने।

जगत को दिखते हम दो जने,

असल में हम एक न दो जने।

—होरालाल शास्त्री

# मेरे पिता पू० दा साहब श्री रघुनाथजी व्यास

की

पुण्य स्मृति में

—रतन

# नम्र निवेदन

भेरे लिए प्रवने बारे में कुछ लिखाने लिखाने की नोबत कभी ग्रा भी सकती है, यह भेरी करपना से बाहर की बात थी।

पर के धौर दूसरे नज़दीक के कई लोग मुक्क्से क्रवनी जीवनी लिखने को कई बार कहते रहे। में उनको यह कह कर टालती रही कि मेरे पास लिखने जैसा कुछ है ही नहीं सो में बया निर्जू?

परानु पिछली बार पूज्य काका ताहेब कालेलकर के वास साहतीयी और में सचे तब बही पर साहतीओं को सास्कवधा 'प्रस्थकोधनसाहम' के बारे में बात चली। तब काका काहेब मुझे हुम्म बेठे हुए कोले — पुत्रने सुष्ट से साहतीओं के साथ एक होकर कान किया है, मुन्हें भी मुख जिल्ला हो चाहिए जनका उपयोग होया। मेरे बन का जो भाव या वह मैने काका साहेब को भी बता दिया।

बध्यन में किस घर में और किस बातावरण में मेरा पासन-पोपटा हुण बहा पर यह सीलने को मिला या कि मुक्ते शास्त्रीजी की इच्छा को घपनी इच्छा बनाकर चलना चाहिए। उसी शिक्षा भीर भावना का मेरे मन पर असर था। इसलिए मुक्ते कादी पहुनने, जेवर व पर्दा छोड़ने भीर छोटे से गाव में बाकर रहने में मुख मिला धौर पुन्ने कभी तककीर केवा जुछ प्रमुभय नहीं हुआ। मेरा मानना भीर सोना बदा यही रहा कि जिस कात गास्त्रीओ को प्रसम्तवा हो बोरे सुख मिले बही कान बोवन भर मेरे करने सा है। यही बात मेरे पाल कहने और जिलने लायक हैं। बाकी बो कुछ मेने तिरा दिया, निजया दिया, उसकी कोई खास कीमत में नहीं मानती।

शास्त्रीजी ने प्रथने स्वभाव के वशीभूत होकर प्रयने "सा की नजर में सा" लेख में न जाने वधा-वधा तिला दिया है ! येंने उनसे वबी अवान से कहा कि आपने इतना भीर ऐसा बभी किसा हैं। जो हो, में इस "प्रथनों कहानी, प्रथनों जवानी" को सारशीजों के सर्व्या में उनके प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग २) के साथ नत्थी कर दे रही हूं। वहना न होगा कि भेरी इस जरा भी जहानों के अन्त से शास्त्रीजों के उपरोक्त सेटा को दे देना भी हम संबक्षी उपयुक्त समा है।

वनस्थली प्रे. भाइपद गुवला १५ स० २०३१ वि. १ सित्रम्बर, १६७४

सौ० रतन शास्त्री

# श्रपनी कहानी, श्रपनी जबानी

# (१) मेरे कुछ विचार

मैं बहुत थोड़ी शिक्षा पायी हुई एक साधारण नारी हूँ। मेरे पास अपनी वात प्रकट करने की शक्ति भी बहुत कम है। सास्त्रीओं का और मेरा जोवन इतना मिला हुआ है कि सचमुन यह कहा जा सकता है कि शरीर दो भले ही हो, पर आरमा एक ही है। ऐसी हालत में शास्त्रीओं के बिचार सो मेरे विचार है। यह शास्त्रीओं की विशेषता है कि वे मुझकों अपने आप से विशेष मातते है। मैं यह तो क्या कहूँ कि शास्त्रीओं के प्रवारों के में मुस तो क्या कहूँ कि शास्त्रीओं के मुसकों विशेष मानने का अर्थ उनको खुद को विशेष मानना हो जाता है।

शास्त्रोजों के साप साथ मैं भी यह मानती हूं कि स्त्री और पुरुप का जोवन एकदम, एकरस होना चाहिए। मेरी निगाह में स्त्री प्रकृति से ही ऐसी वनी हुई है कि वह दूसरों के आराम के खातिर खुद तरुनीक उठाने में रस लेती हैं। मेरी राम में पृष्प को भी ऐसा होना चाहिए और मेरा जाना हुआ सतपुरुप ऐसा हीहे भी। जाव कभी जहाँ कही पुरुप को और से स्त्री के साथ होने वाल दुर्थ्यहार की कल्पना मुसको होती है तो मैं सिहर उठती हूं फिर भी मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि युपुरुप की देखादेख स्त्री को भी मुस्ती वन जाना चाहिए। स्त्री में देवी का दर्शन किया मा है तो उसका देवी बना रहना ही उत्रके स्वस्प के अनुरुप है। पति की और से ज्यादा ही तकलीफ हो तो उसे मजबूर होकर पति से अपने अलग रहने की व्यवस्था करना पड़ सकता है। फिर भी में यह कल्पना

३३६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

किसी हालत में नहीं कर सकती कि जैसा भी है वैसे ही अपने पति को छोड़कर दूसरेपुरुष की और इंप्टिपात करें। भारतीय नारी की यही घोभा है, यही उसकी ज्ञान है। म्झी को पुरुप की वरावरी करना है तो वह अच्छो वातों में करें, पुरुप की बुरी वातों में वरावरी करना स्त्री का धर्म कदापि नहीं हो सकता।

इस विचारधारा में से एक वात निकलती है। वह यह है कि इस नमें जमाने में स्वीं को स्वावलस्वी होना पड़ेगा। वह अपना अलग वेक खाता रखने वालों न वने पर उसके गुजर वसर का सारा आधार पुरंस को कमाई पर ही नहीं होना चाहिए। वेसे भी इत प्रयावह काल से अकेले पुरम की कमाई से सी र परिवार का गुजारा चनना बहुत मुश्किल है। इसका मतलव यह हुआ कि स्त्री को पुरुष से फते ही कम सही पर कमाई करने चानी वनना होगा। कमाई किन परियों से जी जाए, इसका में एक ही जवाब दें सकती हूं कि अच्छे वे अच्छे कि प्ताव की आप है। वार्य हो पा पा वार्य पुरुष के लिए बुरा है तो वह स्त्री के लिए तो और भी ज्यादा बुरा है। ब्योंक अपने यहा स्वी को धर्म को धारण करने वाली माना गया है। मुझे ऐसा लगता रहता है कि यदि स्त्री धर्म के धारण करने वाली माना गया है। मुझे ऐसा लगता रहता है कि यदि स्त्री धर्म विमुख हो जाएगों तो प्रतय ही जाएगा। पूज्य बापूजों कहा करते थे कि स्त्री पुरुष को सह-धर्मणी होती है, इमलिए उसे पुरुष के प्रत्येक धर्मकुरय में उसके साथ शामिल होना चाहिए। पर बापूजों को बया पता धा कि धर्मकुरय नाम को बीज तो राष्ट्र में से प्राय: जुप्त हो जाने वाली है।

स्त्री को कमाई करने वाली वनना होगा और घर वैठे कमाई हो सकेगी सो बहुत मुक्लि है। इमनिए स्त्री को घर के बाहर निकलना पड़ेगा और पुरुषों के साथ करने से कम्या मिलाकर काम करना पड़ेगा। मेरी अदना राम में स्त्री को सभी काम करने का अधिकार होना चाहिए औ अपने देग मे है भी। अपवाद एक ही हो सकता है और वह यह कि स्त्री अपने बरोर को बनावट के कारण और खासकर अपने मानुत्व के कारण भागी काम को नकर सकेनी तो वह नहीं करेगी। बाको जो कई एक बीरागनाएं भी हुई हैं जिन्होंने युद्ध क्षेत्र मे पुरुषों से बरावर का लोहा लिया है। जो स्त्री अपने आप मे दिल को मजदूत हो उसे तो किसी सं भी किसी प्रकार का भय मानने की अरुरत नहीं होगी। परन्तु खास कर कम उस के युवतों का प्रलोनन में फंस जाना कोई खास मुश्किन नहीं होता। और जम कल तो यह भी मुना जाता है कि लड़किया त्रामे वडकर लड़कों को फंसाने की कोशिश कर संत्री है। मेरा तमाम ओर इस बात पर है कि नारी को हर परि स्थिति में अपने त्रील की रक्षा करनी ही चाहिए। इसी वजह से लड़कियों की पुरसा की चिन्ता उसके माता-पिताओं को, अभिभावको को, संरक्षकों को करनी पड़ती है। मैंने अपने नारीविषयक विचार संक्षेप में प्रकट कर दिये हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मामलो में मैं ज्यादा तो समझती हूं नहीं। पर मारत की निवासित्ती की हैंसियत से और माधीजी के प्रति श्रद्धा रखने वाली होने की वजह से मैं व्याकुलता के साथ सोचती रहती हूं कि आखिर क्या उपने वाला है संस्के में में स्थाकुलता के साथ सोचती रहती हूं कि आखिर क्या वनने वाला है संस्के मोरामुद्ध मारत का? कहां भारतीय सम्यता और कहा आजकन ना वहता हुआ यह दिखावा? नारी अपने स्त्ती स्वभाव से अपनी सजावट मर्यादित रीति से करती हो तो उसमें क्या आपित्त हो सकती है? पर स्वियों का आजकल वाला अंगप्रवर्षन आदि तो पुत्र लेकी के विषय जा कर कहां करना चाहती हुई दिखाई देती है तो दूसरी ओर वड़को की कोशिया जड़क कियों का रूप ने की मालूम हो रही है। चिनमा ने नीचे वर्ज की कहांनियों आदि ने सारे वातावरण को कृतिम और विच्या कर दिया है। आर्थिक मामलो में भारत के नेता गांधीजी की सीख को भूताकर पश्चिम की नकत कर रहे है सी मुझे विच्छल पसन्द नहीं है। और आज को इस मन्दी राजनीति ने तो मानो भारत के नेता गांधीजी की सीख को भूताकर पश्चिम का कर रही है सी मुझे विच्छल पसन्द नहीं है। और आज को इस मन्दी राजनीति ने तो मानो भारत के नेता गांधीजी की सीख को भूताकर पश्चिम का तर्नाति ने तो मानो का समक निक्छल दिया है। मैंने देखा है, आजक कर राजनीति में कोई किसी का समा नहीं। स्वार्थ के सिवाय कुछ देखने को नहीं मिलेगा। इस किल्युगी अध्यक्तर से अपने राष्ट्र का और इन दुनिया का बना होने वाला मुझको हो मानूम मही। में गीता के प्रवच्न पश्च रखती हुई नानती हू कि एक दिस धरती पर कोई न कोई उतरेगा ओर वह फिर एक वार स्वती हुई नानती हू कि एक दिस धरती पर कोई न कोई उतरेगा ओर वह फिर एक वार स्वती हुई नानती हू कि एक

# (२) व (३) बचपन और शिक्षा

मेरा जन्म मध्य प्रदेश के खाचरोद कस्वे मे हुआ था परन्तु लालन-पालन और जो भी कुछ मामूली पढ़ना लिखना हुआ वह रतलाम में हुआ।

मेरे पिताजी का जन्मस्थान भी खाचरोद ही था। उनके चाचा आंकार लालजी ने उनको गोद ले लिया और पढ़ाने लिखाने के विचार से उनको बद्ध है तमे थे। ओंकारलालजी का देहान्त-दो चार साल बाद ही प्लेम से हागा। मेरी दादीजी को कई लोगों ने सुझाया कि आप वम्बई रहकर ही इनकी पढ़ाई लिखाई का काम कराओ परन्तु उनके यह बात जची नहीं। उन्होंने सोचां के जितना खर्ची हम दोनों मा वेटों पर वम्बई में लगेगा उतने ही खर्च में रतलाम में रहते हुए चारों वच्चों का काम चल आएगा। मेरे पिताजी के तोन भाई और थे इस तरह से खाचरों के होते हुए भी मेरे पिताजी का स्थान रतनाम वन गया था। पिताजी आदि के होते हुए भी मेरे पिताजी का स्थान रतनाम वन मया था। पिताजी आदि के रतलाम में रहते हुए भी मेरा जन्म खाचरोद में हुआ। क्योंकि मेरी दावीजी के मन में यह हो हुए भी मेरा जन्म खाचरोद में हुआ। क्योंकि मेरी दावीजी के मन में यह से महाना थी कि वच्चे का जन्म वो अपने पर के मकान में

३४० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

होना चाहिए। इसलिए सब लोग मेरे जन्म के समय खाचरोद चले गये। मेरा जन्म भारदीय नवरावि की द्वितीया को सुवह ६ वजे हुआ। मेरे पिताजी का जन्म भी नवरावि की द्वितीया का ही था। मेरे वावाजी वगेरह की यह संयोग कुछ विभेष लगा। मेरे जन्म की खबर चव मेरे वावाजी को दी गयी तव उनको मुनते ही कुछ कम अच्छा लगा। परन्तु वे ज्योतियी थे अतः समय देखकर प्रह आदि का मिलान करके वोले कि लडकी के प्रह वहुत अच्छे हैं। फिर बोले अपने को क्या जिसा कर में वोले कि लडकी के प्रह वहुत अच्छे हैं। फिर बोले अपने को क्या जिस कर में जाएगी उसकी लाभ होगा।

जब में अन्दाजन ३-४ सास की हुई होऊंगी उसके वाद की कुछ वाते मुझ हल्की-हुल्की सो याद आती है। हमारे घर का रतसाम के राज परिवार से मेरे वावाजी व दावाजी के कारण काफी नजदीक का सम्वन्ध था। मेरे वावाजी व स्ववां के कारण काफी नजदीक का सम्वन्ध था। मेरे वावाजी तम्बई रहते थे और वम्बई से जो भोखास-खास चीजे राजमाताजी को मंगवाली होती थी उनका इन्तजाम वे किया करते थे। रतसाम राजमाताजी को मेरी दादीजी में गीता व विष्णुमहस्वनाम सिखाया या और वह उनको गुरुशानीजी कहा करती थी। मेरी दादीजी और भुआजी जो कि वालविधवा हो गयी थी दोनों ही शाम के ४-५ वजे के करीव राजमाताजी के पास जाया करती थी। उस समय वहां राज परिवार की कुछ स्वियों के भी आते का तरीका था। मेरी वे अपने ताथ ले जाती। वहा पर शाम को कुछ रामायण आदि का पार भी वे अपने ताथ ले जाती। वहा पर शाम को कुछ रामायण आदि का पार फजन और क्या आदि हुआ करती थी। जद से में समझने तगी तब से भी मुझे रतलाम राजमाताजी और महारातीजी का अपने वच्चे जैसा ही स्नेह मिला। राजमाताजी के एक भतीजे की लड़की रूपकुं वर भी मेरे बरादर की थी। वह भी रतलाम ही रहती थी। उनका मेरा वरावर की होने से खेलना आदि साथ भी राजमाताजी हे इस वातावरण का मेरे मन पर काफी असर हुआ लगता है। उस वातावरण का मेरे मन पर काफी असर हुआ लगता है।

जब मैं १-६ साल की हुई होऊंगी तब मेरे पिताजी के बड़े भाई की, जो बम्बई रहते थे, इच्छा हुई कि वे मुझे अपने साथ बम्बई ले जाए '। परिवार में उस समय चारों भाइयों के बीच में अकेली यच्ची होने की वजह से सवका आग्रह रहा कि मुझे वम्बई न ले जाया जाए । राज्याताजी ने भी आग्रह किया कि वच्ची को ने वस्तु के मार्च किया जाए । परन्तु मेरी वड़ी मा अड हो गयी कि मे तो इसको लिए विना नही जाऊंगी । उनका आग्रह चना और मेरे कारण से मेरी वादीजी भी उनके साथ मुझे लेकर वम्बई गयी। वम्बई में हम लोग चीपाटी के पास सैडहस्टं रीड पर रहते थे। ताऊजी (वड़े दा साहव) मुझे पुनाने के लिए मामको चीपाटी ने जाया करते थे जो कि बहा से वहुत नजदीक पड़ती थी। हमारे करते पी। इसारे के लिए उनको पास है जहां से वहुत नजदीक पड़ती थी। इसारे के लिए कर्जुजराती वहुत रहत करती थी हरमुख वेन नाम की। उनके दो भतीजिया थी। उनको व मुझको वे शाम के समय कुछ प्रार्थना सिखाती

व कुछ कहानियां आदि मुनाती। भेरे ताऊजी जिनके यहां मैनेजार थे उनके लड़के धनराजजी यम्बई रहा करते थे। कभी-कभी शाम के समय वे भी मुझको बुखा लेते थे। और वे भी मुझ खूब प्यार से खिलीने आदि चीज मंगवाकर देते। वाद में भी इस बात का उनके मन में बहुत व्यान था। संगोग से किसी शादी में इन्दौर में उनके सास्त्रीजी मिल गये और वहां मेरा कि चल गया। धनराजजी की एहले शास्त्रीजी से मेरे सम्बन्ध के विषय में मालूम नही था। वे बम्बई की मेरे वचपन की सारी वाते शास्त्रीजी की बताने लगे कि रानजी की तो मैंने बहुत गोद में खिलाया है।

बम्बई में मेरे ताऊजी मुझे एक नाटक दिखाने ले गए थे। उस की दी एक वाते मुझे अभी भी बाद आती है। एक वात तां यह वी कि एक मजाकिया एक कपडा अपने हाथ में लेकर गुजराती भाषा में कहने लगा पांच कपया नो कापड़ी ने साठ रुपया सिलाई। आडुं छै आज मु र्फशन। दूसरी वात यह भी आयों थी। वह नमटक कावद पिहमनी का था कि धोवी रुपडे थी रहा है और उधर से राजा निकला, तो धोवी बड़े अभिमान से कहता है। अयों नयी आवानो, महाराज ना कापडा सुखे छै।

एक नाटक राजा भृतंहरि का था। उसका और कुछ तो ध्यान मुझे नहीं है। लेकिन ऐसा सुना गया कि कोई भाटिया सेठ का लडका नाटक की देखकर पर छोड़कर चला गया जिससे वह नाटक वाद में खेलना ही बन्द करवा दिया गया।

वन्नई में मैं कितने समय रही यह तो मुझे पक्का ध्यान नहीं है। पर सायव १०-१२ महीने रही होऊ में। वन्नई से वापिस आते पर हमारे मकान के पास ही स्थित एक छोटे से सरकारों स्कूल में मुझे पढ़ाई शुरू करने के लिए भेज दिया गया। वहा पर पढ़ाने वाली तीन कथ्यापिकाएं थी। विनमें दो तो रतलाम की ही थी और एक उत्तरप्रदेश की थी। उत्तरप्रदेश वाली कव वहां पढ़ाने लगी, यह तो याद नहीं है, लेकिन वाद में वे कुछ दिनों के लिए इन्वार्ग के रूप में रही। वह प्रधातप्रध्यापिका स्कूल के पास ही एक किराये का मकान लेकर रहा करती थी। उसकी कुछ आदत ऐसी यो कि कभी किसी चड़की के हिता कि करती की जहती कि तुम्हारे यहां से आचार के बाता, किसी से कहती कि पायड ले आता कभी कहती कि अमुक काम कर आओ। एक दिन उन्होंने मुझे भी कुछ लाने को कहत, मैंने जाकर के घर पर दादीजी (वा साहव) से कहता सियोग से पिताजों के पास उनके मिद्र जो प्रधानाध्यापक थे, वैठे हुए थे। उस समय शायद में नौ साल की होऊसे। उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा रतनजी, क्या बाठ है? वचपन में भी शुरू से ही सब लीग मुझे प्यार से रतनजी नाम से ही सम्बोधित करते थे।

उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा वा (साहव) को तुम क्या कह रही थी? भैने उनको भी वता दिया कि हमारी प्रधानाध्यापिका ने कोई बीज मंगवायी है। मुझे उस समय यह पता भी नही चला कि वे मुझसे क्यो पूछ रहे है? वाद में मैंने सुता कि उन्होंने उस प्रधानाध्यापिका को बुनाया और काफी भला बुरा कहा और षायदे यह भी कहा कि उनके वादे मे ऐसी वाते सुनने भे आएंगी तो नही रखा जाएगा हमारा स्कूल उन प्रधानाध्यापक के चार्ज मे ही था। अब तो कभी-कभी मुझे खयाल होता है कि विना समझे वृक्षे भी यह वाह प्रधानाध्यापिका के खिलाफ णिकायत करने जैसी हो गयी।

में स्कूल की जन्तिम परीक्षा में प्रथम आयी और पिताजी से आकर मैंने कहा कि मैं प्रथम आयी है तो वे हंसकर मजाक में कहने जाने "अन्धों में काना राजा वड़ी खुग हो रही है फर्स्ट आकर"। मेरे पिताजी रतलाम के हाईस्कूल में ही पडाते थे। बीच में अयंकर संग्रहणी हो जाने से उन्होंने साल भर की छुट्टी ले ली। पज उनकी तिवियत ठीक हुई और वे वािंप्स काम पर जाने की स्थिति में हुए तो उनको रतलाम सरकार की तरफ से यह वताया गया कि आपको सायर-दार (जुनी ऑकीसर) बनाया है। पिताजी ने कहा कि यह काम मेरे अनुकूल नहीं पड़ेगा। संयोग से उन्ही दिनों वे उनके एक मिल्ल के यहा खाना खाने गये। वहा पर सैताना के जज, जो कि पिताजी के मिल्ल के दासाद थे, आये हुए थे यह चर्चा कल पड़ी कि लोग तो सायरदारी की गौकरी के लिए कोशिया करते हैं और इनको पत्तवाम महाराज सायरदार बना रहे है सो ये मंजूर नहीं कर रहे हैं कहते हैं यह काम मेरे बस का नहीं है। वे बोल आपको पसन्द हो और आप चलना चाही तो आप सैलाना चलें चलो। वहां पर पढ़ाने के साथ-साथ हम लड़कों को बोर्डिंग मे रखकर उनके लिए और भी कुछ करेंगे। यह बात मेरे पिताजी के जच गई और वे स्तीका देकर रतलाम से सैलाना चलें गये। वहा पर मेरे पिताजी और जज व स्ताजा देकर रतिलाम स सलाना चल गय । वहा पर मर पिताजा आर जज साहब गोर्वधनतालजी और उत्तरप्रदेश से आये हैडमास्टर साहब सरपूप्रसादकी मिश्र इन तीनों ने राजा साहब सैलाना से कहकर एक वीडिंग हाऊस की ग्रुवआत करबायी । उस वोडिंग की ऐसी अच्छी शोहरत हुई कि सैलाना के आसपास के ही नहीं बरव् उदयपुर आदि से भी लोग सैलाव के वोडिंग में लड़को की भर्ती करवाना चाहने को । उस वोडिंग में से निकक्ते हुए कुछ विद्यायियों का तो हमारे साथ परिवार जैसा ही सम्बन्ध वना जैसे निरंजननाथची आचार्य, विल्युत्तजी शर्मा आदि । ऐसे लोग मेरे पिताजी का बहुत ज्यादा अहसान मानते हैं।

मेरे पास होने तक रतलाम में ही हमारा सारा परिवार रहता था। मै भी मेरी दादीजी के साथ वही रही। वीच-त्रीच में एकाध बार सैलाना आना जाना भी हुआ। रतलाम में हम जिस मुहल्ले में रहते थे उसका नाम श्रीमाली मुहल्ला था। हमारे मकान के नजदीक ही एक गोपालजी का मन्दिर था। यहीं पर मैं सुबह मेरी दादीजी के साथ कभी कभी जाया करती थी और वहां के महन्त रंगाचार्यजी ने सबसे पहले मुद्दे "धान्ताकार भुजगशयन" बलोक बोलना मिखामा। श्रुक से ही पता नहीं कैसे और कब रामायण पढ़ने में मेरी रुचि हो गयी थी। हमारे स्कूल में रामनरेश तिपाठी की 'कन्या सुवीधिनी नाम की' पुस्तक पहले से लेकर पाचर्य भाग तक पढ़ाई जाती थी। उसमें दमयन्ती, सावित्री आदि की कहानिया थी। उनको में पढ़ती और मुद्दे ऐसा ध्यान है कि उनका मेरे मन में काफी असर हुआ।

स्कूल के दिनों मे ही कभी-कभी में खाबरोद में रहने वाली एक भुआजी के यहां चली जाती थी। वहां को दो तीन वार्ते मुझको चाहे जब याद आती रहती हैं। एक ती उन दिनों में जो लोग पढ़ाते थे उनको वहा पंड्यां जि कहते थे। वह मामूलो पढ़ना लिखना और ज्यापारिक ढंग का काम जिसे वाण्यावादी कहते थे, लड़को को सिखाते थे। पढ़ाई का तरीका यह या कि यदि कोई लड़का अपने मन से पढ़ने को नहीं आए तो उसको पंड्यां के यहां से दो चार लड़के जाते और उस लड़के के दो लड़के हाथ पकड़ते व दो पैर पकड़ते और टंगाटोली कर ले आते। म्कूल न जाने पर छड़ी से पोटन की बात भी प्रचलित थी। स्लेट की जगह एक लकड़ी की तहती होती थी, उसको पीनी मिट्टी से पोनकर फिर उस पर लिखते थे।

दूसरी वात यह थी कि जितने लडके वहा पढ़ने को आते पे वे सुबह ६ वजे खाना खाकर आते थे और अपने साथ एक कपड़े में कोई चने, कोई मक्का, कोई ज्वार बांधकर ले आते ओर उनकी जब दोफ्हर में ३-४ वजे के करीब नाश्तें की छुट्टी होती तब पास में ही भड़भूं जा ने सिकबा लातें और अपने कुरतें की झोली में लाकर अपने गुरुजी के सामने रखने जो पास में रखी टोकरी में एक एक-दो दो मुट्टी ले लेते। उसके बाद बच्चे वाहर नाश्ता करने को चले जाते।

खाचरोद में गायद १०-१५ मन्दिर होने। वहा पर वारिषा के दिनो में भादवे के महाने में एकादणी के दिन एक पालकी मी वनाकर उसके आमपान दो लड़कों को सजा कर खड़ा करने। सब मन्दिरी की पालकियों का जुलून सा निकलता और जो लड़के खड़े होते वे कुछ दोहे से बोलते हुए अलग अलग पालकी (राम रेवाड़ी) लेकर तालाव तक जात। वहा पहुँचने में उन लोगों को काफी पच्टे लग जाते। आसपास के गार्बों के लोग भा खाचरोद की रेवाड़ी मशहूर होने के कारण देखने की आया करते थे। जिस मन्दिर की रेवाड़ी सब तराम देता।

राजा साहव मैलाना को चैत महीने की तीज का मेला लगाने का शौक या। वैसे तो इसको गणगोर वोलते है जो कि पार्वती का स्वरूप माना जाता है

प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

और सब जगह की देशी रियासतों में इसकी सवारी निकालते हैं। परन्तु बहा सैनाना का मेला कुछ विशेष होता या जिसे देखने के लिए काफी दूर-दूर से लोग आते थे।

परीक्षा के बाद पिताजी मुझे अपने पास रतलाम से सैलाना ले गये। वहा पर उन्होंने मुझको कुछ अंग्रें जी सिखाने की।कोशिश्व की। कुछ अंग्रें जी सीख्ं उसके पहले शादी की बात तय हो जाने से वह वैसे ही रह गयी।

### ४. विवाह

उन दिनों समाज की कुछ ऐसी ही रियति यी कि लड़की की शादी जल्दी कर देनी चाहिए। मेरी दादीजी और भुआजी दोनों मेरे पिताजी के पीछे पडी कर दना चाहए। मरी दादाजा आर चुआजा दोनों मर पिताजा के पाछ पड़ा रहती थी कि वे जल्दी से मेरी कही भी सगाई तय करे। मैं सुनती थी तो मुझे यड़ा दुख और आज्ज्यें सा होता या कि जो दादीजी मुझे दतना प्यत्त करेती है, वे क्यों मुझे दूर भेजना चाहती हैं। मैं जन्मी तब से बादी हुई तब तक दादीजी को ही मा मानती रही और उनके पास हो रही। मा से मेरी ज्यादा निकटता मेरी दादीजी से ही रही, इसलिए दादीजी पर मुझे ज्यादा गुस्सा आता था। उस समय का घर का व आसपास का जो वातावरण या जसमे मेरे मन मे शादी क्यो करना चाहते है कोई अन्दाज नही था। इस मामले में मझको बाद मे अनु-वर्षी करनी चाहत है कोई अव्हाज गहा चार्चित गानवान नुवास बाद न जुड़ भव हुआ कि मैं कितनी अनजान और एक प्रकार से महामूर्ख थी। मेरे पिताजी रत्तलाम के कासपास और दूर भी पता नहीं कितनी जवह गये होंगे। जयपुर में भी उनके कुछ परिवित थे जिनमे एक खास राजवैद्य क्यामजी थे। उनका और रत्तलाम के गोपाल-मन्दिर के महत्तु रंगावार्यजी का एक दूतरे के यहा आना जाना था। इस हिसाव से पिताजी से भी उनका परिचय था। जहां तक मुझे याद है पिताजी पारीको की महासभा मे मेडता गये थे। वहां से लीटते हुए वे जयपुर ठहरे और उनसे कहा कि आपके ध्यान में कोई लड़का हो तो बताएँ। यह बात करके वे सैलाना आ गये। पिताजी सैलाना मे थे। हम सारे परिवार के लोग रतलाम में थे। एक दिन कोई सज्जन आये हमारे ही रतलाम के किसी रिप्तेदार को साथ तेकर। वे पिताजी को पू छने लगे। मेरे चाचाजी ने कहा-वे तो सैलाने है। फिर वे कहने लगे कि मैं किश्वनगढ़ का हूं और मेरी वहन के पास आया हूं। उनमें भी मिल लेता। असल में वे आये थे मुझे देखने के लिए। उस समय मैं और मेरी चाचीजी हमारे घर के अन्दर के कुएँ पर कपड़े घो रही थी। वे सज्जन वोले-देखे आपके यहा कुए कितने गहरे होते हैं। वे अन्दर आये। मेरे न संचाजी को तो कुछ ख्याल नहीं हुआ, लेकिन जब वे कुओ देखकर बाहर आ गये तो मेरी दादीजी ने कुछ ऐतराज सा किया। उच्छेज, लू पगला है क्या, पारीक के बेटे को अन्दर से आया। फिर उन सज्जन ने मेरे चाचाजी से सेलाने का पता

पूंछा और वोले में उनसे सैलाने मिलता हुआ जयपुर चला जाऊंगा। वे सैलाने गये, पिताजो ते मिले। लेकिन मतलब नहीं बताया मिलने का। उसके १०-१५ दिन वाद हो अचान क जयपुर से राजवैद्य श्यामजी का तार आया कि लाप जयपुर एक वार जल्दी आ जाएं। पिताजी जयपुर पहुंचे। उन्होने कुछ मित्रों से शायद वात की होगी। जयपुर में एक खास बड़े बुजुएं ये उनसे वे बात करने की गये। पूछा हीरालान के साथ समाई तय करदे क्या? आपका क्या ख्याल है? ने यो तु के हिरिलान के ताथ विभाव विव के स्वया कि आपका वया विधास है के बोले सब बात ठोक है, पर लड़का वड़ा जिही और आग्रही स्वभान का है। पिताजी ने कहा इसकी तो कोई बात नहीं है, वे जिह करने तो मैं नहीं कर गा। और सर गोरीनाथजी के यहां जाकर के उनसे बात करके सगाई तय कर दी। रतनाम आकर के मेरी दादोजी से बोले-बा साहब, रतनजी की सगाई तय कर रतलाम आकर के मेरी दावीजी से बोले-या साहव, रतनजी की सगाई तय कर आया हूं। उन दिनों में मालवे वाले जयपुर को परिण मानते थे। वोली-रघुजी इतनी दूर परेश में लड़कों को देने का अचानक ही तय कर आये? पिताजी कहते तो तरे नहीं साहव, ज्यादा सलाह करने का मीका नहीं था. इसलिए मैंने तो तय करदी। थोडे दिनों के बाद खाचरोद से बादी की जाए यह वात तय हो गयी। खाचरोद में जब सब लोगों ने मुना तो कुछ हलचल हुई। उन दिनों जाति में आमसी राग डेंथ कुछ अधिक ही था। कुछ लोगों ने जो नजरीक के रिस्ते में थे, परन्तु पिताजी से कुछ माजा जे व यथुर आकर युरोहितजी साहब मर गोपी-नाथजी से कहा कि जापने इनकी समाई कहां तय करवा दी, वे तो जाति से बाहर है। पुरोहितजी साहब ने पूंछा-क्या उनके कुक मे कोई कभी है? इसका उत्तर दे ले जी नहीं दे सके-बोले कुल ये तो कोई कभी नहीं है। संयोग से खाचरोद ही अपपुर जाने वालों में मेरे दूर के मौसा भी थे। बोले ने तो हमारे रिक्तेदार ही अपपुर जाने वालों में मेरे दूर के मौसा भी थे। बोले ने तो हमारे रिक्तेदार ही यह का लि में बाहर । वत लोगों की कुछ नहीं कथी और वे जयपुर के कैंक जयपुर जान वाला म भर दूर के माला भा थे। वाल वे तो हमारे रिस्तदार है। है, पर हैं जाति से बाहर । उन लोगों की कुछ नहीं चली और वे जयपुर से जिसे हो लोट आमे । पिताजी को यह वात वाद मे मालूम पड़ी। कुछ चर्चा खाचरोद मे ऐसी भी फैलायी गयी-इतनी दूर लड़की को दिया है, पता नहीं क्या बात है? मेरी शादी तो मेरे पिताजी को सारे परिवार के आयह से खाचरोद में ही फरनी पड़ी। जयपुर में उस समय हमारी पारीक जाति के जितने यो जुएट थे वे प्राय: सभी शास्त्रीजी की वरात से गये थें। इसलिए उस वरात को यो जुएटो की वरात कहा गया !

विवाह के बाद बरात खाचरोद करने से स्टेशन को रवाना हुई तब मुझको ताने में शास्त्रीजों के बरावर विठाया गया था। ताना बहुत तेज जा रहा पा और एक जगह में उससे लुढ़कने सो लगी। बारसीजों ने बट से मुझे एक वाह से एकड़कर गिरने से वचा लिया। त्या यह भी कोई खकुन था? पता नहीं। ख़ादी होकर जयपुर लाढ़े ही मुझ को विल्कुल नया वातावरण नयी परिस्थितियां मालवे से बिल्कुल मिन्न मिली जिन्हें समझने और अपने आपको उनके अनुकूल बनाने में मुझे काफी मुक्किल हुई ३४६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

दुवारा जब में रतलाम से रवाना हुई तो राजमहल में राजमाताजी को प्रणाम करने गयो। वे मुजे नडको के समान हो माननो थो। मेरे तिर पर प्यार से हाथ रखती हुई वोली-देख वेटा तू यहा से बहुत दूर जा रही है, अफ्ने रतलान व मालवे के वारे में यह मत कहलवाना कि वहा की लड़की लाकर हमने गलत की। जैमी तेरी मा ने शोचा ली है जैसी हो लेना। घचराना नही। हम लोग भी कितनी दूर से आते है, मैं खुद जोधपुर को हैं, वहू जुज की है। इन सब वातों का जयपुर में मेरे मन पर असर रहता कि कोई रतलाम बालों को कुछ ओलम्मा न भेज दे। रतलाम में मेरे ताळजों के बम्बई रहने से व्याजादी का वातावरण था, पहना ओहना भी दूसरी तरह का, खाना पीना भी जयपुर व मालवे का वहुत सिम्न था। जायपुर से उस समय पुरुषों से ही नहीं स्तियों तक से भी पर्या करने का रिवाज था। वाहर भी काफी सख्त परदे के साथ आना जाना शाना होता था। आने के दस पात्र दिन बाद ही मेरे मन में आया कि अपने को तो कुछ काम करना है। पर कुछ काम तो समझ में आया नहीं, सोचा चलों अपन तो रोटी बनाने का काम कर, यह सबसे ठीक रहेगा। पर उससे भी मृश्विक आ गयी।

गलती से मुरू में जो के आटे को गेहूँ के आटे जीसे मूंद लिया। क्योंकि रतलाम में गेहूँ सफेद होते हैं अतः सफेद आटा देखकर मूंद लिया और उसके फुलके बनाना मुक्क कर दिया। फुलके बन ही नहीं पाये। मन में यह खयाल हुआ कि सब लोग कहेंगे इसे रोटी बनाना नहीं आता है क्या? फिर बाद में मालूम पड़ा कि यह आटा तो जो का है। सब लोग मजाक करने लगे कि जी-गेहूँ को ही नहीं जानती क्या? शारसीजी को जी को रोटी खाने का शांक था। अत्यय बाहे जी के करके जी को रोटी बनाना सीखा। तंहुंगा, साड़ी का अभ्यास न होने पर दिन भर लंहगा साडी पहनने में भी दिक्कत होतों थी।

जयपुर आने के कुछ दिन बाद परिवार के लोगों के साथ शास्त्री जी के जन्मस्थान जोवनेर जाना हुआ। वहा जाने पर मुझसे कहा गया कल अपन अपनी कोठी पर चलेंगे। कंठी घटद सुनने से मेरे दिमाम में यह आया कि कही दूर वियोचे में कांद्र मकान होगा। दूसरे दिन मुबह वैलगाड़ी में वेठकर सारहेगी जी चाचोजी के साथ घर से रवाना होकर हम "कोठी" पहुँचे। तव मालूम हुआ कि राजस्थान में खेत में स्थित कुँए को कोठी कहते है और उत जगह उस कुँए से सिचाई करने वाले किसान ने अपने रहने के लिए एक मामूली होपड़ी बना रखी थी। मैंने वहाँ पहुँचकर पूछा-अपन तो कोठी पर चलने वाले थे न ? तव भेद खुला कि कोठी गदी है। बोवनेर में ही हमारे घर में शास्त्रीजी की चचेरी विहन की शादी थी। वहा रिवाज यह था कि नाई, वगैरह को खाना खिलाने के बचाए रोटी घर ले जाने के लिए देव है। मुझ तो जो की रोटी ठोक से बनाना आता नहीं था, काफी कोशिश्व करके मैंने जितनी मोटी रोटी वना सकती थी।

बनायी, पर फिर भो वहा की नायन ने मेरी रोटी की यह टीका की, बोनणी तो मंडनया पोया है।

प्राद्दा होकर आने के वाद भँने यह सोचकर कि लोग आसोचना करेंगे जो की गोटी वगेरह उसी तरह से खाने की कोणिश की जीसे और लोग खाते थे। परन्तु उस कोशिश का नती जा अध्यास नहीं होने से, पेट में दर्द होकर मर्थेक्टर स्टल होने का आ गया। उन दिनों में तिवियन खराब होने पर भी मेरे लिए यह तताना कठिन था कि मेरी तिवयन खराब है। ज्यादा तिवयत खराब होने पर ही सब लांगों को मालूम हुआ। सैनाने से पिताजी को तार देकर बुलाया गया और वे आकर मुझे ने गये। वह समय मुखाकर के जन्म के आय पान का था। सैताने जाने पर मेरी तिवयत कुछ मुखरी। इसके वाद हम लांग रतनाम आये। रतलाम में ही मुखाकर का जन्म हुआ। बैसे ती शास्त्री जी का परिवार काफी बड़ा है, परन्तु मेरी दादीजों का मुझ में ज्यादा म्लेह होने के कारण जब कभी बीमारी की या बच्चा होने की बात आती वह पिताजी को भेष कर तुरस्त मुझे बुलवा लेती। पिताजी के मन में भी हमेशा यह भावना रही कि मेरी दीमारी के कारण से या बच्चों की बीमारी के कारण से गास्वीजी को कोई तकतीफ न हो जाए और उनके काम में कोई जड़चन न आ वाए।

# (५) सैलाना की सैल

## दा साहब की दरियादिली

श्याम के जन्म के समय भेरी वीमारी की वजह में और श्याम के मौ दस ित तक दूव न पीने के पर कर में काफी चिन्नता और परेशानी रही। बेरी रायीची ने तक दूव न पीने के पर कर में काफी चिन्नता और परेशानी रही। बेरी रायीची से सवश न पाने कितनी मानताएँ ले डाली। दिस दिन मुने महलाया या सवा डेद सी आदमियों का मजामा हो गया। मोहल्ले वाले और मिन पिताची हंस कर कहने लगे-जो वच्चा जन्मता है वह पहला ही होना है। संयोग से स्वाभाविक ग्रंग से मेंने पूछन-दा साहब कितने रुपये लग गये होंगे? कहने लगे जुकाएयों बया? पानल, खर्च का हिसाव लगाती है। श्याम ठीक हो गया, तू ठीक हो गया। आइन्दा श्स तरह कभी न मोचना। पिताजी का मेरे साथ और जारसीजी से अटूट प्यार था। यैसे ही वा साहब और वाई का भी हमारे साथ प्रमाद प्यार था। वा साहव शास्त्रीजी को अपने हाथ से पत विखकर वनस्थती भेजा करती। अगस्त्रीजी उनकी जवाव तिखा करते। कभी कभी मुझको भी शास्त्रीजी का सुन्दर पत मितते। कभी मौका मितने पर में भी शास्त्रीजी को कुछ लिख देती। वाई का पारा प्रमुख्य साथ प्रार प्रमुख्य वा वे आज भी शास्त्रीजी से नुख लिख देती।

३४६ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

जाब सैलाने जाते तो दा साहव बहुत सी चीजों के लिए सब लोगों से पहले कह आते, देखना मुझे अमुक चीज इतनी चाहिएगी। लोग उनसे मजाक करते क्यों मास्टर साहव किसी की शादी है क्या? कहते जरे! तुमको मालूम नहीं है, कुंअर साहव और वन्ने आएंगे। नामियों का मौसम होता था तो टोकरे के टोकरे आम लाकर रख देते। सब कहते इतने का क्या होगा? अरे अस्पस बनाना और कुंवर साहव के साथ बन्ने आम भी तो चूसेगे? मा से कहते आज फतां चीजा बिद्या बनाना, हलवाई से जाकर कह आतं, सेव कचीरी शाम को चार बजे भेज देना। कुंछ लोग उनसे कहते मास्टर साहब आप इतना खर्च क्यों करते है, तो हंसकर कहते-भाई तुम्हे क्या चिन्ता है तुम्हारे घर रोटी खाने को आऊं तो मना कर देना। वाद्या उनसे बहत नाजुक होते हुए भी आंर बड़े परिवार की पूरी गिम्मेवारी होते हुए भी कभी उनके मन में नही आया कि मे इस तरह की सारी शिम्मेवारी किस तरह से उठाऊं?

## (६) शास्त्रोजी ने त्यागपत्र दे दिया

शादी के कुछ दिनो बाद ही मुझे शास्त्रीजी के रहने सोचने के उंग से लगा कि फॉरेन व होम सेकटरी का काम उनकी इच्छा के विरुद्ध है। मैंने एक दिन काफी झिझक के बाद पूछा, आप क्या सोचते रहते है? तब मालूम हुआ कि १७-१- साल की उन्न से ही पता नहीं क्यों गाव मे जाकर कुछ काम करने की १७-१० साल की उस से ही पता नहीं क्यों गाव से जाकर कुछ काम करने को वात शास्त्रीओं के दिसाग में लभी हुई थी। परन्तु इस समय इनको हम तोगों के कारण वह वात संभव नहीं लगा रही है। उस समय मेरे ज्यादा सोचने समझने की वात तो नहीं थी। परन्तु मैंने स्वाभाविक ढंग से यह कहा था कि हमारे कारण से तो लोड़ों थी। परन्तु मैंने स्वाभाविक ढंग से यह कहा था कि हमारे कारण से तो आपको इस परेसानी ये नहीं रहना चाहिए। मैं तो जहां आप रहेंग वहीं रह चूंगी और आप निष्कचत होकर आपको ठीक लगे वैदा करें। संयोग से उन्हों दिनों में दा साहव हरिभाऊजी भी उधर आये हुए थे। उनसे भी सायद सास्त्रीजी की वात हुई होगी। क्योंकि वे मजाक से मुझते कहते कि रतनजी मुझे आप गालियां देती होंगी। मैं कहा करती आपको गालियां क्यों दूंगी? मैंने तो मेरी इच्छा से ही हा की है। इसके वाद में तो वीमार होने के कारण रतलाम चली गयी और एक दिन ज्वानक सास्त्रीजी का तार आया-भीने की स्तीफा दे दिया है।" घर में चिन्ता का वातावरण वन गया। मां, दादीजी और सव परिवार के लोग बहुत परेशान हो गये। कहने लगे कि कुंअर साहब ने तथ पिरारिक पोन पहुत्त रखान हा गया कहा लया कि जुलार ताहर ग कितनी बड़ी गलती की हैं। मुझे तो यह वात मालूम बी, इसलिए कोई तकलीफ होने का सवाल ही नहीं था। हा, पिताओ जरूर ऐसे रहे कि वे न तो नाराज हुए और न शास्त्रीओ की सरकारी बोहदा छोड़ने का बोलमा ही दिया।। पिताजी ने यह तय कर रखा था कि जैसी शास्त्रीओ की इच्छा हो उसी के अनुसार सव कुछ करना। किसी बुजुर्य ने जयपुर से समाई के समय पिताजी से कहा था कि मास्त्रीजी बड़े आग्रही स्वभाव के हैं। तब पिताजी ने कह दिया था कि मैं आग्रह नहीं करूंगा। अपनी इस बात को पिताजी ने अपनी जिन्दगी में अक्षर अक्षर निभाया। जिसमें शास्त्रीजी को अनुकूलता थी उसी में उनको खुशी थी।

# (७) कलकत्ता प्रवास, वर्घा यात्रा

शास्त्रीजी सरकारी काम फोडने के थोडे दिन वाद कलकता अकेले गये। मै दोनों वच्चों-शान्ता और सुधाकर-को लेकर रतलाम मे रही । मेरे पिताजी का परिवार सम्मिलित था सो पिताजी के सैलाने रहते हुए भी ज्यादातर मां वगैरह का और खासकर जब में जानी थी तब तो रतलाम ही रहना होता था। कलकत्ता जाने के थोड़े दिन बाद शास्त्रीजी हम लोगों को कलकत्ता ले जाने के लिए आये। परन्तु मेरे ताऊजी ने जिनको मै वहे दा साहब कहा करती थी मना कर दिया। बोले अभी थोडे दिन पहले सुधाकर को निमोनिया हुआ है, रतनजी बच्चे को वहा अकेली कैसे परदेश में संभालेगी । आखिर शास्त्रीजी हम लोगो को बिना लिये ही गये। बाद में द्वारा वे अयपुर आये तब हम लोग कलकत्ता गये। सियालदह स्टेशन पर पहुँचे उस समय और कौन लोग थे यह तो मुझे ध्यान नहीं है, परन्तु भाई सोतारामजी सेकसरिया, वसन्तलालजी मुरारका, जोवनेर निवासी विश्वेश्वरदयालजी अवश्य थे। मै दो दिन की यात्रा से रेल में थकी थकाई परेशान सी पहुँची थी और मेरी समझ ही नहीं पड रहा था कि कैसे क्या सामान आदि ठीक करूं, इन सब लोगों की मौजूदगी में। उस समय तक मेरा पर्दा छूटा नहीं था। याद नहीं कौनसी किताव ने जाकर एक सरफ खिड़की में में पढ़ने को बैठ गयी। सीतारामजी उस बात की मुझे चाहे जब याद दिला देते है। कलकत्ते मे बासतल्ले में लडकिया का स्कूल है जिसकी देखरेख सीता-रामजी किया करते थे। रोज तो नहीं पर कभी कभी झान्ता और सुधाकर दोनो वच्चों को लंकर मैं भी वहा चली जाया करती थी। उसी समय मेरे मन मे आया अपन कोई परीक्षा ही दे डाले क्या ? हम लोग कलकत्ता सात आठ महीने रहे होगे । मैने वहा मारवाडी विद्यालय मे विनोदिनी की परीक्षा का फार्म भर-कर दे भी दिया । शास्त्रीजी का गांव में जाने से पहले थोडे दिनों के लिए दूसरी जगह रह कर कछ जानकारी बादि लेने का ध्यान था उस समय। और कलकता प्रवास उसी का हिस्सा था। कलकत्ता काग्रेस के थोडे दिनो पहने यह तय हुआ कि शास्त्रीजी, वजमीहनजी ओर मै पुरी वर्धा जाएं। व्रजमीहनजी तो पुरी तक ही हमारे साथ जाने वाले थे सो पुरी से खड़गपुर होते हुए वागस कलकत्ता चले गयें। मे और शस्त्रीजी खडगपुर से वर्धा पहुंचे। भाई सीतारामजी और बहन भगवानदेवी भी वर्धा पहुंच गरें थे। मेरे लिए च वहन भगवानदेवी के लिए वर्धा का सारा वातावरण विल्कुल नया था। जाते ही तो हम काकाजी जमनालालजी वजाज के महर वाले मकान पर पहुचे । वहां नहाना-धोना, खाना-पीना आदि

किया। रात को वही सोये। पहली वार उस दिन काकाजी की वडी लड़की कमलाबाई से थोडी जान पहचान हुई । दूसरे दिन हम सब लोग वर्धा में महिला आश्रम बहा बापूजी एवं बाहर के बहुत से कार्यकर्ता ठहरे हुए थे, ठहरने के लिए चने गर्ये थे। वहा जाने पर काकाजी ओर काकीजी जानकी देवीजी से मिलना हुआ। भाई क्षूरचन्दकी पाटनी भी जयपुर से वर्घा उसी समय आये थे। वर्घा के आध्यम के बानावरण में वहन भगवानुदेवी को काफी दिनकत रही। मुझे खुद को तो एकाध दिन के बाद ही सबसे मिलना जुनना, जान पहचान होने के बाद कोई अटपटापन नहीं लगा। वहां भोजन करने को सब बहिने एक पंगत लगाकर बैठती थी। जिसको जो चाहिये वह परोसने वाले से अपनी जरूरत के माफिक मांग कर हो होती थी। इसमे वहिन भगवान देवी को वडा संकोच होता था। इसलिए हम दोनो माथ बैठती और उनकी सारी जरूरत की बात मैं ही पूरी कराती। ठीक से तो ध्यान नहीं है पर हम लीग शायद १४-२० दिन टहरने के विचार ने वधों गये थे। परन्तु च-१० दिन के बाद ही बापूजी से बातचीत होकर गाव में रहते बाली बात शास्त्रीजी की तय हो गयी। शान्त्रीजी जब वापू के पास से आये तब बाहर सीनारामजी खडे थे और मैं भी पहुंच गयी। सीता-रामजी ने पूछा क्या तय हुआ ? बोलो गाव में रहना तय हो गया, पर जमना-लालजी और घनश्यामदासजी सहमत नहीं हुए है। जननालालजी ने मुझको तकलीक होने की आगाही दी है। और घनश्याभदासजी ने मुझको रुपया न देने का चैलोज सा दिया है। सीजारामधी कहने लगे-गाव के काम मे कितना स्था खर्च अपने को करना पड़ेगा? १०० रुपये मासिक तो अपन ही खर्च कर सकतें हैं। आंग् उमी दिन हमारे वर्धा से स्वाना होने की बान तय हो गर्या। वहिन भगवान देवी घवराई हुईं मी बोली रतनजी तुम चली जाओगी तो मेरी अकेली का निभाव कैसे होगा ? सीतारामजी से कहने के लिए कहा कि उनसे भी कही कि अब कलकत्ता चले।

### (=) वनस्थली की खोज

वर्धी में हम लोग रतलाम पहुंचे। मुझे और वच्चों को रतलाम छोड़कर गास्त्रीजों गांव को तलाफ़ करने के निए जयपुर रवाना हो गये। इसके बीच में वे वारोजों में गये। वहा से लौटते वक्त खादी की चार साड़ियां और पेटीकोट व ब्लाउज का बारडों नी का अच्छा छमा हुआ परन्तु बहुत मोटा कपडा भी तेकर आये। क्यों कि जब आस्त्रीजी वर्धों से चले थे तत मन में यह बात तय हो गयी थी कि बास्त्रीजों को खादी पसन्द हैतों अपने को जल्दी ही खादी पहन्ता गुरु कर देता है। जो चीज डनको पसन्द नहीं उसके पहन्ते से क्या फायदा? वैसे तो जिप हो दिखी कपडा पहन्ता तो में कलकत्ते गयी उसी समय छोड़ दिया था। भाई सीतारामजी बोने—जेवर नहीं पहन्ता है जो किर इसकी रखने रे

क्या फायदा ? मैने उसी समय उनसे कह दिया था कि आप इमको जरुर वेचवे मैंने तो छोड ही दिया है। उसके साथ मैंने यह जरुर कहा था कि हाय की चूडी. नाक का लोग व कान के ईयरिय ये चीजे मैं नहीं छोडूं गी क्यों कि मेरी राज का लोग व कान के ईयरिय ये चीजे मैं नहीं छोडूं गी क्यों कि मेरी राजादि को यह उतारने से बुरा लगेगा और अपअकुन माना जाएगा। इस प्रकार सार चूडिया, एक अंगूठों और एक पतली सी चेन रखी ययी। वह चीजे जीवनकुटीर की स्थापना के बाद तक मेरे पास उसी रूप में काम में आतो रही। गास्त्री जो बारडोली से आंकर अयपुर के गावों में सुमकर स्थान पतर करने की योजना बना रहे थे और मैं अपने निहाल एक शादी में जाने की तैयारी में थो। अजवानक जोवनेर से तार आया कि गास्त्रीजी की अुआजी चल यही है। हम लीग सैंबाने के जीवनेर पढ़ेचे। मुझे ओवनेर छोड़कर शास्त्रीजी मान की तलाश में बहा से रवाना हो गये। बीच में मेरी कुछ ज्यादा तिययत खराद हो गयी। और मुसरो पिताजी को बुलाकर सैंबाना भेजना पड़ा। वह समय प्रमारत प्रतिक्रता वो साल की उन्न में ही देहाल हो गया। जन्म के आसदास का था। प्रास्त्रीजी ने अपने विच्य दुर्गाप्रसाद के साथ महोनो तक गादों में पूमकर निवाई तहनीन के बनथ नी गाव को पनन्द कर सिया और दो-चार-पाच झोपडिया वन गयी आर कुछ साथी कार्यकत्ता भी जुट गये।

## (६) वनस्थली के प्रथम दर्शन

मै वसम्बक्षी को स्थापना के काफी दिनों थाद बान्ता, मुखाकर और दो महीने के प्रभाकर को लेकर निवाई स्टेशन पहुंची। निवाई स्टेशन पर हमकों के के लिए एक बैनगाड़ी और एक छोटी यहनी आयी। उस छोटे दो महीने के धक्ने को एक आवमी को गीद में दे दिया और दोनों वच्चों को लेकर में उस वहनी में बैठी। थांडी दूर चले होंगे कि वहनी को उछाला लगा और जानतावाई उसमें से गिर पड़ी। उसके ज्यादा लगी तो नहीं, पर में अन्दर से काप गयी। उसी पुंचित के धिर छोटे हुए लेखे वहन्यी पहुंच। वनस्थलों चैसे छोटे गाव को देखने का यह मेरा पहुंचा मौति पड़ी। पहुंच ने पर एक गाव के ब्राह्मण ने हम लोगों के लिए उड़द की वाल, मोटी मोटी गेडू की रोटिया और मोटी मोटी गुड़ का दिनया नैपार कर रखा था। वह सारा देखकर में वड़ी परेगानी में हम लोगों के लिए उड़द की वाल, मोटी मोटी गेडू की रोटिया और मोटी मोटी गुड़ का दिनया नैपार कर रखा था। वह सारा देखकर में वड़ी परेगानी में हम लोगों के लिए उड़द की होते हुए ये चीज़े में खाऊ या नहीं ? साथ में तत्ताम से आया हुआ कुछ खाना था। उससे व बोडा वहुल उन चीजों में में कर उस रात सो गये। फिर हुसरे दिन सारी चीजों को देखकर रोटी आदि वनाने का हिसात विठाया। जास्तीजों के एक जिय्य की पत्नी कौक़त्या भी वनस्थती पहुंच गयी थी। वच्चे को सेमानने का जिम्मा उसका किया।

# (१०) जीवनकुटीर का जीवन

उस समय जीवनकुटीर में शास्त्रीजी ने यह तय कर रखा था, कि चूं कि हम गाव के लोगों के लिए काम करने को आये है तो हमारा रहन-सहन व खाना-पीना भी विल्कुल सादा होना चाहिए । और जो चीजें गाव में मिलती हो उन्ही को काम में लेना चाहिए। उन दिनों में वनस्थली के आस पास एक दिन की मजदूरी छह पैसे थी तो हम लोगों को भी अपना काम ६ पैसे रोज में हो चलाना चाहिए। क्यों कि गाव के लोग गुड तेल के अलावा कोई चीज निवाई से लाकर मही खाते है. इसलिए हमको भी इसके अलावा निवाई या जयपूर से कोई खास चीज मंगदाकर काम मे नहीं लेनी चाहिए । वनस्थली उन दिनों मे किसान कोई साग वगैरह पैदा नहीं करते थे। सिर्फ गाजर, कचरी और गंवार की फली ही होती थी। हर मौसम में गाजर व फली भी नही होती थी इसका नतीजा यह आताथा कि मूंगकी दाल सुबह व शाम को सूखी पत्तियों की कढी। मुझकी तो उस स्थिति में भी मन में कोई खास परेशानी नहीं थी। पर दोनों छोटे वच्चे बहुत तंग करते थे । मृंग की छिलके वाली दाल उनकी बिल्कूल पसन्द नही आती और नाराज होकर कहते हम काली दाल नही खाएंगे । तुने चावल तो बनाये ही नहीं। उन दिनो गेह बनस्थली में लाल ही पैदा होते थे। शान्ता तक यह कहती थी कि भाभी इन काली रोटियों मे माजी के हाथ का रंग लग जाता है। इनसे रोटी मत बनवा। हम दोनों को तो नानाजी के पास सैलाने भेजदे, त रह यहा। एक दिन सुत्रह इसी तरह का झगडा सुधाकर खाने के समय पर कर रहा था। तब आस पास के गांव के कुछ किसान लोग आये और वोले हम तो पण्डितजी महाराज के दर्शन करने आये है। हमारी झोपडियो को देखकर बोले महाराज आपके "कमठाणो" का क्या कहना ? आप तो दाल फुलके खाने वाले है। सुधाकर नाराज होकर झगड़ ही रहा था सो गुस्मा करके बोला यह दाल फुलके तुम ने जाओ। वैसे तो निवाई मे आलू आदि कुछ चीजें मिला करती थी और रोज एक आदमी निवाई से पैदल डाक लाने से जाने को आया जाया करता था। परन्तु निवाई से कोई चीज नहीं संगवाने का तो नियम बना रखा थान ?

जीवनकुटीर में धीरे धीरे काफी साथी कार्यकर्ता जुट गये। स्त्रियां दो तीन से ज्यादा कभी उनके साथ नहीं रही। जीवनकुटीर में इन लोगों ने यह नियम वना रखा था कि मुबह ४ वर्ज षण्टी लगे तब सब माई-बहिनों को उठकर प्रार्थना में मामिल होना चाहिए। यदि किसी मी कारण से किसी साथी को एकाघ मिनट की देर हो जाए तो वह क्षतिपूर्ति के लिए १६० गज सूत अपने समय में से कात कर दे। मुबह ४ वर्ज से रात १० वर्ज तक के संघ्या के समय के अलावा अपना समय होता वा। उन दिनों कार्यकर्त्ताओं की जीवनचर्या बहुत किन भी। ७ वर्ज तक तैयार होकर रोटी खाकर गायों में जाना, शाम की साथ

ले जाना । दिन में कताई पिजाई आदि सिखाना । कोई वीमार हो तो दवा आदि करना और शाम ६ वजे के बाद रावि पाठशाला चलाकर बनस्थली लौटना। वनस्थली के आस पास के ६ मील के क्षेत्र के गावों मे से हरेक कार्यकर्ता के अलग अलग क्षेत्र वंटा हुआ था। सब कार्यकर्ताओं को सुबह ७ वजे खाना मिल जाए यह जिम्मा मेरा था। उस समय मेरे मन में भी यही भावना रहती थी कि गढ़ जिन्मा भरा था। उस समय भर मन म भा यहा भावना रहती यो कि सुधाकर वर्गरह जब बड़े होगे तब होंगे अपने सच्चे बड़के बक्के व भाई तो ये लोग से हैं है जो अपने इस कार में अपना सहयोग देते हैं। इस कारण से कभी भी उन लोगों के लिए रोटी बनाने, खिलाने—पिलाने में मुझे तकलोफ नहीं हुई बिल्क सुख निजता था और अच्छा लगता था। कभी कभी तो ऐसा मौका भी आया कि मेरे बुबार आ गया, पर मन में यही रहता था कि ये लोग यके थकाये आये है आते हो उन्हें रोटी तो मिलनी ही चाहिए न ? एक दिन शास्त्रीजी गाव के दौरे से आत हा उन्हें राटा ता तमला हा चाहरू न : एक वन बारकाण गाव के दार स आये । मेरे बुखार था, में ओडकर तो रही थी । मजाक मे वोले तुम मो रही हो, हमारे खाने का बया होगा ? मेने कहा आप सबका खाना वनाकर तोयी हूं । मुझे मानूम या कि शाम तक मुझे बुखार हो जाएगा । उन दिनो मेरे एक दिन छोड़कर एक दिन बुखार हो जाया करता था । एक बार ऐसा मौका आया कि हम र०-२४ कार्यकर्ता होने और गांव की जो वहिन आटा पीस कर देती थी वे कुछ पैसे बढ़ाने नावनाया हो। जा ना ने जा जा कि के विद्याल की नहीं। इसिलए के लिए अड़ गयीं। शास्त्रीजी के आगृहीं स्वभाव की वह वात कची नहीं। इसिलए यह तय हुआ कि आटा सव लोग मिलकर पीस लेगे। चार पांच चिक्का मगदायों गयीं। सव लोग मुझसे कहने लगे पीसना आपके दस की वात नहीं है। निर्माणिया पर्या । सब लाग जुझत कहन तथ पालमा आपक यत आ वात महाहा । मैंने कहा यह तो ठीक है कि आप सब लोगों को में अकेली पीसकर नहीं खिला सकती, पर यह भी मुझ में नहीं होगा कि आप लोग पीसो और में खाऊं। मेरे और कम से कम दोनों वच्चो के लिए आटा तो मैं खुद ही पीसू गी। बयोकि और चिक्तगां तो भारी थीं और उन दिनों मेरे संग्रहणी की वीमारी भी थी। इसलिए भिरे तिषु उन्हें आटा पीसना किसी भी स्थिति में संभव नहीं हुआ। गाव में एक बुढिया के पास छोटी चक्की थी। गैसे वैसे उसे राजी करके वह चक्की उससे ले ली। यह कार्यक्रम करीव ४-५ महीने चला । मैं तो हमारा आटा दोनो वक्त दो बार में पीक्षा करती थी। बास्तीजी सहित उनके साथी कार्यकर्ता तो एक समय में ही पीक्षकर रख देते थे। क्योंकि ७ बचे तो उन्हें गांव में जाना होता था। बास्तीजी ने कुबा बनवाया, जिसके बनाने में उन्हें खुद को वैल की जगह जूतना पड़ता था।

जलाते के लिए वनस्वनी में ईधन भी मुनम नहीं या। जंगत से छोटे मोटे छाणे विनदा कर काम में लेते थे। रोटी वनाने में एक वनस्थली के ब्राह्मण कार्यकर्ता रहते थे उनको मदद मिल जाती थी मुझको। एक बार ऐसा मीका आया कि कार्यकर्ताओं को मासिक अलाउन्स देने के लिए रुपया नहीं था और शास्त्रीजी ने यह सय कर लिया था कि होया सो देखा जाएगा में तो किसी से हुछ नहुने जाऊंगा नहीं । कार्यकर्षाओं से वोले-पर में जो अनाज है उसकी रोडो वनाकर खाओं और भीज करों । यह स्थिति घायद दो एक महीना चली होगीं । जमनातालजी को किमों ने बनाया कि घारद्वीं वो तो बढ़ी तकलींक में काम कर रहें हैं और यह तम कर रखा है कि किसी से कुछ कहना नहीं । घारद्वीं जो ले पान वस्त्र है जो यह तम कर रखा है कि किसी से कुछ कहना नहीं । घारद्वीं जो वहा गयं, बानचान हुई । बमनानातजीं ने उनको यह नुसाया कि आप वस्त्र न्वावलय्वन का काम करते हैं नो चरखा संघ से अनुदान लेने में क्या दिक्कत है ? वान्द्वीं बोले कि में क्या कि आप को कुछ भी नहीं करना पड़ेना, आप नो चरखा संघ पड़ कर बहु तक करावा कि आप को कुछ भी नहीं करना पड़ेना, आप नो चरखा संघ से अनुदान ले लो जिससे आपका कुछ से नहीं करना का जारी ज्यादा अच्छी तरह व तेओं से चले ।

इस सारी कठिन स्थिति में भी मैंने मन में कभी कोई तकलीफ अनुभव नहीं की ओर हमेजा मंतोप और खुर्जी ही रही। एक बार जयपुर में मेरी वड़ी बहुन सर गोपीनायजो की पत्नी मुझसे कहुने लगीं-तुम बनस्यली में इतनी तक-लीफ व परेशानी में गहती हो। यद तुम बनस्वती नहीं जाती तो शास्त्रीजी भी जयपुर ही आ जाते । तुम्हारा घर का अच्छा मकान है । मैंने उनसे कहा जीजी-वाई जब उनको नाव व झाँगड़े नें रहना पतन्द है तो मैं शहर व मकान का न्या करूं? संयोग की बाल यी कि जास्त्रीजी ने नौकरी ठोड़ी उसके दो बार महीने पहले ही जयपुर का मकान दो हजार रुपये में खरीदा गया था। पहले हम सर गोपीनायजी के एक मकान में रहते थे। हम लोग जब कलकत्ता जाने लगे उस समय नया खरीदा हुआ मकान मरम्मत होकर ठीक हुआ था। मकान की मरम्मत होते ही यह प्रश्न आया कि अपने को तो यहां रहना नहीं है तो इस मकान का क्या करें ? एक बार तो यह विचार हुआ कि इस मकान को किसी काम में दे डाला जाए । फिर मिलों की सलाह से मकान को रखना तब हो गया । शास्त्रीजी का गुरू से ही कुछ लड़कों को तैयार करने का विचार या। शास्त्रीजी जिस समय सरकार में थे उस समय भी एक घंटा पारीक पाठशाला में ऑनरेरी पटाने जाते थे। रात को कभी कुछ लड़के भी जा जाया करते थे। उस समय शास्तीजी ने सामने के एक मकान में कुछ लड़कों को रखने की व्यवस्था करली घी। मेरे दिमार में यह बात आयी कि जो लड़के उस मकान में रहते हैं उनको ही अपने पात मकान में क्यों न रहने दिया जाए। इस तरह से जयपुर के मकान की नागल राजस्थान छात्रावास के रूप में हुई? मैं जब कभी जयपुर जाती तो मेरी यह इच्छा रहती कि अपन इन सोनों को कुछ अच्छी चीज बनाकर खिलाएं। उस मकान में छात्र के रूप में रहे हुए कुछ लड़के तो बड़े योग्य व प्रतिभाशाली निकले । जैसे विड़ला एजूकेचन ट्रस्ट के सचिव व हिन्दी-संस्कृत के विद्वान डॉ० कन्हैयालाल सहल, राजस्थान के भूतपूर्व होम कमिश्नर थी शिवशंकर, श्री प्रकाशचन्द्र गोयल जिन्होंने ३५-४० सालों तक जीवनकुटीर और चनस्थली विद्यापीठ का कार्य संभाला। उन सबसे आज भेरे मन में वडा संतीप व खुशी होती है।

### ११. शान्तावाई चली गर्यी

जीवनकुटीर का कार्यक्रम चल ही रहा था। इस बीच में मुझे प्रभाकर के ज्यादा बीमार होने से व मेरे वंग्रहणी हो जाने से काफी दिनों के लिए सैलाने जाना पड़ा।

श्याम जन्म से ही नाजुक और वहुत योमार रहा। एक वार हमें शान्ता, मुझाकर, मुमीना तीनों को वनस्थती क श्रीक्षरजी नाम के कार्नकर्ता के पास वनस्थती छोडकर श्याम के इताज के लिए अयपुर जाना पड़ा। पता नहीं वयों सानता का प्यार श्याम से अयादा था। यह मुझे कहने नगी तू जाकर के श्याम को ठीक कराता। हम तीनों जने वनस्थती में अच्छी तरह रह चाएँ। श्याम योड़ा ठीक हुआ तो हम लोग उसे लेकर वनस्थती आये। उस दिन श्याम को जो बुकी हुई इसकी कल्पना नहीं हो सकती। कि रण्याम की तिवयत खराव हुई तो उसे व दोनों वच्चो को तेकर सैनाने जाना पड़ा। वहा पर वह श्याम को कंकर वरावर बुने में झूनती और कहती रहती थी कि नानीजी आप भाभी को संभातो, इसकों तो मैं संभात जूंगी। श्याम के वाद एक वड़की का जन्म हुआ या। वह ७ दिन की होकर चनी गयी। हम लोग श्याम के थोड़ा ठीक होने पर वापिस वनस्थती आये। जिस दिन हम लोग संवाने से रचाना हुए उस दिन पता नहीं क्यों शान्ता को सैनाना छोड़कर आते में वड़ा और बचाया वह मेरी मा और दावोजी के विपटी ही रही। कहने लगी नानीजी अवके तो हमारा मन नहीं भरा। वड़ी मुश्कल से हम लोग वस में वैठकर रतलाम पहुचे।

शान्तावाई के वारे में मैं क्या कहूं ? सुश्रीला—मुधाकर को संभाल लेने के अलावा वह घर का सारा काम कर डालवी थी। याव के वच्चा को पढ़ाने के लिए वैठ जाकी, कभी हार भोनियम वजाती हुई उनकी भवन सुनाने लगती। एक वार उसके सिर में वहा भारी फोडा ही गया। उसका ऑपरेशन विना स्कोरोफाम के हुआ तो भी छोटीसी शाता ने जूं तक नहीं की। नाठी जीवनसुटोर के युक्क कार्यकराओं को वह परास्त कर देती थी। इतना समय हो गया—शास्त्रीजी के आज भी शान्तावाई का नाम मुनकर, उसका फोटो देखकर आंद्र आ जावे हैं। ऐसी थी शान्तावाई श नाम मुनकर, उसका फोटो देखकर आंद्र आ जावे हैं। ऐसी थी शान्तावाई श वास्त्रीजी की मद से मैंने और शान्तावाई ने एक एक परीक्षा पास करली थी। बाद में शास्त्रीजी का हम दोनों को बी०ए० पास करने का संकल्प हो गया शार

११६] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

जो हो, वकौल आस्त्रीजी के शान्तावाई शाख्वत होकर वनस्थली के कण कण मे रम रही है, रमी रहेगी।

वनस्थली आने के बोड़े दिनो वाद ही पता नहीं क्यों भान्ता को एक अजीव सी धुन सवार हुई कि हम तो एक वच्चो का स्कूल वनाएंगे । हमको औजार व परात देदो, हम ईटे वनाएंगे । शान्ता, सुशीला व मुधाकर रोज धेल-खेल में दस रस, पन्द्रह-पन्द्रह इंट बनाते । कोई पूछता क्या करते हो तो कहते कि हम स्कूल वनाएंगे। उन दिनों बनस्यली में सबको शौच के लिए जंगल में ही जाना पडता था। एक दिन अचानक १२ वजे के करीव शान्ता वाहर निमट कर आयी। मैंने था। एक दिन अचानक १२ बजे के करीव झाला वाहर ।नमट कर आया। मन हाय छुताये तब कहने लगी मेरे सिर में दर्द है। जाकर तट गयी। थोड़ा बुजार ही गया। किर ४ वजे के करीव कहा कि मुझे फिर बौच जाना है। मैंने हुट करके उसे वाहर तो नहीं जाने दिया, पर वह तो विठाले-विठातें ही ऐसी वेहोश हो गयी सो फिर होण में आयी ही नहीं। टेम्परेचर १०७ डिग्री तक पट्टेंच नाया। उन दिनों यहां कोई मोटर आदि तो यी नहीं। वैस्ताड़ी भेजकर निवाई से डॉक्टर बुलाने की कोशिश्व की, जयपुर एक कार्यकर्ती को भेजा। जयपुर से एक खास मित-वैध व डॉक्टर को तेलर पट्टेंचे। परन्तु कोई भी वीज कारार नहीं खीत मिस-वयं वे डोफ्टर को लेकर पहुंचे। परन्तु कोई भी चीज़ कारगर नहीं हुई और जो जीवनकुटीर का मुख्यय जीवन वा उसमें न सहने लायक हम लोगों के लिए आधात आ पहुंचा। एक दो दिन तो मेरी यह स्थिति रही कि न तो एक आंसू आया और मन मंजूर न ही कर रहा वा कि यह घटना घट भी गयी। गास्त्रीओं के मन की स्थिति तो करोव-करीब पागल की सी हो गयी थी। इसके रोति दिन वाद हम लोग सैलाने पहुंचे। वहा सारे लोगों के साथ रहने से इस तकवीफ को सहन करने में मदद मिली। मन को साल्यना देने के हिसाब से वनस्थली से ही हमारा यह विचार हो गया। या कि चली शान्ता की जगह अपन दो बार इसरी लड़कियों को बुनाकर रख केंगे।

लड़िक्यों को रखने के लिए वर्धा जाकर बापूजी से इजाजत चाही गयी। वापूजी की इंजाजत मिल गयी कि तुमने जितना काम हो सके उतना करो। सैलाने में नवीन के जन्म के आस पास का समय था। नवीन के दो महीने के होते हो मैं वनस्यसी आ गयी और सुकीला सहित तीन चार और लड़िक्यों को लेकर जीवनकुटीर के झोपड़ों में विक्षाकुटीर की स्थापना हो गयी और इस प्रकार जीवनकुटीर में से सिक्षाकुटीर का जन्म हुआ।

शिक्षाकुटीर की स्थापना आदि के विषय में दो एक वार्ते विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अप्रेल, १९३५ में शान्तावाई का विछोह हुआ उसके तुरन्त वाद हम लोग सैलाना चले गये थे। प्रसव का समय नजदीक होने से मुझे सैलाना में हो एक जाना पड़ा। इसलिए शिक्षाकुटीर की शुस्थात में देर लगी। मैं दो महीने के छोटे वच्चे को लेकर वनस्थती लौटी तभी दो- तीन लड़कियों को

वनस्थली बुलाना संभव हुआ । कुछ समय के बाद नया बच्चा नवीन बीमार हुआ। उसे तकर हम लोगों को जयपुर में रहना पड़ा। उन दिनों डॉ॰ प्रभुदयालजी ने वच्चे को बचाने की जो जो तोड़ कोशिश की उससे हम लोग इस जिन्दगी में उऋण नहीं हो सकते । पर वच्चा बचाया नहीं जा सका । नवीन अत्यन्त सन्दर वच्चा था। उसके जाने से जो आचात लगा उसका असर शास्त्रीजी पर और मझ पर यह हुआ कि कलकत्ता जाकर मेरा ऑपरेशन करा दिया गया। हमने यह सोचा था कि जब शिक्षाकुटीर का काम करना है तो प्रसूति का काम तो वंद होना ही चाहिए। अन्दाजन दो साल के बाद एक दिन खोलते हुए गर्म पानी की तपेली अचानक गिर जाने से मेरी टाग बुरी तरह से जल गयी। हमको पता नहीं था कि इस तरह से जलना कोई वडी भारी वात है। आखिर में जयपूर में इलाज के लिए डॉ॰ प्रभुदयालजी के सुपुर्दहो गयी और शास्त्रीची मुझे उसी हालत में छैड़कर दौरे पर चले गये। शास्त्रीची को अपने काम का ऐसा नशा छाया रहता या कि उनके दिमाग में यह बात नही आयी कि मेरा इतनी जली हुई का क्या हो जा सकता है ? मैं जिननी जली थी उससे मेरा बच जाना हुर का पथा हा जा पक्ता हुं ज प्याना जाना पा उपचे मेरी वेच जाता क्यारहार जैसा हुआ। डॉ॰ प्रभुव्यालजो के उपचार ने और कम्पाउंडर रघुनायजी की परिचयों ने मुझको जीवनवान दे दिया। जयपुर में और जीवनकुटीर में संभवतः जौ की रोटी खाने से मैं संग्रहणी की शिकार हुई, फिर ऑपरेशन का मेरे स्वास्थ्य पर प्रतिकृत असर हुआ। फिर टाग के जल जाने का भी न जाने कैसा क्या असर हुआ। कुत मिलाकर सव बातो का नतीजा यह आया कि मेरा स्वास्य्य विगडता चला गया-और साथ ही मेरा वजन भी वडता गया। मैंने सोचा कि शान्तावाई को खोकर हमने शिक्षाकुटीर पाया और फिर स्वास्थ्य की कुर्वानी के साथ-साथ फलता फूनता वनस्थली विद्यापीठ मिन गया। जो कुछ हमने पा निया उसके मुकावले में स्वास्थ्य की भी आखिर क्या कीमत हो सकती है।

# (१२) शिक्षाकुटीर

संयोग की बात, जिस समय वनस्थली में जिक्षाकुटीर की स्थापना हुई उसी समय देशी रियासतों में जनता के अपने वनन्तूते पर संगठन खड़ा करने का विचार जोर पकड़ रहा था। जयपुर में भी राज्य प्रजामण्डल को पुनर्गंठित करने की वात सोची गयी और शास्त्रीजी रचनात्मक से राजनीतिक कार्यक्रम की तरफ लगे। में और हमारे एक पुराने साजी कार्यकर्ता प्रकासक्तर में गोयल ने यह तय किया कि हमको बिन्दगी भर शिक्षाकुटीर का काम करना है। जीवनकुटीर के झोंपड़े शिक्षाकुटीर को मिल गये और शिक्षाकुटीर शुरू हो गया। नडिकयों का मन कैस लगाया जाए इसके लिए एक छोटा सा टट्टू पाच रुग्ये में खरीद लिया ३५८ ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

कार की हिट्ट मे वनस्थली का रूप भी विक्षणसंस्था के वजाए राजनैतिक रहता था। अंग्रें ज आई॰ जी॰ पी॰ मिस्टर यंग वनस्थली को "जवानकुटीर" वोला करते थे। शिक्षाकुटीर का पहला उत्सव और जीवनकुटीर का एक प्रकार से अन्तिम उत्सव साथ साथ एक ही स्टेज पर वनस्थली मे हुए। जीवनकुटीर के उत्सव की अध्यक्षता जमनालाल मी ने की। उत्तर उत्सव में मार्कीजी का राज के खिलाफ खूंबार भायण हुआ। पुरानी जयपुर रियासत मे यह कायदा पा कि कांई भी विना सरकार को अनुमति के स्कूल नहीं चला सकते। शिक्षाकुटीर के लिए सरकार से "इजाजत लेने जाने का तो सवाल ही नहीं था।"

सुनने मुनाने से यह खबर लगी कि जयपुर सरकार शिक्षाकुटीर को नहीं चलने देगी। उन दिनों में शिक्षामंत्री जोवनेर ठाकुर साहव थे और डायरेस्टर एक अंग्रें ज मिस्टर ओवेन्स थे। संयोग से शिक्षाकुटीर की स्थापना से पहले एक बार जीवनकुटीर के समय वे दोनों वनस्थली आ कुके थे। हम मिस्टर ओवेन्स के पास गये और उनसे पूंछने तगे कि हम एक कच्चा हॉल वनाने वाले है उससे लिए चन्दा करेंगे। वे कहने लगे-पहले आप स्कूल को अनुमित सो मिल जाने दो। मेरे मन में यह मुक्कर बहुत तकलीफ हुई व मुस्सा आया। मैंने कहा मिस्टर अविनम में आयरेस्टर से बात करने नहीं आयी हूं, मैं दो मिस्टर ओवेन्स से बात कर रही हूँ । मैं कोई स्कूल चना ही नहीं रही हूँ । मैं तो अपनी बेटी के स्थान पर आयी हुई कुछ बच्चियों को पढ़ाती लिखाती हूं । ऐसी कीन सरकार होगी जो माता पिता को अपने बच्चों को पढ़ाती लिखाती हूं । ऐसी कीन सरकार होगी जो माता पिता को अपने बच्चों को पढ़ाने लिखाने नहीं दे । "आप वनस्थलों को बन्द करने के लिए फीज पलटन लेकर आ आना। में आपको दरवाजे पर मिलूंगी!" शास्त्रीजी प्रजामण्डल का काम करते हैं इसकी सजा शिक्षाकुटीर को थोड़े ही मिल सकती है। मुझे अंग्रेजी नहीं आती है और वे हिन्दी नहीं जानते थे। मेरा मिल सकती है। मुझे अंग्रेजी नहीं आती है और वे हिन्दी नहीं जानते थे। मेरा पुस्ते का तमदमाया हुआ बहरा देखकर बास्तीओं से पूछने लगे श्रीमती शास्त्री क्या कह रही है ? बास्तीओं ने उनको मेरी बात बतादी। वे बास्त्रीओं से कहने लगे के आप इन्हें समझा दीजिये मेरा मत्तव यह नहीं था। मेंने तो सिर्फ सुझा दिवा था। इसके बाद विद्यामंत्री ओवनेर ठाकुर साहव के पास जाने का सवाल आया कि उनसे भी आकर बात की जाए। क्यों कि वनस्थली की शिक्षाकुटीर की बात थी इसिलए उनसे बात मुझे ही करनी थी। परन्तु मन में काफी क्षित्रक व संकोच या कि अपना परिचय अपन उनको केसे और क्या रंगे? उनके यहा उन दिनों में किसी मिछने जुलने वाले के लिए कोई खास क्लावट नहीं थी। हिम्मत करके गयी। एकाध बादमी खड़े थे, उन्होंने मुझे बैठने को मुझ्डा दिया। ४.५० मिनट में ठाकुर साहब अन्दर से आये। उन्हें कस्पना ही नहीं हो सकती थी कि में बहा पहुँच आजेगी। बोले—कहिंथे बाईओं, कैसे आयी। मुझे हंसी आयी कि में बाईजी नहीं, बहुओं हुं। मैंने कहना कुरू किया-अपन वनस्थली में ओ लड़िक्यों का काम कर रहे हे उसके लिए मैंने सुना है कि संस्कार की इवाज़त लेती पढ़ती है सो में आपसे यह जानने के लिये आयी हूं कि क्या करना है। में तो कुछ कायदा कानून जानती नहीं। एक लड़की चली गयी उसकी कुछ तकलीफ कम करने के लिये दूसरो की बिच्चयों को बुलाया है और पढ़ाने का काम गुरू किया है। तब उन्होंने समझा कि में कीन हूं और क्यों आई हूं? उसके कुछ दिन बाद ही जयपुर में वनस्थली के लिए १०,०००/—करने का मंकल्प करके बन्दा गुरू किया। उन दिनों में १००-२०० वड़ा चन्दा माना जाता था। चन्दे की बात लेकर आई० जी० पी० निस्टर यंग के पास में गयी। यंग साहव बहुत बतुर और घाष आइमी ये। उनकी बत्तप्य की सिच वे बीच वे बार में कहा आप जवानकुटी? के लिए चन्दा लेने आयी है या। मैं महर यंग में कहा आप जवानकुटी? के लिए चन्दा लेने आयी है या। मैं महर यंग में कहा आप जवानकुटी? के लिए चन्दा लेने आयी है या। मैं तो में जयपुर पंत्र में कहा आप एक छोटा लाईक्यों को वपनी चड़कों की कगह अपने पास रखनर जुछ लिखना पढ़ना और कुछ अन्य बात भी मिखाना चाहते हैं। यह चन्दा जनके निए बैठने व प्रायंना आदि करने के लिए कच्ची ईटो का एक छोटा सा होंल बनाने के लिए करना चाहते हैं। कहने लगे इस महीने में तो में जयपुर महान में निया गा के सिमितिकों में काची चन्दा से चुका हूं। मैंने कहा इस महीने में तो में जयपुर महान में काची अपने होने दे पर आप इस निस्ट में लिख तो वीजिए। उन्होंने २०१/—का चन्दा लिख दिया। राजकीय अस्पताल में डोक्टर ह्यू वन ये उनसे भी में १०१/—का चन्दा लिख वा लायो। जोवनेर ठाकूर साहव से भी मैं १०१/—का चन्दा लिखा वारा।

# [१३] जयपुर सत्याग्रह

वनस्थली का काम शुरू होने के दो साल बाद हो जयपुर में प्रजामण्डल के सत्याग्रह की चर्चा शुरू हो गयी। भारतीजी सत्याग्रह शुरू करने के बारे में बापूजी और जमनालाजनी से सलाह करने के लिए दर्शा गये। में भी बापू की प्रणाम करने की इच्छा से उनके साथ गयी।

हुम लोग रतलाम होते हुए वर्धा जाने वाले थे। मन में आया पिताजी वीमार है, उनको भी देखते हुए चले चलें। वे अस्पताल में थे उनके पास पहुचते ही उनको देखकर मेरा दिस काप उठा। उनके बहुत वड़ा आंपरेशन हुआ था और उनकी अपने आपसे पर्लग पर बैठने की स्थिति नहीं थो। मैंने उनके कहा-आप को पत्र को पत्र लिखते थे उनमें यह लिखते रहे थे कि कोई छोटा सा ऑपरेशन होने बाला है, बास बात नहीं है। इसर इतनी बड़ी बात हो गयी। उसर आपने पत्नो से में निश्चित सी थी। कहने तमें मेरा इलाज ठीक चल रहा था। कुंबर साहब और तुम दोनों अपना काम छोड़कर थाय कर आते। वहां जाने पर यह भी मालुम ३६० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

हुआ कि वे सैलाने से मेरे एक मामा के लड़के माई की तिवयत खराव होते ही लेकर रतलाम क्रिक्चयन अस्पताल मे पहुँचे थे। डॉक्टर से बात की तो वह कहने लगा मास्टर साहब, आपको ऑपरेशन तुरन्त करना होगा और ऑपरेशन मेजर भी है। आप जिनको बुलवाना चाहते है बुलवा लीजिए। बोले ऑपरेलन करना है कर टी, में दस्तखत करता हूं। जिनको आना है आते रहेंगे। उनका ऑपरेशन हो गया। ऑपरेशन के समय मां भी रतलाम में मौजूद नहीं थी। हमको वर्धा जाना या सो वर्धा गये ही, पर मेरे मन में बरावर यह विचार चलता हो रहा कि अपन तो ऐसी तकलीफ के समय बो-चार दिन भी दा साहब के पास नहीं रह सके।

प्रजामण्डल के और सरकार के बीच में मौतिक अधिकारों को लेकर खीचतान तो चल ही रही थी। सत्याग्रह गुरू हो सकता है ऐसा प्रजामण्डल वालें मानते थे। सरकार भी मौका देख रही थी कि किस बात को लेकर प्रजामण्डल बालों को कैद किया जाएं व दवाया जाएं।

मेरा मुख्य काम तो शिक्षाकुटीर का ही था। सेकिन उन दिनों प्रजामण्डल के काम के वारे मे भी में थोडी बहुत जानकारी रखती थी और कुछ कार्यकर्ताओं के साथ प्रजामण्डल के काम में जितना वन पड़ता उतना सहयोग भी देती थी।

उन्ही दिनों जवपुर सरकार ने अमनातालजी का जयपुर में आने पर प्रतिवन्ध लगा दिया। इसी वात पर जयपुर सत्याग्रह शुरू हुआ।

हमारे बेजड़े के रास्ते के मकान में प्रजामण्डल बर्किंग कमेटी की मीटिंग चल रही थी। उसी समय बास्त्रीओं के एक पुराने मिल जो कि पुलिस ऑफीसर ये वहां पहुँचे। संयोग से में किसी काम से मीटिंग के कमरे से बाहर अपनी हुई थी, मेंने उन्हें देखा और पूंछा जाप कैसे आहे, अभी तो मीटिंग हो रही हैं। वेले— मुझे सब लोगों को पिरस्तार करने का हुक्म है, में गाड़ी लेकर आया है। जाप मेरी बास्त्रीओं से बात करवा दीजिये। में उनको बिटा कर अन्दर गयी और बास्त्रीओं से बाता मारिली वाहर आये। पुलिस अधिकारी ने कहा मुझे दो पण्डे के अन्दर-अन्दर आप सब लोगों को यहां से अरेस्ट करके ले जाने का हुक्म है। बासत्रीओं ने हंस कर कहा कि दो पण्डे सगने की बया बरूरत है। हम तो अभी तथ्यार है। पुलिस अधिकारी ने यह कुछ नहीं बताया कि वे इन लोगों को किस जगह ते जातर रखेंग ! इन मोगों के जाने के वादस्य बर्किंग कमेटी के सदस्य बावा

हरिण्चन्द्रजो, क्यूरचन्द्रजी पाटनी, चिरजोलालजी अग्रवाल, हंस डी॰ रायजी ग्रादि सव के घर यह खवर पहुचायी। त्रजामण्डल का श्रान्दोलन शुरू हो गया ग्रीर वहुत से जो साथी पीछे थे उन लोगों ने वातचीत कनके सत्याग्रह के जत्ये ग्रादि निकालने की योजना बनाना शुरू किया। मेरे जिम्मे तो लास काम यह या कि जगह-जगह जो लोग अलग-अलग जगहों के कैम्पों में है उनसे मिलना उनके पिवागे के समाचार चेना, जेल में उन सब लोगों से मिल कर उनके सम्यार लेना और उनके घर पहुचाना और जो काम चल रहा है उसकी जानकारी इन लोगों को देना भीर इनका जो कुछ सुभाव हो वह सब साथी मित्रों को बताना। मास्त्रीजी लम्बे चीडे पत्र सिख कर किसी न किसी जरिये से बाहर केज देते थे। उसमें से कई एक पत्र कई प्रकार से ऐतिहासिक कहे जा सकते है। यदा-कदा मैं भी शास्त्रीजी को छोटे-छोटे पत्र निख दिया करती थी।

यास्त्रीजी को थोडे दिन मोहनपुरा कैम्प में रखा गया। वहा जब उन लोगों ने भूल-इंडताल कुरू कर दी तो उन्हें मानपुरा के पास लाम्बा के किले में के जाकर रखा गया। लाम्बा में इनके जेल सुपरिष्टेण्डेण्ट एक बहुत सज्जन व्यक्ति डॉक्टन मोहनलालजी को रखा गया था।

वैसे तो जहा तक मेरा ध्यान है एक व्यक्ति से महीने मे दो-बार मिलने की इजाजत मिला करती थी। परन्तु उसमें यह वात जुड़ी बुई थी कि घरवालों के साय उनके मिल भी मिलने जो सकते हैं। जिस किसी के घर वाले मिलने की इजाजत मेते हैं मिल के किसी के घर वाले मिलने की इजाजत मेते हैं मिला के निल्हें की निल्हें की होता था। साथ में झीटा लड़का श्याम पा, वह उन दिनों रतलाम से जयपुर प्राया हुआ था। उसको तो सब लोगों से जूब आजावी से मिलने की छूट थी। इस तरह से उसके जिए से सन्दर से समाचार बाहर आ जाते और वाहर से अन्दर से उसके जिए से सन्दर से समाचार बाहर आ जाते और वाहर से अन्दर को जाता था। जाया करता था। कभी किसी कार्यकर्ता के कन्धे पर वढ़ कर नारे लगाता, कभी मोटर की छूड़ पर बैठ जाता और जिस के बाहर वाकर हम खड़े होते तो बहा तो उसका गारे लगाने का पक्का नियम ही था। जेलर प्रायि सब उसकी देखकर इसवे। वह मुभस्ते कहता कि मुस्ते तो नहीं पठ़दते हैं ? मुलाकात की सुविधा के प्रतावा भी लावा आदि कम्पों के जीवन में जेल जेसा कुछ नहीं था। खाने-पोने की पूरी प्राजादो थी, वाहर से साथी मिठाइयो आदि के देर तमें रहते थे। पर सासत्रीजी ने दिना एतान किए हुए ही यह तम कर लिया था कि जो की विना पुपंडी रोटी और एक साम खाना, नावता शुं पुरे-धारों का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात को निभाषा, चुपना प्राण का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात को निभाषा, चुपनाए। का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात को निभाषा, चुपना प्राण का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात को निभाषा, चुपना प्राणी का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात को निभाषा, चुपना चुपना का करना। पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात की निभाषा, चुपना चुपना कर का । पूरे समय तक शासत्रीजी ने अपनी इस बात की निभाषा, चुपना चुपना का करना। पूरे समय

जयपुर से लाम्बा पहुंचना उन दिनों में बहुत कठिन काम था। जयपुर से मालपुरा तक तो सडक थो। परन्तु मालपुरा से लाम्बा बहुत देर में मुश्किल से पहुंचना होता था। मिलने जाने के लिए भी इघर-उघर से मीटर मांग कर उन्तजाम करना पडता था। वैसे एक पुरानो फोर्ड मोटर प्रजामण्डल की भी थी। परन्तु उनके जिम्मे तो और ही बहुत-सा काम रहता था। एक मोटर बाखे श्री चुन्नीलालजो माथी प्रेमभाव से ज्यादातर मोटर का इन्तजाम करते थे। मोटर उनकी, पेटोल थ्रपना।

देश में कई जगह आन्दोलन चल रहा था कि वापू ने कई स्थानों से लोगों को दिल्ली विज्ञा हाउस में भिन्नने के लिए बुलाया । जयपुर में सत्यागह जोर-शोर से चल रहा था। जयपुर से राधाकुरपाजी वजाज और मैं, हम दोनों दिल्ली गये। जहा तक मेरा ख़याल है कई जगहों के कुल मिलाकर ४०-४० लोग आए होंगे। वापू ने कहा में चाहता हूं कि सभी जगह सत्याग्रह स्थिगत कर दिए जाएं। वापू के हुक्म के आगे किएको जवान खुलने वाली थी? सब उठकर चल पिए नापू के हुक्स के आगे किसको जवान चुलने वाली थी? सब उठकर चल विष् और राधाकृष्याओं व मैं दोनों विड्ला हाउस के एक कमरे में घुसे तो एक खास भिन्न ने राधाकृष्याओं से पूछा-क्या हुआ? राधाकृष्याओं ने कहा वापू ने सत्यागर्ह् बन्द करने का आदेश दिया है। मिन्न कहने तसे वापू ने आदेश दिया है या सुम्हारी ताकत नहीं है। यह मुनते हीं मुक्ते घणीव तरह का आवेश आ गया। मैंने कहा आगे की वात तो मालूम नहीं, परन्तु सीताराम्यों सेकमरिया और सिवराजणी वड्डा दो सत्यागर्ही नो अभी खेल जाने के विचार से आये हुए यही मौजूद हैं। इनके अरेस्ट होने के बाद कोई तीसरा न होता तब यह सवाल पैदा होता। वहा लड़े-खड़े ही मैंने राधाकृष्याओं से कहा आप देखी वापू सी गये क्या ? योले क्यों ? मैंने कहा आप देखो तो सही । वापू आराम करना चाह रहे थे, पर नीद नहीं श्रायी थीं। रावाकृष्णाजी को देखकर बोले क्यों ? उन्होंने कहा कि रतनजी श्रापके पास श्राना चाहती है। मैं गयी, एकाध मिनट खड़ी रहकर मैने कहा-बापू ब्रापका ब्रादेश चार लाइन में लिखा हुआ मिल जाए क्या? नोते नयाँ नुम्के यह मजूर करना चाहिए कि वायू के सामने जिस काम के लिए विश्वा हुआ चाहती थी वह न बनाकर मैने कह दिया कि जेल में काकाणी, शास्त्रीजो वर्गरह को हम प्रापका लिखा हुआ शादेश देगे तो उनका समाधान ज्यादा होगा। वायू ने अपनी कलम से उसी समय चार लाइन हम लोगों को लिख कर दे दी। हमने वायू के लिखे हुए का ब्लाक वनाकर अखवार में खपवा दिया ।

### (१४) शास्त्रीजो प्रजामण्डल, कांग्रेस के काम में ।

गाधीजों के आदेण से जयपुर सत्याग्रह स्थिगत हो जाने के वाद काफी ऋरों तक जयपुर सरकार से प्रजामडल की खेंचतान चलती रही । अन्ततोगत्वा सत्याग्रहियों का घीरे-घीरे छोड़ना शुरू हो गया । ग्राक्षिर में शास्त्रीजी प्रादि दस सत्याप्रहियों का नम्बर श्राया । उन्हें लावा से भालाना कैम्म लावा गया था । फिर भालाना कैम्म से वस्सी के पास के दूसरे मोहनपुरा कैम्म में नाया गया । प्रास्त्रीओं ग्रांद को अत्यम्अत्यस्य तीन काउन्टों पर कुल मिसानर १० महीनों की मजा हुई थी, पर उसे एक साथ भुगतना या सो करीव था। महीनों में वह सक्षा पूरी हो गयी । वस्सी के पास वाले मोहनपुरा कैम्म से जब शास्त्रीओं प्रादि खूटकर प्राये तो अथपुर शहर में बड़ा भारी अवुम निकला । जमता का उत्साह देखते ही वनता था। कुछ समय वाद जमनालानजी को छोड़ा गया। उनके खूटने पर भी देखा ही संगीन जुनूस जयपुर हहर में निकला। प्रजामंडल की म्रार से हिन्दुस्नानी प्राईमिमिनस्टर के माय की जा रही थी। उसके जवाब मारात की प्र ये जी सरकार ने राजा ज्ञाननाथ जैसे प्रतिक्रियावादी घौर जी हुजूर व्यक्ति को जयपुर राज्य पर प्राईमिमिनस्टर के हप में योप दिया गया। राजा ज्ञाननाथ से प्रजामंडल बानों की बापची समकीते के बारे में लस्बी वाते चली जिनमें कई तरह के कहटे कडुए अनुभव हुए। क्या में जयपुर सरकार ने प्रजानडल को नात्या वो और जी हजी वित्रमें कई तरह के किए अजामंडल ने सारावाह किया था वे भी स्वीकार कर लिए गए।

राजा ज्ञाननाथ को एक ठरह की वदसूरती के माथ जयपुर से विदा होना पड़ा ध्रीर उनकी जगह नये प्राइमिनिस्टर प्राये मर मिजां इस्माइल जो अपनी उदार नीति के लिए क्यांतिप्रास्त थे। उनके आने के कुछ महीनो बाद ही १६४२ के "ग्र ग्रे जो मारत छोड़ों" आन्दोलन का समय धा गया। यह जाई बुई बात है कि उक्त झान्दोलन को प्रजासगड़त ने प्रपन्ने अनुदे ढन से चलाया था। महाराजा से प्रजामडल का समक्रीता ही यथा जिसके धनुतार प्रजामंडल को राज्य में प्रपंजिवरोधो और गुद्ध विरोधी काम करने की घाजादो हो गयी और बले में प्रजामडल ने महाराजा के विरुद्ध सीधी लढाई न छोड़ना स्वीकार कर लिया। उत्तरप्रदेश, बिहार आदि राज्यों के प्रस्कृत साम्योति के समुसार खेजड़े के रास्ते का मकान और वनस्थली दोनों खुले हुए थे। समक्रीते के प्रमुत्तार उनको जयपुर राज्य में गिरस्वार नहीं किया जा सकता था। शास्त्रीजी उन लोगों की हर तरह से मदद करते थे।

देश में भारत छोड़ां आन्दोलन के सिलसिल में पकड़े हुए लांगो का वाहर प्राना शुरू हुमा। तव उदयपुर में राजपूताना के कार्यकसीक्री का एक सम्मेलन थी गोकुलभाई मह की अध्यक्षता में हुमा। उन्तत सम्मेलन में पहले तो राजपूताना के कार्यकर्तीक्रों का अलग से सगठन बनाया गया। फिर यह हुमा कि राजपूताना की सब रियासतों के अजामंद्रकी का अलिल भारत देशी राज्य लोकपिसिल के सीरीजन की मिल के रूप में समुक्त चनठन हो गया। रीजनल कीसिल के प्रध्यक्ष थी गोकुलभाई यह और अधानमंत्री आह्वीजी वने। बाद में सास्त्रीजी अ० मा० देशी राज्य लोकपिस्पद् के प्रधानमंत्री बनाये गये।

प्रस्पक्षजीवनशस्त्र

प्राखिर देशी राज्य लोकपरिषद् का विलय भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस में हो गया। जब भारतीय नविधान परिषद् का निर्माण हुया तव जयपुर की योग से शास्त्रीजी, लोबपुर की योर से थी जवनारायराजी स्वाद्यास, उदयपुर की थोर से थी माणिक्यलानजी वर्मा और सिरोही आदि कुछ छोटी रियासतों की धोर से थी गोकुलमाई भट्ट परिषद् के सदस्य वनाये गये। धोरे-धोरे देशी राज्यों में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल वनने लगे। जयपुर में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल वनने लगे। जयपुर में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल वनने लगे। अयपुर में लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल वना तब मुख्यमयी जास्त्रीजों को बनाया गया। १९४५ के दिसम्बर में जयपुर शहर में प्रसिल्त भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महान प्रियचन हुमा जिसके लिए याज तक ग्राम राय यह सुनने ये आती है कि कांग्रेस का ऐसा जानदार प्रिवचेगन 'न पूतों न भविष्यति"। कांग्रेस महाधिवेचन के लिए जो लालों रुपये जुड़ाने पढ़े नो सारा जिस्सा शास्त्रीजों पर था।

#### (१५) वनस्थली विद्यापीठ का उदय

प्रजामण्डल काग्रेस की उपरोक्त कथा से मेरा कोई मीघा सम्बन्ध नही है। पर शास्त्रीजी की शक्ति जैसे-जैसे लोकपरिषद-काग्रेस के कामों में लगती गयी वैसे-वैसे उनकी शक्ति वनस्थली के काम मे कमशः कम लगने लगी । और इसका ग्रसर स्वभावतः मुऋ पर पडा । यों तो वनस्थली विद्यापीठ का जन्म किसी ऐसे क्षणु में हुआ नमफो जाता है कि वह कठिनाइयों के बीच लगातार प्रमति के मार्ग पर श्रेयसर रहा है। शिक्षाकृटीर ने अपने जन्म के थोड़े समय बाद ही राजस्थान बालिका विद्यालय का रूप ले लिया जो और भी थोडे समय के बाद वनस्थली विद्यापीठ कहलाने लग गया । अपने जीवन के प्रथम १२-१३ सालो में वनस्थली विद्यापीठ को प्रपने कच्चे भीपड़ों में ही ग्राशातीत मफलता ग्रीर स्याति मिल गयी । शास्त्रीजी का पडितजी (पडित जवाहरलाल नेहरू) से निकट संपर्क गुरू होने के कुछ ही समय बाद पंडितजी का पहले पहल वनस्थली धागमन हुआ । उस श्रवसर पर भाषणा देते हुए पडितजी ने बनस्थली विद्यापीठ के बारे में जो उद्गार प्रकट किये व ग्राज तक हर एक की जवान से सुनने की मिलते हैं-प्रगर मैं लड़की होता तो श्रपना तालोम के लिए वनस्थली स्नाता । न जाने पंडितजी पर बनस्थली का ऐसा क्या प्रसाव पड गया ? उनको एक कच्चे भोंपडे में ठहराया पर वर्तस्वतों का एमा क्या प्रभाव पड़ गया ? उनका एक कब्बे फायह में ठहरामा गया या और एक अत्यन्त पुराने ढन का वायरूम श्रीच स्थान के लिए उनकी पातों में श्राया था। वाद में पृष्टितजों का जब जब वनस्थती श्रामा हुया तेंभी उन्होंने एक न एक नयी बात बनस्थती के बारे में कह दी या बाद में लिख भेजी—यया "वनस्थती भारत में श्राद्धिताय सस्या है"। बनस्थती का काम राष्ट्रीय महत्त्व का है। "वनस्थती अराष्ट्रीय एकीकरसा में मदद पहुंचाने वाली संस्था है" इत्यादि । पिंडतेजों के बारे में मैं क्या कहूँ—वे गजब के महापुरत थे, इतने महान और इतने सादा मिजाज, इतने व्यस्त और समय के इतने पायन्द । कृतवाता के साथ मैं यह कह सकती हूं कि पिंडतजों के अब्दों ने बनस्थती विद्या- पीठ को हिन्दुस्तान के नक्कों पर मोट-मोट ग्रक्षरों में ग्रक्ति कर दिया। पडितजों ने ही ग्राये होकर हिन्दुस्तान भर में एक देशी गज्य की शिक्षरा मंस्था को अवसे पहले भारत सन्कार वे धावर्त्तक ग्रींग ग्रनावर्त्त के अनुदान दिनवाया। उससे पहले वनस्थली को सरकारों अपुदान तेना मजूर नहीं था। श्रीर किसी भी सरकार को कव मजूर था वनस्थनी जेती मस्या को याट देना? हम लोगों ने वनस्थली में लदिक्यों को विकास के काम को सोच समक्ष कर गुरू नहीं किया था। न हमने इस काम को किसी तरह को योजना वनाकर चलाया। न जाने कैसे वनस्थनी विद्यापीठ वन गया, न जाने कैसे इसका उनरोन्तर विकास होता चला गया। शास्त्रीओं के प्रजामंडल-कांग्रेस के काम में चले बाने से मैं ग्रपंते प्रापकों कुछ असहाय सी महसूस करने लगी थे। पर देव को देश से वनस्थली का काम कई एक मिशों व कई एक मिशों व कई एक मिशों के कहा सी सहस्था करने संगी थे। पर देव को देश से व वनस्थली का काम कई एक मिशों व कई एक मिशों व कई एक मिशों सी माने की सी माने व वारा गया विसे-कैसे सी सामें वड़ाना गया विसे-कैसे में प्रपंते जीवन को इतार्य समक्षती गयी।

#### (१६) सत्ता का प्रपंच

जयपुर में लोकप्रिय मित्रमंडण बनने का जिक मैं उसर कर चुकी हू। मुस्रे उस सम्बन्ध में इतना मा और कहना है कि शास्त्रीजी का जयपुर राज्य का मुख्यमन्त्री बनना मुक्को कुछ अब्छा नही लगा था। शास्त्रीजी के मुख्यमंत्रित काल में काग्रेस का महाधिवेणन जयपुर में हुआ जिनका जिक भी उत्पर झा चुका है।

काभ्रेम महाधिवेशन के कुछ समय बाद ही विज्ञाल राजस्थान बनने की योजना ने जोरपकड लिया।

सास्त्रीजी द्वारा राजस्थान के मुख्यमन्त्री पद का भार सभालने के समय मैंने सबसे ज्यादा तकलीफ व परेशानी का अनुभव किया। श्रीर जब शास्त्रीजी ने मुख्यमनित्रल छोडना तय कर निया तव मैंने राहत की साम ती। सरदार के स्वगंबास के थोड़े दिन बाव ही एक दिन हम दोना दिल्ली गये थे। जास्त्रीजी नेलिल में तरा पिछती हो बाद ही किया तह है। पिडतजी को दिनों बाद ही विवेश जाने वाले थे। उपर शास्त्रीजी मीता है। पिडतजी के शित बाद ही विवेश जाने के लिए ग्याना हुए इसर मैंने कैंनिंग लेन के मकान के वायकम में युवकर हम दोनों के कण्डे थोना पृष्क कर दिया। गुछ देर बाद ही किसी ने वायकम का दरवाजा खटनडाया में कल्दी ने विना नहाये ही साड़ी बदल कर वाहर आयी और मुफ्ते थोड़ा प्राथवर्य भी हुमा कि शास्त्रीजी वर्तनी जल्दी कैसे मा गये। जास्त्रीजी वहुत खुम दिखायो दिये। मैंने पूछा ग्रापको क्या मिल गया जो इतने सुख हो? बोले मैं पिडतजी के तरा मुख्यमंत्रियद छोड़ देने की हा कर शाया हूं। जास्त्रीजी बोले मैंने कह दिया प्राय स्वास्त्रात्री के स्वास्त्री के स्वास के एकिकरएल का काम मेर विक्रय वा बहु पूरा हो गया। यव प्राय भा वह सुप हो गया। यव प्राय भा वह सुप हो गया। यव प्राय का साम मेर विक्रय सा वह पूरा हो गया। यव प्राय साम वह सुप हो गया। विक्रय प्राय का साम मेर विक्रय सा वह पूरा हो गया। यव प्राय साम विक्रय साम विक्रय साम विक्रय साम विक्रय साम विक्रय साम विक्रय स्वास के स्वास के स्वास के साम विक्रय साम

३६६ प्रत्यक्षजीवनभास्त्र

मैं विदेश से ग्राऊं तब ग्रपन बान करेंगे। शास्त्रीची ग्रपने स्वभाव के माफिक बोले इस काम की मलाह करने के लिए तो मैं ग्रापके पास नही शाऊंगा। पडितजी मजाक में बोले तो क्या गन्यास तोने ? शास्त्रीची ने कहा खुदा जाने क्या काम करूगा वहर हाल सन्यास तो नही लूंगा।

मुख्यमंत्री पर से त्यागपत्र देकर ब्रास्त्रीजो तो उसी समय सीधे बतस्थली बा गंग ग्रीर हुम लोगो ने ब्राम से पहले पहले अपने मारे सामान को स्वाधीन कु ल से लेजडे के रास्ते बाले मकान में लाकर डाल दिया। जिस समय बारशीजी बतस्थलो आये उम समय विद्यालय पर चारो तरफ का काफी रुपया (करीड दे लाल रुपया) देना हो गया था। राजस्थान के एकोकरण के सित्तिलि में ब्रास्ट-धिक परिध्रम होने से गाहनीजी का स्वास्थ्य भी कुछ खराब हो गया था। इसीलए यह तय किया कि वे बोडे दिनो तक चन्दा ग्रादि माने के उलाड़ पछाड़ के कान में समय न लगाकर हल्का हल्का काण हो करे। मित्री की स्वर्त में प्रीर स्मावान की दया में धीरे धीरे बतस्थतों के लिए उस कठिन दिन्यों ने उस समय जो मदद की और उनका जो दिनी सहारा मिला उसकी मुक्ते जब प्राद प्राती है तो में पत्याद हो जाती हू। भाय ही मुक्ते यह भी बताना चाहिए कि एकाध बडे सहायको की ग्रीर से जो चेंकरेज उस कठिनाई के समय प्राया या उसकी वो प्रतिश्रित्य शास्त्रीओं की अवना से प्रकट हुई उसका विचार करते करने गई से मेरा मस्तक कंचा हो जाता है।

## (१७) सरकारों से पाला

लगभग उन्ही दिनो भारत सरकार से बनस्थली विवापीठ को मिसने वाली १४०००/- सालाना आट की इनकारी लिखी हुई था गयी। शास्त्रीजी ने तो कह दिया कि बनस्थती में भारत सरकार के पीछे जन्म नहीं लिया है। प्रपने को किसी से भी कांई वाह करने के नियं जाने की बसरत नहीं है। प्रपने को किसी से भी कांई वाह करने के नियं जाने की बसरत नहीं है। भैने न भाई मीहन में बड़े मुक्किल से बास्त्रीजी को राजी किया कि आप हमको एक बार दिल्ली जाकर वात नो करने तीजिए। मैंने शास्त्रीजी से कहा अपने को पीडितजों में भारत सरकार से बलाकर ग्राट दिल्लावी थी। अपन भागने नहीं गये थे। दिल्ली वानों को जानकारी तो जाकर करानी चाहिए। हमने दिल्ली रहुंच कर मिसा मंत्री मौनाना माजाद के जहा समय के लिए टेलिफोन किया । उसी दिन मामा को उन्होंने सचिवात्य में मिलने के लिए वुला लिया। ये यहुंची तो बड़े मिठास से और जीना उनका हम या मौनाना ने शास्त्रीजी के लिए पूछा और जोने आप कंसी तशरीफ लायों? मेरे सन में थोड़ा बुरा तो लया हुमा था ही। मैंने कहा हरेक आदमी अपनी बसरत से ही आता है। किर वहुत सी वमस्थली की, शास्त्रीजी की वाते पूछने लगे। फिर वहाते ही वातों में उन्होंने कहा—भैने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने जयनारायए।जी से कह दिया है कि वनस्थली के कामी में सब्बह न करें। मैंने क्या से स्वार्य से स्वार्य के लिए होता हो सार से स्वर्य हुए न से से से स्वर्य हुए कर से में से स्वर्य हुए कर से से से स्वर्य हुए कर से में से स्वर्य हुए कर से से से स्वर्य हुए कर से में से स्वर्य हुए कर से में से स्वर्य हुए कर से से से स्वर्य हुए कर से में से सुर से से स्वर्य हुए कर से से से स्वर्य हुए कर से से स्वर्य हुए कर से से स्वर्य हुए कर से से से से स्वर्य हुए कर से से से स्वर्य हुए स

भरी बैठी ही थी। मैंने कहा कि मै आपके पास उमिलये हाजिए हुई ह कि बनस्थली का जो काम है उसमें भारत सरकार ने अपने आपसे याट देना नय किया था। अस यह पत्र पहुँचा है। मैं समभी नहीं कि यह चिट्ठी आपकी जानकारी में गयी है वा बिना जानकारी के। राजस्थान वाले मदद दे या न दे यह रूसरा सवाल है। परन्तु आप तो बनस्थली की याट में गफ़ पंसा भी कम कर देशे तो उसका मतलव यह होगा कि हमारा काम पहने ठीक था और अब ठीफ नहीं है। मैं तो कार्यकर्ती है, काम करना है यह नहीं तो और कोई काम कर लूगी। बनस्थली की चाबी आप समालिए। फिर में हस कर कहने नमें ऐसा नहीं हो सकता है। बोले अब आप दिल्ली कब तशरीफ नाएगी? मैंने कहा—आप जब बुलाएंगे। इस काम के लिए तो आपको दुवारा तशरीक लाने की जकरन नहीं है।

इस काम में श्री रकी अहममद किदबई ने जो कुछ किया मों भी एक दम काविले तारीफ था। और एक डिपुटी में फेटरी ने मुफ्से कहा आए नहती हों कि वनस्थली की ब्राट जारी हो जाएगा मों कैसे हो सकता है ? बया भारत सरकार अपने हाथ से अपनी नाक काट लेगी। मैंने कह दिया कि यह सब नो भारत सरकार जानें और खाप जानं। में तो इतना ही रोहरा सकती हूं कि वनस्थली की ग्राट जरूर जारों होगी। इस सियमिल में मुफ्ते जाजादी के पहले की कुछ वाते भी याद ब्रा रही है। इधर नो वनस्थनी में जिलाकुटीर का काम वर्डक लगा, उधर जयपुर से प्रजामङ्क के पुनर्गटन का काम शुरू हो गया। जयपुर सरकार के लिये खिक्षाकुटीर थार प्रजामङ्क में भेद करना बहुत मुश्किल हो रहा था। परत्नु उस समय भी कुछ त्योग जयपुर सरकार में ऐसे थे कि वनस्थान रहा ना रारणु उन नगव ना गुछ तथा जनपुर वरकार म एस था का ननस्थनी की अन्दर ही प्रन्दर पूरी मदद करना चाहते थे। जब राजा ज्ञाननाथ प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने बनस्थानी से छेडछाड़ करने के लिए एक तरकीव खोज निकाली। उन दिनों हुम बनस्थानी से कुछ नये कच्चे मकान बनवा रहे थे। हमारे पाम जयपुर से हुनम आ गया कि अब कोई मकान बिना इजाबत के नहीं बनाये जाए। जयपुर से हुन्म आ गया कि अब कोई मकान विना इजाबत के नहीं बनाये जाए। हमारे लिए काफी सोचने का ममला पैवा हो गया। थोड़े से दिनों के बाद बारिया प्राने वाली थी और वारिया होते ही कि ज्विड दे वापिम मिट्टी हो जाती। उस समय विवाई के तहसीववार मंत्र व सज्जन भारमी थे। उनको हमने समफोया कि देखिये यह समझ वो राखा जाननाथ का और हमारर है। हम किसी भी हालत में मकान बनाना बन्द नहीं कर सकते। मकान हमें बनाने पड़ेगे। आपकी भी नीकरी करनी है। आप तो छुटी लेकर चले जायो हम जल्दी मकान पूरे कर लेंग। किर आप आकर रिपोर्ट कर देना। व वेचारे हमारी मलाह के मास्कि छुटी पर चले गये, क्योंकि उनको हमने बता दिया था कि आपके हमारे भगड़ा होगा, क्योंकि आप जानते ही है कि हम बिन्मी हालत में चेबे का काम बन्द नहीं करीं। उन्होंने वापस आकर रेवेन्द्र मिनन्टर को रिपोर्ट मेजदी कि वहा नो नकान वन गये. तब क्या करना है <sup>२</sup> जपपुर से एक ग्राफिसर श्री<sub>.</sub>ग्रव्वास ग्रहमद वेरी को उन्होंने देखने को भेजा। बैरी बाहब बनस्थली के अनुकूल नहीं है। यह हमको मालूम था। जब वे बाये नो छात्राबास का राउन्ड लगाते समय मैं उनके नाथ गयी यो । दे अपनी छुडी दीवारो पर लगाकर पृंछते जाते थे कि ये कच्चे है या पक्के ? मैंने कहा कि वे तो लीहे की ईंटो के हैं, न कच्चे हैं, न पक्के । आप क्या पृद्धते हैं। उन दिनों में जो अमल या उसके माफिक नाव में रहने वाला कोई भं पदि गाव के भीतर कच्चा मकान बनाता तो उसको सरकार से इजाजत लेने की जरूरत नहीं थी। सारी छेडछाड करके नरकार ठिकान बैठ गयी। बाद में जमनालानजी ने यह नुभाव दिया कि आप तो मानुली रूपया देकर बनस्थली विद्यापीठ की जमीन का पट्टा बनवा लो। वड़ी मुश्किल से हम लोगों के यह बात समक्त में आयी और एक खाना वर्गे गर्ज में उस समय जितनी जमीन कब्जे में भी उनका बनस्थली विद्यापीठ को पटटा मिल गया । जमीन की बात के मिलसिले में ही एक दिन में तत्कालीन गृहमंत्री टाकुर ग्रमरसिंहजी से मिलने गयी थी और मैंने पुछा कि वनस्थली की जमीन की बात चल रही उसमें अपने पक्ष विपक्ष में कौन है ? वे बोले वनस्थनी की किसी भी वात में अमरसिंह ग्रापके साथ है। उन्होंने दूसरे विश्वयुद्ध के समय में शक्कर, मिट्टी का तेल, पेट्रोल स्नादि को बड़ी भारी कठिनाई के बीच वनस्थनी को कभी तकलीफ नही पाने दिया और हमेगा उनकी वनस्थली के नाथ हमदर्वी रही।

राजा ज्ञाननाथ के बाद नर मिर्जाइन्माइल प्रधानन्त्री वने । सर निर्जा में ग्रीर राजा ज्ञाननाथ में रानदिन का अन्तर था। सर मिर्जा चतुर, होशियार ग्रीर साथ में दिवदार भी थे। उन्होंने वनस्थती आना प्रजूर किया। वनस्थती अग्ये ग्रीर कहने लगे आपका काम नी वहुत बड़ेमा। इस इतनो सी जमीन से ग्रापका क्या होगा? उन्हीं के नमय में वनस्थती से निवाई तक की सड़क बनी ग्रीर वनस्थती को कई सी एकड बमीन भी मृपत में मिली।

भारत सरकार से वनस्थली को ग्राट मिलने लगी उसके बाद जयपुर सरकार की ग्राट मिलना भी मुरू हो गयी। राजस्थान बना तव स्वभावतः वहीं जयपुर वाली ग्रांट राजस्थान से भिलने लग गयी। बाद में तो देश की सभी नरकारों ने विना अपवाद वनस्थनी को ग्राट देना संजर कर सिखा।

## (१८) वनस्थली विद्यापीठः स्त्री शिक्षा का ग्रखिल नारतीय संस्थान

आग्चर्यं की बात है कि १६३५ में एक छोटेसे बीज से शुरू होकर बनस्थली में प्राज स्त्रीशिक्षा का अखिल भारतीय संस्थान बन गया है। प्रास्त्रीजी ने कहा है:

एक म्हांको फून व्यारो. ग्रघिलत्यो कुमला गयो । स्रोग वीत्यो हरम द्वायो, फून वाग लगा गयो ॥ जब जानतावाई की जगह लेने के लिए कुछ लड़िक्यों को वनस्थली बुलाने की वात मन में आयी थी तब हमारे दिमाग में भविष्य की कोई कल्पना नहीं थीं। एक प्यारी वच्ची चली गयी तो कुछ दूसरी लड़िक्यों को अपने पास रखने की भी मार्ग यायी। दो चार लड़िक्यों आ गयी और उनकों हमने ज्ञानतावाई की तरह रखना, पढ़ाना शुरू कर दिया और श्रिक्ताकुटीर दन गया। भोपड़े जीवनकुटीर से मिल गये। कुछ रुपया अयपुर से इकट्ठा किया, कुछ रुपया कनकत्तं से साने लगा। लड़िक्यों बढ़ती गयी, फोंपड़े बढ़ते गये, कार्यकत्ती आते गये, काम बढ़ता गया। रे साल कह हमारे पास जिसमें पत्थर, पक्की ईट, सूना, सीमेंट समा है। ऐसा एक भी मकान नहीं था और रुपया तो जितना प्राया उसते कुछ न कुछ ज्यादा ही तपता गया। आज बनस्थली विद्यापी उहुत बड़ा हो गया है। तालों रुपये का बजट, मैकडों कार्यकर्ता, पीने दो हजार लड़िक्यां, संकड़ों एकड जमीन, एक करोड के करीव सपित, गुरू से लकर दी ए ए, एन ए, वी ए एससी, एम, एस, एए, पा, एइ, पी एच डी. की पड़ाई और युद्धसारी और हवाई जहाज उड़ाना, संगीत. वादा, नृत्य, पाक, तिलाई प्रादि-प्रादि नाना प्रकार के काम सीखने का मौका। वनस्थली में एन. सी सी. का बढ़िया काम ती कई सालों से चल रहा है। अय एन. सी. सी के एयादिया का काम ती कह सालों से चल रहा है। अये एन. सी. सी के एयादिया का काम ती कह सालों से चल रहा है। अये सी प्रदीश हो जारेगी।

#### (१६) ग्राज की हवा और वनस्थली की कठिमाई

जैस-जैसे विद्यापीठ का काम मागे वढा वैसे-वैसे हमेशा भेरे मन मे यह भाव उठना रहा कि जिस भावना को लंकर हमने इस काम को शुरू किया भ्रीन करते रहना वाहते हैं उसको निभाने वाले साथी कार्यकर्ता व उस भावना को समभने वालो लड़किया कैसे मिलें ने वनस्थती को अच्छे से अच्छे कार्यकर्ता निमले रहे हैं, उनमें कई एक ऐसे भी है कि वहुत कम उम्र में आये और यह पर देने-पीतों विले हो गये। वनस्थती में कई एक साथियों की निष्ठा भी भनुकरण्रीय है। आखिर उन्हीं के वल पर यह महान् सस्थान खड़ा है। वनस्थती से कई एक अच्छी-अच्छी लड़कियां भी शिक्षा पाकर निकती है जिन्होंने भावंजनिक क्षेत्र में वनस्थती की कीर्ति को वढ़ाया है और आमतीर पर जिन्होंने अपने दोनो घरों का वता सतोप दिया है। हम ली मुनते रहते हैं कि लडकी वनस्थती में शिक्षा पाना हुई है यह मान्म हो जाने पर मगाई की वात करने वाले दूनरा सवाल कि विता ही सक्ष्य कर डालते हैं।

फिर भी सारे देश में इस समय सौदे वाजी की व स्वायंपरता की जो हवा है उसमें इस काम को ग्रपने बहुत वड़े राष्ट्र के हित की हष्टि से और भारतीय सस्कृति की ग्राधारिशवा के रूप में करना चाहने वाले कार्यकर्ताओं को ग्रीर यही

नमभ कर यहा शिक्षा पाने के लिए ग्राने वाली नड़कियों की एक फौज वनस्थली को चाहिए नो कैने क्या मिले यह वडी समस्या है। मेरी समक्त में भारतीय नंस्कृति का मूलाधार प्यार और स्वान में है। वनस्थली की सीमा में जो कोई यडकी एक दौर प्रवेश कर आए उस लड़की का वनस्थली पर घर में पैदा होने वाली लड़की के नमान हक है। साथ ही उस लड़की को राष्ट्र में कुछ न कुछ वह जिस परिस्थिति मे रहे कुछ न कुछ कर गुजरने की लगन और भावना पैदा हो। काम के विस्तार के नाथ मन की भावना को व्यावहारिक रूप में प्रकट करना योग उसे निसाना काफ़ी मुक्किल होता जा रहा है। मुक्किने सबसे बड़ी तकतीफ नो यह देखने मे होनो है कि जहा हिन्दुस्तान में लड़की या स्त्री अपने तरफ किसी के बाल उठाकर देखते ही बाग बबूला हो जाती थी वहां बाज यह प्रवृत्ति पैदा हो रही है कि लड़की को पोघाक इस तरह की हो कि जिसमें हर किसी की दृष्टि चाहे प्रनवाहे-उमकी तरफ पड़े। इस चीज में वह ग्रापका गौरव मानती हुई प्रतीत होती है। इस बात का कोई विचार नही होता है कि वह प्रदर्शन की चीज वनती जा रही है। ग्रव तक हिन्दुस्तान की मंस्कृति को बनाये रखने में स्त्री का बहुत वडा योगदान रहा है। ऐसा लगता है कि जो धारा चल रही है उसमें पढ़े लिखे समाज में से यह चीज शायद लुप्त ही हो जायमी । यहा तक तो ठीक है कि स्त्री जब ममाज में बराबरी की सामेदार बनकर काम करना चाहेगी और पुरुषों के साथ कंवा से कंघा लगा के काम करना चाहेगी तो उसे प्रपने व्यवहार में परिवर्तन करना होगा, पर फिर भी अवश्य हो उसको सादगी को, मुझीलता को और अधिक महत्व देना होगा ।

दूसरो विचारघारा यह चल रही है कि स्त्री और पुरुष दोनों का हक वरावर है। वहा नक काम करने का सवाल है वहा तक तो यह विल्कुल ठीक है। पर पुरुष की किसी भी कम ग्रन्छी बात में उसकी वरावरी करता न तो भारतीय संस्कृति की परम्परा के अनुकूल होगा और न खुद स्त्री के हक में ही ठीक होगा। जहा वरावरी के साँदे की कुभावना आयी वहीं स्मृह की नीव हिलमें लगती है। स्मृह तो न्याग चाहता है। स्त्री की महत्ता हभेना स्थाग में रही है।

इस हवा में लड़की का जो चित्र हमारे मन में है उसको कायम रखने में ब लड़कों को उसके मनुरूप बनाने में जी जान से कोजिश करने पर भी हम कितने मफन होंगे इसका मेरे मन में हर क्षरण डर ही रहता है। फिर भी मेरा विश्वास है कि परि हम जो जान से डटे रहेगे तो इतनी विकट स्थिति में भी परिएगाम अच्छा ही माएगा।

इसके अलावा एक बात भेरे मन में ग्रीर आती है। सामाजिक स्थिति ऐसी है कि जिसमें वच्चों को जन्म देने का ग्रीर उन की खिक्षा व संभाल का नार ती स्त्री पर ग्राता ही है। पुरुष यदि अपनी जिम्मेदारी नहीं निमा सके तो स्त्री पर परिवार के पालन पोष्णा का जिम्मा भी कुछ न कुछ या टी जाता है। ऐसी स्थिति में उनकी योग्यता अपने पात पर सडी होने लायक होनी ही चाहिए जिससे वह प्रपनी दोहरा जिम्मेदारी को अच्छी नरह में पूरी करने में सफल हो सके।

वनस्थली शिक्षा के द्वारा हम कैसी नारी का निर्माण किया चाहते है, इस विषय में मैंने ग्रपने कुछ विचार प्रकट किये हैं। इस गर्वध में मुफ्ते अपनी क्यितिस्तात कियित भी स्पष्ट कर देना जरूरी मालूम होता है। वह यह है कि अस्वस्थता के कारण में वनस्थली का जैसा और जितना चाहिए वैद्या और उनना काम कुछ सालों में नहीं कर पा रही हू। भेरा बहुतना समय क्या पैसे की वेत निर्माण में वनस्थली के वाहर पूमते रहने में चला जाता है। इस कारण से मैं वनस्थली में जमकर नहीं रह पाती। और जमकर रहे बिना मैं अपनी छोटी वही सैकड़ों बिच्चों के निर्माण में जैसा हिस्सा मुक्तको लेना चाहिए वैसा हिस्सा मैं नहीं ले मकती। इन स्थिति से मुक्तको आन्तरिक बेदना होती रहती है।

## (२०) शास्त्रीओं के दिल का भयंकर दौरा

चत्यक्षजीवनग्रास्त्र

जोर के दस्त हो गये थे। ग्राँर उसी हालत में बास्तीजी उत्तर प्रदेश के मुस्यमंत्री प्रादि में मिलने जुनते का काम करते रहे थे। वतारस से लखनऊ स्टेशन तक शास्त्रीजी प्राराम करते के वजाए मेरे कलकत्तें के वन्दे को जोड़ तोड़ लगाकर रोकड मिलान करते में बगे रहे। रोकड में थोड़ासा फर्क आया तो उसे निकातने में बहुत समय नग गया। लखनऊ स्टेशन पर मोहन मिल गया। ग्रापस में बात करके हम लोगो ने तय किया कि लखनऊ में वो वात मंत्रियों ग्रादि से करती है सो में भीर मोहन करते। वेश सास्त्रीजी भोजन, विश्वाम के बाद पत्रादि लिखने का काम कर हाले। शास्त्रीजी आराम किये विना ही पत्र लिखने में जुट गये। जब में और मोहन चार वजे के करीव हमारे जिम्में का काम करके गेस्ट हाउस में लौटकर प्राये और दिल्ली के लिए रवाना होने की तंयारी करने लगे तब मास्त्रीजी की वातों से मालून वड़ा कि उनको कुछ युटन सी हो रही है। पूडन का कारएरा ठीक से ममक से नहीं हाया। फिर भी मोहन ने एक प्रापूर्विक का वारएरा ठीक से ममक से नहीं हाया। फिर भी मोहन ने एक प्रापूर्विक का भारता ठीक से ममक से नहीं हाया। फिर भी मोहन ने एक प्रापूर्विक सास्त्रीजी को वित्रीगी से पहले पहले चहा पाया। वास्त्रीची को कुछ राहत मिती। श्रीर वे हुंन से मो गये।

दूसरे दिन हम तब दिल्ली पहुँचे तब शास्त्रीजी टीक हुए तमें और मेरी भी चित्रता कम हो गयी। मुक्ते तो ग्रांट के काम के लिए दिल्ली ठहरना था, पर शास्त्रीजी के लिए तब हुमा कि वे जयपुर चले जाएं और मेडिकल चैक-मप करवाने।

दिल्ली से मैंने मुशाकर को टेलीफोन किया कि आषाजी को तिवयत ठीक गही लग रही है, तुम तुरस्त उनका चंक-अप करवा देना । पर शास्त्रीओ वैद्याजी से अपनी कमर के दर्द का थोड़ा उपचार कराकर दिना चैक-अप कराये ही बनस्वस्ती चेले गये। घर से निकलकर रामनिवास बाग के पास एक मौका देखा मौर गिक्षासचित्र से मिनं। उन समय बहुत कड़ी पूर थी। आखिर शास्त्रीजी बनस्थती सकुत्तल पहुँच गये। शास्त्रीजी ने सोचा कि ३१ मार्च के बाद चैकप्रप करवानेने। तीच में अंबटर लोग न जाने क्या कह दें और अपने जरूरी काम में विचल प्राचारण

वनस्यली में शास्त्रीची दो तीन दिन तो ठीक रहे। पर २४-२४ मार्च के दोन की रात की उनकी तिवदत एक दम ज्यादा खराव हो गयी। कुछ समक्ष में नहीं मार्चा कि क्या वात है। जोर-चौर से सांक वल रहा था, बेचेनो ही रही थी, बड़े हीकर जरा सा चलना पुष्किल हो गया था, वोला नही जा रहा था। उसी हानत में शास्त्रीजी खुद ही दवा सोजते रहे और पंखे के नीचे बैठे कुछ उपाय करने की कोशिय करते रहे। शास्त्रिर झकुन्तता, हरीश, डॉक्टर साहव स्रादि साये। कुछ उपचार किया गया। उपचार से अथवा वेसे ही जान्त्रीजी के सांस का उठाव कम हो गया और उनको नीद या गयी। के दे जगते ही शास्त्रीजी ने जयपुर जाने के लिए गाड़ी मगवायी। और वे डॉक्टर साहव, रामेश्वरजी, हरीश श्रादि को लेकर जयपुर डॉ॰ मगवी के घर पहुँच गये। उत्तरीक संघवी जाश्वरी को चहरा देखकर विस्मित से हो गये। उत्तरीने शास्त्रीजी का चहरा देखकर विस्मित से हो गये। उत्तरीने शास्त्रीजी का चलत प्रेशर लिया सो तो ठीक निकना, पर कार्डियोग्राम से मानूम पड़ा कि दिल का सखत दौरा पड़ गया है। शास्त्रीजी की ममक में नही प्राया कि मेरे दिल का दौरा कैसे पड़ सकता है। श्राप्त्रीजी की ममक में नही प्राया कि मेरे दिल का दौरा कैसे पड़ सकता है। श्राप्त्रीजी की नमक एं है। वहरहाल डॉ॰ संपत्री रहे कि इतने वड़े डॉक्टर यह क्या गलत बात कर एं है। वहरहाल डॉ॰ संपत्री के हक्त वड़े डॉक्टर यह क्या गलत बात कर एं है। वहरहाल डॉ॰ पंचवी के इतन वड़े डॉक्टर यह नया पत्रीचा गया बहाँ पर शास्त्रीजी ने पिहीयेदार हुर्सी पर वैठकर वार्ड में जाने से इनकार करते हुए पैदल चनना चाहा। पर डॉक्टरों ने उनकी ऐसा नहीं करने दिया।

डॉ० भण्डारी के वार्ड में एक छोटो सी धनन जगह सास्त्रीजी की लिटादिया गयां शास्त्रीजी वैसे तो प्रधने आपको ठीक मानते रहे, पर पेशाव वद हो जाने से वड़ी तकलीफ हुई। वार्ड में से गास्त्रीजी की कॉटेज में पहुँचाया गया. क्योंकि उन्होंने कहा कि मुझे ऐसी जगह रखा जाएगा तो मैं घर चला जाऊँगा। असल में डॉ॰ लंचनी ग्रांदि शास्त्रीजी को खतरे से बाहर होने नक पूरे इन्तजाम के माथ वार्ड में एखना चाहते थे।

काँदेज में पहुँचते ही शास्त्रीणी पर कही पावित्यस समादी गयी। उनकी स्वान-दीने में कोई र्क्षि नहीं रही, यहाँ तक कि फल का रस भी वे नहीं ले सके। पेगाव बंद हो जाने की तकसीफ होती ही रही, पर शास्त्रीणी ने यह माना ही मही कि उनके दिव का दीरा है, चाहे उनकी अपने आपसे उठने बेठने की तकस्त्री रहीं सी, उनहे हिला कुलने और बोतने तक से मना कर दिया गया था। और किसी तरह से पेशाव नहीं हुआ तो आखिर आम तक कैंपेटर में पेशाव कराया गया। ऑक्सीजन में तो उनको शुरू से ही रख दिया गया था। वार-वार डॉक्टरों का इतना आना आगा और शाम तक तो अपने कमरे में डॉक्टरों की शीइ देखकर भी शास्त्रीजी को विश्वास नहीं हुआ कि उनको कोई वड़ी शीमारी हो। गयी है।

मुधाकर ने मुफ्तको दिल्ली फोन क्या-चोला कि आपाजी का चैक अप हो रहा है, आप लोग कार लेकर जयपुर आ जाओ। जयपुर हॉस्पिटल पहुंचने पर मुफ्ते बताया गया कि आप आपाजी के मामने किसी तरह की कचाई मत लाना, उनको अपने दिल के सख्त दौरे का एहसास नही हो रहा है सो अच्छी बात है। आस्त्रीजी को खतरे के वाहर होने मे कुछ दिन नगे। तब तक डॉ॰ सघवी आदि २७४ प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

ना बंहरा मुझे मुम्प्राया हुया सा नगना रहा । दूसरी घोर, घास्त्रीजी यह सोबंत रहें कि मुझे ४-० दिन से हॉस्पिटन से छुट्टी हो जाएगी । यह सब कुछ होते हुए गास्त्रीजी ने प्रादर्स पंजंट का सा ज्यवहार किया । जैसा डांक्टरों ने कहा देस ही हैं वे करने गये । डाक्टरों को नहीं देस हों वे करने गये । डाक्टरों को नहीं देस हों के करने गये । डाक्टरों को नहीं के सा प्रपंत का के मार जो की प्रवर व्यक्तित्रत नों नीमार को सभाल कर कैसे क्या प्रपंत का कू में रचा जा सकेगा । भगवान नी कुण में दिन पर दिन निर्विच्च निकलते गये । घास्त्रीजी के व्यक्त प्रपुत्त कंट्रों ने मा गयो, पूरिनन कंप्ते कहा की प्रपात हों के प्राप्त के सा गया, साने देस त्यादि कुछ नहीं हुया जिनको प्रकार के मारे डॉक्टर लीग बहुत कर ने थे । गास्त्रीजी विस्तर पर पड़े पड़े खाया, बीमारी के बारे में कविता करते नहते थे । गास्त्रीजी विस्तर पर पड़े पड़े खाया, बीमारी के बारे में कविता करते नहते थे । ए०-१२ दिन के बाद प्राख्ति उनकी समक्त में या ही गया कि दिन का भयंकर दौरा पड़ा है जिममें से न जाने किस चमरकार के प्रभाव से वे वा किल के हैं। पहला चमरकार तो जह हुया कि वक्त सम्प्राप्त में पहले के बार से लकुगल कपपुर पहुच गये । किर भी बास्त्रीजी डॉक्टरों से बरावर प्रजाक करते रहें पहला चमरकार तो है का मार को भारत नी का पायो और उसके पांच पटे बाद वे कार से लकुगल कपपुर पहुच गये । किर भी बास्त्रीजी डॉक्टरों से बरावर प्रजाक करते रहें पहला करा हो हो हो हो हो सा प्रयोग के बार से फोलादी बारीर नाले की आप सीधों ने वीमार कर दिया । डेक महीन के हो सा हो सा प्रयोग के पायो में से ही हो रहा पड़ा । किर बनव्यक्री में भी की ही ही रहा पड़ा । धीर बनवा में में वा सिंह जैसी की स्वार में रहा पड़ा हो । हिर बनव्यक्री में भी की ही ही रहा ।

#### (२१) शास्त्रीजी की बीमारी के बाद मेरी मन: स्थिति

साल भर अच्छी तरह से निकला। फिर अचानक एक दिन शाम को गारती की हेल्का सा सास का उठाव हुया। वह तुरत हो ठीक हो गया ग्रीर गारती की ने उत्तका कुछ भी ख्याल नहीं किया। पर हरीज ग्रांवि ने जनपुर में मुफ्ते अवर कर दी थ्राँर मैं रातो रात चलकर वनस्वी ग्रांवि ने जनपुर में मुफ्ते अवर कर दी थ्राँर मैं रातो रात चलकर वनस्वी ग्रांवि हों । शास्त्री जो वाल प्राप्त करके शास्त्री को है म जपपुर ले गर्य। पर वहा उन्होंने डाक्टरों के पान जाने से इनकार कर दिया। शासिर आ असपी ने उनको एक प्रकार से पकड कर बुलवा निया। श्रीर देख कर कुछ दिन आगम करने के लिए कह दिवा और व्यायाम के लिए पूपना तो हमें शा नित्य वन्त कर दिया। शुरू से लेकर याज तक मेरो कैसी क्या मनः स्थित वनी हुई है सो में ही जानती हु। मुफ्तको पहले साल में प्रोर इक तीसरे साल के ४-४ नहीं में में मेरा जी जानना है कि यह समय कैसे तिकता है। मैं हर पड़ी इरी हुई सी रहती हुं। मेरा खुद का स्वास्थ्य एक असे में ठीक नहीं रह रहा है। पर में प्रभा वाल को तो मूली हुई हूं। मुक्तको स्थाब होता है तो यह कि चक का शरीर होने का हावा करने वाले, और बुड चता देने वाले के खपड़ मार देने वाल सास्त्रीओं को इन तमाम वित्त्रों में रहना पड़ रहा। इंक्त के अपद मार देने वाल सास्त्रीओं को इन तमाम वित्त्रों में रहना पड़ रहा। इंक्त के अपद मार देने वाल सास्त्रीओं को इन तमाम वित्रों में रहना पड़ रहा। इंक्त के अपद मार देने वाल सास्त्रीओं को इन तमाम वित्रों में रहना पड़ रहा। इंक्त अपद मार करों.

तेज मत चलो, बोभा मत उठाश्रो, सीहिया मन चढ़ी. लड़े होकर भाषम्। नत्रं। देना है सो तो है ही, ज्यादा देर तक बोलो भी मत । नमक मत खाश्रो, मीटा मस चला, पी को न छूप्रो-जोडा ही लाग्री-वजन को न घटने दो, न वढ़ने दो। जो ज्यांक हर एक काम में सदा ही विजा नाण के रहा उस पर इतनी नीण तों प्रस्ते की वित्तयों का लगाना और प्रनिदिन १५-६ टिकिया दवायों को लेना कैसी अजीव वाल है। शास्त्रीजी को चिकित्सक के नाम से चिड रही है, पर अव चिकित्सक के नाम से चिड रही है, पर अव चिकित्सक की राय के विना पत्ता भी नहीं हिल सकता। में घवड़ायी हुई कहती हूं—आपको अब घर के किसी खास व्यक्ति के साथ लिये विना कही नहीं प्राना जाता है, अच्छे डॉक्टर, अच्छे हास्पिटल में दूर नहीं जाना है, कोई भारी काम आपको नहीं करना है—सब काम हम कर नेगे, आप नो परहेज से रहो ग्रीर आराम करों।

भास्त्रीजी मुफले कहते है कि इतना डरने की क्या बात है। ग्राप यह पक्की बात मान लीजिए कि किमी स्वस्थ से स्वस्थ ग्रादमी को दिन का दौरा पड़ जाने की जिसनी भी जंका हो सकती है उससे कही कम जंका मेरे दुबारा दिल का दौरा पड़ने की है। आप समकतो नहीं हो, दिल के दौरे ने मेरी उस्र बड़ारी है। ग्रुच्छा हुमा कि मेरे हार्ट ग्रुटक-हार्ट फेल्योर होकर दिल पर जरुम हो गया। भीर फिर यह कितने आश्चर्य की बात है कि मै उससे बच निकला। ऐसा दौरा पड़ने के बाद मुक्तको बनस्थली में नीद स्ना गयी। सीर मैं कई घंटो बाद हसता खेलता डॉ॰ सप्रदी के घर ग्रीर हास्पिटन पहुंच गया। कोई बढी बात होने वाली होती तो उसी रात को हो जाती। उस रात कुछ नहीं हुमा तो घर कई साले। तक कुछ भी नहीं होने वाला है। यै पूरे जापते से रहता हु-खाना, पीना, चलना, तक जुड़ा को नही होने पोलो हो ने दूर जानत से एहता हुन्यान, पोनी, चतनो, किरतो, बोलना-चालनो, दबादाक लेना मब कुछ नियमित रूप से जल रहा है। फिर चिन्ता किस बान को ? रही झाराम करने की बात सो दुनिया जिस झाराम कहती है उसे मैं नकलीफ समस्रता हूं। सब मानिए, दिन भर पड़ा पड़ा मैं अपने आपको बीमार सा मानने लगता है। मैं नवातार काम ये लगा रहू यही एक नतीका मेरे स्वास्थ्य को बनाये रक्षने का है। मुक्त जैया ब्यक्ति जिसके जीवन मे प्रतिविन १२ में लेकर १४, १६, १८ घंटे काम करने की चाहत रही है इससे भिन्न कैसे सोच मकता है ? मैं अक्टरों के पास न जाता तो न जाता, पर एक बार उनके पास चला गया तो में तिल राई भी उनकी राय के इधर उधर नहीं जार जनते नात ज्यान क्या वा ना एक राज ना जनका राय के इयर उधर नहीं जाने वाला हूं। अववाना मेरा स्वभाव गुस्सैल हैं—उसे ठीक करने की कोशिश में कर रहा हूं। गुस्से को ठीक करने की वात मेरी अपनी है—चाकी मेरे प्रेमियों का हैं मुक्को निष्कत रखने का  $\sim$ न किसी प्रेमी को खुर को डरना नाहिए, न मुक्से इराने की सी वार्ते करनी चाहिए।

शास्त्रीजी का यह सब कुछ कहना ठीक है। पर मैं अपनी कमजोरी के चक्कर मे से नही निकल पा रही सो इसका क्या उपाय ? मैं गोपाल गोविन्द ते और भगवनी से यही मनानी रहती हूं कि झास्त्रीजी का वाल वांका न हो। गास्त्रीजी वोलते हैं—भगवान भगवनी दोनो ग्रपनी विना वेतन की नौकरी मे हैं—उनको मनाना क्या है, उनको अपन हुवम देने का अधिकार रखते हैं। और भगवान और भगवती है कहां—वे अपने भीनर ही तो विराजमान हैं—यानी हम लुद ही भगवान् है, खुद ही भगवनी हैं।

शास्त्रीजी की इस आस्था और इस इंडता के भीतर मैं अपने सास ले रही ह।

### (२२) बापू के चरगों में

पहितजी (जवाहरलालजी) ने वनस्थली के लिये जो कुछ किया उसका निकर्म ज्ञर कर चुकी है। अब मै उन वापू के साथ कुछ प्रेरक प्रसंगों का जिक करूंगी जिन्होंने एक वार मुक्त को अपने हाथ से लिखकर भेजा था—"वनस्थली मेरे दिल मे बनी है"।

शिक्षा कुटीर का काम गुरू ही हुआ था स्रार शास्त्रीजी स्रीर में फैजपुर कार्य म में गये थे। काकाजी जमनालालजी बजाज शास्त्रीजी के साथ मुक्तेत्रएगम कार्य में मंग्येय में प्रान्तवान जन्मानावान विद्यालया के याचे पुरान्तवान के हम लोग करने को बापू के पास पहली बार ले गये। {कहां तक मेरा घ्यान है हम लोग मुक्तिल से बापू के पास दो चार मिनट ठहरे होंगे। काकाओं मुक्ते पूछने लगे⊸ बनस्थली का क्या हाल है ? मैंने कहा—सब ठीक है, पर मुक्ते भकेली के लिये बह काम ज्यादा भारी हो रहा है। कोई वहन मददगार [मिल जाए तो अच्छा रहे। काकाओं बोले वर्षा में मेरे पास दो लडकियों हैं तो सही। उनकी दुम राजी करके ले जा सकती हो तो ले जाओ । इस कारण से भास्त्रीजी और मैं फैजपूर कोग्रेस से ग्रलग-अलग दिणा में रवाना हुये । शास्त्रीजी ग्रीर दीसाहव हरिभाऊजी वस्वई गर्य ग्राँर मै वर्धा पहुँची। जमनालालजी के साथ बापू को प्रणाम करने के लिये वर्धा से खाना हुई। ग्राधे रास्ते पहुँचे होने और काकाजी के पास वापिस वर्था ग्राने का सदेश ग्रागया। हमारे साथ में एक सूरोपियन बहुत भी थी। यह हिन्दी नही जानती थी और मैं अंग्रे जो नही जानती। काकाजी बोले बापू तुम्हें नहीं पहचाने तो शास्त्रीजों का नाम बता देना। मैंने काकाजी ते कहा प्रशाम करने जाने मे परिचय की क्या जरूरत है ? जब मैं सेवाग्राम पहुँची तव वाषू ग्रपनी कुटिया के बरामदे मे बैठे कुछ लिख रहे थे। सोमबार का उनका मौन का दिन घा। मेरे प्रसाम करते ही स्लिप पर लिखकर पूछा अकेली ही आयी हो [क्या ? हीरालाल कहाँ है ? मैंने बताया कि वे बम्बई है और काकाजी आधे रास्ते से वापिस वर्षा चले गये हैं। वापू ने दूसरी स्लिप पर तिखा दिन भर यहाँ ठहरो, वा के पास जाग्रो, भोजन यही करना । उस समय तक मेरा वा से कोई नजदीक ने परिचय नही था। में अकेली और वहाँ कोई

दूसरा जानने बाला नहीं था । पर आध्यम में अपनापन तो था ही न<sup>7</sup> दो घण्टे बाद में बापू ने छुट्टी लेकर लौट प्रायों आर मैने सारा हाल काकाजी को बताया । वर्षा की इस यात्रा का यह फल हुआ कि सज्जन और पासन्ती दोनों का बनस्थमी ग्राना हो गया । बासन्ती बनस्थली में ज्यादा नहीं ठहरी । पर सज्जन आज तक मैदान में उटी हुई है । सज्जन को बडी जीजी ने सानो तक काम किया है ।

एक दिन फिर मै वर्षा मे वापूजी के पास ग्रकेली पहेंची । यह वनस्थली शुरुहोने के २-४ साल बाद की बात है। बापूकी किसी ने बतायाथा कि वनस्थली में लडकियो के रहन सहन पर ज्यादा पावन्दी है। बापू हसकर वोल-वनस्थली मे तुने जेल बना रखी है। मैं बोली बापू भ्रापको किमी ने सही ही वताया है, इसमें कोई ऋति जयोज्ति नही है। मै कमजोर मा है। दूसरो की विचियों को लेकर बैठी हूं। कुछ ऊँच नीच हो जाए तो मेरा तो हार्ट फेम हो जाए। **इसके प्रलावा बनस्थली में ग्राग्रेजी का पढाया जाना भी बापू की क्छ कम** पसन्द था। कहने लगे वी । ए० एम०ए० पढ़ाकर क्या करेगी ? बी ०ए० की पढाई ने तो प्रादमी बेकार हो जाता है। मैने कहा बापू, प्रपनी लडकियों को कार्यकर्ता बनाना चाहते हैं। देख से ग्रंग्री खतन हो जाएगी तो उसकी माजकल जितनी पढाई वनस्थली मे होती है वह भी ग्रपने ब्राप बन्द हो जाएगी। मैं ब्रापके पास धाती [हूँ मुक्ते कियी को भी साथ लाने की जरूरत नहीं होती। परन्तुमुक्ती शंग्रेजी नहीं ग्रावे से कहीं भी य ग्रेजी जानने वाले के पाम जाना पडता है तो किसी को साथ ले जाना होता है। यह बात मुफ्तको बहुत अलरती है। जो कसी मुक्त मे रह गयी, वह कमी मेरी लडकियों के लिये तो कभी परेशानी का कारए। न बने । वापू हंसकर बोले — तुग को बक्तील होना चाहिये था। मैने कहा उसमे भी तो स्र ग्रेजी चाहिए ?

जयपुर में भरमाग्रह चल रहा था। वाषु प्रहमवाबाद से दिल्ली जाने वाले ये। चगपुर से कुछ माथी कार्यकर्ता प्रावृ रोड गये थे, उनके साथ मैं भी चली गयी थी। जनपुर में मेल रात को १२ वर्ज पहुचता है। जयपुर के लोगों के मन में वाषु के दर्शन करने की प्रवल इन्छा थी। बाषु जगह जगह जगने भीर मोरगुल में बेटे वर्क हुए थे। कहने लवे रात को १२ वर्ज तो बहुत मुक्किन होगी। मैंने कहा बाषु लोग स्टेशन पर आएंथे आपके दर्शन के लिए और जब तक मेल ठहरेगा डटे रहेंगे और नारे लगाकर अपने मन की भावना अकट करते रहेंगे। नीद तो उम समय आपको आ नहीं सकती। यदि खिड़की में से भाप उनको दर्शन दे देंगे तो उनका समाधान सतीय हो जाएगा और नारे आदि वे लोग न लगाएं यह वात भी उन लोगों को समकायी जा सकती है। वोले-यह हो जाएगा? हम कोशिय करेंगे तो हो जाना चाहिए और नहीं हो तो आप खिड़की वन्द कर लेना। मुके खूब सतीय के साथ याद है कि भेल के खयपुर पहुंचते ही "महात्मा गांधी जिन्दावाद" का जो एक वार नारा लगा उसके वाद लोगों ने एक भी नारा नहीं लगाया और वापू भी जब तक भेल नहीं रवाना हुमा बरावर खिड़की में बैठे हुए लोगों को दर्शन देते रहें।

सन् १६४२ के श्रान्दोलन के बाद वापूजी से मितने के लिए हम लोग वर्षा गये हुने थे। उस समय जयपुर प्रजामडल ने जो निस्तृय लिया था उसकी वात साक्ष्मीजी वापूजी को बता रहे थे। बीच में मैंने कहा बादू श्रवकी बार तो मेरा भी इनसे ऋगड़ा हो गया। बोसे—तूभी ऋगड़ा करती है क्या? मैं कहने लगी बादू मेरे मन में भी यह श्रायी कि मैं भी जेल में जाकर बैठ जाती तो श्रव्छा होता।

वाषु कलकत्ता गये हुये थे । उन्हीं दिनों बास्त्रीं और मैं कलकत्ता गढ़ें वे । उनकर वाषा का हम लोगों के साथ वड़ा स्तेह था । वे मुफले मजाक में बोले-सुमको बायू ने राजस्थान का गवर्नर बनाया है । मुफे उस मजाक का प्रागा पीछा कुछ भी माजून नहीं था । उनकर बाषा के पास मुधाकर सिहत हम लोग जहां बायू उन्हरे हुये थे वहां पहुंचे तो बाया कहने लगे—चायू इनको तो राजस्थान की वात मंजूर नहीं है । बायू मजाक के मुद्द में थे, बोले ठीक तो है, यह पर्द में रहने वाली गांव में जाकर कैसे काम करेगी ? मैंने बायू से नम्रता से कहा बायू में तो कई सालों में बान में ही हूं, और पूच्य वा के सिलसिलों में कोई काम कर कूं उससे मुफको ज्यादा प्रिय लगने वाली बात और कीन सी हो सकती है ? मेरे मन में संकोच और फिक्क सिर्फ यही है कि वनस्थली का कर पाउंगी । वायू बोले कोई विन्ता की बात नहीं है—खितना हो जनता कर लेना । परान्द तो है गा ? इस तरह से उनकर वाया और वायू के माईख से राजस्थान में कल्ह्यूदा

कोप का काम करना भेरे जिम्मे हुआ। कस्त्र्रवा कोष की हिन्दुस्तान भर की सब प्रतिनिधियों की भीटिंग उरुली कांचन में वापू ने बुलायी थी। मीटिंग में सब जगह की बहिनों ने अपने अपने स्वान की रिपोर्ट दी। मैंने भी राजस्थान के काम की रिपोर्ट दी। सयोग से राजस्थान में जो काम हुआ था वह हुआ तो प्रच्छा था परन्तु विस्तार कम था। फिभक के साथ मैंने वापू के सामने कहा-वापू मैं तो कुछ कम ही काम कर पायी हूं।

वापू जब पूना जेल से छूट कर आये, हम सोग बापू के पास वर्षा पहुचे । वापू जन दिनों से मीन रहते थे और सप्ताह में एक बार तीनेक घटे के लिए मीन छोड़ा करते थे । शास्त्रीकों को स्लिप पर लिख कर दिया-तुम लोग परसों तक ठहरों तो मैं एक घटा तुमको दे सकता हूं । हम तो बापू के पास वातचीत करने के लिए ही गये थे, ठहर गये । बापू ने रात को खाठ बने का समय दिया । और हम, काकी जो जानकी देवीजी, जास्त्रीची और मैं बापू के पास पहुचे । बापू से बातचीत करते करते एक घंटा पूरा होने को आ गया । (राजकुमारी) अमृत-कौर बहिन जन दिनों बापू की सभाल के चार्ज में थी । उन्होंने समय का घ्यान दिलाने की कोशिया की । उस समय एक मिनिट वाकी था । मजाक में यमनी धोती की प्रंटी में से घड़ी निकालकर बापू बोले चड़ी म्हारे पास पए। छे । हमारे रवाना होते होते बापू के थे सब्द कान में पड़े—हतनी दूर से ये बाये हैं । खास काम करने वाले हैं । ऐसे लोग रोज रोज बोडे हो बाते हैं ।

हिन्दुस्तान के बटबारे के धास पास का समय होगा. मै वापू के पास किसी हिरिजन कालोनी में गयी थी श्रीर मैंने उनसे कुछ मेरे मन की वात कहने के लिए थोडा समय चाहा था। वापू उन दिनो हिन्दुस्तान के बटबारे को लेकर बड़े परे- शान व ब्यियत थे। वोले बाद में समय दूगा। वापूजी ने अनधन किया था दिल्ली में। शास्त्रीजी मिलने को गये। सुधीला बहन से कहलवाया—उससे कही मुक्ते अभी बटा भर लगेगा। इतना समय क्यों खराब करे, वे वोले मैं वनस्थली जा रहा हूं, वापू को देखने आया था। अन्दर से वापू ने कहलवाया कह देना में ठीक हूं। पता नहीं भेरे मन में घवराहट थी कि वापू का इतना नाजुक स्वास्थ्य है और इस अनशन का उनके स्वास्थ्य एर कहीं ले बैठने वाला असर न हो जाए।

शास्त्रीजी बोले तुम्हारे मन मे जबरदस्ती घवराहट है, बापू कोई इस तरह से थोडे ही जाएगे । मैं चुप हो गयी ।

बाप की वनस्थली ग्राने की वातचीत चल रही थी। वापू वीले मैं ३-४ घटो के लिए बनस्थली नही ब्राऊंगा। मैं वहा ५-७ दिन ठहरूंगा और तेरी सर्वे पोल खोलुंगा। उसके बाद बापु बोले ग्रवकी बार दिल्ली से ग्राते जाते मैं वनस्थली ग्राऊ गा। मैने कहा-वापु वनस्थली सवाई माधोपूर से ग्रलग हटकर है। प्ररी कैलाश जहां होगा वहीं तो शकर को जाना पढ़ेगा वापू वोले। दिल्ली से एक पोस्टकार्ड ग्राया मै वर्घा जा रहा हु १०-१५ दिन वहां ठहरू गा, तुम लोग भाना चाहो तो ब्रा जाना । वह पोस्टकाई लेकर शास्त्रीजी मेरे पास श्राये ग्रीर कहने लगे—बापू वर्धा जा रहे है, तुम भी चलोगी ना ? मैं उन दिनो में वनस्थली से काफी बाहर रहकर ग्रायी थी। मैने कहा बाप के पास जाने व बात करने की इच्छा तो मेरी भी है पर ग्रभी तो ग्राप ग्रकेले ही जाग्रो। पता नही क्यों शास्त्रीजी की जवान से यह निकला कि तुमकी वापु को बनस्थली लाना है इसलिए श्रपन दोनों ही चले, पता नहीं बापू को कब क्या हो जाए, इसलिए चले चलना ही भ्रच्छा है। यह बात शास्त्रीजी की जवान से सुनकर मेरे मन मे एक अजीव तरह की शंका पैदा हो गयी कि यह बात इनके जैसे दिमाग में क्यो ग्रायी ? मैंन कहा-अच्छी वात है आप वर्धा लिख दीजिए अपन दोनों चलेगे। पता नहीं वह कोई भावी का सकेत था या क्या। उसके ५-७ दिन बाद ही जयपूर मे स्रचानक वाप के महाप्रयास की खबर मिली । न बाप बर्धा पहचे, न हम । सब बातें स्वप्न सी हो गयी।

पता नहीं वापू के पास कौन सी ऐसी चीज थी कि कितनी भी कठिनाई में कोई पहचता था पर वहा जाते ही उसको नया वल मिल जाता था।

### (२३) हमारा परिवार

मैं बता चुकी हूँ कि मेरे पिताजी के एक बड़े माई थे, श्रौर दो छोटे भाई । मेरे ताऊजी श्री गौरीशंकरजी का स्वर्गवास ही चुका है । उनकी एक लड़की मधु जयपुर में श्रपने पुत्रों के साथ रहती है । ताईजी रतलाम में रहती है । मेरे एक चाचाजी श्री भगवानलालजी का भी स्वर्गवाम हो चुका है। उनका पुत्र नगेन्द्र मध्यप्रवेश सरकार में किसी अच्छे से ओहदे पर काम करता है। मेरे इसरे चाचाजी, मेरी चाची और छोटे पुत्र सहित रतलाम मे रहते है, उनका दूसरा पुत्र रेलवे में नौकरी करता है। मेरे पिताजी का स्वर्गवास एकदम ग्रचानक क्षण भर मे ही-रतलाम मे हो जाने के बाद शास्त्रीजी की प्ररेशा से मेरी दादीजी. माताजी, तीनो भाई ग्रीर सबसे छोटी बहिन जयपुर-बनस्थली ग्राकर रहने लगे । विचली वहिन हमारे पास पहले से थी । मेरी दादीजी स्वर्ग सिधार गयी । वे गदितीय महिला थी—उन्होने ही हम वहिन भाइयो का खासकर मेरा पालन पोपमा कियाथा। मेरे पिताजी भी ग्रसाधारमा पुरुष थे। दूसरो की सहायता करना उनका स्वभाव था। ग्रपने काम से रिटायर होने के बाद उनका वनस्थली विद्यापीठ की सहायता करने का विचार था। मेरी वार्ड (माताजी) को सव लोग माक्षात लक्ष्मी का रूप बताते हैं। श्राजकल वे बहुत बीमार हो रही हैं। भीर सब लोग अनन्त श्रद्धा के साथ उनकी सेवा करते है। मेरे तीना भाइयों मे सबसे वडा मोहन वडा होशियार है—वह कही भी किसी के पास भी पहेंच कर व्यवहार बना लेता है। उसकी पत्नी दया बनस्थली में अर्थशास्त्र की लेक्चरार है। उसके तीन लड़किया और एक लडका है। दूसरा भाई सोहन भी गान्त प्रकृति का है। वह खासकर खानो की खोज कर लेने मे वडा दक्ष है। उसकी पत्नी ग्रार्ट की डिप्लोमा होल्डर है। वह जयपुर मे रहती है, उसके दो लडिकयाँ और एक लडका है। सबसे छोटा भाई हरीश वडा व्यावहारिक ग्रीर प्रोमी युवक है। मुभते छोटी वहिन सुशीला वचपन से ही हमारे पास रही, वह शान्ताबाई के साथ खेली हुई श्रौर पढी हुई है। उसने वनस्थली के खातिर ध्रपना विवाह नहीं किया है और ग्राजकल विद्यापीठ के ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय की ग्राचारं है। सबसे छोटी वहिन चित्रा जयपुर मे कानोडिया कॉलेज मे राजनीति शास्त्र की लेक्चरार है। चित्रा का पति डाँ० गोपाल राजस्थान विश्वविद्यालय मे गरिगत का लेक्चरार है। चित्रा गोपाल के दो नड़किया है। यह मेरे पीहर के परिवार का परिचय है।

मेरे ससुरान के परिवार में मेरे ससुर श्री श्रीनारायसाओं जोशी और उनके पांची भाइयों का स्वर्गवास हो चुका है। मेरी सास श्रीर चार काकी सासुएँ भी गुजर गयी हैं। मेरे ससुर वहे प्रभावशाली और त्यांगी महापुरुष थे। मेरी सास भी मेरी वाई की तरह, मुना है, साक्षात् लक्ष्मी थी। एक काकी सास मौजूद है। मेरे एक काका ससुर के तीन लडके ग्रीर तीन लडकियाँ है, दूसरे काका के दो लड़के हैं। सब लड़के ग्रुपने-ग्रुपने परिवार के साथ जीवनेर, जयपुर, वम्बई ग्रौर वनस्थली में रहते हैं। वनस्थली में रहने वाले श्री रामेश्वरदयालजी वनस्थली विद्यापीठ के स्तभ रूप हैं। रामेश्वरदयालजी की वड़ी वहिन वनस्थली में ३८ साल बहुत बढ़िया काम करके हाल में ही रिटायर हुई हैं। शास्त्रीजी अपने माना पिना की अकेली संतान है, माता के गुजर जाने की वजह से और पिताजी ने इटतापूर्वक दूसरा विवाह न करने देने की वजह से उनकी दादीजी भीर भवाजी ने शास्त्रीजी का पालन पोपए। किया । पुत्री शान्तावाई शास्त्रत शान्ता होकर वनस्थली की श्रिषण्ठाशी देवी के रूप में विराजमान है। हमारे दो पुत्र सुधाकर और दिवाकर है। सुधाकर जयपुर में सीमेट ग्रादि एजेंसियों का काम करता है और वह वनस्थली का निष्ठावान सेवक भी है। मुधाकर की पत्नी कमला जयपुर के राजकीय हायर सैकेण्डरी स्कूल में प्रधानाच्यापिका है। सुधाकर-कमला के दो पुत्र है। वडा सिद्धार्थ वनस्थली विद्यापीठ में ग्रर्थशास्त्र का लेक्चरार है—उसका विवाह सुधा के साथ हुआ है। छोटा आशुतोप सुधाकर त्रनाथ जयपुर में काम करता है। मुघाकर की वड़ी तड़की सुहासिनी का विवाह मुरेश पारीक से होने वाला है। दूसरी लड़की धनुपन स्रमी छोटी बच्ची कक्षा १ की छात्रा है। हमारा दूसरा लड़का दिवाकर (स्थाम) वनस्थली विद्यापीठ में प्रोफेसर है और वह मंत्री का काम भी करता है। उसकी पत्नी शकुन्तला वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय के शोध केन्द्र की संयोजिका के ग्रसावा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में वड़ी जिम्मेदारी से काम करती है। शकुन्तला---दिवाकर का वच्चा मादित्य छोटा है वह वनस्थली के सरकारी स्कूल में कक्षा ७ में पढता है। बच्ची ज्योति सभी बहुत छोटी कक्षा १ की छात्रा है। मेरे तथा दो तीन दसरों के एवं छोटे बच्चों के ग्रलावा हमारे परिवार में प्राय: सभी बी०ए, एम० ू ए०, वी० एससी०, वी० एड्०, एम० एड०, एम० एससी०, श्रादि कुछ न कुछ है।

मेरी माताजी अपने पुत्रों श्रादि के साथ हमारे साथ ही रहती है हमारे परिवार दो न होकर एक ही सबुक्त परिवार हैं। कुल मिलाकर प्रायः तीस व्यक्ति है जिनका एक दूसरे के साथ अपूर्व प्यार है। मोहन स्रादि अपना व्यवसाय करते हैं। मुशकर अपने व्यवसाय के साथ वनस्थली का बहुत काम करता है। कमला शिक्षा के काम में है—बीर एक दिन वनस्थली की सेवा में पहुँच जाने की उम्मीदवार है। सुशीला-स्थाम-श्रकुन्तला तो वनम्थली के काम में तन मन से सर्वेषा लीन है हो। शास्त्रीजी को महिमा का वसान करता भेरे सामध्ये के बाहर है, हालांकि शास्त्रीजी नेरा वसान जरूरत से ज्यादा करते रहते है। मेरी मानाजी-नक्ष्मी स्वरूपा लक्ष्मीवाई की छत्रछाया में हमारा यह भरे पूरे संयुक्त परिचार का कई प्रकार से प्रादक्ष एप है। मेरी वाई प्रपने नव पुत्रों के और प्रपनों सब पुत्रियों से वडकर अंग्ड पुत्र शास्त्रीजी को मानती है प्रीर शास्त्रीजी प्रापनी वैकुण्ड वासिनी माताजी के स्थान पर मानते हुए वाई की पूजा करते है।

## (२४) ग्रमाव में वैभव

मेरे पिताजी की आमदनी कम बी, पर मेरी दादीजी के पास कुछ मपत्ति होने के कारण हमारा घर सपन्न माना जाता था। मेरे ताऊजी बम्बई मे काम करते थे। वे मेरे लिए नाना प्रकार के कपड़े भेज दिया करते थे। उन कपडों से मेरी बाहजादी की मी सजावट कर दी जाती थी, यहा तक कि रतलाम के राज-महल में रहने और बाने जाने वाली राजकुमारियों को मुक्तसे कुछ ईर्प्या जैसी हो जाती थी। मेरे पिनाजी वढे दरिया दिल थे। दूसरे जरूरतमन्दों को लाकर भी मदद करते रहने का उनका स्वभाव था। वे घर मे खाने पीने की चीजो की इफरात रखते थे। इसलिए मेरा कुमारी ग्रवस्था का खाना, पहिनना-तमाम रहन सहन-ऊ चे स्टेन्डर्ड का माना जा सकता है। मेरे पिताजी ग्रपने साधनो की कमी का कुछ भी असर हमारे ऊपर नही आने देते थे और मेरी दादीजी का हृदय भी अत्यन्त विशाल या और मेरी वाई (मा) की उदारता का तो कहना ही क्या ? मेरी दादीजी को उनके अन्तिम क्षणों में नास बन्द होने के दो चार मिनट पहले तक उनकी सेवा के लिए उपस्थित बहिनो को खिलाने पिलाने का भागह करती देखकर हम लोग गद्गद् हो गये थे। और मेरी वाई आजकल उठने-वैठने, बोलने-चालने की स्थिति में नहीं है तो भी दूसरो की खातिर करने के लिए तकाजा करती रहती है।

अपने समुराल में जयपुर में आकर मैने शास्त्रीजी का भी यही हाल सुना स्रौर देला। शास्त्रीजी ने १७ साल की उम्र ये अपनी दादीजी के श्राद्ध के लिए जयपुर से उधार लाकर अपने पिताजी को रूपया दिया था। शास्त्रीजी ने अपने खद का विवाह का ग्रीर ग्रुपनी चचेरी वहिन के विवाह का काम भी वहुत कुछ उसार से चलाया बताया ? शास्त्रीजो को खाने पीने में छाछ, दही, दूध, मनखन के ग्रुलावा खास ग्रीक था हरी पत्ती के ग्रीर गंवार की फली के साग का, लहसून का जो की रोटी काव बाजरे की खिचडी का । ग्र4नी मौज के कारए। मास्त्रीजी जौ की विना चुपड़ी रोटी खाये विना कभी तुष्त नहीं होते थे। ऐसी स्थिति में मेरे हिस्से में भी जो की रोटी बनाना, खाना ग्रा ही जाता था। मेरी सग्रहम्मी की बीमारी का खास कारमा जौ की रोटी रही हो तो ताज्जुब नहीं। शास्त्रोजी की नमे बदन, नमें पाव रहने का भी बड़ा शौक था। वे जो कपड़े पह-नते थे सो भी चार छ बाने गज के मान के होते थे। उनकी जूतियां भी रुपये सवा रुपये की कीमत की देशी ठाठ की होती थी। और खादी पहिनना भी उन दिनों की गुदड खादी से शुरू हुआ। ? इस प्रकार ग्रयने ग्रापको तकदीर के सिकन्दर मानने वाले और खर्च करने में शाही तबीयत वाले शास्त्रीजी के पड़ोस मे एक प्रकार निर्धनता का दर्शन किया जा सकता है। ग्रीर शास्त्रीजी के जन्मस्थान जोवनेर का घर तो कच्चा था ही। वे वनस्थली में ग्राकर बसे तो गांव वालों के जैसे कच्चे भोंपडों में रहे। वे गाँव मे वैसा ही खाने की कोशिश करते जैसा गांव वाले खाते थे। प्रवने विद्यार्थी काल से लेकर आज तक मुख्यमंत्रित्वकाल सहित शास्त्रीजी मामुली विद्यायत-पर बैठते रहे है और वही खाना, वही काम करना, वही मिलना-जुलना सब कुछ करते रहे है। हमारे घर में शास्त्रीजी की लायी हुई एक कुर्सी भी नहीं है। मुक्के मंतोप है कि शास्त्रीजी के इस रहन सहन की भागोदार बनने का मेरा सोभाष्य है। राज्य की नौकरी छोड़ते-छोड़ते शास्त्रीजी ने जयपुर शहर मे एक मकान दो हजार रूपये में जरूर ले लिया था। सार्वजनिक उपयोग के कारण उस मकान का नाम राष्ट्रीय धर्मशाला पड गया था। बाद में शास्त्रीजी ने जोवनेर मे अपने जन्म के स्थान पर मातुमन्दिर नाम से एक वडा सा कमरा उस मकान में बनवा दिया जो उनको ठाकुर साहव ने ३५००/- मे बेच दिया था। जीवनेर के मकान में १४-१५ साल से प्रौढ़ महिलाओं का ग्रीर छोटे वच्चों का विद्यालय चल रहा है। जयपुर में रघुश्री नाम का मकान मुघाकर श्याम का है-मेरे पिताजी रघुनाथ, ग्रौर शास्त्रीजी के पिताजी श्रीनारायगा इन दोनों नामों से रक्ष और श्री लेकर मकान का नाम रक्ष्मी किया गया है। शास्त्रीजी के पास ग्रपना कहने को एक पैसा कभी नहीं रहा और कर्जा तो वरावर सा ही वना रहा । मेरे पाम जो जेवर था, वह ठीक-ठाक था पर जेवर पहिनना छोड दिया गया, तब जो कुछ मेरे पास था वह बेच डाला गया। ग्रौर बिकी से जो पैसा आयावह पतानही कब कहा चला गया। घर में कमला आदि काजो जेवर था उसे गिरवी रखकर अमुक उम्मीदवार को चुनाव में जिताने के लिए जरूरत लायक रुपया उधार लाया गया । जीवनकुटीर, वनस्थली की शुरुप्रात कर्ज में हुई है, और आज भी वनस्थली पर जिस साल कर्जा कम हो तो उने शास्त्रीणी अशुभ मानते है। किसी ने झाकर अपनी जरूरत .शास्त्रीजी के सामने पेश कर दी तो शास्त्रीजी उधार लाकर उसकी जरूरत पूरी करते रहे है। ज्ञास्त्रीजी ने अपने पास एक छोटा ना वैक जैमा बना रखा या जिसमें किसी का भी रुपया उधार आकर जमा हका और वह किन्ही भी लोगों को कभी उधार ग्रीर ज्यादासर तो ग्रामडा ही दे दिया गया। जिनका रुपया उधार लाया गयाथा उसे चुकाने का जिस्मा तो मास्त्रोजी का थाही। ऐसी विचित्र स्थिति में हमारा निभाव होता रहा कुछ मित्रों के प्रेम के श्राधार पर । पैसे वाले कुछ मित्रों ने हमारी सदा हो मदद की है। शास्त्रीजी के अक्लड स्वभाव के वाबजूद शास्त्रीजी ने जिन्दगी भर न जाने कितने लोगो का भला किया होगा. न जाने किसने को तकलीफ के समय मदद पहुँचायी होगी, पर किसी के दवाब मे या प्रभाव म प्राकर शास्त्रीजी ने उसकी बात मानकर कोई न करने का काम कर दिया हो-ऐसा कुछ भी मेरी जानकारी मे कभी नही ग्राया ।

विवाह होकर खास्त्रीजो के पास आते ही सैंने महसूस कर लिया कि सास्त्रीजी का और मेरा जीवन तो एक ही है। कुछ मौके ऐसे भी आये कि शास्त्रीजी मुफे मुक्किल से आये रुपये को जुटाते हुए से लगे। मैंने गास्त्रीजी को रोकना भी चाहा, कभी तो टरजें-डरते मैंने गृहाँ तक कह दिया क्यों आप सापों को दूध पिलाते हो? पर आस्त्रीजों का दिल ऐसा हीं मैंने देखा कि वे मेरी ऐसी वैसी बात कभी मुन नहीं मकते थे। मेरे मना करने में उनको अनुदारता दिखायी देती थी। और मैं तो जब से आयी तब से आस्त्रीजी की कामदार बनी हुई हूँ। और यह कामदारा अकसर मेरे लिए बहुत मारी, बहुत महंगा पड़ता रहा है।

शास्त्रीजी ने हक्म दे दिया—जाग्रो फला जगह जाकर फलां से कुछ रुपया ले आग्रो । हनभी वन्दे की हैसियत से मै जाती और कुछ ले श्राती श्रीर रुपया हाथ में ग्राते ही जास्त्रीजी उसे किसी न किसी को दे डालते। मुक्ते हमारे वे दिन भी गद है जब शास्त्रीजो ने दूमरों के कारला से अपने मिर पर लदे हुए कर्जे को उतारने के लिए माधारस से साधारस कार्यकर्ताओं को बुला-बुला कर कहा था-नवा लाख का कर्जा चुकाना वाकी है, थोड़ा सा रुपया ला दो, पाम मे नहीं हो नो अपनी स्त्री का जेवर देवकर लाओ । एक सायी को शास्त्रीजी ने मुश्किल से मना किया, वह अपने मकान को बेचकर शास्त्रीजी को रूपया लाकर देने के लिए तैयार हो गया था। परन्तु हमारी इस निर्धनता को किसी ने भी ठीक से नहीं नमभा। ब्रान्तौर से लोग यही समभते रहे कि शास्त्रीजी के पास क्या कमी है, वे तो लेल कर रहे है- आजमाइश के लिए। सादगी-अभीरी के इस प्रकरण में मेरे पान लिखने .को बहुत कुछ है. पर ज्यादा लिखने से क्या फायदा। किसी दिवालिया सरकार के खजाची को तकलीफ भले ही होती हो, पर वह अपना काम भी बना लेगा ही। पर में तकदीर के सिकन्दर शास्त्रीजी की ऐसी खजांची जिन्दगी भर रही है कि मेरे पास न अपना एक पैसा है न कहने लायक कोई खास जेवर है। हमारा यह ग्रभाव न केवल दूसरों को वैभव दिखायी देता रहा, विलक हम ख़द को भी-अलग से सोचू तो मुक्ते भी यह अभाव जानदार या हमारी गान वढाता हम्रा लग रहा है।

### (२४) उपसंहार

मुक्ते पता नहीं में ग्राँर क्या कहूं । मेरी यह "प्रपनी कहानी, प्रपनी जवानी" मन सम्पूर्ण होना चाहती है। असल में सम्पूर्ण हो ही गयी है। मैंने पूज्य काका माहेन के हुवम की तामील करने के लिए कुछ लिखना दिल्ली में महाशिवरात्रि के दिन शुरू किया। वनस्थली में पहुंचकर मैंने कुछ वाते सुहा-सिनी नो लिखा दी। उसमें भी मेरी काकी सास के अचानक देहावसाल का नमाचार मिलने से विच्न आ गया। उस विच्न के बीच में मेरी लिखने की या वोलकर लिखाने की ताकत नहीं रही। इस काम को शुरू करने के बाद पूरा किये विना अपूरा भी छोड़ नहीं सकती थी और काका साहव से हमारा बादा जल्दी लिखकर दिला देने का था। ऐसी हालत में यह सीचना पड़ा कि स्थाम

(दिवाकर) के सामने में प्रपनी वार्ते एक सांस में कह जाऊ और फिर वह मेरी वतायी हुई वातों को लिखित रूप दे दे। सास्त्रीची का और मेरा जीवन मिला हुमा होने से उनके हाथ की कारीगरी भी इस रचना में शांये विना नही रह सकती थीं। उन्होंने मुक्को कई वार्तों की याद दिलायी। अन्त में इस कहानी का प्रारूप सुधाकर के मुपुदं कर दिया गया। जिसे वह प्रेस के लायक वनाकर द्धपने के लिए दे सके। इस प्रकार पंचम मंजितों में यह काम पूरा होने को हुआ है। अब मैं अपने चित्त का भार उतर गया एमा अनुभव करती हूँ।

जैसा कि इस लघु रचना मे कई जगह उल्लेख हो चुका है, में तो शास्त्रीजी के जीवन में अपना जीवन मामिल मानती हूं और यह मेरा श्रष्टोभाम्य है कि शास्त्रीजो भी अपने जीवन को मेरे जीवन में शामिल मानते हैं। यहा तक कि "पंडिताई और कविताई" में बोलते हुए शास्त्रीजी कहते हैं "असल में हम एक, न दो जमें"। उनके स्वर में स्वर मिलाकर में कहती हूं कि आप बड़े भाग्यशाली हों, मेरी भी प्रापक साथ साथ पार लग जाएगी। आखिर में क्या चीज हूं—जया मेरा अस्तित्व हैं? यह शास्त्रीजो की विश्वालता है कि ग्रुफ जैसी ना चीज को अपने आपे में मिला लिया और हम दो न रहकर एक हो गये। शाक्ति की सव वातें गीए। हैं? शास्त्रीजी गांते रहते हैं—'श्राराम क्या है तकलीफ क्या है—पता नहीं है, मुख दु:ख क्या है।' मेरा सोचना है कि दु:ख अस्ताव में हे और सुख एकी-करए। में। शास्त्रीजी ने अपने लेख के शुरू में भंगलाचराय का ज्लोक लिखा है। वे कहते हैं कि हम दोनों सनातन श्रद्वैत हो ही चुके है तो फिर अद्वैत सिंढ के लिए किसी की भी वन्दना करती क्या साकी है?

ज्ञास्त्रीजी को श्रहंकारी और हठीला वताया जाता है। मैं भी मानती है कि भास्त्रीजी में वालहठ जैसा हठ देखने को मिल जाता है कभी कभी। घास्त्रीजी को किसी से कभी भी दव जाना मंजूर नहीं हुआ। इसलिए वे अहंकारी ते भी दिलायी दे जाते हैं। और कभी कभी ऐसा भी हुआ है कि चास्त्रीजी ने मुफे दिना वताये बहुत वहें फैसले कर डाले—ऐसे फैसले कि जिन्हें में मुभको पहले से पता होता तो जनको श्रायद ही करने देती। परन्तु इसका रहस्य यह है कि शास्त्रीजी निमचयास्मा हैं, अपने आस्मिवश्वास पर आस्ट रहने वाले हैं। म

शास्त्रोजी जैसी ही निश्चयात्मा धौर आत्मविश्वास रखने वाली नही वन पायी हैं। इससे में अपना समाधान खोज लेती हूँ कि शास्त्रीजी और में अलग होते तभी यह सवाल उठता। नही तो फिर शास्त्रीजी की ताकत सो मेरी ताकत ग्रीर मेरी कमजोरी है सो भी शास्त्रीजी की ताकत।

इन शब्दों के नाथ में मैं अपनी इस कहानी को पूरा करती हुई विश्राम लेती हूं। अपनी किमियों के लिए मैं पाठकों से माफी चाहती हूं। इसमें भी मेरी वचन यह है कि यह लघुकृति शास्त्रीजों के "प्रत्यक्षजीवनशास्त्र" (भाग २) के साथ नत्यी होने से मेरी जो कोई भी किमया होगी वे शास्त्रीजों के ग्रंथ के गुर्गों में मिसकर गुरा हो जाएंगी। वो सा वही सा यह मा वही सा, सर्वेव सा से वनता मही सा । सा से घटे सा वच जाए सा ही, सा मे जुड़े सा वन जाए सा ही ।।

—होरालाल शास्त्री

### रतन हीरा का अनुठा अद्वेत

रतनजी की इस कहानी में 'बास्व' के जिए यु जाइश नहीं है । इसमें तो प्रत्यक्ष भीर

खालिस जीवन ही बीवन है। उनके निवेदन वे वो बहुबना धीर ऋदुना है उसके कारण इस कहानी में अपनी एक धनोबी। मनोबता था गमी है। उसमें भाषा के बोनुक नहीं है सनकारों की गुलकारी नहीं है धीर न नान कहते में कोई मुधाब किराब है। एक दिनव्युक्त प्रावदा है। राजन हीरा के धनुरुं धाईंट में राजन ने होरा की जुनि की उपना को बन्द किया है सीर पीर्टक को नवाया है।

---दादा धर्माधिकारी

## "सा" की नजर में "सा"

(हीरालास चास्त्री)

] वागर्याविव संपृथती पार्वतीपरमेश्वरौ । अमू वन्दावहे वन्दे नित्यमद्वैतसिद्धये ।।

स्पन्द है कि इस प्रमृद्धुप के दो बन्ए-अयम और द्विवीय-वहाकवि कानिवास के रपुत्रण के मारावाचरण में ने टीफे हुए हैं। वाक् और वार्य की आंति प्रभिन्न आंव में मिले हुए शकर-पार्वती की (हम दोनों धनने) अद्भैत क्प की सिद्धि के लिए नित्य बन्दना करते हैं। दिवयन "क्लावहें" कहते ही किंव ने सीवा कि "दी" तो हैं नहीं, इमनिए उपने एकवयन "वन्दे" कहुंकर प्रथमी भूल का नुवार कर लिया।

न बाने कर और केंग्रे रतनबी को "सा" कहना शुरू हो गया। मुके इतना याद है कि जीवनकुटीर के हम सभी साथी रतनबी को "शा" कहने थे। तथी में रतनबी ने खुद को मानि मुक्तको भी "शा" कहना मुक्त कर दिया। कर्दकर्ड साथी में हम बोगे प्राप्त में एक दुनरे को "हा" कहकर हो पुकारने मार्य हैं। इसी पर से नीचे निखा खुट्द वन गया:—

> रतनजी जबसे प्रिय सा वनी, तबिह से हम भी प्रिय सा वने। जगत् को दिखते हम दो जने, असल में हम एक, न दो जने।।

इसी भ्रामय का यह दूसरा छन्द है.—

अभिन्न है सा - प्रिय सा - प्रिया से, अभिन्न है सा - प्रिय से प्रिया - सा अभिन्न है "सा" प्रिय से प्रिया से, अभिन्न सा प्रियसा प्रियासा।।

इसी हिसाब से ध्रांगे बढ़ने-बढ़ते ईंबोपनिषद् के झान्तिपाठ के तब पर यह तीसरा छन्द प्रकट हो गया .—

> बो सा वहीं सा यह सा वहीं सा, सदैव सा से वनता सहीं सा । सा से घटे सावच जाए सा ही, सामें जुड़े सा वन जाए सा ही।

"क्षणे रस्टा क्षणे तुप्टा:" जैसे मेरे स्वभाव को सही सही पहिचानती हुई रतनजी ग्रवसर विनोद में मुक्को 'काकर' बताती रहती है। तब मैं उनसे कहता है-प्राप पार्वती बनना चाहनी हो सो मुक्को जकर बनाकर धपनी इच्छा पूरी करने की कोशिय कर रही हो क्या ? इस पर से बना हुधा यह छुन्ट है —

> मुझे सदा अंकर ये बताती, औं पार्वती में इनको बताता । मिले हुए शंकरपार्वती जो, सो अर्धनारीम्बर में बताता ।।

कहते हैं नारव ने पावंती की मा को शकर के खिलाफ वहका दिया था। कहा 'पावंती-शकर" भ्रीर कहा 'रनन-होरा"। पर सामान्य मनुष्य का ढामान्य स्वनाव भपनी चाप्तूची करने का होता हैं न ? मैंने थपनी मारमक्या "प्रत्यक्षवीवनशास्त्र" (भाग १) में इस प्रकार नियंत हैं —

"मेरी सगई की वार्त बल पड़ीं। घव तो मैं खुद ही हा ना करने वाला था। धन का लोम दिखाने वाले एकाव को मैंने टाल बतायी तो मैं लोगों को निगाह में जिही दिखायी दिया। उन्हीं दिनों रतनाम निवासी थीं रघुनाषजी ब्यास मेरे पास बा पहुँचे। वे मेरे कुछ मित्रों से परिचंद में। उनकी बात मेरी समक्ष पे प्राले लगी। मैंने प्रपत्ते प्रियात मुनर्देव को चुपने से रताम मेजा, लडकी को देखने के लिए। मुखदेव बहुत बच्छों रिपोर्ट लाया। मेरी सास्टर रघुनाच्यों व्यास की चुड़की रतनावाई से हो गयी। सास्टर साहब से हैं पर राजने वाले लागों का विष्ट्यक्रत मध्यभारत से चंलकर पुर्वेहितजी साहब (तर गीपी-नायसी) के पास पहुँचा, यह कहने के लिए कि रघुनायची व्यास 'वर्ष वाहर' हैं। ऐसे तीगीं

की क्षेत्र भुतने बाता का ? दो-यार महीने बाद मेरा किताह रहनात्री से हो सवा, सावसोर में । रहनती की माताजी (वाई) के पात कोरे कारे में किहत रिपोर्ट पहुँचारी गयी थी, स्वितिए से दार समय बहुत जून नहीं भी । विवाह के कुछ ही वित्र बाद में रहानजी को ताते के लिए रिताम पहुँचा सब रहानवी की 'वाई' ने मुक्ते (यच्छी तरह से) देसा और वे मुख हो गयी !'

मीटी मानवा से रूपे राजस्थान में झाकर रहनजी ने पर को झच्छो नरह है सभाज जिया हो मचरत को बात लगी मुक्ते। में झाने "विकलने" के कान के नहीं में पागन देशा रहना था। महरूमा जारा है क्यादने का डेर घर पर प्राायाता था। बारे साम को निपटा कर ही में नोने के जिए रोट बक्ता था। बेरी काइनों के बीच में बढी हुई रहनजी को शीव मा नाती थी। पर राजनी में कभी विकासत नहीं की।

तव मैंने किसी छोटे थे बाव में बाकर बनने को सपनी इच्छा प्रकट को तो रतनवी सण मर में महमव होने। हुई बोन उठी—"बनिए, वहा राय होनं नहीं होनी समीच्या"। मैं जातवा था कि रतनवीं का भीर देश कोई मुजबना नहीं। मैं एक राज के किसान परि-बार में पना हुमा था। करिंग में मजबूत ना धौर जह जैसी माबहता में कुछ भी रेगा फीकर रहें मकता था, रतनवीं भी उस पर की दिनके रहन-बहुत का स्पेट के काफी क्ष वा ना, महा-से सामी हुए रानिया-राजकुमारियों के बीच रही दुई सीग राजकुमारी की भारित पनी हुई। गतनतीं ने पसी और जैवन की विवाह के बाद तीन सान के नीतर ही छोड़ दिया था। फिर राशि पनने का बस्स धाया भी रजनतीं के साथीं पुत्तने में ही न खाने, रनतीं भारी सारी पत्त सामने का स्वस्त धाया भी रजनतीं के साथीं पुत्तने में ही न खाने, रनतीं भारी सारी पत्त सामने का स्वस्त धाया भी रजनतीं के साथीं पुत्तने में ही न खाने रहतीं भारी सारी पत्त सामने की सारी की ही सारी। शहर में रही हुई रतनती के सामने एक छोड़े से बाव में रहते की हमस्या हो भी ही, यह-पात्रक बाने नाशी रतनवीं को मी के दिनकर बनाने खीर (बाव कर निवा साम-कारी के) नामें का प्रस्था भी नहीं था। यो हो, रतनभी ने राननीं ने मेरे सामना कहीर के कास के दिए सपनी सान भीर देश ।

एक वार जपपुर सहुर में चन्या करते-करते मैंने हार बाब सी । मोर मैंने रतनती से क्या कि ओनोर (मिर अमायमा) के छाड़ साहद में बाब धाप आमो । स्तारणी ठाइर साइब ने का शिक्षा 1 उज्जुद साहद वर्ष में पढ़ी हुई स्तराची को की पहिचान ने रितरानी में नस्त्रान ने मों बात छेड़ी तब ठाड़ुर साहद समस्रे कि व किन से बात कर रहे हैं। घोर उनके मनामें में में निया मारूक कर बित्यायों नथीं— 'बारे देखी हुं, सरुपाया जोस्या का देश की बहु सिन्दारा की बराबर कुसीं पर चैठी हुं"। स्तरामी ठाकुर साहब से चन्दा निवसाकर हो हुंदी।

उस जमाने में रतमाम जैमी "राजधानी" में भी वडिकमों की गिजा की कोई लास स्वदस्या नहीं थी। एक सामुनीमा ही स्कूल था बहा। रतनजी की पढाई उस स्कूल की "उन्चतम परीक्षा" पास करते ही सूट गयी। उसके बाद जरूरी ही उनका विवाह हो गया। मेरे दिल मे यह सटक बाज तक बनी हुई है कि मैं रतनकी की खिला के मामले मे सफ्ता कर्त्तक जीम जाहिए बेना पूरा नहीं कर सकर। बहुत देर से मैंने घात्नावाई भीर रतनकी को सुद पढ़ाना शुरू किया—दोनों ने एक-एक परीक्षा भी पास करती। पर प्रान्तावाई को प्रवानक हमें छोड़क पबने गयी। और रतनबी को बनस्थती विद्यापीठ का ग्राहिकटिन काम मामाना एवं गया।

रतनकी बरेजी नहीं पढ़ी हैं। फिर भी वे खबपुर राज्य के उन दिनों के वर्ड-वर्ड प्रयंज प्रधिकारियों से टक्कर ले लेती थी। एक दिन डायरेक्टर ऑफ एजूकेवन सौबेल्स से रतनजी साल होकर बोली—"धाप हमारा स्कूल वस्त करवाने के लिए सपनी की कपूनिस लेकर प्राजाना, में शामको फाटक पर तैयार मिनू गी।" साहब सकपका गया।

जयपुर सत्यावह के जमाने में ब्रावेच इम्मपेचटर-जनरल धाँक पुलिस यम से लोहा लेने ना नाम रतनजी के ही हिस्से में धाया हुया या। हमारा घाठ साल का छोटा बच्चा यदाम (प्राज्वकत लाला रियाकर नातन्त्री) रतनजी का लास सीपी या। यह भी 'गम साहर्य' को सूर्व मृताता था भीर लेल के फाटक पर पहुँककर जोर-जीर से नारे सपाता या। प्रजा-मण्यल के सहायाक्षी जनसे में तो क्यान भी धाक थी।

गाधीजों ने अपपुर सत्याग्रह को स्थानत करने का ध्यानक हुनम सुना दिया। तब रापाइल्एाजों (बजाज) धीर रहनजी रोलों उनके पास दिस्सी में ही पे। एक सास मित्र साने के स्वर में बोने—जब नत्याग्रह करने वाले नहीं रहे तो गाधीजों सत्याग्रह को स्थित्न करने के ससावा और नया करते ? रहनजी ने मित्र को बाद रखने लायक जबाब देते हुए कहा-सत्याग्रह के लिए व्याकुल हुनरे ससस्य लोगों को तो छोड़िये—ये सीतारामजी (देकत-रिया) और सिद्धराजणी (इड्डा) तो जेल जाने के लिए तैयार प्रापके पास ही बैठें हैं। यह कहकर रहनजी गाधीजों के कमरे में दुवारा गयी और उनके द्वारा सत्याग्रह स्थिति करने का तिखा हम्मा हम्म सेकर बाहर निकसी।

रतनजी को मेरी धोहदेवाती राजनीति के पिछट जाना—खासकर राजस्थान का मुख्य-मन्त्री वनना-विक्कुल पत्तन्त नहीं था। मेरे घोहदे के दिनों में राजनथी सुध मही रहती थी। भीर जीवनकुटीर के समय के मुख्यम्य जीवन की याद किया करती थी। जीवनकुटीर के सामियों का घीर प्रजामण्डल के नये साधियों का हत्का व्यवहार राजनों को बहुत व्यवस्ता रहा। जिन सोगों को राजनी १०३-१०४ दिखी बुखार में रोटिया बनाकर खिजाती थी दे ही मेरे ही नहीं राजनबी तक के विभुक्त हो सर्व थे।

वनस्थली विद्यापीठ के लिए वो रतनजी ने अपना सभी कुछ-स्वास्थ्य तक भी-धर्पण कर दिया। वनस्पली में मुख और लोग भी है निष्ठा से काम करने वाले। पर वनस्थली विद्यापीठ की प्राग्त सो रतनजी ही हैं। रतनजी न सिर्फ हजारो लडकियो की स्नेहमयी और दण्डधारिएरि मा है, बिल्क वे जरूरत पड़ने पर वड़े से बढ़े नेताओ और मित्रयों से भिड़त्त रुरने वाली भी हैं। एक बार धजानक ही कंन्द्रीय सम्कार का बनस्वानी की घाट बन्द करने का (राजनीतिक कारणों से प्रेरित) हुस्य था गया तो रतनजी विव्रक्षामन्त्री मीनाना प्राजाद के पास विद्यार्थिट को चाबिया उन्हें बीप देने के लिए जा पहुँची। बनस्यली की ग्राट कोन बन्द कर सकता था, कौन बन्द करता सकता था, उस दिन की रएएबडीस्टब्स्य रननमी के मुकाबले से हैं

ऐसी "सा" धीर ऐसी रतन बास्त्री के बार में मैं धौर क्या कहू ? उन्होंने म्रपने तीवन की कहानी सिखना निजाना न जाने किम कमनोरी के किन क्षणों में महूर कर निया ? है जो कुछ निगर-निष्म सकी वह पिछले पुष्ठों में प्रस्तुत हो चुका है। कु कि हम दो न होकर एक ही है, इसिलए मेरे प्राथक्षजीवनजास्त्र (चाग २) के माथ ही रतनवी की "प्यमी कहानी प्रश्नी जवानी" नस्थी कर दी गर्या है। वस सब मैं धपने उपर चिपे हुए एक छन्न के दो चरणों को फिर में टीइन्गा हमा प्रपन्ने धानन्यत्तिरेक की प्रषट करता है—

> जगत को दिखते हम दो जने, असल में हम एक, न दो जने।। इति शुभंभयात।।

## रतनजी श्रौर शास्त्रीजी की एकरूपता

(काका कालेसकर)

प्राचीन व्हिपियों ने तम किया कि साबी करनी है तो घपने खानदान में नहीं करनी चाहिए। यहां कुछ यानी खानदान एक है, वहां धन तोगों का रहन-सहन एक की होता है। साहार-विहार सी एकसा। साथ रहने से हर तरह की अनुकूतता है। किर भी एक ही कुल में यानी खानदान में शादी नहीं होनी चाहिए।

सामे जारूर उन्हीं ऋषियों ने तब किया कि एक ही ऋषि के योत्र में भी शादी नहीं होनी चाहिए। गलती से एक मोत्र में घादी न हो जाय इससिए घादी तय करने से पहले दोनों बाज का गोत्र पद्मा जाता है।

प्रव इस संदह है, कुछ निजता-दूरता सम्मादन के बाद, जब घादी होती है, तब बरी कूपि कहते हैं कि पित-पत्नों के श्रीव स्वमाद का और जीवनादर्गक भेद जितना कम ही उतना प्रच्छा । पित-पत्नी साथ रहेंबे, साथ खायेंबे, पीयेंगे इत्सादि । सपने दाल-यच्चो को सच्छे सकार देंगे । इसमें पित-पत्नी वितने नजदीक हो उतना प्रच्छा । यानी दोनों एक हृदय होने पाहिए । कितना सुनद हावदं और साथ-साथ कितना कृतिन ! भेद में प्रभेद । भेद तक्षा होने पहिए साल नाथ ।

ग्रव पाया तो यह बाता है कि खानदान चलाने का मार पुरूप का । कमायेगा पुरूप । समात्र के साथ कही सचर्ष करना पड़ा तो बह नी पहुप ही करेगा । स्त्री घर चलायेगी, खाना-पीना सम्भानेगी, बच्ची को चच्चे सस्कार देशी धीर खानदान के सम्कारों की जो भी खाम्मियत हो, यह भी स्था सम्मानेगी । फलन पत्नी को ही मधने जीवन मे जरूरी परिवर्तन करके, भौर प्रधने भा-नाथ का ग्राकर्षण कम करके पति के साथ एक रूप हो जाना पही बताया गया है-ग्रारणं पत्नी का उत्तायोतम स्व-यमं।

स्व दुनिया से जितनी सादिया होती है, उनमें से कितनी स्थिता होती हो प्रपने इस स्व-पर्में का पासन कर सकती है ? मायके का घर छोड़ दिया, समुराल में माकर रही, नहां का जानवान पतन्द किया, नये रस्परियाज अपनाये, यह तो करना हो परता है। परेतन हो तरार सारा सदल-बदल हृदय से मायक रना स्रोर परित के सान पूर्णजाय एक करन हो जाना-पह कितनी स्थिता कर सकती है? (धानकल की स्थिता पूछते भी है कि "यह सारा भार स्थी पर स्थों ? बादी की सरस होनों को है। वच्चों की जिल्लेचारा पेत की है। भीर बादी होते हैं। नया पर जानों की सावश्यकता साजकल पैदा होती है। ऐसी स्थिति में पित हो परती के सिए धानुकृत होने का प्रयत्न वयो न करें?" इस विषय को यहां बढ़ाने की प्रावश्यकता नाता नहीं है।)

बहा परनी बुद्धिमान है, कर्नुंब वर्षक पति से विनक भी कम नहीं है, तो भी पूरे हुवय हे, पति के अनुकृत होकर रहनें को तैयार हो जावं, और जिस तरह सारी जिन्हारी पति को जुल केंद्र कोई विक मोह कि मोह कर किया है, ये वदाहरएए अगर हसारे कमाने से कर्सा दिख पढ़े तो सारा समान ऐसी पत्नी का मुख्यान करने जग जाता है।

बन्दई, कनकता भीर महास जैसे प्रदेश को छोड़ दें। राबम्यान उसे प्रदेश में भार-तीय ब्रादर्शों को सम्भावते हुए अपनी सस्या हारा विका का एक प्रमोग चलाने-चलाते, स्त्री जाति के प्रतुक्त एक प्रमतिश्चीस विद्यापीठ चलाने कोल एक खानदान में, पति-परनी का प्रादर्श नमुना देसकर भारतीय समाज पूर्ण कर वे प्रसम्ब हुमा।

महारागा गाभी जैंगे पुता पुरुष भी ऐसे उदाहरुए की स्तुति करने समें। प्रौर हर प्रदेश के सोज दम विद्यापीठ की भीर विद्यापीठ की स्थापना करने वाले लोगों को देखने के निग्न जयपन के पास वनस्थती पहुँचने समें।

राष्ट्रीय विश्वा को ही अपना नीवनकार्य मानने वाला, और गाधीजी के प्रार्कों का प्रयोग छन्हीं के आध्यम में श्रीर उनके विद्यारीठ में चनाने वाला में वनस्थली देखने न जाऊ यह कैसे बन सकता है।

में इनस्थानी गया। उसके मस्यापन पश्चित हीराजान जास्त्रों के बारे में मैंने कारी परा या। सांगी दुनिया में स्त्री जाति की परिस्थिति सन्योगकारक नहीं है। रही जाति की उप्रति के कार्य को राष्ट्रीय शिक्षा में त्रयान स्थान होना वाहिए, ऐसा प्रचार करने वासा मैं बनस्यत्ती के कार्य को देशकर कुण हो बाऊं ती उसमे धाक्चर्य बया?

वनस्थाती में जब मैंने देखा कि हीरातान शास्त्रीओं की धर्मपत्ती धीमही रतन वहन भारतीय आदर्ज का जीवनस्थापी स्वीकार पूर्ण हृदय से करके पति के जीवन में धीर सेवा कार्य में एक रूप हो गयी है तब मैंने हृदय से रतनदेवी का श्रभिनन्दन किया । शास्त्रीजी ती इस धपुर्व सहयोग को कदर करते ही हैं ।

हीरालाल शास्त्रीजी ने अपनी धात्मकया लिली है । अत्यक्षजीवनघास्त्र जैसी सुन्दर ग्रात्मकथा पढ़ने का उत्साह हर एक समाज सेवक को होता ही है ।

बनस्वयों का प्रयोग देखने के बाद, धौर शास्त्रीजों की धारमक्या पढ़ने के बाद, मैंने रतन वहन से कहा कि "धापकों भी धपनों धारमक्या निखनों चाहिए। धापकों लोकोत्तर सारमणिक ने शास्त्रीजों के साथ पूर्ण रूप से एकता स्थापित की है। धपनों बुद्धि धौर कार्य शिक्त हो केवत नहीं, किन्तु धपनों भावनाए धौर धपनों रितंकता को नी धापने धलग रहने नहीं दिया। धारम-नमपंणकारों यह व्यक्तित्व देश के सामने धाना ही चाहिए। कितनी धन-पेरित धौर रेसक बोले उत्कों हमें मिलने। "

सी॰ रतनदेवी ने जवाब में कहा "धनेक लोगो का सायह होते हुए भी मैंने प्रपने बारे में लिखने से प्राज्य तक इन्कार किया है। लेकिन प्राप्त हैं गांधीओं के शिक्षासासनी। सापकी प्राप्ता का भय कैसे कहें? लिख दृगी योडा सा ।"

भव रतनदेवी ने 'श्रपनी कहानी, धपनी खबानी' सिखकर भेजी है। श्रीर वह सलग न छपते हुए सास्त्रीओं की आस्मकया के दूसरे आग में ही स्थान पा सकेपी, ऐसा भी उसके साथ समक्षा दिया है।

सी॰ रानदंवी ने मेरी मुचना मान्य की इसका मुक्ते सन्तोप है। पाठक देखेंगे कि हीरालाल मास्त्री भीर रातनदंवीजी कैवल भ्रपने वैवाहिक जीवन मे ही नही, किन्तु सस्कृति सेवा की इस युग की इस उत्कृष्ट प्रवृत्ति मे-"वनस्थती विद्यापीठ की स्थापना ग्रीर विकास में एकमेक के साथ पूर्णुतया एक रूप है। शास्त्रीची ने सही लिखा है!—

> 'जगत को दिखते हम दो जने, असल में हम एक, न दो जने ॥'

मैं तो कहूना कि क्षास्त्रीजी प्रधानतमा शिक्षाधास्त्री होते हुए भी राजनीतिक क्षेत्र में काफी फस चुके थे। इसी कारएण अनस्थतों की सेवा में और इसे अखिल भारतीय सस्था के बनाने में रतनदेवी का कुछ भाग अधिक ही होगा। और उन्हों के व्यक्तित्व के कारए। यह विद्यापीठ इस तरह का विकास कर सका है।

मेरी मूचना के प्रनुसार रतनदेवीओं ने प्रपनी आत्मकथा का यह एक प्रकरण लिख दिया, इसलिये प्रपना सन्तीय और हार्रिक ग्राशीवींद प्रगट करने के लिये ये चार शब्द मैंने लिखे हैं।

उनके व्यक्तित्व के फलको देखकर मैं प्रभावित हुआ हूँ।

# रतन-हीरा का स्रन्ठा सर्दं त

(दादा चर्माधिकारी)

भी ॰ रतनकी की ' यपनी कहानी, घपनी जवानी' ' पढ़ने में पुषे सानन्य भीर बौढ भी मिला। जी हीरानास्त्रो सारकी के ''प्रश्यक्षजीवनसास्त्र' के बुद्धरे भाग के नाथ इसे नर्यां निषया गया है। परन्तु यह हीरानात्रजों के यह का परिविच्ट नहीं। एक प्रकार के उसकी मपूर्ति भसे ही कहुने। किसी भी व्यक्ति की कहाती उसी के मुद्द से उसकी प्रमत्ती वैयक्तिक संशों में मुनने में एक घतुठा मजा होता है। रतनकी की इस कहानी में 'शास्त्र' के लिए गुजाइता नहीं है। इसमें तो प्रश्यक्ष बीर खालिस जीवन ही जीवन है। उसके तिवेदन में जो सहजता भीर क्षानुता है उसके कारण इस कहाती में घपनी एक झनोखी मनोजता भा गयी है। उसमे माया के केंद्रिक नहीं हैं घनकारों की गुनहारी नहीं है भीर न बात कहते में कोई पुमाव फिराब है। एक विनयमुक्त भागवता है। शायद इसीसिए यह इदयगम हो। सकी है।

शास्त्रीयों ने जिन घरनाओं का वर्णन धवनं य व में किया है, उन्हों में से कई प्रसारों का वर्णन रतनवीं ने धवनी विधिष्ट धूमिका के सदयें में धवनों बेली में किया है। उस श्रीली में एक 'प्रशिक्षित पटुखे' (धनटूँ ड एनमजेन्स) है, एक धननकुत धिवरता। उदाहरण के लिए, भारतावाई के विश्वीह के करण प्रमान का वर्णन उत्तवनों ने वर्ष तुले, सीपे-साद सक्दों में किया है। यह पाठक के हृदय को उुए बिना नहीं रहता।

रतनजी भानवे से राजस्थान साथी। दोनो प्रदेशों के सुमस्कार उन्होंने विक्कुल स्थाभाविकता से प्रास्तवात् कर लिये। इस कहानी में ऐसे प्रमागे का वर्णन है जिनमे इस सीरामता का जीवर जियर उठता है। परन्तु उनके वर्णन में केवल यस्तु कथन है प्रास्मत्वाचा विरुद्धत नहीं है। इसमें जनको सस्कारिता का सीरम है। ४०० ] प्रत्यक्षजीवनशास्त्र

विक्षरण विभाग के प्रवेज डायरेक्टर है, पुनिस के प्रवेज इन्सरेक्टर जनरम, जोवनेर के टाकुर माहव में, मौलाना धाजाद से धौर माचीजी ने उनकी जो मुनाकार्ते हुई उनके वर्णनों में रतनेजी की तेजिक्त प्रतिनात का परिष्य मिलता है। देखिल प्रविजय या मैंनी की तू भी नहीं। आरमीजी सेसे वर्जुप्य को जब तित को दौरा हुआ उन दिनों की प्रवानी मन स्थित का विचा उन दिनों की प्रवानी मन स्थित के विचा के साम के प्रवानी मूफिर का वर्णने के प्रवानी में प्रतिनात के प्रवानी में प्रवानी में प्रतिनात के प्रवानी में प्रवानी में प्रतिनात के प्रवानी में प्रतिनात के प्रवानी की हुत्या प्रीर प्रतिना पर साम ने रही हैं।"

प्रमंख में नास्त्रीजी धीर रतनजी के दो हृदन हैं ही बहा ? विवाह के ममापन के प्रवार पर बुद पुष्प धानीबाँद देते थे। "ममानानि हृदयानि व ।" "तुम दोनों के हृदय सामत हो।" यहां तो सपानता को वात ही नहीं है। एकता बरितार्थ हो गरी है। यह सम्द्रात ग्राहै ते है। मास्त्रीजी धीर जननत्री के बोनों के जीवन एक दूमरे के माय वाते-वाने की तरह अनुस्त्रुत है। हतने धोजनोंने हिं कि कीनता नाना है और कीन मा बाता है हवहां भी पता मगाना मानान नहीं है। दतनजी के जीवन से एक धारय समर्पेण है-मारन समर्पेण स्वेच्या का स्वय प्रेरित । उसमें विवक्षता का नेज भी नहीं है। हसतिष् उसमें कहीं तनाव नहीं, श्रीचा तानी नहीं । उस समर्पेण की कानिब इसीतिष् उसने कहीं तनाव नहीं, श्रीचा तानी नहीं । वस समर्पेण की कानिब इसीतिष्

एक बार श्री रामकृप्ण परमहम देव के दो शिष्यों में इस बात को लेकर विवाद छिड गया कि हम में से अप्ट कीन है। निदान दोनों की पेशी परमहस्र देव के सामने हुई। उन्होंने ब्यवस्था दी कि जो दूसरे को वडा समन्ते वही तुम में श्रेष्ठ है। रतनत्री और शास्त्रीजी का मामला कुछ इसी तरह का हो गम है। वे एक दूसरे को बड़ा कहते है। इसमें से एक संयुक्त मता दिल उठी है। इस पारम्परिकता में समर्पेश भी पारस्परिक ही होता है। इसीलिए उसमे प्रतियोगिता, स्वामित्व की भावना या प्रनुसरता के लिए प्रवकाण ही नहीं रह जाता है। रतनजी का प्रात्मसमर्पेश स्वय स्फर्त है इसीनिए झास्त्रीजी के व्यक्तित्व की उन्होंने समुद्र किया है और शास्त्रीजी ने उनके व्यक्तित्व को समृद्ध किया है। ऐसे समर्पेश से किसी के भी व्यक्तित्व की लानि नहीं हो सकती । इतना कहने में कोई मापत्ति नहीं होनी चाहिए कि गायद रतन और हीरा के संयुक्त जीवन में रतन ने हीरा की बुति की उग्रता को कम किया है भीर दीन्ति को बढ़ाया है। इस दस्पति का जीवन एक अलडित पीतास्वर की सरह है। व्याकरण में पीताम्बर "योग रूढी" सज्ञा है। दो भट्दों के योग से जो वाक्यार्थ व्यक्त . होता है उसके त्रतिरिक्त एक साकेतिक बर्य का इ गित ऐसी सन्नाबों में होता है। पीताम्बर केवल पीला कपड़ा नहीं है। सबवान जिसे परिधान करते हैं। वह दिव्य और पवित्र बस्त्र भी है। रतनजी ग्रीर शास्त्रीजी का संयुक्त व्यक्तित्व भी जीवनकुटीर और वनस्थली विधा-पीठ में निहित ग्रनेक सकेतो का प्रतीक है । इमीलिए ग्रहकारमुक्त ग्रात्मप्रत्यय के साथ रतनजी तिस सकी कि मैंने स्वास्थ्य खोगा लेकिन उसके बदले में जीवनकुटीर का जीवन और वनस्थली विद्यापीठ का वरदान पाया । शास्त्रीजी के मुख्यमनित्वकाल की ग्रपेक्षा उन्हें जीवन-कुटीर के कप्टमय जीवन में प्रधिक रुचि है। इसीलिए उनका यह निष्कर्ष है कि जिस प्रकार -ग्रावस्यकता ग्राविष्कार की जननी है, उसी प्रकार प्रतिकूलता पराकृम की जननी है। ऐसे भध्य आरमप्रत्यय के पीछे आरमदमन तो हो ही नहीं सकता। यह आन्मप्रत्यय तो विपत्ति को संपत्ति में परितान कर देता है।

यह कहना आसान नहीं है कि रवन की खूति कहा समाप्त होती है धीर होरा की खूति ना सारम्य कहा से होता है। ये रिक-शिच की टीप्तिया नहीं है। फिर भी एक बात कहने को जी चाहता है।

रसनकी निखनी है कि जब उनका जन्म हुया तो उनके दादा को कुछ कम सुनी हुई। परानु वे आंतियों भी थे। जन्म कुण्डनी देखकर उन्होंने कहा था कि गई जित घर से जाएगी उसका साम होगा। उम घर का इतना साम हुया कि उसकी दोवार ही गई गयी भीर कुटुन्य की कोई सीमाए नहीं रही। विश्व कुटुन्य के सकाग उसमें का गये। इसीनिए रतनकों के विश्व में मक्त की देवों के बारे में बह मिक्कपूर्ण उक्ति याद पार्टी है। जितमें बह कहता है—

"यदे तस्पैश्वयं" सव जननि सौभाग्यमहिमा"

इस शिव का जो ऐस्वर्ष है, है अनिन, वह तो तेरे सौभाग्य की महिमा है। यह तो स्मग्रानवासो, कहरूड, जो ठहरा ?

प्रस्त में यही प्रार्थना हुदय से उठती है कि इस धनुषम दम्पति को जीवन के प्रीरिम क्षत्त तक एक दूसरे का बारीरिक मामिष्य और मानसिक सागरस्य निरन्तर मिलता रहे। व्हिपियों का प्राणीवेंचन है—

समानीव आकृति, समानानि हृदयानिवः । समानस्तुवी मनी """ ॥ "" ।।।

# प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो

पिछले पुष्ठों में ३१ धनस्त, ११७४ को बात बतायों वा चुकी है। प्रय की खपाई में देर होने से मुक्को जरूरी लगा कि तब वे लेकर ७ नवस्वर, ११७४ की बात प्रस्पर सकीप में जोड दी जाए। ऐना करने से मेरे जीवन के करीब ७५ वर्षों के विवरसों का समा-वेग हो जाएगा।

इस मर्से में मेरा ध्यान प्रिकित से घषिक बनस्वनी के काम पर रहा । एक घोर मैं हवाई उद्यान करता रहा जिसकी श्रिज्यक्ति विद्यागीठ के स्थापना दिवस के घवसर पर दिये गये मेरे निम्नसिखित प्रकट चिन्ठन में हुई है.—

<sup>\*</sup> १ सितम्बर, १९७४ से ७ नवस्वर, १९७४ तक की बात।

प्रसय प्रतीक्षानमो नमो

"सत्यमेव जयते, नानतम् । तन्मे मन. शिवसंकल्पस्तु ॥"

हवाई उड़ान के मलावा मेरा चिन्तन तीन दिशाधी मे चला है ---

- (१) वनस्पती के बांत जुढ़ वातावरए। की रक्षा के काम को देव की इन कोसाहलपूर्ण और सहुचित स्वार्यपूर्ण हवा में भी इंडता के साथ जारी रक्षा जाए। मेरा विश्वास है कैमें भी कन्के धनस्पती प्रमेने प्रद्विद्यीय बादावरण को बनाने में सदेव समर्थ बनी रहेगी। वन-स्पती का आधार भावना बांकि है और उनका खवालन धारमज्ञांक आर्थाद आर्थाद आर्थाद स्वार्य में होता होता है। ऐसे स्थान पर किसी भी प्रकार के बुधिन उन्च का साक्षमण नहीं हो सकता।
- (२) बनस्थली के पचमुली विकासका में पुस्तकीय-वीदिकिषक्षों के बलावा हूनरे चार प्रम प्रीर सामिल रहे हैं। अविष्य में विकासका को विशेष व्यावहारिक रूप देना मेरी राम में बहुत आवश्यक ही गया है। देश की विधायशानी में गुणार पढ़ा नहीं कव धीर कैसे होगा। पर हमें तो वस्स्यती में पूरा चर्किक व्यावहारिक और उपयोगी विकास का विशे कल्यों ने जस्दी अस्तुत करना ही होगा। उक्त प्रयत्न में सफतना चिनेगी तब ही मैं वनस्थती के तिए किये गये प्रभने परिषम को प्रफल मानु गा।
- (३) बनस्पली की विचीय रियति को जन्दी से जन्दी ठीक करना होगा। विद्यागिठ के प्रावत्तक बनद में चाटा कियी हालत में नहीं रहने दिशा वाष्ट्या। इस सम्बन्ध में ऐसी मीजना बनायों जा रही है कि बनस्पत्ती के हम्मन्तित सभी कार्यकर्ता, सभी खाताएं ग्रीर दूसरे सभी सोज पार्ट की पूर्वित में माने पार्ट की पूर्वित में सम्बन्ध में माने में दिखार्गिठ की प्रयोग पार्ट की प्रवाद में हिंदार्गिठ की प्रयोग पिछने पार्ट को भी एकाप बात के भीतर पूरा कर देना होगा। शिवारे, बनस्पक्षी की प्रयोग पिछने पार्ट को भी एकाप बात के भीतर पूरा कर देना होगा। शिवारे, बनस्पक्षी

808 T प्रत्यक्ष जीवनशास्त्र

में होनसायन्य, पोत्रीटेकविक, हॉस्पिटन, सभामवन ग्रादि जैसे नए कामी के लिए भी सावन जुटान पहेंगे ।

उपयं क्त कामों में मेरी ग्रम्बस्थता ने बदल बडी बाधा खडी करदी है। मेरे दिल के दौरे का विवरण पहले दिया जा बुका है। पिछुंच महीनों में मेरे हर्निया प्रकट हो गुना था। जिमका जयपूर के बढ़े सर्जन ने ग्रॉवरेजन कराना जरूरी बताया । साथ ही उन्होंने हरिया के प्रांपरेशन के पहले मेरा प्रांन्टेट का आँउरेशन करना जरूरी बताते हुए यह राम दी कि बह बहा बांग्रेकन जयपुर में न कराकर बेलीर में कराना ज्यादा धन्द्रा रहेगा । प्रास्टेट का प्रॉपरेशन कराने के विचार से में सी० रतनजी और चि० अग्रम ग्रादि के साम देनीर पत्र चा । पर वेलोर के अध्यक्तित वह सर्वत ने पॉस्टेंट का बॉपटेग्रात करने की असरत नहीं बनायी । में ग्रॉपरेशन कराए जिला ही धनस्थली सीट ग्राया । फिलहाल इनिया का ग्रॉपरेशन कराते की जरूरत भी मुद्दे नहीं मानुम पड रही है। झॉबरेशनों की इस प्रकार जरूरत न होने से सभी प्रियजनों को बड़ी राहत मिली। वेचीर के डॉ॰जड़ की शाय नीचे लिये मेर्नु भार है.---

CHRISTIAN MEDICAL COLLEGE HOSPITAL, VELLORE, S.INDIA

#### Case Summary And Discharge Record

SHASTRI PANDIT HIRALAT. UROLOGY (1)

232420

Admitted on: 20 10.74 Discharged on: 23.10.74.

The patient is a case of coronary insufficiency-bad an actual infarction 21 years ago. At present op digoxin and digretics. A right inguinal swelling, chinically consistent with uncomplicated indirect incomplate inguinal hernia, was discovered 22 months ago. Patient sought medical opinion at Jaipur which was in favour of an early operation to obviate the risk of strangulation and subsequent morbidity in the background of coronary insufficiency. No surgery however was done there since the routine rectal examination revealed prostatomegaly. He has no significant prostatic symptoms, the noctoral frequency being ordinarily not more than three times and no feeling of incomplete emptying, urgency. He is referred to CMCH for opinion and prostatectomy to forestall the possibility of ormany obstruction in the post operative period if harnia is repaired as animilal operation. On examination, well built, adequately nourished elderly male BP 140/90. Abdomen-Kidneys not palpable. No hepatospienomegally. No free fluid External genitalia-NAD. Right side indirect inguinal hernia + PR: Grade II prostatic enlargement, regular except for a patch of ? induration base of left lobe which may require periodic palpation.

Investigations; Hb 15.3 G Urine—albumin trace, sugar nil, WBC 1-2, RBC 4-6/HPF. Blood sugar AC 101 mg% ESR 30 mm esidual urine 30 CC

After overall assessment of patient's symptoms and availabinty of good medical facility within a short time, the absence of any evidence of back up of urine in the bladder and kidneys, it is felt that prostatectomy as a preventive procedure with Mr. Shastin's background is not necessary. Hernia may be operated upon and prostate, if it gives trouble by way of retention, could be taken care of as the situation arises.

Sd, - (H.S BHAT)
HS.BHAT, MS.F.A.CS F.A.MS,
Professor of Surgery & Urology
& Head of Urology Department
CHRISTIAN MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL,
VELLORE 637004 S. INDIA

घरने प्रशेर की वर्तमान बनस्या में भी धौर दनस्थलों की भारी जिम्मेदारी छपने कपर होते हुए भी मैं देश की स्विति के बारे में वहत अधिक चिन्तित और ध्याकुल रहा है। में बार-बार सोचता है कि मेरे दिल का दौरा न पढ़ा होना तो मैं अपने स्वाधीन प्राम-नगर सगठन के कार्यक्रम की जारी रख मकता । यदि ऐसा ही पाता तो में समय धाने पर प्रपते भन्भद से उक्त कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन परिवर्धन कर लेता और उसे देश में चलने वाले ग्रमक क्रान्तिकारी कार्यक्रम के साथ बोड देता। मैं जपर के पुष्ठों में बता चुका है कि मभे विल्लल बाहा नहीं है कि वर्तमान सत्ताघारी पार्टी के द्वारा किये गये प्रयत्नों से देश की स्थिति में नन्तोपजनक सुधार हो जाएगा । क्योंकि मैं सोचता है कि तमाम बुराइयों की जड सलाधारी पार्टी की नीति और नीयत में है। मेरा मानना है कि चान चनाब-प्रणाली में वास्तविक सुधार सत्ताधारी पार्टी नहीं कर सकेंगी और जैसे चुनाव होते बाय हैं वैसे चुनाव के द्वारा देश में सच्चे जनतन्त्र की स्थापना नहीं हो सकेगी। देश में फैले हुए भ्रष्टाचार का मल कारण चनाव प्रणाली में है। भ्रष्टाचार को देखना हो तो पार्टी अपने नेताओं में सीर उसके पास पड़ोस में देख ले। सकेद ख है तो एक ही बात का है कि मैं अपना योगदान देने की स्थिति में नहीं हैं। मेरे हार्ट की बीमारी न होती तो मैं अपने आपको जरूर मोक देता पर जैसा मेरा हार्ट है उसे लिए हुए मेरा बोलिम उठाना किसी की भी राय मे उचित नहीं जान पडता । मैं ग्रपन शरीर के साथ जबंदस्ती करके कद भी पहुंती नतीजा क्या निकले ? इस ग्रन्तवदना का अनुसव करते हुए मैं देश में आये पीछे अवश्यभावी कान्ति की बाट देखता रह गा। जैसा कि मैं निम्न उक्ति के द्वारा पिछली बर्ड शताब्दी से कहता रहा हैं—

"मरणानन्तरजीवनदायकप्रलयप्रतीक्षा नमो नमो।"

प्रसय की बर्थान् कान्ति की प्रतीक्षा के साथ-शाय में उसकी सफलता के लिए सफलासुर मर्दिन आधार्थाक से प्रार्थना करता चूँगा। इतिलम् ।

# प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग २)

तथा

# श्रपनी कहानी, ग्रपनी जबानी के विषय में

(डॉ॰ कुमारी पन्ना द्विवेदी, हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ)

पण्डित हीरालाल बाहिनी को जीवनी का दूसरा आग (अव्यवजीवनचाहन माग रे) उनके वैविव्यपूर्ण कर्मठ जीवनवृत को सकलित किये प्रस्तुत हुया है। बाहिमीजी घरने घ्राप में एक सस्यान हैं। वे जीवन को कर्म का सन्देव देने वादे प्रेरक शक्तिय व हैं।

पुस्तक दो उपभागो में बटी हुई है। यहले उपभाग में मई, १६७० में प्रगस्त, १९७४ तक का जीवनवृत्त, विचारसार, बायरियो के पृष्ठ, कुछ रचनाएं, गांधीओ और विनो-बाजी से बार्तालाय तथा प्रनेक सोगों से किये हुए पत्र व्यवहार के प्रथ सम्मिलित हैं।

शास्त्रीजी एक और महान् समान सेवी हैं: तो दूसरी और गहन चिन्तक भी । विचारसार के अन्तर्गत उन्होंने आस्प्रतत्व और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के अतिरिक्त भारत के सामने उपस्थित कई एक सवालो, धर्मनीति, अर्थनीति, राष्ट्रनीति, राजनीति और प्रशा-सन्तरीति के विषय में अपने स्पष्ट विचार व्यक्त किये हैं। जीवनवृत्त से बिल्कुल अपने होकर भी विचार मनुष्य के व्यक्तित्व को समअने का सर्वाधिक सबक्त भाष्यम है। इसिल्ए अपि-रिक्त सामग्री के अन्तर्गत जो भाषण, लेख, पत्र, वार्तालाए, रचनाए और डायरियों के पृष्ठ सकतित हैं, वे सब शास्त्रीजी के व्यक्तित्व के विचिध्य को स्पष्ट करते हुए पूर्ण बनाते हैं। इसी उपजान १ के सन्तर्गत तीन परिजिष्ट भी जुड़े हुए हैं। परिजिष्ट १ म प्रत्यक्ष-वीयनशास्त्र भाग १ की ४ समीआए हैं। परिजिष्ट २ में लेकक के २१ इस्ट जिनके सबय में उपका कहना है कि वे विचारों का खोटा वा नवशा पाठकों के सामन प्रस्तुन कर सकेंगे। परिशिष्ट २ में लेकक धरना भूस्वाकन स्वय अपनी कलन से करता है। आस विशंतपरण को ऐसी सार्वजनिक ब्याच्या बड़े बीवट का काम है, जीवनी साहित्य की विद्या में मीसिक देन है।

बडी से बडी जीतिम उटारूर सपने रोचे हुए कार्य की सम्प्रूपांता पर गृहेचाता साह्योती का न्वभाव है। भारतीजी न किलाइयो से घबणते हैं, न कटो से इरते हैं। इसीजिए तो भायकर दिन के दौरें की स्थिति में अस्पताल के पत्तय पर लेटे हुए भी उन्होंने "वेगेडी" की प्रकार कर बाली।

प्रत्यक्षत्रीवनशास्त्र (भाग २) का उपमाग २ उनकी इसी विशेषता का उदाहरए। है। पूरतक पूर्ण हो जाने के बाद भी जब तक वह खुरी नहीं तव तक का विवरण उपमाग ने जोड़ा तथा है जिसमें उसी पहुंते वाने कम से जीवनकुत पन-अवहार, रचनरात, लेज, श्राम्य में परो हे पहुंत वाने कुछ है। इस तो पहुंत का के प्रत्य ने भी वाने सुर्प्य है। एक तो यह कि साल्योड़ी वनस्वती में ही रहे कार्य को बीर खिक्ट पूर्ण वनारने के लिए विशेतत है, प्रयत्न श्रील हैं, दूसरी यह है कि गायी को मानने वाले, स्वतन्त्रता सम्राम के सैनिक, सर्वोदय को प्रसर करने वाने कमेंठ डायेक्सी माल्योडी देश की वर्तमान मामाजिक, रावनीतिक, प्रार्थक स्थिति से सर्वेया प्रमानपुट है। प्रधानमन्त्री की निर्धे हुए पत्री में उनकी अनिन्तृद्धि स्थर करहे हो स्त्री स्वतन्त्रता सम्प्राप्त की स्वतंत्र में प्रकट हो रही है। वस्तुत्र काल्योवी की प्रतिक्रिया प्राप्त की स्वतंत्र पर वही होनी चाहिए। प्राप्त्रीओ के मत में देश में व्याप्त प्रधानमन्त्री को प्रति होत र पर हो होनी चाहिए। प्राप्त्रीओ के मत में देश में व्याप्त प्रधानस्त्री प्रधानित्रय केंसी भी कांगित होतर रहेगी जिलसे एक वार तो सेवको रोटी क्षत्रमं, विवास, इनांज, विवास सुत्र होतर शांति स्थानित हो लागी।

प्रश्यक्षजीवनमान्य (माग २) के साथ नत्यी किया हुमाई "यपनी कहानी, मयनी जवानी" तान का भी॰ रतन वास्त्री का छोटा ता बीवनवृत्त । कहानी के माथ शास्त्रीजी का "सा" के मध्यक्ष में नित्त्रा हुमा "मा की नवर में ना" नाम का निवस्य भी लागा हुमा है । रतनदी ने प्रपर्वी कहानी को जास्त्रीजी की बीवनी के नाथ जोड़ दिया है पत्रीकि वे म्रोर शास्त्रीजी एक दूसरे में विनीत हो जुके हैं। मास्त्रीजी तो स्पष्ट हो बहुते हैं—

> जगत को दिखते हम दो जने, असल में हम एक न दो जने।

इन दोनो का सनिक्ष भाव अर्ड नारीक्वर का सा है, एक खात्मा एक शरीर जैसा है। रउनशी अपनी कहानी में केवल विवाह से पूर्व स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली है। उसके बाद का उनका प्रस्तित्व मास्त्रीओं के जीवन से पुलिमत गया है। रतनजी एक सादर्श भारतीय नारी हैं, मादर्श पत्नी, प्रादर्श माता। शास्त्रीओं की जाति ही उन्होंने प्रपने वारतस्य को वनस्य नी की सारी विचयों को दे दिया है। उनका सरल स्वभाव, द्वत ग्रीर दें प से विहोन है। पदमधी प्रमाणिक भी भा प्रमाणिक प्रयोगी न समम्त्रेन सात्री वे कवाबित प्रकेली महिता हैं। प्राप्त की भारतीय नारी के तिए उनकी यह कहानी जीवन पप का प्रादर्भ पायेय वन सकती है, उसे सच्ची नारी की तरह जीना मिमा मकती हैं।

प्रस्थकानिकास्त्र (आग २) एक प्रत्यन्त उपयोगी, मुन्दर, गरन और प्रेराणायमक पुस्तक है। भाषा और प्रस्तुतीकरण का उन पूर्णवंद्या भौनिक है। महान पुरुष को जीवनी, साधारण मनुष्यों को जीना सिखातों है, उनका पय प्रदर्जन करती है। परन्तु किनाइयों से स्माने हुए अपने सक्ष्य को प्राप्त करने बाले यों उप एक हानी चुना थोड़ी की रयों में बहुन वाले रक्त में उवान ला देती है, उमें जीवन सम्राम में कभी विवस्तित न होने देने का सदी वेती है। शास्त्रीजी की प्रस्तुन जीवनी में ये दोनों गुण एक साथ विद्याना है। वेती ही शास्त्रीजी की प्रस्तुन जीवनी में ये दोनों गुण एक साथ विद्याना है। वेती ही रतनजी की जीवनी में जो सक्नाई भीर संस्त स्वाभाविकता ज्यान्त है प्रस्वेक पाठक को निषम्तनता की श्रेरणा देने वाली है।

उत्तर कथन

### उत्तर कथन

"प्रत्यक्षजीवननास्त्र (भाग २)" नाम की इस क्रुति के उपमाग १ व २ पूरे हुए।
प्रत्यक्षजीवनशास्त्र (भाग १) के प्रकाशित होने के बाद इतना जन्दी प्रत्यक्षनीवनशास्त्र
(भाग १) प्रकाशित करने की कोई खास जरूरत नहीं थी। पर देसे मेरे जी में मा गयी कि
वाद के सालों का हाल भी लिख बाता हा। युस्तक तथ्यार होकर प्रेम में चनी गयी। पर
स्रत्येक कठिनाइयों के कारएंग एक सर्वे तक ख्याई नहीं हो सबी दो सामी सामग्री की मगवा-कर पुस्तक की अपटुडेट किया गया।

पिछने महीनो में काका साहेज कालेलकर की बेरला से मी० रतनश्ची ने भी प्रपती कहानी, प्रपती जवानी निलब्दी, लिखावी। रतनजी की कहानी को प्रश्यक्षत्रीवनणस्त्र (भाग २) के साथ नरपी करके छापा गया है।

इस सारी सामग्री को नन्यार करने ने सर्वश्री वयदीश प्रसाद बावजा, ध्यानमुखर मायुर, भोरेन्द्रकृत्यार सिसल, बबढीश्रद्धसाद शर्मा, प्रत्यिन्दकृत्यार दुवे, महेन्द्रमहाय भन्नेता, गत्रानम्द पूनिया, रामिवास यादव, गत्यवर्ताहह चौहान, मदननान बागडा ने तरान के साद परिष्या किया है।

मात्र को श्रतिकठिन परिस्थिति में भी वैणाली प्रिटिय देख और श्रजमेरा प्रिटिंग वक्से ने मिलकर तमाम सामग्री को खापकर देने के लिए कुछ उठा नहीं रखा !

उक्त सभी भाइयो का मै ग्राभार मानता है।